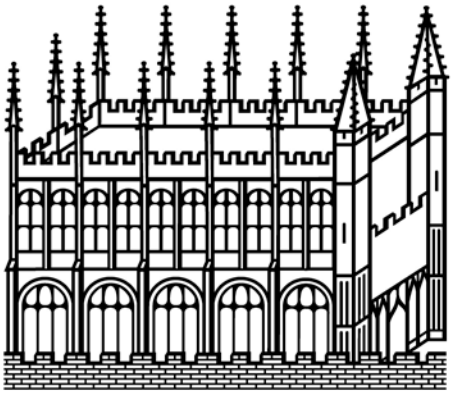

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

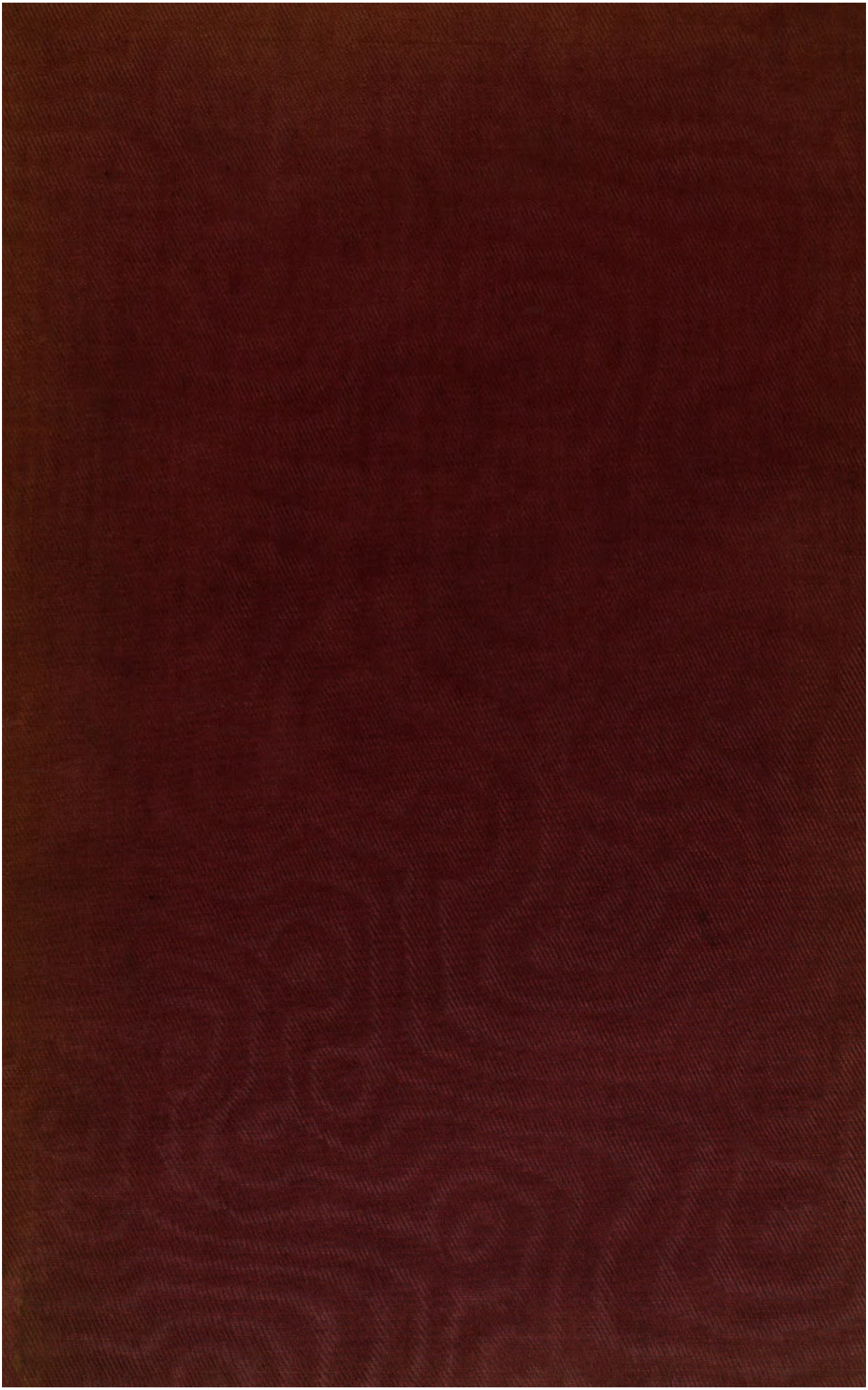

13. E. 23 Hindi Jaisi 2

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Tadmāvat

Padmavat Bhakha

पद्मावतभाषा

پدماوت بہاکہا

यह प्रसिद्ध कहानी राजा रत्नसेन और पद्मावतकी है

जिसको

परम सुजान सकल गुण निधान परम तत्त्व बिलासी सम दृष्टि प्रकाशी मलिक मुहम्मद जायसी ने देश भाषा में शेर शाह बाद शाह देहली के वक़्त में जगत उपकार हित ज्ञान मार्ग उपदेश निर्म्माण करके संसार को असत्य और परमेश्वरको सत्य दिखाया कहने को कहानी है परन्तु महा सुख दानी है

उसी का उल्था लाला रघुबर दयाल ने बड़े ग़ौर से उर्दू से देव नागरी में करके गूढ़ शब्दों का अर्थ ठीक ठीक वास्ते जानने गुण ग्राहकों के किया

पहली बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपा

मई सन् १८८० ई०

विज्ञप्ति ॥

इस महीने अर्थात् मई सन् १८८० ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैय्यार हैं वह इस सूचीपत्र में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर नियत हुवा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
व्याकरण और ज्योतिष	औषधिसंग्रह कल्पवल्ली	जलभूजन
सिद्धान्त चन्द्रिका	निघण्ट भाषा	हनुमान बाहुक
लघुकौमुदी	वैद्यदर्प्पण	सुखसागर
मुहूर्त्त चिन्तामणि सारिणी	रामविनोद	ब्रह्मसार
शीघ्रबोध	कोष और इतिहास॥	परमार्त्थसार
पराशरी सटीक	शिवसिंह सरोज	प्रेमसागर
मुहूर्त्तगणपति	सामुद्रिक	सूरसागर
संग्रह शिरोमणि	गणितकामधेनु	राग प्रकाश
जातक चन्द्रिका	कमीशन बड़ोदा	भक्तमाल
लघुजातक भा॰ टी॰ स॰	शब्दार्त्थकोश	अवधयात्रा
भाषाजातकालङ्कार	अमरकोष प्रथम काण्ड	कथा गङ्गाजी
संस्कृत जातकालङ्कार	अमरकोष तीनों काण्ड	रामयण टेपकी
जातकाभरण	भाषाटीका सहित	रामायण जिल्दबन्धी
मुहूर्त्तदीपक	अनेकार्त्थ कोष	रामायण तुलसी कृत प॰ छा
होरामकरन्द	ब्रजविलास	रामायण तुलसी कृत स॰
मुहूर्त्त चिन्तामणि	दुर्ग्गा पाठ सटीक	सतसई रामायण
मुहूर्त्त मार्त्तण्ड	दुर्ग्गा पाठ मूल	कवितावली रामायण
वैद्यक	अपराधभञ्जन स्तोत्र	गीतावली रामायण
शार्ङ्गधर सटीक	महिम्नस्तोत्र	रामायण दोहावली
वैद्यजीवन	श्रीगोपाल सहस्रनाम	सुन्दरी चरित्र
वैद्यमनोत्सव	शिवार्च्चन	रामायण नानार्त्थनौ स॰
अमृतसागर	गङ्गालहरी	ङ्गहावली
अमृतसागर बड़ी	भगवद्गीता	दूसरी पुस्तक रामायण माला
अमरविनोद	भगवती गीता	तीसरी रामायण गीताष्टक
जगदविनोद	श्रीमद्भागवत सटीक	चौथी ज्ञान दोहावली

पद्मावतभाषा

पद्मावत भाषा

यह प्रसिद्ध कहानी राजा रत्नसेन और पद्मावतकी है

जिसको

परम सुजान सकल गुण निधान परम तत्व विलासी समदृष्टि
प्रकाशी मलिक मुहम्मद जायसी ने देश भाषा में शेरशाह
बादशाह देहली के वक़्त में जगत उपकार हित ज्ञान मार्ग उप
देश निर्म्माण करके संसार को असत्य और परमेश्वर को सत्य
दिखाया कहने को कहानी है परन्तु महा सुख दानी है
उसी का उल्था लाला रघुबर दयाल ने बड़े ग़ौर से उर्दू से
देवनागरी में करके गूढ़ शब्दों का अर्थ ठीक
ठीक वास्ते जानने गुणग्राहकों के किया
पहलीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपा
मई सन् १८८० ई०

श्रीगणेशाय नमः

अथ पद्मावत

लिख्यते

अस्तुति खण्ड

सुमिरों[1] आदि[2] एक करतारू[3]	जें जिव दीन्ह कीन्ह संसारू
कीन्हेसि प्रथम[4] ज्योति परकाशू[5]	कीन्हेसि तिनहिं प्रीति कैलाशू[6]
कीन्हेसि अग्नि[7] पवन[8] जल रेवहा[9]	कीन्हेसि बहु ते रंग औ रेहा[10] ।
कीन्हेसि धर्ती[11] स्वर्ग[12] पतारू	कीन्हेसि बरन[13] बरन अवतारू[14]
कीन्हेसि दिन दिनेर[15] शशि[16] राती	कीन्हेसि नखत तरायन[17] पाती
कीन्हेसि धूप सेव[18] औ छांहा	कीन्हेसि मेघ[19] बीज[20] तेहि मांहा
कीन्हेसि सप्त[21] मही[22] ब्रह्मंडा[23]	कीन्हेसि भवन[24] चौदहों खंडा

कीन्ह सबै अस जाकर दूसर छाजन काहि
पहिले ताकर नाउं लै कथा करों अवगाहि[25]

याद करना १ सबसे पहिले २ परमेश्वर ३ पहिले ४ उजियारा ५ नाम पहाड़ तथा स्वर्गलोक ६ आग ७ हवा ८ माटी ९ चित्रकारी १० ज़मीन ११-२२ आसमान १२-२३ रंगबरंग १३ पैदाइश १४ सूर्य्य १५ चांद १६ छोटे नखत १७ जाड़ा १८ बादल १९ बिजुली २० सात २१ सात परदा आसमान सात परदा ज़मीन २४ शुरू २५

कीन्हेसि सात समंदर पारा। कीन्हेसि मेरु[1] खरखंड[2] पहारा
कीन्हेसि नदी नार औ झरना। कीन्हेसि मगर मच्छ[3] बहु बरना
कीन्हेसि सीप मोति तहँ भरे। कीन्हेसि बहुत नगनि[4] निरमरे
कीन्हेसि बन[5] खंड औ जाड़ झरी। कीन्हेसि तरवर तार खजूरी।
कीन्हेसि सावज[6] आरन[7] रहैं। कीन्हेसि पंख उड़ैं जहँ चहैं।
कीन्हेसि बरन[8] सेत औ[9] श्यामा। कीन्हेसि भूख नींद[10] विसरामा
कीन्हेसि पान फूल बहु भोग। कीन्हेसि बहु औषध[11] बहु रोग

निमिख[12] न लाग करत वह सबै कीन्ह पलएक
गगन[13] अंतरिक्ष रा खा बाज खंभ बिनु टेक।

कीन्हेसि अगर[14] कसतूरी[15] बीना। कीन्हेसि भीमसेन[16] औ चीना[17]
कीन्हेसि नागेजो[18] मुख बिष[19] बसा। कीन्हेसि मंत्र हरे जेहि डसा।
कीन्हेसि अमृत[20] जिये जो पाई। कीन्हेसि मीच[21] जेहि खाई[22]
कीन्हेसि ऊख मीठ रस भरे। कीन्हेसि करूवेल बहु फरे।
कीन्हेसि मधु[23] लावे लै माखी। कीन्हेसि भंवर[24] पंख औ पाँखी[25]
कीन्हेसि लोबा[26] अंदर चाँटी[27]। कीन्हेसि बहु तरहिं घनमाटी
कीन्हेसि राकस[28] भूत परेता। कीन्हेसि भूकस[29] देव[30] दएता[31]

कीन्हेसि महेस[32] औ अठारह[33] बरन बरन उपराजा
भुगुति[34] दीन्ह सब पुनि सबन कहं सकल सान नाम[35] साजा

बीहड़ १राह मुश्किल २क़िस्म ३जंगली साफ़ ४जंगल ५पेड़ ६जंगली जानवर ७जंगल ८रंग ९सफ़ेद सियाह १०आराम ११इलाज १२पलक मारनेमें १३आसमान १४बीचों बीच १५नामजानवर परिंद १६मुश्क १७ क़िस्मका काफ़ूर १८.१९.२० साँप २१ज़हर २२-२४जिसके पीनेसे मुर्दा ज़िंदा होजाय २३मौत २५शहद २६उड़नेवाले जानवर २७लोंबड़ी २८चूंटी २९ शैतानकी क़िस्म ३०-३१-३२हज़ार ३३तरह तरहकी पैदाइश ३४सब ३५

कीन्हेसि मानुष[1] दिहिसि बड़ाई | कीन्हेसि अन्न भुक्त[2] तहं पाई
कीन्हेसि राजा भोजहि राजू | कीन्हेसि हस्ति[3] घोर तहं साजू[4]
कीन्हेसि तेहिं कहं बहुत बिरासू[5] | कीन्हेसि कोइ ठाकुर[6] कोइ दासू[7]
कीन्हेसि द्रव्य[8] गर्ब[9] जेहिं होई | कीन्हेसि लोभ[10] अघाइ न कोई
कीन्हेसि जियन[11] सदा सब चहा | कीन्हेसि भींच[12] न कोई रहा
कीन्हेसि सुख औ कोटि अनंदू[13] | कीन्हेसि दुख चिंता[14] औ दंदू[15]।
कीन्हेसि कोइ भिखारि[16] कोइ धनी[17] | कीन्हेसि संपत[18] बिपत[19] पुनि धनी[20]

कीन्हेसि कोइ निमरोसी[21] कीन्हेसि कोइ बरियार[22]
छारहि[23] तें सब कीन्हेसि पुनि[24] कीन्हेसि सब छार

धनपति[25] वही जेहेक[26] संसारू | सबै देइ नित[27] घट न भंडारू[28]
जानवंत[29] जगत[30] हस्ति[31] औ चांटा[32] | सब कहं भुक्त[33] राति दिन बांटा
ताकर दृष्टि[34] जो सब उपराहीं। | मित्र[35] शत्रु[36] कोउ बिसरे नाहीं
पंख पतंग न बिसरे कोई। | परगट[37] गुप्त[38] जहां लग होई॥
भोग भुक्त[39] बहु भांति[40] उपाई। | सबै खवाय आप नहिं खाई।
ताकर उही जो खाना पीना | सब कहं देइ भुक्त औ चैना।
सबै आस[41] ताकर हरि खांसा | बहु न काहु की आस निरासा[42]

पुगयुग देत घटा नहिं उभै[43] हाथ अस कीन्ह
और जो दीन्ह जगत महं सो सब ताकर दीन्ह

आदमी १ रोज़ी २ हाथी ३ सामान ४ आराम ५ मालिक ६ ग़ुलाम ७ दौलत ८ ग़रूर ९ लालच १० जीना ११ मौत १२ ख़ुशी १३ फ़िकिर १४ ग़म १५ ग़रीब १६ अमीर १७ दौलत १८ दुख १९ बहुत २० कमज़ोर २१ ज़ोरवाला २२ माटी २३ फिरि २४ दौलतमंद २५ जिसका २६ हमेशा २७-४३ ख़ज़ाना २८ जहां तक २९ दुनिया ३० हाथी ३१ चूंटी ३२ ख़ुराक ३३-३९ निगाह ३४ दोस्त ३५ दुश-मन ३६ ज़ाहिर ३७ छिपा ३८ बहुत तरह पैदा किया ४० उमेद ४१ नाउमेद ४२ दोनो ४३

आदि[1] एक बरनौं[2] सो राजा ॥ आदि[3] न अंत राज जेहि छाजा
सदा सरबदा[4] राज सो करे ॥ और जेहि चहै राज तेहि दे ॥
छत्रहि[5] अछत[6] चि छत्रहि छावा दूसर नाहिं जो सरवर[7] पावा ॥
परबत[8] ढाहि देखत सब लोगू चाँटहि[9] करहि हस्त[10] सर योगू
बज्रहि[11] तिन कहि मार उडाई ॥ तिनै बज्र[12] करि देइ बड़ाई ॥
ताकर कीन्ह न जानै कोई । करै सोइ जो मन चिन्त न होई
काहू भोग भुक्ति[13] सुख सारा ॥ काहू भूख बहुत दुख मारा ॥

सबै नास्त[14] वह इस्थिर[15] ऐसो साज जेहि केर ॥ ॥
एक साजी[16] आ भांजी चहै सवारै फेर ॥ ॥

अलख[17] अरूप अबरन सो कर्ता वह सब सों सब वह सो बरता[18] ॥
प्रकट[19] गुप्त[20] सो सर्व व्यापी[21] ॥ धर्मी चीन्हि न चीन्हे पापी ॥
नावह पूत नहिं पिता न माता ॥ नावह कुटुम्ब न कोई संग नाता
जना[22] न काहि न कोइ वैजना[23] जहाँ लग सब ताकी सिरजना[24]
वै सब कीन्ह जहाँ लग कोई वह नहिं कीन्हि काहू कर होई
हति[25] पहिले और अबहै साई ॥ पुनि सो रहै रहै नहिं कोई ॥
और जो होय सो बावर अन्धा दिन दुइ चारि मरै कर धन्धा ॥

जो वह चहा सो कीन्हेसि करै जो चाहै कीन्हि ॥
बरजनहार[26] न कोई सबै चाहि जेउ दीन्हि ॥ ॥

सबसे पहिले १ बयान करना २ अव्वल न आख़िर ३ हमेशा ४ छत्रधारी ५ बिदून छत्र ६ बराबरी ७ पहाड़ ८ चूंटी ९ हाथी १० पथ्थर ११-१२ रोज़ी १३ नास होनेवाला १४ क़ायम १५ बनाना और बिगाड़ना १६ जिसको कोई न देख सके १७ नज़दीक १८ ज़ाहिर १९ छिपा २० सब चीज़ मैं बिराजमान २१ पैदा होना २२-२३ पैदाइश २४ पहिले था २५ मना करनेवाला २६

बिन बुद्धि[1] चहि जो कर हो ज्ञानू । जस पुराण माहँ लिखा बखानू
जीव नाहो पै जिये गुशाई । कर[2] नाहीं पै करै सबाई[3] ॥
जीभ नाहिं पै सब कुछ बोला । तन नाहीं सब ठाँहर[4] डोला ।
श्रवण[5] नाहिं पै सब कुछ सुना । हिया[6] नाहिं पै सब कुछ गुना
नयन[7] नाहिं पै सब कुछ देखा । कौन भाँति[8] अस जाय बिसेखा
ना कोई है वह की रूपा । ना वह सों कोइ आहि अनूपा[9]
ना वह ठाँउ[10] ना वह बिन ठाऊँ । रूप रेख बिन निरमल[11] नाऊँ

ना वह मिला न बेहरा[12] ऐसो रहा भरि पूर ॥
दृष्टवन्त[13] कहँ नेरे अँधहि मूरुख[14] दूर ॥

और जो दीन्हेसि रतन[15] अमोला । ता कर मर्म[16] न जानै भोला ॥
दीन्हेसि रसना[17] और रस भोगू । दीन्हेसि दसन[18] जो विहँसे[19] योगू
दीन्हेसि जग देखन कहँ नयना[20] । दीन्हेसि श्रवण[21] सुने कहँ बयना[22]
दीन्हेसि कपट बोल जेहि माहाँ । दीन्हेसि कर पल्लव[23] बाहाँ ॥ ॥
दीन्हेसि चरण[24] अनूप[25] चलाहीं । सो जानय जेहि दीन्हेसि नाहीं
योबन[26] मरम[27] जानि पै बूढ़ा । मिला न तरु[28] नापा जग ढूँढ़ा ॥
सुख कर मरम[29] न जानय राजा । दुखी जानि जा काहँ दुख बाजा

काया[30] का मरम[31] जानि पै रोगी भोगी रहै निचिन्त[32]
सब कर मरम[33] गुशाईं[34] जानै जो घट घट रहै तन्त

अक़िल १ हाथ २ सब ३ जगह ४ कान ५ दिल ६ आँख ७ कौन तरह ८ मुक़ाबिल जिसका कोई नहो ९ जगह १० पाक साफ़ ११ अलग १२ देखने वाला १३ नादान १४ जवाहिर १५ भेद १६ जीभ १७ दाँत १८ हँसने के लिये १९ आँख २० कान २१ आवाज़ २२ हाथ की हथेली २३ पैर २४ जिसकी मिसाल नहो २५ जवानी २६ क़दर २७ जवानी २८ भेद २९ बदन ३० भेद ३१ बेफ़िक्र ३२ भेद ३३ ईश्वर ३४

अति अपार करताकर करना । वरनन कोइ पावइ बरना ।
सात स्वर्ग जो कागद करै । धरती समनद मस भरै
जानवन्त जग सारवा वनहारवा । जानवन्त कैसद्दना पखपारवा
जानवन्त खेह हेहु दुनयाई । मेघ बूद औ गगन तराई ॥
सबलिखनी कीलिख ससारा । लिखिवन जाय गति समन्द्र अपारा
एतो की न्ह सबगुण प्रकटा । अबहू समुन्द महँ बूदन घटा
ऐसो जानि मन गर्व न होइ । गर्व करइ सुनवावर सोइ ।

बड़ गुणवन्त गुरु हैं चहीं सवारी बेग ॥
औ अस गुरु सवारी जो गुरु चहै चतुरेग ।

कीन्हसि पुरुष एक निरमरा । नाम मुहम्मद पैगो करा ॥
प्रथम जोति बिधता कीसाजी । औ तेहि प्रीति सृष्टि उपराजी
दीपक लेस जगत कहँ दीन्हा । भानि रसन जग मारग चीन्हा
जो न होत अस पुरुष उज्यारा । समुझि न परत पथ अधियारा
दुसर ठगु दीवी लिखवी ॥ वही धर्मी जो पाढ न मीरवी
जेहि नली न जन्म सो नाउ । ता काहु की न नरक महँ ठाउ
जग बसीठ ढढई वै कीन्ही ॥ दुई जग तरा नाउ तेहि दीन्ही

गुण अवगुण बिधि पूछ न होइ । लेखे जोख न देइ
वेहि बिनवव आगे होइ करै जगत कर मोह

जिसका पारावार नहीं १ बयान करना २ आसमान ३ ज़मीन ४ सियाही ५ काल ६ दाँत ७ माटी ८ बालू ९ बादल १० आसमान ११ नख़त १२ ज़ाहिर करना १३ गल्ला १४-१५ ईश्वर १६ ज़रूर १७ बहुत १८ शाख १९ पाक २० चौदहौ काँड २१ पहिले २२ ईश्वर २३ मुहब्बत २४ दुनिया पैदा की २५ चिराग़ २६ दुनिया २७ पाक २८ दुनिया २९ राह ३० ३१ जगह ३२ ३३ दुनिया का क़ासिद ३४ दोनों जहान ३५ पाप और पुण्य ३६ ईश्वर ३७ हिसाब ३८ दुनिया ३९ बन्दे छुड़ाना ४०

12 चार मीत[1] जो मुहम्मद ठाउँ[2] । जेहि का दीन्हि जग[3] निरमल[4] नाउँ
अबाबक्र सद्दीक़ सयाने ।। पहिले सिदक़ दीन वेहि आने
पुन सो उमर ख़िताब सुहाये । भा जग[5] अदल[6] दीन जो आये
पुन उसमान बड़ पण्डित गुनी । लिखा पुराण जो आयत सुनी ।
चौथे अली सिंह[7] बरयारू[8] ।। सौंहिना[9] कोइ रहा जुझारू[10] ।
चार्यो एक मतें[11] एक बाना । एक पंथ[12] औ एक सघाना ।
बचन[13] एक जो सुना यहिं साँचा । वही पुराण दुहूँ जग[14] बाँचा[15] ।
जो पुराण बिधि[16] पठवा सोई पढ़ति ग्रंथ ।।।
और जो भूली आवत सो सुन लागे पंथ[18] ।।।

13 शेर शाह देहली सुलतानू । चारहों खंड[19] तपी जस भानू[20]
ओही छाज छाति औ पाटा[21] । सब राजैं भुइँ धरा लिलाटा[22] ।
ज़ात सूर[23] औ खाँडे[24] सूरा । औ बुधवंत सबै गुण पूरा ।।
सूर[25] नवाई नव खंड[26] वहे । सात दीप[27] दुनी सब नये ।।
तहँ लग राज खड्ग[28] करि लीन्हा । इस कन्दर[29] जुलक़र नैन जो कीन्हा
हाथ सुलेमान[30] केर अँगूठी । जग[31] कहँ दान[32] दीन्हि भरि मूठी
औ अति गरू भूमिपति[33] भारी । टेक भूमि[34] सब मृष्टि सँभारी
देहि असीस मुहम्मद करहु युग युग राज ।
बादशाह तुम जगत[36] के जग[37] तुम्हार मुहताज ।

दोस्त १ जगह २ दुनिया ३ पवित्र ४ संसार ५ न्याव ६ शेर ७ ज़बरदस्त ८ सामना करनेवाला ९ लड़नेवाला १० एक सलाह ११ राह १२ बात १३ दुनिया १४ पढ़ना १५ ईश्वर १६ किताब १७ राह १८ तरफ़ १९ सूर्य्य २० तख़्त २१ माथा २२ पठान २३ तलवार बहादुर २४ बहादुर २५ सारी दुनिया २६ मुल्क २७ तलवार २८ नाम बादशाह २९ नाम बादशाह ३० दुनिया ३१ ख़ैरात ३२ बादशाह ३३ ज़मीन ३४ दुनिया ३५ · ३६ · ३७

बरनौं सूर भूमिपति राजा ॥ भूमि न भार सहै जो साजा ॥ 14
हय मय सयन चलय जग पूरी परबत टूटि उड़हि होय धूरी ।
परी रेणु होइ रविहि ग्रासा ॥ मानुष पंख लेहि फिरि बासा
भुई उड़ अंतरिच्छ गई मृतमंडा ऊपर होय छावा मिह मंडा
डोलै गगन इन्द्र डरि कांपा ॥ बासुक जाय पतारहि चापा ॥
भेरु धसमसे समुद्र सुखाई बन खंड टूटि खेह मिलि जाई
अगलहि कहँ पानी गहि बाँटा पिछलहि कहँ नहिं काँदू आँटा

जो गढ़ नये न हँ काहू चलत होय सब चूर
जो वह चढ़ै भूमिपति शेर शाह जगे सूर ॥॥

अदल कहौं प्रथमें जस होय । चाँटा चलत न दुखवै कोय ॥ 15
नौ शेरवाँ जो आदिल कहा ॥ शाह अदल सर सौंहि न अहा
अदल जो कीन्ह उमर की नाई । भई यहाँ सगरी दुनयाई ॥
परी नाथ कोइ छुवै न पारा ॥ मारग मानुष से उजियारा ॥
गऊ सिंह रेंगहि एक बाटा ॥ दोनो पानी पियें एक घाटा
नीर रवीर छानै दरवारा ॥ दूध पानी सब करै निरारा ॥
धर्म न्याव चलै सत भाखा दूबर बरी एक सम राखा ।

सबै प्रथवी अशीसै जोर जोर कै हाथ ॥
गङ्ग यमुन जो लहि जल तौ लहि अमर नाथ

तारीफ़ करना १ बहादुर २ बादशाह ३ ज़मीन ४ थोड़े से भरी हुई ५ फ़ौज ६ दुनया ७ पहाड़ ८ धूर ९ सूर्य्य १० बीच ११ आसमान १२ ज़मीन १३ आसमान १४ नाम साँप १५ पहाड़ १६ जंगल १७ धूर १८ चहला १९ क़िला २० टूटना २१ बादशाह २२ दुनया का सूर्य्य २५ न्याव २४ पहिले २५ चूँटी २६ नाम बादशाह २७ न्याव करनेवाला २८ न्याव २९ बराबर ३० न्याव ३१ नाम ख़लीफ़ा ३२ नाथना ३३ राह ३४ शेर ३५ राह ३६ दूधपानी ३७ अलग ३८ सच्चा ३९ ज़बरदस्त ४० बराबर ४१

16 पुनरूपवंत[1] बरवानों[2] काहा ।। जानवंत जगत[3] सबै मुख जाहा
शसि[4] चौदस जो दई[5] सँवारा । तबहूँ जाहि रूप उजयारा ।।
पाप जाय जो दरशन दीसा । जग[6] जुहार के देत अशीसा
जैसो भानु[7] जग[8] ऊपर तपा । सबै रूप वह आगे छिपा ।।
अस भा सूर[9] पुरुष[10] निरमरा[11] ।। सूर[12] जाहि दस आकर[13] करा ।।
सोहि[14] दृष्ट की हेर[15] न जाई ।। जेहि देखा सो रहा शिर नाई
रूप सवाई दिन दिन चढ़ा । विधि[16] सुरूप जग[17] ऊपर गढ़ा

रूपवंत[18] मन माथे चन्द्र घाट वह बाढ़ि ।।
मेदन[19] दरस लुभानी असतुत[20] बिन बैठाढ़ि ।।

17 पुन दातार[21] दई[22] जग[23] कीन्हा । अस जग[24] दान न काहू दीन्हा
बल[25] औ बिक्रम[26] दानि[27] बड़ कहे । हातिम[28] करण[29] बतागी अहे ।।
शेर शाह सर[30] पीच न कोऊ समुद्र सुमेर[31] भंडारी दोऊ ।।
दान[32] दाग[33] बाजे दरबारा ।। कीरति गई समन्दर पारा ।।
कंचन[34] परस सूर[35] जग[36] भयो । दारिद भागि दसतर[37] गयो
जो कोई जाय एक बेर माँगा । जन्म न होय न भूखा नागा ।
दस अश्वमेध[38] जगत[39] जे कीन्हा । दान पुन्य सर[40] सौंहि न चीन्हा

एसो दान जग[41] उपना शेर शाह सुलतान ।।
ना अस भयो न होय ना कोई दय अरु दान ।

ख़ूब सूरत १ बयान करना २ दुनया ३ चान्द ४ ईश्वर ५ दुनया ६ सूर्य्य ७ संसार ८ बहादुर ९ मर्द १० पाक साफ़ ११ सूर्य्य १२ दसगुना १३ सूधी निगाह १४ देखना १५ ईश्वर १६ दुनिया १७ ख़ूब सूरत १८ आदमी १९ तारीफ़ २० दान देनेवाला २१ ईश्वर २२ दुनिया २३-२४ नाम राजा २५-२६ दान देनेवाले २७ नाम सख़ी २८-२९ बराबर ३० पहाड़ का नाम ३१ नगाड़ा ३२ नेकनामी ३३ पारस पथ्थर ३४ बहादुर ३५ दुनिया ३६-३९-४१ नाम जगह ३७ घोड़ा ३८ बराबर ४०

तारीफ़ सयद अशरफ़ जहाँगीर की

सय्यद अशरफ़ पीर पियारा । जेहि मोहि पंथ दीन्हि उजियारा
लेसा हियें प्रेम करि दिया । उठी जोति भा निरमल हिया
मारग होत जो अँधेरा सूझा । भा उजेर सब जाना बूझा ॥
खार समुन्द्र पाप मोर मेला । बोहत धर्म लीन्हि कय चेला
उन्ह मोर कर बूड़ि कय गहा । पायो तीर घाट जो अहा ॥
जाके ऐसो होय कन्धारा । तुरत बेगि सो पावै पारा
दस्तगीर गाढ़े के साथे । वह अवगाहि दीन्हि तेहि हाथे

जहाँगीर वय चिष्टी निहकलंक जस चान्द
वय मख़दूम जगत के हो वह घर की बान्द

तारीफ़ - सैद अशरफ़ जहाँगीर के बेटे की

उन्ह कर रतन एक निरमरा । हाजी शेख़ सभा गुण भरा
तेहि घर दुई दीपक उजियारे । पंथ दये कहिं दई सँवारे ॥
शेख़ मुहम्मद पून्यो करा । शेख़ कमाल जगत निरमरा
दोउ अचल धव डोले नाहीं । मेरे खखंड न भवा पराही ।
दीन्हि रूप और जोति गुशाईं । कीन्हि खम्भ दुई जग की ताईं
दोहूँ खम्भ टेके सब मही ॥ दोनों के भार सृष्टि सब रही ॥
जेन्हि दरसी औ परसी पाया । पाप हरा निरमल भई काया

मुहम्मद तहाँ निचंत पंथ जिन्ह संग मुराशद पीर
झहिरी नाव औ खेवक बेगि लागि सो तीर ॥

राह १ दिल २ पाक ३ दिल ४ राह ५ नाव ६ हाथ ७ किनारा ८ मल्लाह ९ जल्द १० दुनिया ११ जवाहिर १२ साफ़ १३ राह १४ चाँद १५ दुनिया १६ पाक साफ़ १७ नाम सितारा १८ बीहड़ १९ दुनया २० - २१ पाक २२ बदन २३ राह २४ मल्लाह २५ जल्द २६ किनारा २७

20 गुरु मुह दी खेवक मैं सेवा । चली उताहल जेहिं कर खेवा
अगवा भयो शेख बुरहानू । पंथ लाय मुँहि दीन्हो ज्ञानू ।
अलहदाद भल तिन्ह कर गुरू । दीन दुनी रोशन सुर्ख रू ॥
सैद मुहम्मद कय वे चेला । सिद्धि पुरुष संगम जन्हि खेला
दानयाल गुरु पंथ लखाई ॥ हज़रत ख्वाजा खिजिर तेहिं पाई
भये प्रसन्न वो हज़रत ख्वाजे । यें मेरे जियें सेय्यद राजे ॥
वै सेवन मैं पाय करते ॥ अखरी जीभ प्रेम कब बरते

वे सुगुरू हौं चेला नित बिनवौं भा चेर ॥
उन्ह हुत देखी पाउँ दरस गुँशाई केर ॥ ॥

21 एक नयन कब मुहम्मद कने । सोई बिमोहा जे कब सुने ॥
चान्द जैसो जग बिधि अवतारा । दीन्हि कलंक कीन्हि उजियारा
जग सूझा एके नयना हाँ ॥ उआ सूक जस नखतन माहाँ
जौ लहि अँबहि डाँभ न होय । तौ लहि सुगन्ध बसाय न कोय
कीन्हि समन्द्र पानी जो खारा । तौ अति भयो असूझ अपारा
जो सुमेरु त्रसूल बिनासा । भा कंचन गढ़ लागि अकासा
जौ लहि घरी कलंक नहिं परा । काँच होय नहिं कंचन करा ।

एक नयन जस दरपन औ निस्मल तेहि भाव
सब रूपवंती पाउँ गहि मुख जोहन की चाव

नाव खेनेवाला १ राह २ मर्द कामिल ३ सत संगत ४ राह ५ खुश ६ हमेशा विनती करना ७ ईश्वर ८ आँख ९ मोहि जाना १० दुनया ११ ईश्वर १२ पैदा किया १३ दुनिया १४ आँख १५ नाम सितारा १६ आम्ब १७ दाग़ १८ खुशबू १९ जिसका किनारा न हो २० नाम पहाड़ २१ जिसको महादेव जीने त्रिशूल से खोदा २२ सोने का क़िला २३ दाग़ २४ सोना ख़ालिस २५ आँख २५ आईना २६ साफ़ २७ ख़ूबसूरत २८ मुँह देखना २९

चार मीत[1] कब मुहम्मद पाये । जोरि मिताई[2] सर पहुँचाये ॥ 22
यूसुफ़ मलिक पण्डित बहु ज्ञानी । पहिली बात भेद उन्ह जानी
पुन सलार कादम मति माहाँ । खाँडे[3] सूर उभनत[4] बाहाँ ॥
मियाँ सलोनी सिंह[5] बरयारू । बीर कहत रण खर्ग[6] जुझारू ।
शेख़ बड़ी बड़ि सिद्धि[7] बखाना[8] । के अदेस सिद्धि बड़ वाना ॥
चार्‍यो चतुर दशा[9] गुण पठे । औ सिंह[10] योग गुशाई[11] गढ़े ॥
बृच्छ[12] होय जो चन्दन पासाँ । चन्दन होय बिबिधि तेहि बासाँ

मुहम्मद चार्‍यो मीति[13] मिलि भये जो एके चित्त
यह जग[14] साथ जो बैठे वह जग[15] बिछुरन कित्त

जायस नगर धर्म अस्थानू[16] । तहाँ जाय कब कीन्ह बखानू[17] 23
औ बिनती[18] पण्डितन सों भजा । टूटि सँवार[19] मेर बहु सजा ॥
हौं पण्डितन केर पछ लगा । कुछ कहि चला तबलडी[20] डगा
हियाँ[21] भंडारंग अहै जो पूँजी ॥ खोली जीभ तार की कूँजी ॥
रतन[22] पदारथ बोलय बोला ॥ सुरस[23] पेम मधु[24] भरी अमोला
जेहि की बोल बिरह की घाया । कहि तिन्ह भूख कहाँ तेहि माया
फेरें भेष[25] रहै भा तपा[26] ॥ ॥ धूरलपेटा मानिक[27] छिपा ॥

मुहम्मद कब जो प्रेम की नातन रक्त[28] न हिं मास
जैं मुख देखा सों हँसा सुनी तेहि आये आँस ॥

दोस्त १ दोस्ती २ तलवार बहादुर ३ बलन्द हाथ ४ शेर ज़बरदस्त ५ तलवार ६ मर्द कामिल ७ मशहूर ८ चौदह बिद्या ९ शेर १० ईश्वर ११ पेड़ १२ दोस्त १३ दुनया १४-१५ मकान १६ बयान करना १७ आजज़ी १८ आरास्ता १९ ढोल बजाय के २० दिल २१ जवाहिर २२ मीठे मुहब्बत के भरे हुये २३ शराब २४ सूरज २५ तप करनेवाले २६ मोती वगैरा २७ ख़ून २८

सन नव सै सत्ताइस अहै । कथा अरंभ वेन कब कहै ॥
संगल दीप पद्मनी रानी ॥ रतन सेन चित्तौर गढ़ आनी
अलाउद्दीन देहिली सुलतानू । राघव चेतन कीन्ह बखानू
सुना शाह गढ़ छेंका आई । हिन्दू तुर कहिं भई लडाई ॥
आदि अंत जस कथा आहे । लिख भाषा चौपाई कहे ॥
कब ब्यास रस कंवला पूरी । दूरहि नेरें नेरें दूरी ॥ ॥
नेरें दूर फूल जस काँटा ॥ दूर जो नेरें जस गुड़ चाँटा ॥

भँवर आय बन खंड सों लेइ कंवल की बास
दादुर बास न पावै फूलहिं जो आछी पास

संगल दीप कथा अब गाऊँ । औ सुपद्मनी बरन सुनाऊँ ॥
निरमल दरपन भाँति बिसेखा । जिन्ह जस रूप सो तैसो देखा ।
धनि सुदीप जिन्ह दीपक वारे । औ सुपद्मनी जो दई सँवारे ॥
सात दीप बरने सब लोगू ॥ एकौ दीप न वहु सरै योगू ॥
दया दीप नहिं तस उजियारा । सरन दीप सर होय न पारा ॥
जम्बू दीप कहूँ तस नाहीं ॥ लङ्क दीप सरै पोच न झाईं
दीप गुस सहल आरन परा ॥ दीप महो सहल बाँस हरा ॥

सब संसार और प्रथमी आये सातौं दीप
एक दीप नहिं आ तिम संगल दीप समीप

गन्धर्प सेन सुगन्ध नरेशू । सो राजा वह ताकर देशू
लङ्का सुना जो रावन राजू । तेहू जाहि बड़ ताकर साजू
छप्पन कोटि कटक दल साजा । सबै छत्रपति औ गढ़ राजा

शुरू करना १ नाम भाट २ बयान करना ३ क़िला ४ अव्वल आखिर ५ बूंटी ६ जंगल ७ मेंढक ८ बयान करना ९ साफ़ १० शीशा की तरह ११ ईश्वर १२ बयान १३ बराबर १४ १५ राजा १६ फौज १७

सोरह सहस घोड़ घुड़साग
श्याम करन जस बादर बाग
सात सहस हस्ती सघलो ।।
डमि कैलाश ऐरा पति बली ।।
बस्तु पतीक शिर मोर कहावे
गज पतीक आकुस गज नावे
नर पतीक कहु औरन इन्दू ।
भू पतीक जगे दूसर दुन्दू ।।

ऐसो चकवे राजा चहूखड भू होय ।।।। "
सबै आय शिर नावहीं सरवर करी न कोय ।

जोहि दीप नेरे भा जाय ।।
जनु कैलास तीर भा आय
गहन अम्बराउ लाग चहु पासा
ठाढी भूमि हीत लागि अकासा
तरवर सबै सलेय गिर लाटे
भई जग छाहि रैन न होइ आवे
मिली सुमेर सुहाई छाहीं ।
जेठ जाड़ लागे तेहि माहीं ।
कही छाहि रैन न होय आवै ।
हरियर सबै अकास देखावै
पथक जो पहुचे सहि घामू ।
दुख बिसरे सुख होय बिश्रामू
जिन्ह चहु पड़ि छाहि अनूपा ।
फिरि न आय सही यहि धूपा ।

अस अम्बराउ सघन घन बरनि न पारौ अन्त ।
फरी फूली रहो ऋतु जानहु सदा बसन्त ।

फरे अम्ब अति सघन सुहाये
ओ जस फरी अधिक शिर नाये
कटहर दार पेड़ सो पाके ।।
बड़हड़ सो अनूप अति ताके
खिरनी पाक खाड़ अस मीठी
या मुन पाक भँवर अस डीठी
नरियर फरे फरे खरहरे ।
फरे जानि इन्द्रासन परे ।।

हज़ार १ अस्लवल २ नाम घोडा ३ हज़ार ४ हाथी ५ बराबर ६ नाम पहाड़ ७ नान हाथी राजा इन्द्र ८ पहसवार ९ हाथी सवार १० हाथी ११ राजा १२ १३ १४ दुनका १५ राजा इन्द्र १६ चक्रवती १७ तमाम दुनया १८ बराबर १९ नाम पहाड़ २० गुजान २१ बाग २२ ज़मीन २३ पेड़ २४ चन्दन २५ रात २६ पहाड़ २७ रात २८ मुसाफिर २९ आराम ३० बेमिसाल ३१ बाग ३२ बयान ३३ बहुत ३४

पुन महवा चुवे अधिक[1] मिठास | मधु[2] जस मीठ पुहुप[3] जस बास ॥
औ रव जहजा[4] उन्ह कर नाउँ | देखा सबरानौं अम्बराउँ[5] ॥
लागि सबै जस अमृत साखा | रह लुभाय सोई जो चाखा

लवंग सुपारी जाय फरि सब फर फरे अपूर ।
आस पास घन[6] इमली औ घन[7] तार खजूर

बसहिं[8] परख[9] बोलहिं बहु भाखा | करहिं हुलास[10] देखके साखा
भोर होति बासहिं चहिं चुही | बोलहिं पाँडुक[11] एके तुही ॥
सारो[12] सुआ[13] जो रह चहिं करही | करहिं परेवा[14] और करो रही
पीव पीव करे जो लाग पपीहा | तुही तुही कर गड़रू[15] केहा ॥
कुहू कुहू करि कोयल राखा । | औ बिहंग[16] राज बोल बहु भाखा
दही दही करि महर पुकारा । | हारल बोली आपन हारा ॥
कुहि कहि मोर सुहावन लागा | होय कुराहर बोलहिं कागा ।

जानवंत पखी बन के फिरि बैठे अम्बराउँ[17]
अपनी अपनी भाष ना लीन्ह दई[18] कर नाउँ

पैग[19] पैग[20] पर कुवाँ बावरी ॥ | साजी बैठक[21] औ पाँवरी[22] ॥
और कुंड बहु ठाँवहि[23] ठाँऊँ[24] ॥ | सब तीरथ औ तेहिं के नाउँ ॥
मट मंडफ चहुँ पास सँवारे । | तपा[25] जपा[26] सब आसन मारे
कोइ सु ऋषेश्वर कोइ सन्यासी[27] | कोई रामजती[28] कोई बिसवासी[29]
कोई ब्रह्म[30] चर्य्य पंथ[31] लागे । | कोई सोदि गम्बर[32] अचिन्ह[33] नागे

बहुत १ शहद २ फूल ३ नाम मेवा ४ बाग ५ गुंजान ६-७ चिड़याँ ८ खुशी करना ९ नाम चिड़या १०-११ सारस १२ तोता १३ चिड़पाँ १४ नाम चिड़या १५ दहियड़ १६ बाग़ १७ ईश्वर १८ कदम १९-२० बैटक २१ जीना २२ जगह २३-२४ तप करने वाले २५ जप करने वाले २६ क़िसम फ़क़ीर २७-२८-२९-३० राह ३१ फ़क़ीर ३२-३३

कोइ सु महेश्वर[1] योगी[2] यती[3] | कोइ एक परखै देवी सती ॥
कोइ सरस्वती[4] संत कोइ योगी | कोइ निरास[6] पंथ वैठि बियोगी[7]

सेवरा खेवना बान प्रस्ती सिय[11] साधक अवधूत[12]
आसन मारे वैठि सब पाँच आत्मा भूत ॥

मान[13] सरोवर बरनों[14] काहा । | भरा समुद्र अस अति[15] अवगाहा
पानि मोति अस निरमल[16] तासू | अमृत बरन[17] कपूर सुबासू[18] ॥
लङ्क दीप की शिला अनाई । | बाँधा सरवर[19] घाट बनाई
खराड खराड सीढ़ी भुइँ गरेरे | उतरहिं चढ़हिं लोग चहुँ फेरे ॥
फूला कमल रहा होय राता[20] | सहस[21] सहस परेवरन[22] के छाता
उलटहिं सीप मोति उतराहीं । | चुनहिं हंस औ केलि कराहीं
खनि पतार पानी तहिं काढ़ा | क्षीर समंद निकसा हत हाढ़ा

ऊपर पाल चहूँ दिस[23] अमृत फल सब रूख ।
देखि रूप सरवर[24] की गई पियास औ भूख

पानि भरी आवहिं पनहारी । | रूप स्वरूप पद्मिनी नारी ।
पद्म[25] गन्ध तिन्ह अंग[26] बसाहीं | भँवर लागि तिन्ह संग फिराहीं
लंक[27] सिंघनी औ सारन[28] नयनी[29] | हंस गामिनी[30] कोकिल बयनी[31]
आवहिं झुण्ड सो पाँतहिं पाँती | गवन[32] सुहाय सु भाँतहिं[33] भाँती
कनक[34] कलस[35] मुख चन्द दिपाहीं[36] | रहस केलि से आवहिं जाहीं ॥

किस्म फ़क़ीर १-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२ नाम तालाब १३ तारीफ़ १४ बहुत गहिरा १५ साफ़ १६ रंग १७ खुशबू १८ तालाब १९ सुर्ख़ २० हज़ार २१ चिड़ियाँ २२ चारों तरफ़ २३ तालाब २४ कमल की खुशबू २५ बदन २६ कमर शेरनी कैसी २७ हरिन २८ आँख २९ चाल ३० आवाज़ ३१ चाल ३२ तरह ३३ सोना ३४ घड़ा ३५ चमकना ३६ ख़ुशी से उछलती कूदती ३७

जासों वै हेरैं[1] चख[2] नारी | बाँके नयन[3] जनु हनहिं कटारी
केस[4] मेघावर शिरता पाहीं | चमकहिं दसन[5] बीज[6] की नाईं

माथे कनक[7] गागरी आवहिं रूप अनूप ॥
जेहि की ये पनहारी ती रानी केहि रूप ॥

ताल तलावा बरन[8] न जाहीं | सूझै वार पार कुछ नाहीं
फूली कुमुद[10] कौंत[11] उजियारे | मानहु उये गगन[12] महँ तारे
उतरहिं मेघ चढ़हिं लै पानी | चमकहिं मच्छ बीज[13] की बानी
तैरहिं पंख[14] सुसंगहि संगा ॥ | सेत[15] पीत[16] राती[17] बहु रंगा ॥
चकई चकवा केल कराहीं । | निसक[18] बिछोह दिनहिं मिल जाहीं
करलहिं सारस करहिं हुलासा । | जीवन मरन सुएकहिं पासा
कंपा[19] सों डहनक[20] बक[21] लेदी[22] । | रही अपूर मीन[23] जल भेदी ॥

नग अमोल तेहि तालहिं दिनहिं बराहैं जस दीप
जो मरजिया होय तेहि सो पावै वह सीप ॥

आस पास बहु अमृत वारी[24] । | फरी अपूर होय रखवारी ॥
नारँग नीबू तुरंज[25] जँभीरा | औ बदाम बहु बेद अँजीरा ॥
गुल गुल तुरंज सदा फर फीर | नारँग अति राती[25] रस भरे ॥
किशमिश सेब फरै नौ बाता | डार्यो[26] दाख देखि मन राता[27]
लागि सुहाई हरफार्यो री ॥ | उनय रही केला की घौरी ॥
फरी तूत कमरख औ ब्योजी[28] | राय करौंदा बेर चिरौंजी ॥

देखना १ आँख २-३- बाल ४ दाँत ५ बिजुली ६ सोना ७ बेमिसाल ८ तारीफ़ ९ कोका बेली १० नाम नखत ११ आसमान १२ बिजुली १३ चिड़िया १४ सफ़ेद १५ पीली १६ लाल १७ रात १८ नाम जानवर परन्द मछली पकड़नेवाले १९ – २० – २१ – २२ मछली २३ बागीचा २४ लाल २५ अनार २६ लाल २७ नाम मेवा २८

सुगन्धराव छुहारा दीठे[1] ॥ और खजहजा[2] खाटे मीठे ॥

पानि देहिं खण्डवानी[3] कुवहिं खाँडनहिं मेल
लागी घरी रहँट की सींचहिं अमृत बेल ॥

पुनि फुलवारी लाग चहुँ पासा बृक्ष[4] बेदहि चन्दन भइ बासा
बहुत फूल फूली घन बेली क्योड़ा चम्पा गोंद चमेली ॥
सुरँग गुलाल कदम औ गूजा सुगन्ध बकोरी गन्धप पूजा
जाही जूही बगचन लावा ॥ पुहुप[5] सुदरस न लाग सुहावा ॥
नागेसर सदबर[6] गहवारी ॥ औ सिंगारहार फुलवारी ॥
सुवन ज़र्द बहु फूली सेवती रूप मंजरी और मालती ॥
बोलसरी बेली औ करना । सबै फूल फूल बहु बरना[7] ।

तेहिं शिर फूल चढ़हिं वै जेहि माथे मन भाग
आछे न्ह सदा सुगन्ध बहै जनु बसंत औ फाग

सिंहल नगर दीख पुन बसा धनि राजा अस जाकर दसा ।
ऊँची पँवरी[8] ऊँच उड़ासा[9] । जनु कैलाश इन्द्र कर वासा ।
राव राँग सब घर घर सुखी जो दीखे सो हँसता मुखी
रचि रचि साजें चन्दन चूरा पोती अगर[10] मेद और कपूरा ।
सब चौपारहिं चन्दन खाँभा वहि सभा तब बैठो राजा
जनु सभा देवतहिं की जोरी परी दृष्टि[11] इन्द्रासन पूरी ॥
सबै गुनी औ पण्डित ज्ञाता सं सकृत[12] सब के मुख राता[13]

अलख[14] पंथ सँवारें जनु शिव लोक अनूप[15] ॥
घर घर नारि पद्मनी मोहहिं सब अब[16] छल की रूप

देखना १ खजूर २ माली ३ पेड़ ४ फूल ५ गेंदा ६ रंगबरंग ७ जीना ८ महल ९ केसर १० निगाह ११ संसकृत ज़बान बोलनेवाले १२ लाल १३ ईश्वर की राह १४ बेमिसाल १५ स्वर्ग की औरतें १६

पुन देखी सिंहल की बाटा[1] । नवो निद्धि[2] लक्ष्मी सब हाटा[3]
कनक[4] हाट[5] सब कुहक[6] हिं लीपी । बैठि महाजन सिंहल दीपी ॥
रची हतोड़ा[7] रूपन ढारे ॥ चित्र[8] कटाव अनेक[9] सँवारे[10] ॥
सोन रूप भल भयो पसारा । धवल[11] सिरी पोतहिं घर बारा
रतन[12] पदारथ मानिक[13] मोती । हीरा लाल सँवारे जोती ॥
औ कपूर बेना कस्तूरी[14] । चन्दन अगर रहा भरि पूरी ॥
जिन्ह यह हाट[15] न लीन्ह बिसाहा[16] । ताकहँ आन हाट[17] कित लाहा[18]

कोई करै बिसहना[19] काहा केर बिकाय ॥
कोई चले लाभ[20] सों कोई मूर गँवाय ॥

पुनि सु शृंगार हाट[21] भल देसा । किये शृंगार बैठि तहँ बेसा[22]
मुख तम्बोल शिर चीर कुसुम्भी । कानन कनक[23] जड़ाऊ खुम्भी[24] ।
हाथ बीन सुनि मिरग[25] भुलाहीं । नर मोहहिं सुनि पैग[26] न जाहीं ॥
भौंह धनुक तेहि नयन[27] अहेरी[28] । मारहिं बान सान सों हेरी[29] ॥
अलक[30] कपोल[31] डोल हँस देहीं ॥ लाय कटाक्ष मारजनु लेहीं ॥
कुच[32] कंचुक[33] जानहिं जग[34] सारे । अंचल दीन्ह सुभावहि ढारे ॥
केते खिलार हारे तेहि पासा । हाथ झारि उठि चले निरासा

चेटक[35] लाय हरहिं मन जबलहि होय गँठि फेर ।
साँठ[36] नाठ पुन भई बटाऊ[37] ना पहिचान न भेर ।

राह १ दुनिया की दौलत २ बाज़ार ३ सोना ४ बाज़ार ५ केसर ६ डसड़ी ७ मुसव्वरी ८ बहुत ९ आरास्ता १० चूना ११ जवाहिर १२ मूँगा १३ मुश्क १४ बाज़ार १५ मोललेना १६ बाज़ार १७ फ़ायदा १८ ख़रीदारी १९ फ़ायदा २० बाज़ार २१ बेसवा २२ सोना २३ बाली २४ हिरन २५ क़दम २६ आँख २७ शिकारी २८ देखना २९ बाल ३० गाल ३१ छाती ३२ अंगिया ३३ संसार ३४ जादू ३५ मुफ़लिस ३६ मुसाफ़िर ३७

लै के फूल बैठि फुलहारी[1] ॥ पान अपूरब धरे सँवारी ॥
सोंधा[2] सबै बैठि लै काँधे ॥ भल कपूर खरेरी[3] बाँधे ॥
कतहूँ पण्डित पढ़ै पुरानू ॥ धर्म पंथ कर करहिं बखानू[5] ॥
कतहूँ कथा कहै कुछ कोई ॥ कतहूँ नाच कूद भल होई ॥
कतहुँ चहरहटा[6] पंखी लावा ॥ कतहूँ पाखंड नाच न चावा ॥
कतहूँ नाद[7] शब्द[8] हो भला ॥ कतहूँ नाटक[9] चेटक[10] कला ॥
कतहूँ काहू ठग विद्या लाय ॥ कतहूँ मानुष लीन्ह बौराय ॥

चरपत[11] चोर दूत[12] गढ छोरा मिले रहहिं तेहिं पाँच ।
जो बहु भाँति सजग[13] भा अगमन गढ[14] ताकर पै बाँच

पुनि आई सिंहल गढ़ पासा ॥ काबरनों[15] जनु लाग अकासा
तरहिं[16] करहिं बासुक[17] की पीठी ॥ ऊपर इन्द्र लोक परदीठी[18] ॥
परा खाँह[19] चहुँ दिस[20] सब बाँका । कापै जाँघ जाय नहिं झाँका
अगम[21] असूझ देखि डर खाये । परै सुसप्त[7] पतारहिं जाये ॥
नव पवरी[22] बाँकी नव खंडा ॥ नवो जो चढ़ै जाय ब्रह्मंडा ॥
कंचन[23] कोट जड़े नग शीसा ॥ नखतहिं भरी बीज[24] पुनि दीसा
लङ्का जाहि ऊँच गढ़[25] ताका ॥ निरखि[26] न जाय दृष्टि[27] मन थाका

हिव[28] न समाय दृष्टि[29] नहिं पहुँचे जानहिं ठाढ़ सुमेर[30]
कहँ लग कहौं उचाई कहँ लग बरनौं[31] फेर ॥

तत गढ़ बणिज[32] चलै जग सूरू । नाहित होय बाज रथ चूरू ॥

माली १ हलवाई २ लड्डू ३ राह ४ बयान करना ५ बाज़ीगर ६ गाना ७ आवाज़ ८ करनाटक ९ जादू १० मक्कार ११ चुगुल १२ होशियार १३ गाँठी १४ तारीफ़ १५ जड़ १६ नामसाँप ७ देखना १८ खाई १९ चारों तरफ २० मुशकिल २१ सीढ़ी २२ सोने का क़िला २३ बिजुली २४ किला २५ देखना २६ नज़र २७ दिल २८ निगाह पहाड़ ३० तारीफ़ ३१ सौदागर ३२

पवरी[1] नवो बज्र[2] की साजे ॥ सहस[3] सहसत[4] ह बैठे पाजे[5]
फिरै पाँच कुतवार सुभँवरी ॥ काँपै पाउँ चापत वे पवरी[6] ॥
पवरहिं[7] पवर[8] सिंह[9] गढ़ गाढ़े ॥ डरपहिं राय[10] देखि तह ठाढ़े ॥
बहु बनान वै नाहर[11] गढ़े ॥ जनु गाजहिं चाहहिं शिर चढ़े
टारहिं पूँछ पसारे जीहा ॥ कुंजल[12] डरहिं कि गंजर लीहा ।
कनक[13] सिला गढ़ सीढ़ी लाई जगमगाहिं गढ़[14] ऊपर ताई

नवौ खण्ड नव पवरी[15] औ तह बज्र[16] के वार ।
चार बसेरे[17] सो चढ़ै सत[18] सो उतरै पार ॥ ॥

नव[19] पवरी पर दसौ[20] दुवारा । तेहि पर बाज राज घरियारा ॥
घड़ी सो बैठि गिने घरियारी भरी सु अपनी अपनी बारी ॥
जोहि घड़ी पूजे वह मारा । घड़ी घड़ी घरियार पुकारा ॥
परा जो डाड़[21] जगत[22] सब डाड़ा कानि[23] चित माटी[24] करि भाँड़ा
तुम्ह तेहि चाक चढ़े हौ काँची अबहिं न फिरी न थिर होय वाँची
घड़ी जो भरी घटी तुम आऊ[25] कानि[26] चित सोवै जो बटाऊ[27] ॥
पहरहिं पहर गजर नित[28] होई हिया न सोगा जाग न सोई ॥

मुहम्मद ज्यों जल भरन रहट घड़ी की रीति
घड़ी जो आई ज्यों भरी ढरी जन्म गा बीति

गढ़ पर नीर[29] क्षीर[30] दुइ नदी ॥ पानि भरै जैसे दुरपदी ॥
और कुराड एक मोती चूरू पानी अमृत कीच कपूरू ॥

मकान १ पत्थर २ हज़ार ३-४ पियादा ५ महल ६-७-८- शेर ९ मर्द १० शेर ११ हाथी मस्त १२ सोना १३ क़िला १४ मकान १५ पत्थर १६ मुक़ाम १७ सचाई १८ नव मकान तथा ९ इन्द्री वदन की १९ दसवाँ दरवाज़ा तथा ब्रह्माण्ड २० गोटा वानुक़सान २१ दुनिया २२ गाफ़िल २३ आदमी २४ उमर २५ गाफ़िल २६ मुसाफ़िर २७ हमेशा २८ पानी २९ दूध ३०

वहाँ का पानी राजा पै पिया । बृद्ध[1] होय नहिं जब लग जिया ।
कंचन[2] बृक्ष एक तेहिं पासा जस कल्पतरु[3] इन्द्र कैलाशा ॥
मूल[4] पतार स्वर्ग[5] वह सारवा । अमर बेल को पाव को चारवा ॥
चन्द्र पात[6] औ फूल तराईं[7] ॥ होय उज्यार नगर जहँ ताईं ॥
वै फल पावै तप करि कोई । बृद्ध[7] खाय नव जोबन[8] होई ॥

राजा भये भिखारी सुनि वह अमृत भोग ॥
जे पावा सो अमर[9] भा न कुछ व्याध नहिं रोग

गढ़[10] पर बसहिं चार[4] गढ़ पती ॥ अश्वपति[11] गजपति[12] भुइँपति[13] औ नरपती[14]
सबक धौराहर[15] सोने साजा ॥ और अपने अपने घर राजा ॥
रूपवंत[16] धनवंत[17] सभागी[18] ॥ परस[19] पखान पवर[20] तेहिं लागी
भोग परास[21] सदा सब माना । दुख चिन्ता कोइ नहिं जाना ।
मंदिर मंदिर सब के चौपारी बैठि कुँवर सब खेलहिं सारी[22] ।
पासा ढरहिं खेल भल होय खर्गवान सर[23] पूज न कोय ।
भाट बरनक[24] हिं कीरति[25] भली पावहिं हस्त[26] घोड़ संघली ॥

मंदिर मंदिर सब की फुलवारी चौवा चन्दन वास
निस[27] दिन रहै बसंत वहाँ छहि ऋतु बारह मास

पुनि चलि देखा राज द्वारा । मानुष फिरहिं पाय नहिं बारा[28]
हस्त[29] संघली बाँधे बारा ॥ जनु सजीव[31] सब ठाढ़ि पहाड़ा

बूढ़ा १ सोने का पेड़ २ नाम दरख़्त जो स्वर्गलोक में है ३ जड़ ४ आसमान ५ पत्ता ६ नखत ७ नौजवान ८ हमेशा ९ क़िला १० घोड़े का सवार ११ हाथी सवार १२ ज़मीन का मालिक १३ राजा १४ महल १५ ख़ूबसूरत १६ दौलतमन्द १७ नसीबवर १८ पारस पथ्थर १९ दरवाज़ा २० हँसी ख़ुशी २१ चौसर २२ बराबरी २३ तारीफ़ २४ नेकनामी २५ हाथी २६ रात २७ दख़ल २८ हाथी २९ दरवाज़ा ३० जानदार ३१

कवन्यों सेत[1] पीत[2] रतनारे[3] । । कवन्यों हरी धूम[4] अस कारे ॥
बरन[5] बरन गगन[6] जस मेघा । उठहिं गगन[7] बैठि जनु ठेघा[8]
संघल के बरने[9] संघले ॥ इक इक चाह सो इक इक बले
गिरि[10] पहाड़ परबत कहिं पेलहिं बृक्ष उचारि झारि मुख मेलहिं
मत्त[11] मतंग सब गरजहिं बाँधे । निस[12] दिन रहहिं महावत काँधे

धरती[13] भार न अँगोही पाँव धरत उठ हाल ॥
कूर्महि[14] दूटि भुइँ फाटी तेहि हस्तहिं[15] की चाल

पुनि बाँधे उज्यार तुरंगा[16] । का बरनौं[17] जस उनके रंगा ॥
लेल[18] समन्द[19] चाल जग जाने हाँसल[20] बोर[21] क्याहि बखाने[22]
परी[23] कुरंग[24] महो[25] बहु भाँती । करर[26] कोकलाह[27] बलाह[28] सुपाती
तीख[29] तुखार[30] चान्द औ बाँके तड़पहिं तबहिं बाजी[31] बिन हाँके
मन ते अगम[32] न डोलहिं बागा देत उसास गगन[33] शिर लागा
पावहिं साँस समुद्र परधावहिं बूड़ि न पावँ पार होय आवहिं
थिर न रहैं रिस लोभ चबाहीं भाजहिं पूँछ सीस[34] उपराहीं ॥

अस तुखार[35] सब देखे जनु मन के रथवाहि[36]
नयन[37] पलक पहुँचा वहीं जहिं पहुँचा केहि चाहि

राजसभा सब देखे बैठे ॥ इन्द्र सभा जनु परगई डीठे[38] ॥
धनि राजा अस सभा सँवारी जानहु फूल रही फुलवारी

सफ़ेद १ ज़र्द २ लाल ३ धुवाँ ४ रंगबरंग ५ आसमान ६-७ पहाड़ ८ बयाम करना ९ पहाड़ १० मस्त ११ रात १२ ज़मीन १३ कछुवा १४ हाथी १५ घोड़ा १६ तारीफ़ १७ नामरंग घोड़ा १८-१९-२०-२१ बयान करना २२ नामरंग घोड़ा २३-२४-२५-२६-२७-२८ शोख २९ घोड़ा ३०-३१ पहिले ३२ आसमान ३३ शिर ३४ घोड़ा ३५ गाड़ीबान ३६ आँख ३७ निगाह ३८

मुकुट बन्द सब बैठे राजा । दर[1] निसान सब जोहँ के साजा ।
रूपवंत[2] मन दिपै लिलाटा[3] माथे छात बैठि सब राजा ॥
जानो कमल सरोवर[4] फूले सभा कि रूप देखि मन भूले
पान कपूर मेद[5] कस्तूरी[6] ॥ सुगन्ध बास भरि रही अपूरी ।
माँझ[7] ऊँच इन्द्रासन साजा गन्धप सेन बैठि तहँ राजा ॥

क्षत्र गगन[8] लग ताकर सूर[9] दिपै तस आप ॥
सभा कमल जनु बिगसी[10] माथे बड़ परताप ॥

साजा राज मंदिर कैलासू । सोने का सब भूमि[11] अकासा
सात[7] खण्ड धवराहर[12] साजा । वही सँवार सकै अस राजा
हीरा ईंट कपूर गिलावा ॥ औ नग लाय स्वर्ग[13] लय लावा
जानवंत सबै उरेह[14] उरेहे ॥ भाँत[15] भाँत नग लाग उबेहे
भा कटाव सब आनहु भाँती[16] चित्र[17] कटाव सो पाँतहि पाँती
लाग खम्भ मणि माणिक जड़े निस[18] दिन रहै दीप जनु बरे ॥
देखि धौराहर[20] कर उज्यारा छिपि गये चाँद सूर्य्य औ तारा

साजी साज बैकुण्ठ जस तस साजी खंड सात ।
बीहर[21] बीहर भाव तस खंड खंड ऊपर जात ॥

बरनौं[22] राज मंदिर रणिवासू ॥ अप्स[23] रहिं भरा जान कैलाशू
सोरह सहस[24] पद्मनी रानी ॥ एक एक तें रूप बखानी ॥
अति स्वरूप औ अति सुकुमारी पान फूल की रहहिं अधारी[25]
तेहिं ऊपर चम्पावत रानी ॥ महा सुरूप पाँड[26] परधानी

फौज १ खूबसूरत २ माथा ३ तालाब ४ केसर ५ मुश्क ६ बीचौबीच ७ आसमान ८ सूर्य्य ९ खिलना १० ज़मीन ११ महल १२ आसमान १३ छाटना १४ तरह बतरह १५-१६ तसवीर १७ जवाहरात १८ रात १९ महल २० अलग २१ बयान करना २२ स्वर्ग की नारी २३ हज़ार २४

कवन्यों सेत[1] पीत[2] रतनारे[3] । । कवन्यों हरी धूम[4] अस कारे ॥
बरन[5] बरन गगन[6] जस मेघा । उठहिं गगन[7] बैठि जनु ठेघा[8]
संघल के बरने[9] संघले ॥ इक इक चाह सो इक इक बले
गिरि[10] पहाड़ परबत कहिं पेलहिं बृक्ष उचारि झारि मुख मेलहिं
मत्त[11] मतंग सब गरजहिं बाँधे । निस[12] दिन रहहिं महावत काँधे

धरती[13] भार न अँगोही पाँव धरत उठ हाल ॥
कूर्महि[14] टूटि भुइँ फाटी तेहि हस्तहिं[15] की चाल

पुनि बाँधे उज्यार तुरंगा[16] । का बरनौं[17] जस उनके रंगा ॥
लेल[18] समन्द[19] चाल जग जाने हाँसल[20] बोर[21] क्याहि बखाने[22]
परी[23] कुरंग[24] महो[25] बहु भाँती । करर[26] कोकलाह[27] बलाह[28] सुपाती
तीख[29] तुखार[30] चान्द औ बाँके तड़पहिं तबहिं बाजी[31] बिन हाँके
मन ते अगम[32] न डोलहिं बागा देत उसास गगन[33] शिर लागा
पावहिं साँस समुद्र परधावहिं बूड़ि न पावँ पार होय आवहिं
थिर नरहिं रिस लोभ चवाहीं भाजहिं पूँछ सीस[34] उपराहीं ॥

अस तुखार[35] सब देखे जनु मन के रथवाहि[36]
नयन[37] पलक पहुँचावहीं जहिं पहुँचा केहि चाहि

राजसभा सब देखे बैठे ॥ इन्द्र सभा जनु परगई डीठे[38] ॥
धनि राजा अस सभा सँवारी जानहु फूल रही फुलवारी

सफ़ेद १ ज़र्द २ लाल ३ धुवाँ ४ रंगबरंग ५ आसमान ६-७ पहाड़ ८ बयाम करना ९ पहाड़ १० मस्त ११ रात १२ ज़मीन १३ कछुवा १४ हाथी १५ घोड़ा १६ तारीफ़ १७ नामरंग घोड़ा १८-१९-२०-२१ बयान करना २२ नामरंग घोड़ा २३-२४-२५-२६-२७-२८ शोख २९ घोड़ा ३०-३१ पहिले ३२ आसमान ३३ शिर ३४ घोड़ा ३५ गाड़ीबान ३६ आँख ३७ निगाह ३८

मुकुट बन्द सब बैठे राजा । दर[1] निसान सब जोहँ के साजा ।
रूपवंत[2] मन दिपै लिलाटा[3] माथे छात बैठि सब राजा ॥
जानो कमल सरोवर[4] फूले सभा कि रूप देखि मन भूले
पान कपूर मेद[5] कस्तूरी[6] ॥ सुगन्ध बास भरि रही अपूरी ।
माँझ[7] ऊँच इन्द्रासन साजा गन्धप सेन बैठि तहँ राजा ॥

क्षत्र गगन[8] लग ताकर सूर[9] दिपै तस आप ॥
सभा कमल जनु बिगसी[10] माथे बड परताप ॥

साजा राज मँदिर कैलासू । सोने का सब भूमि[11] अकासा
सात[7] खण्ड धवराहर[12] साजा । वही सँवार सकै अस राजा
हीरा ईंट कपूर गिलावा ॥ औ नग लाय स्वर्ग[13] लय लावा
जानवंत सबै उरेह[14] उरेहे ॥ भाँत[15] भाँत नग लाग उबेहे
भा कटाव सब आनहु भाँती[16] चित्र[17] कटाव सो पाँतहि पाँती
लाग खम्भ मणि माणिक जड़े निस[18] दिन रहै दीप जनु बरे ॥
देखि धौराहर[20] कर उज्यारा छिपि गये चाँद सूर्य्य औ तारा

साजी साज बैकुण्ठ जस तस साजी खँड सात ।
बीहर[21] बीहर भाव तस खंड खंड ऊपर जात ॥

बरनौं[22] राज मँदिर रणिवासू ॥ अप्स[23] रहिं भरा जान कैलाशू
सोरह सहस[24] पद्मनी रानी ॥ एक एक तें रूप बखानी ॥
अति स्वरूप औ अति सुकुमारी पान फूल की रहहिं अधारी[25]
तेहिं ऊपर चम्पावत रानी ॥ महा सुरूप पाँड[26] परधानी

फौज १ खूबसूरत २ माथा ३ तालाब ४ केसर ५ मुश्क ६ बीबीबी च ७ आसमान ८ सूर्य्य ९ खिलना १० ज़मीन ११ महल १२ आसमान १३ छाटना १४ तरह बतरह १५-१६ तसवीर १७ जवाहरात १८ रात १९ महल २० अलग २१ बयान करना २२ स्वर्ग की नारी २३ हज़ार २४

पाट[1] बैठि रहि किये सिंगारू ॥ सब रानी वह करहिं जुहारू ॥
नित[2] नवरंग अंकम सोई ॥ प्रथम[3] बय सन शिर पर कोई ॥
संघल दीप महँ जेती रानी ॥ तिन्ह महँ कनिक[4] सुवारहवानी

कुँवरबती सो लक्षणी अस सब माँह अनूप[5]
जानवत सघल दीपी सबै बखानी[6] रूप ॥

चंपावत जो रूप मन माहाँ ॥ पद्मावत की जोति की छाहाँ ॥
भई चाहै अस कथा बोनी ॥ मेटि न जाय लिखी जस होनी ।
संघल दीप भयो तब नाऊँ ॥ जो अस दिया बरा तेहि ठाँउ[7] ॥
प्रथम[8] सो जोति गगन[9] निरमई । पुनि सुपिता माथे मन भई ॥
पुनि वह जोति माता घट[10] आई ॥ तिनहि उदर[11] आदर बहु पाई
जस अवधान[12] पूर होय मासू ॥ दिन दिन हिये होय परकाशू[13]
जस अंचल महँ छिपाये दिया ॥ तस उज्यार दिखावे हियाँ[14]

सोने मन्दिर सँवारा औ चन्दन सब लीप ।
दिया जो मन शिव लोक महँ उपना[15] संघल दीप

भये दश मास पूरि भई घड़ी ॥ पद्मावत कन्या अवतरी[16] ॥
जानो सूर्य्य किरन हत गाढ़ी ॥ सूर्य्य किरा घाट वह बाढ़ी
भानिस[17] माहँ दिनक परकाशू[18] ॥ सब उजियार भयो कैलाशू
इतनी रूप मूरत प्रकटी[19] ॥ पून्यों[20] शसि सुखी[21] न होय घटी
घटतेह घटत अमावस भये ॥ दिन दुई लाज गाड़ भुई गये
पुनि जो उठी दुइज होय उये ॥ शशि निकलंक विधि[22] निरमये

तखत १ हमेशा २ पहिली उमर ३ सोना खालिस ४ बेमिसाल ५ बयान करना ६ जगह ७ पहिले ८ आसमान ९ पेट १०-११ महल १२ रोशनी १३ दिल १४ पैदा होना १५-१६ रात १७ रोशनी १८ जाहिर होना १९ पूरन मासी का चान्द २० पतला २१ ईश्वर २२

पद्मगन्ध[1] बेधी जग बासा ॥ भँवर पतंग भवे चहुँ पासा ॥

इतनी रूप भई कन्या जेहिं स्वरूप नहिं कोय
धन सुदेस रूपवंता जहाँ जन्म अस होय ॥

भई छठ रात छठी सुख मानी रहस कूद सों रयन बिहानी
भा बिहान पण्डित सब आये काढ़ पुराण जन्म अरथाये ॥
उत्तम[3] घड़ी जन्म भा तासू चान्द उआ भुई दिपा अकासू
कन्या रास उदय जग[4] किया पद्मावती नाम जस दिया ॥
सूरे पुर्ब सों भयो गुरेरा[5] ॥ किरन जाम उपना[7] नग हीरा ॥
तेहि तें अधिक[8] पदारथ करा रतन जोगि उपना[9] निरमरा[10]
संघल दीप भयो अवतारू[11] जम्बू दीप जाय जमवारू[12]

रामा आय अयोध्या उपने[13] लखणावती सों संग ।
राजा राउ रूप सब भूले दीपक जैसो पतंग ॥

आय जन्मपत्री जो लिखी ॥ दय अशीस फिरे जोतषी
पाँच बरष महँ भई जो बारी ॥ दीन्ह पुराण पढ़ै बैसारी ॥
भई पद्मावत पण्डित गुनी चहूँ खण्ड के राजहिं सुनी
संगल दीप राज घर बारी ॥ महा स्वरूप दई[14] अवतारी[15]
एक पद्मन औ पण्डित पढ़े ॥ वेहिं कहँ योग गुशाईं[16] गढ़े
जा कहँ लिखी लक्ष[17] अस होनी सो अस पाव पढ़ी औ लोनी[18] ॥
सप्त[19] दीप के बर जो आवहिं ॥ उत्तर पावहिं फिर फिर जावहिं

राजा कहै गर्ब[20] किये हौं इन्द्र शिव लोक ॥ ॥
को सरबर[21] है मोसों का सों करौं बिरोक[22] ॥

कमल की खुशबू १ रात २ अच्छी ३ दुनिया ४ सूर्य्य ५ मुलाक़ात ६ पैदा ७ बहुत ८ पैदा ९ पाक १० पैदा ११ मरना १२ पैदा होना १३ ईश्वर १४ पैदा किया १५ ईश्वर १६ रेखा १७ खूब सूरत १८ मातों मुल्क १९ ग़रूर २० बराबर २१ टीका २२

बारह[12] बरष माहँ भइ रानी | राजैं सुना सँयोग सयानी ॥
सातखण्ड धवराहर[1] तासू । | सो पद्मन कहँ दीन्ह उड़ासू[2] ॥
औ दीन्ही सँग सखी सहेली | जो सँग करैं रहस रस केली
सबै नवेल[3] पी संग न सोई ॥ | कमल पास जनु बिगसीं[4] कोई
सुआ एक पद्मावत ठाऊँ[5] ॥ | महा पण्डित हीरामन नाऊँ
दई[6] दीन्ह परंव[7] अस जोती | नयन[8] रतन मुख माणिक[9] मोती
कंचन[10] बरन सुआ अति लोना[11] | मानो मिला सुहागहि सोना

रहहिं एक संग दोऊ पढ़ैं शास्त्र और वेद ॥ ॥
पढ़ना सीस[12] डुलावहीं सुनत लाग तस भेद ॥

भई अनंत पद्मावत बारी | रचि रचि बिधि[13] सब कला सँवारी
जग[14] बेधा तेहँ अंग सुबासा | भँवर आय लुब्धे[15] चहुँ पासा
बेनी[16] नाग मलय[17] गिर पीठी । | शसि[18] माथे होय दुइज पैठी
भौंह धनक साध सर[19] फेरे | नयन[20] कुरंग[21] भूल जनु हेरे
नासक[22] कीर[23] कमल मुख सोहा | पद्मन रूप देखि जग[24] मोहा ॥
माणिक[25] अधर[26] दसन[27] जनु हीरा | हिय[28] हुलसे कुच[29] कनिक[30] जँभीरा
केहर[31] लंक गवन[32] गज हरी ॥ | सुर नर देख माथ भुइँ धारी

जग[33] कोउ दृष्टि[34] न आवै अ[35] प्सरन होय अकास
योगी जती सन्यासी तप साधहिं तेहि आस ॥

महल १ मकान २ कुआरी ३ फूलना कोका बेली का ४ जगह ५ ईश्वर ६ जानवर ७ आँख ८ मूँगा ९ सोने का रंग १० खूबसूरत ११ शिर १२ ईश्वर १३ दुनिया १४ गूँजना १५ चोटी १६ चन्दन १७ चान्द १८ तीर १९ आँख २० हिरन २१ नाक २२ तोता २३ संसार २४ मूँगा २५ होंठ २६ दाँत २७ दिल खुश होना २८ छाती २९ सोना ३० चीते की कमर ३१ चाल हाथी की ३२ दुनिया ३३ निगाह ३४ इन्द्रपरी ३५

राजैं सुना दृष्टि भई आना | बुधजोदे संघसुआसयाना
भयो रजायस मारहिं सुआ | सवरे सुना चांद जहँ उआ
शत्रु सुआके नाऊ बारी ॥ | सुनि धाये जस धाय मजारी
तब लग रानी सुआ छिपावा | जब लग आव मजारी न पावा
पिता की आयस माथे मोरे | कहो जाय विनवे कर जोरे ॥
पंख न कोई होय सुजानू | जाने भुक्ति कि जानि उड़ानू
सुआ जो पठै पठाये बयना ॥ | तेहि कत वध जहि हियेन नयना

माणिक मोती देखावह हिये न ज्ञान कर लेय ॥
डारयों दाख छांड के आंब ठौर फर लेय ॥॥॥

वै तो फिरी उतर अस पावा | बिनवा सुयें हिये डरखावा
रानी तुम जुग जुग सुख पाऊ | हो अज्ञा वन बास कहँ जाऊ
मोती जो मलीन होय कला | पुनि सो पान कहाँ निरमला
ठाकुर अंत चहै जेहि मारा ॥ | तेहि सेवक कहि कहाँ उबारा ॥
जहि घर काल मजारी नाचा | पंखहि नांउ जीव नहिं बांचा
मैं तुम राज बहुत सुख देखा | जो पूंछहि दिये जाय न लेखा
जो इच्छा मन कीन्ह सुजेवा | यह पछताव चल्यों बिन सेवा

मारै सुई निसोगा डरै न अपनी दोस ॥ ॥
केला अकेल करै का जो भयो बेर परोस ॥

निगाह १ अक़िल २ तोता ३ हुक्म ४ तोता ५ दुश्मन ६ तोता ७ बिल्ली ८ तोता ९ बिल्ली १० बाप ११ हुकुम १२ अरज़ करना १३ हाथ जोड़ना १४ अक़लमन्द १५ खाना १६ तोता १७ बोली १८ मारना १९ आंख २० मोती २१ दिल २२ अनार २३ अंगूर २४ जवाब २५ दिल २६ हुक्म २७ पाक २८ बिल्ली २९ जानवर परन्द ३० हिसाब ३१ चाहना ३२ बेग़म ३३ पाप ३४ बेरी का पेड़ ३५

रानी उत्तर[1] दीन्ह कै मया[2] ॥ जो जीव जाय रहै किम कया[3]
हीरामन तू प्रान परेवा[4] ॥ धोख न लाग करत तेहि सेवा ॥
तुहि सेवा बिछुरन नहिं आखो[5] पीजर हिये[5] घाल कै राखो ॥
हौं मानुस तू पंख[6] पियारा धर्म प्रीति तहाँ को मारा ॥
का प्रीति तन हमाहँ बिलाय सोई प्रीति जिय साथ जो जाय
प्रीति भार ली हिये[7] न सोचू ॥ वही पंथ भल होय कि पोचू ॥
प्रीति पहाड़ भार जो काँधा किन तेहि छूट लाय जीव बाँधा

सुआ[8] न रहै खुरक[9] जी अबहूँ काल सो आव ॥
शत्रु[10] अहै जेहि करया[11] कोह सो बूड़ी नाव ॥ ॥

खंड तीसरा स्नान खंड पद्मावत

एक दिवस[12] कवन्यों तहँ आय मानू[13] सरोवर चली अन्हाय
पद्मावत सब सखी बुलाई ॥ जनु फुलवार सबै चलि आई ॥
कोई चंपा[14] कोई गोंद[15] सहेली ॥ कोइ सुकेत[16] करुना[17] रस बेली[18] ॥
कोइ सुगुलाल[19] सुदरसन[20] राती कोई बकाउ[21] बकचन[22] भाँती
कोई सो बोलसर[23] पुह पावती[24] ॥ कोइ जाही[25] जूही सेवती[26] ॥ ॥
कोई सुअन[27] ज़र्द ज्यों केसर[28] ॥ कोई सिंगार[29] हार नागेसर[30] ॥
कोई कूजा[31] कोई सतबर्ग[32] चवेली[33] कोई कदम[34] सुरस रस बेली ॥

चली सबै मालती[35] संग हि फूली कमल कुमोद[36]
बेध रही गुन गन्धर्प बास बरमला मोद ॥ ॥

जवाब १ मेहरबानी २ बदन ३ जानवर परन्द ४ दिल ५ जानवर परन्द ६ दिल ७ तोता ८ अंदेशा भरा ९ दुशमन १० मल्लाह ११ दिन १२ नामतालाब १३ नाम फूल १४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-२१-२२-२३-२४-२५-२६-२७-ज़ाफ़रान २८ नाम फूल २९ ३०-३१-३२-३३-३४-३५ कोका बेली ३६

खेलत मान[1] सरोवर गइ ॥ जाय पाल[2] पर ठाढ़ी भइ ॥
देख सरोवर[3] ही केली ॥ पद्मावत सो कहहिं सहेली
एरानो मन देखु बिचारी यह नैहर रहना दिन चारी ॥
जब लग अहै पिता[4] कर राजू खेल लेहु जो खेलहि आजू
पुनि सासुर हम गवनब[5] काले कित हम कित यह सरवर[6] पाले[7]
कित आवन पुनि आपन हाथा कित मिलके आवब एक साथा
सासननद बोलहिं जिव लेही दारुन[8] शुल्क मनि सरे देही ॥

पीव पियार सब ऊपर सो पुनि करै वह काहि ॥
तेहि सुख राखहि की दुख वहँ कस जन्म निवाह

सरवर[9] तीर पद्मनी आई ॥ खोपा[10] छोड़ केस बिखराई ॥
ससि[11] मुख अंग[12] मली[13] गर रानी नागहँ झाप लीन्ह अरघानी
उनई घटा परा जग[14] छहा ससि[15] की सरन लीन्ह जनु राहा
छिप गये दिन भानु[16] की दसा तेहि निस[17] नरवत चाँद प्रगसा[18]
भूल चकोर दृष्टि[20] तेहि लावा ॥ मेघ घटा महँ चन्द दिखावा ॥
दसन[21] दामनी[22] कोकिल[23] भाखै भौंहि धनक[24] गगन[25] ले राखै
नयन[26] खंजन दुइ केल करेही ॥ कुच[27] नारंग मधुकर रस लेहा ॥

सरोवर[28] रूप विमोहा हिये[29] हिलोर कर ले
पाउँ छुवे मग[30] पाउँ तन मन लहरें दे

धरी तीर सब कंचुक[31] सारी सरवर[32] महँ पैठी सब वारी ॥

नाम तालाब १ किनारा २ तालाब ३ बाप ४ नाना ५ तालाब ६ किनारा ७ मुशकिल ८ तालाब ९ चोटी १० चाँद ११ वदन १२ चन्दन १३ दुनिया १४ चाँद १५ सर्य्य १६ रात १७ खिलना १८ निगाह १९ दाँत २० बिजुली २१ कोकिला की सी बोली २२ आसमान २४ आँख २५ छाती २६ मधुर २७ तालाब २८ दिल २९ शायद ३० छाती ३१ तालाब ३२

पानी तीर जानि सब बेलैं ॥ हुलसहिं करहिं काम की केलैं
करल केस विसहर बिस भरे लहरें लेहिं कमल मुख धरे
62 नवल बसंत सँवारे करी ॥ होय प्रगट जानुहि रस भरी
उठी कोप जस डार्यो दाखा ॥ भई अतंत प्रेम की साखा ॥
सरवर नहिं समाय संसारा ॥ चाँद न्हाय बैठि लिये नारा ॥
धन सुनीर ससि तरई उई अब कित दृष्टि कमल औ कोई

चकई बिछुर पुकारी कहाँ मिलहो नाहँ ॥
एक चन्द निस स्वर्ग महँ दिन दूसर जल माहँ

लागी केल करै मँझ नीरा हँस लजाय बैठि होय तीरा ॥
पद्मावत कौतुक कहँ राखे ॥ तुमहिं ससि होहिं तराँय नहिं राखे
63 बादमेल के खेल पसारा ॥ हार देय जो खेलत हारा ॥
सवरहिं साँवर गोरहिं गोरी ॥ आपन आपन लीन्ह सा जोरी
बूझौ खेल खेलो एक साथा हार न होय परायें हाथा ॥
आजहिं खेल बहुर कित होय खेल गई कित खेले कोय
धन सो खेल खेल रमपे खेताई और कुसल क्षेमा

मुहम्मद बार प्रेम की ज्यों भावै त्यों खेल ॥
तेलहिं फूलहिं संग ज्यों होव फुलायल तेल

सखी एक तैं खेल न जा भई अचेत मन हार गवाता
64 कमल डार गह भई बिकराता कासों पुकारों आपन हारा
कित खेले आयों एक साथा हार गँवाय चल्यों ले हाथा

खुश होना १ मुलायम २ बाल ३ साँप ४ कली ५ जाहिर ६ अनार ७ अंगूर ८ तालाब ९ पानी १० चाँद ११ नखत १२ निगाह १३ कोका बेली १४ रात १५ आसमान १६ बीच १७ पानी १८ किनारा १९ तारा २० चाँद २१ नखत २२ ठकुराई २३ खैरयत २४ बेहोश २५ बेकरार २६

घर पैठत पूँछव यह हारू ॥ कौन उतर[1] पावव पैसारू
नयन[2] सीप आँसू तस भरे जानो मोति गिरहिं सब ढुरे ॥
सखिन कहा बौरी कोकिला कोन पानी जहि पवन[2] नहि मिला
हार गँवाय सो ऐसे रोवा ॥ ॥ हरे हेराय लेव जो खोवा ॥

लागीं सब मिल हेरी बूड़ बूड़ एक साथ
कोई उठी मोती ले काहो प्योथा हाथ

कहा मान सर चहा सुपाई ॥ पारस रूप यहाँ लगि आई
भा निरमल तेहि पायन परसें पावा रूप रूप के दरसे ॥ ॥
मली समीर बास तन आई ॥ भा सीतल गइ तपन बुझाई
ना जानो कौन पवन ले आवा । पुन्य दसा भइ पाप गंवावा ॥
ततखन हार बेरा उतराना पावा सर वहिं चन्द विहसाना
विकसा[12] कमल देखि ससि रेखा भई तेहि ऊप जहां जो देखा ॥
पावा रूप रूप जस चहा ॥ ॥ ससि[14] मुख सब दरपन होय रहा

नयन[15] जो देख कमल भये निरमल[16] नीर[17] सरीर[18]
हस्त[19] जो देखे हंस भये दसन[20] जाति न गहीर ॥

पद्मावत तहँ खेल दुलारी ॥ सुआ[21] मंदिर मह दरिव मँजारी[22]
कहेसि चलौ जौ लह तन पाँखा जिव ले उड़ा ता कवन ढाँखा
जाय परा बनखंड[23] जिव लीन्ही मिले पंख बहु आदर कीन्ही
आन धरी आगें फर साखा भुक्ति[25] न मिटी जब लहि राखा
पाय भुक्ति[26] सुख मन भयो ॥ दुख जो अहा बिसर सब गयो

जवाब १ आँख २ हवा ३ ढूँढना ४-५ नामतालाब ६ पाक ७ चन्दन ८ ठण्ढा ९ हवा १० जल्द ११ फूलना १२ चांद १३-१४ आँख १५ पाक १६ पानी १७ बदन १८ हाथ १९ दाँत २० तोता २१ बिल्ली २२ जंगल २३ जानवर परन्द २४ रोजी २५-२६

रगुसाईं तूं ऐसो विधाता। जानवंत जिवसभ का भुक[2] दाता
पाथर महं नहिं पतंग विसारा जहं तहं संवर दीन्ह तुइ चारा

तौ लह साग बिछोह कर भोजन पड़ा न पेट
पुनि विसरा भा सवरना जनु सपने भई भेट[3]

पद्मावत पहिं आय भंडारी कहिसि मन्दिर महं परी मंजारी[5]
सुआ जो उतर देत अहा पूछा उडगा पिंजर न बोलै छूछा
रानी सुना जो सुख सब गयो जनु निशि[8] परी अस्त दिन भयो
गहने गही चन्द की किरा आसु गगन[9] जस नखतहं भरा
टूटिबार सरवर[10] बह लागे ॥ कमल बूड़ि मधुकर[11] उड़ भागे
यहि विध आंसू नखत होय चुये गगन[12] छांड़ सरवर[13] महं उये
झरहिं चुवहिं मोतिन की माला अवस[14] केत बांधा चहुं पाला[15]

उड़गा सोढा[16] कहं बसा खोज सखी सो तास
वह है धर्ती[17] की स्वर्ग[18] का पवन[19] न पावे बास

चहूं पास समझावहिं सखी कहां सु अब पावेगा पखी
जब लहि पिंजर अहा परेवा ॥ अहा बांध कीन्हेसि नित सेवा
तहिं बन धन जो छूटे पावा ॥ पुनि फिर बांदे[21] होय कित आवा
वे उड़ान फुर हरी खाई ॥ जो भा पंख पांख तन लाई ॥
पिंजर जेहक सौंप तेहि गयो ॥ जो जाकर सो ताकर भयो ॥
दस बाटै[22] जेहि पिंजर माहां ॥ कैसे बांच मंजारी[23] पाहां ॥
ये धर्ती अस केत न लीले ॥ अश्वपति[24] गजपति बहु धर कीले

ईश्वर १ रोज़ी देने वाला २ मुलाकात ३ रसोईं बरदार ४ बिलारी ५ तोता ६ जवाब ७ रात ८ आसमान ९ तालाब १० भंवरा ११ असमान १२ तालाब १३ रंज १४ चारों तरफ़ १५ तोता १६ ज़मीन १७ असमान १८ हवा १९ जानवर परिन्द २० ताबेदार २१ राह २२ बिली २३ घोड़े वा हाथी सवार २४

जहाँ न राम नहिं दिवस[1] है तहाँ न पान न खान
तेहि बन सोटा[2] होय बसा कोरे मिलावे आन

सुवैं[3] तहाँ दिन दस कल काटी | आय ब्याध ढका ले ठाटी ॥ ॥
बैग[5] पैग भुइ चाँपत आवा | पंखहि देख सबैं डर खावा ॥
देखौ कुछ अचरज अन[7] भला | तरवर[8] एक आवत हो चला ॥
यह बन रहत गये हम आऊ[6] | तरवर[10] चलत न देखा काऊ ॥
आज जो तरवर[11] चल भल नाहीं | आवहु यहि बन छाँड़ पराहीं ॥
वै तो उड़े और बन ताका ॥ | परिडत सुआ[12] भूलि मन थाका
सारबा दीरघ राज जनु पावा | बैठि निचिंति[14] चला वह आवा

पाँच[15] बान कर खोंचा लासा भरे सो पाँच ॥
पाँख भरा तन उरझा कित मारे बिन बाँच

बन्दे[16] भा सुआ[17] करत सुख केली | चूर[18] पाँख मेलेसि धर डेली[19] ॥
तहँवाँ बहुत पंख[20] खर भरैं ॥ | आप आप महँ रोदन करैं ॥
बिष[21] दाना कित होय अगूरे | जहँ भा मरन डहन[22] धर चूरे
जो न होत चारा की आसा ॥ | कित चिड़हार ढकत ले लासा
ये बिष[23] चारी सब बिधि ठगी ॥ | औ भा काल हाथ ले लगी ॥
यहिं झूठी माया मन भूला ॥ | चूरी[24] पाँख जैसो तन फूला ॥
यह मन कठिन मरे नहिं मारा | काल न देखि देखि पै चारा

हम तो बुद्धि[26] गँवाई बिष[27] चारा अस खाय
तूँ सोटा[28] परिडत हता तू कित भा निदुराय[29]

दिन १ तोता २-३ बहेलिया ४ क़दम ५ जानवर परन्द ६ बुरा ७ पेड़ ८ उमर ९ पेड़ १०-११ भागना १२ तोता १३ ग़ाफ़िल १४ कंपा १५ क़ैद १६ तोता १७ बाज़ू टोरक १८ छारी १९ जानवर परन्द २० ज़हर २१ बाज़ू २२ ज़हर २३ बाज़ू टोरके २४ मौत २५ अक़िल २६ ज़हर २७ तोता २८ बेड़ा २९

नुवैं कहा हमहूँ अस भूले | दूटि हिंडोल गर्ब[2] जेहि झूले ॥
केला के वन लीन्ह बसेरा ॥ | पड़ा साथ तन बैरी केरा ॥ ॥
सुख[3] कुरवार फरेरी खाना | बिय[4] भा जहि ब्याध[5] तुलाना
का हेक भोग[6] बृक्ष अस फरा | अड़ा लाय पंखहि कहँ हरा ॥
सखी निचिंत[7] जोख धन करना | यह निचिंत[8] आगे है मरना ॥
भूले हमहूँ गर्ब[9] तेहि माहाँ ॥ | सो बिरारा पावा जहँ पाहाँ ॥
होय निचिंत[10] बैठ तेहि अड़ा ॥ | तब जाना खोंचा हिये[11] गड़ा

चरत न खुरक[12] कीन्ह जब तब रे चरा सुख सोय
अब जो फाँद परा गै[13] तब रोये का होय ॥ ॥

सुनि के उतर[14] आँसु पुनि पोंछे | कौन पंख बाँधी बुधे[15] ओछे ॥
पंखिन[16] जो बुधि[17] होय उज्यारी | पढ़ासु आँकित[18] धरै मँजारी[19]
कित तीतर बन जाभ उधेला | सुनि हँकार फाँद गैये[20] मेला
तादिन ब्याध[21] भयो जिक्लेवा | उठी पाँख भा नाउ परेवा[22] ॥
भई ब्याध[23] तृष्णा[24] सुख खाधू | सूझी भुक्ति[25] न सूझै ब्याधू[26]
हमहिं लोभ वह मेला जारा | हमहिं गर्ब[27] वह चाहे मारा
हम निचिंत[28] वह आव छिपाना | कौन ब्याध[29] है दोष[30] अयाना[31]

सो अब गुण[32] कित कीजिये जिव दीजे जेहि काज
अब कहना कुछ नाहीं मष्ट[33] भली पक्ष[34] राज

तोता १ ग़रूर २ खुशी ३ ज़हर ४ बहेलिया ५ पेड़ खनिका ६ गाफ़िल ७-८ ग़रूर ९ ग़ाफिल १० दिल ११ अदेशा १२ गरदन १३ जवाब १४ अक़िल १५ जानवर परन्द १६ अक़िल १७ तोता १८ बिल्ली १९ गरदन २० बहेलिया २१ जानवर परन्द २२ बहेलिया २३ हवस २४ रोज़ी २५ बहेलिया २६ ग़रूर २७ गाफिल २८ बहेलिया २९ क़सूर ३० यादानी ३१ बुरा काम ३२ चुप ३३ जानवर परन्द के राजा ३४

चित्रसेन चितौर गढ़ राजा ॥ कई गढ़ कोट चित्र[1] सम[2] साजा
तेहि कुल रतनसेन उजियारा धनजननी जनमा अस बारा[3]
पण्डित गुन सामुद्रिक देखहिं देखि रूप औ लगन बिसेषहिं
रतनसेन यहि कुल निरमरा[4] रतन जोति मन माथे परा
पदक[5] पदारथ लिखी सुजोरी चाँद सूर्य्य जस होय अजोरी[6]
जस मालती कहँ भँवर वियोगी[7] तस वह लाग होय यह जोगी ॥
संघल दीप जाय वह पावा सिद्ध होय चितौर लै आवा ॥

भोग भोज[8] जस मानी बिक्रम[9] साका कीन्ह ॥
परख जो रतन पारखी सबै लिखन लिख दीन्ह

चितौर गढ़ कर एक बँजारा ॥ सँघल दीप चला व्योपारा
बाम्हन हुत एक निपट[10] भिखारी सो पुनि चला चलत व्योपारी
ऋण[11] काहू कर लीन्हेसि काढ़े मग[12] तेहि गये होय कुछ बाढ़े
मारग[13] कठिन[14] बहुत दुख भये नाँघ समन्द्र दीप वह गये ॥
देखि हाट[15] कुछ सूझ न ओरा सबै बहुत कुछ देखि न थोरा
पै सुठ ऊँच नीच तेहि केरा ॥ धनी[16] पाव निधनी[17] मुख हेरा[18] ॥
लाख करोरहि बस्तु बिकाई ॥ सहसन[19] केर न कोउ ओनाई

सबहिं लीन्ह बिसहना औ घर कीन्ह बहोर[20] ॥
ब्राम्हन तहाँ लेका गाँठ[21] साँठ सुठ थोर ॥ ॥ ॥

झुरी ठाढ़ हौं काहेक आवा बनज[22] न मिला रहा पछतावा
लाभ[23] जानि आयों यह हाटा[24] मूर गँवाय चल्यों यह बाटा[25]

तसवीर १ बराबर २ लड़का ३ पाक ४ लाल जवाहिर ५ रोशनी ६ दुखी ७ नाम राजा ८ राजा विक्रमाजीत ९ बहुत ग़रीब १० कर्ज़ ११ शायद वा कदाचित १२ राह १३ मुश्किल १४ बाज़ार १५ दौलत वाला १६ बेदौलत १७ देखना १८ हज़ार १९ लौटना २० बेपूँजी २१ माल २२ फ़ायदा २३ बाज़ार २४ राह २५

कामैं मरन सिखावन सिखी | आयों मरै मीच[1] हत लिखी ॥
आपन चलत सो कीन्हा ज्ञानी[2] | लाभ[3] न देखि भूर भइ हानी[4] ॥
कामैं बोआ जन्म औ भूंजी | खाय चल्यों घरहूं की पूंजी ।
जेहि व्योहरिया कर ब्यौहारू | काले देब जो छेकहि बारू[5] ।
घर कैसे पैठब मैं छूंछे ॥ | कौन उतर[6] देहों तेहि पूंछे ॥

साथ चला मत[7] विचला भये बीच समन्द्र पहार
आस निरासा हीं फिरों तू बिधि[8] देहि उधार ॥

तबहिं व्याध[9] सुआ[10] ले आवा । | कंचन[11] बरन अनूप[12] सुहावा ॥
बेचै लाग हाट[13] लै ओही ॥ ॥ | मोल रतन माणिक[14] जेहि होहीं
सुअहि[15] को पूंछ पतंग[16] मंडारें | चलन देख आछे मन मारें ॥
ब्राह्मण आय सुआ[17] सों पूंछा | वह गुणवंत कि निरगुण छूंछा
कहु परवती[18] जो गुण तोहि पाहीं | गुण न छिपाये हृदय[19] माहीं
हम तुम ज़ात ब्राह्मण दोऊ ॥ | ज़ात ज़ात पूंछे सब कोऊ
पण्डित हो तो सुनावहु वेदू | बिन पूंछे पाई नहिं भेदू ॥ ॥

हौं ब्राम्हन औ पण्डित कहि आपन गुण सोय
पढ़े के आगे जो पढ़ेदू न लाभ[20] तेहि होय ॥ ॥

तब गुण मोहि आहा हो देवा | जब पिंजर हुत छूट परेवा[21] ॥
अब गुण कौन जो बन्द[22] जजमाना | घानि मजूसा[23] बेचै आना ॥
पण्डित होय सो हाट[24] नहिं चढ़ा | चहौं बिकाय भूलगा पढ़ा ॥
दुइ मारग[25] देखौं यह हाटा[26] ॥ | दई चलावै वेहि केहि बाटा[27] ॥

मौत १ होशियारी २ फ़ायदा ३ नुक़सान ४ रोकना दरवाज़ा का ५ जवाब ६ ईमान ७ ईश्वर ८ बहेलिया ९ तोता १० सोने का रंग ११ बेमिसाल १२ बाज़ार १३ जवाहिरात १४ तोता १५ उड़नेवाले जानवर १६ तोता १७-१८ दिल १९ फ़ायदा २० जानवर परन्द २१ क़ैद २२ संदूक़ २३ बाज़ार २४ राह २५ बाज़ार २६ राह २७

रोवत रकत[1] भयो मुख राता[2] | तन भा पियर कहौं का बाता
राती[3] श्याम[4] कराठ दुइ जीवौं[5] ॥ | तेहिं दुइ फन्द डरौं सठ जीवौं
अबहूँ कराठ फन्द के चीन्हा | दुहूँ के फन्द चाहै का कीन्हा ॥

पढ़ि गुण देखा बहुत मैं है आगे डर सोय ॥ ॥
धुन्ध जगत[6] सब जान के भूल रहा बुधि खोय[7] ॥

सुनि ब्राम्हन बिनवा[8] चरहारू[9] | करि पंखहि[10] कहँ मया[11] न मारू
कतये निठुर[12] जिव बधसि[13] परावा | हत्या केर न तोहि डेरावा
कहसि पंख[14] का दोष[15] जनावा ॥ | निठुर[16] सोई सो परमस[17] खावा ॥
उनहिं रीय जानि के रोना ॥ | तहँ न तजहिं[18] भोग सुख सोना
औ जानहिं तन होय यह नासू | पोखै मांस पराये मासू ॥ ॥
जौन होहिं अस परमस[19] खाधू | कित पंखन[20] कहँ धरै बियाधू[21] ।
जुरी व्याध[22] पंखन[23] नित धरे ॥ | सो निचिन्त[24] मन लोभन[25] करे

ब्राम्हन सुआ[26] बेसाहा सुनि मति वेद गिरंथ[27] ॥ ॥
मिला आय सो साथिन कहँ भा चितौर की पंथ[28]

तब लग चित्रसेन शिव[29] साजा | रतनसेन चितौर भा राजा ॥
आय बात तेहिं आगे चली ॥ | राज बणिज[30] आये संघली ॥
हैं गज[31] मोती भरी सब सीपी ॥ | और बस्तु बहु संघल दीपी ॥
बान्हन[33] एक सुआ ले आवा | कंचन[32] बरन अनूप सुहावा ॥ ॥
राती श्याम कराठ दुइ काँठा | राती[34] डहन लिखा सब पाँठा

खून १ लाल २-३ काला ४ गला ५ दुनिया ६ अक़िल ७ ख़ुशामद ८ चिड़ीमार ९ जानवर परन्द १० मेहरबानी ११ बेदर्द १२ मारडालना १३ जानवर परन्द १४ पाप १५ बेदर्द १६ पराया मांस खानेवाले १७ छोड़ना १८ पराया मांस खानेवाले १९ जानवर परन्द २० बहेलिया २१-२२ जानवर परन्द २३ ग़ाफ़िल २४ फ़ायदा २५ तोता २६ पोथी २७ राह २८ मरना २९ सौदागर ३० हाथी ३१ सोना ३२ सुर्ख़ ३३ ३४

औ दुइ नयन[1] सुहावन राता[2] | राती[3] ढोर अमी[4] रस वाता ।।।।
मस्तक टीका काँध जनेऊ ।। | कबि व्यास पण्डित सह देऊ ।।

बोल अर्थ सों बोली सुनत सीस[5] सब डोल ।।
राज मंदिर महँ चाही अस वह सुआ अमोल

भयो रजाय[6] सु जन[7] दौड़ाये | ब्राम्हन सुआ बेगि ले आये ।।
बिप्र[8] असीस बिनत औ धारा । | सुआ जीव नहिं करौं निरारा[10] ।।
पै यह पेट महा बिस्वासी[11] ।। | जे सब नावा तपा[12] सन्यासी ।।
दारै[13] सेज जहाँ कुछ नाहीं ।। | भुइँ पर रही लाय गैं बाहीं ।।
अन्धहि रही जो देखन नयना[14] | गूँग रही मुख और न बैना[15] ।।
बहिर रही जो श्रवन[16] नहिं सुना | पै यह पेट न रहे निरगुना[17] ।।।
कई कई फेरा नित[18] यह दोषे ।। | बारहिं[19] बार फिरै संतोषे ।।।

सो मोहि लिय मँगावे लावे भूख पियास ।।
जो न होत असन[20] बैरी केहि काहू की आस ।।

सुवै असीस दीन्ह बड़ साजू । | बड़ परताप अखण्डित[21] राजू ।।
भागवंत बिधि[22] बुधि[23] अवतारा[24] | जहाँ भाग तहँ रूप जो हारा[25]
कोई केहि पास आस कै गवना[26] | जो निरास दृढ़[27] आसन मवना[28]
कोइ बिन पूँछे बोल जो बोला | होय बोल माटी के मोला ।।
पढ़ि गुण जानि पंडित मति भेऊ | पूँछे बात कहैं सह[29] देऊ
गुणी न कोई आप सराहा[30] ।। | जो सो बिकाय ज्ञान सो जाहा

आँख १ लाल २ लाल चोंच ३ अमृत ४ शिर ५ हुक्म ६ नौकर लोक ७ जल्द ८ ब्राम्हन ९ अलग १० ज़बरदस्त ११ तप करनेवाले १२ औरत १३ आँख १४ आवाज़ १५ कान १६ नादान १७ हमेशा १८ दरवाज़ा १९ पेट २० हनेशा राज क़ायम २१ ईश्वर २२ अक़िल २३ पैदा करना २४ देखना २५ जाना २६ मज़बूत २७ चुप २८ भाई राजा युधिष्ठिर २९ तारीफ़ ३०

जबलहि गुण प्रकट[1] नहिं होय ॥ तब लग मर्म[2] न जानै कोय ॥

चतुर[3] वेद हौं पण्डित हीरामन मोहि नाउँ ॥
पद्मावत से मेरे[4] दौं सेव करौं तेहि ठाउँ[5] ॥ ॥

रतन सेन हीरामन छीना ॥ ॥ एक लाख ब्राम्हन कहँ दीन्हा ॥
बिप्र[6] असीस जो कीन्ह पयाना[7] ॥ सुआ जो राज मंदिर महँ आना ॥
बरनौ[8] काहि सुआ की भाषा ॥ दीन्ह सुनाउँ हीरामन राखा ॥
जो बोलै राजा मुख जोवा[9] ॥ ॥ जानौ मोतिन हार पिरोवा ॥ ॥
जो बोलै सब माणिक मूँगा ॥ नाहित मवन[10] बाँध होय गूँगा ॥
जनुहि मार मुख अमृत मेला ॥ गुरु होय आप कीन्ह जग[11] चेला
सूर्य्य चान्द की कथा कहा ॥ प्रेम की कहन लाय चित गहा ॥

जो जो सुनै धुनै शिर राजा प्रीति होय अगाह ॥
अस गुणवंत नाहिं भल सोटा[12] बावर कीजे काह ॥

दिन दस पाँच तहाँ जो भये ॥ राजा कतहूँ अहेरे[13] गये ॥ ॥
नागवती रूपवंती रानी ॥ सब रनवास पाट[14] पर धानी ॥
किये शृंगार करे[15] दरपन लीन्हा ॥ दरसन देख गर्ब[16] जेहिं कीन्हा ॥
बोलहु सुआ पियारे नाहाँ[17] ॥ ॥ मोरे रूप कोउ जग[18] माहाँ ॥ ॥
हँसत सुआ पुनि आय सुनारी ॥ दीन्ह कसौटी औ पनवारी[19] ॥
सुआ बानि[20] तोरी कस सोना ॥ संगल दीप तोर कस लोना[21] ॥ ॥
कौन दृष्टि[22] तोरै रूपमनी ॥ ॥ वहिं हौं लोन[23] कि वै पद्मनी ॥

जौन कहसि सत[24] सोटा[25] तुहिं राजा की आन[26] ॥ ॥
है कोई यह जग महँ मोरे रूप समान[27] ॥ ॥ ॥

जाहिर १ भेद २ चार ३ मुलाक़ात ४ जगह ५ ब्राम्हन ६ कूच ७ तारीफ़ ८ देखना ९ मकान १० दुनिया ११ तोता १२ शिकार १३ महारानी १४ हाथ १५ ग़रूर १६ ख़ाविन्द १७ दुनिया १८ चुनौटी १९ आवाज़ २० ख़ूबसूरत २१-२३ निगाह २२ सच २४ तोता २५ क़सम २६ बराबर २७

सँवरि रूप पद्मावत केरा ॥ ॥ ॥ हँसा सुआ रानी मुख हेरा[1] ॥ ॥
जेहि सरवर[2] महँ हंस न आवा ॥ बगुला तहँ जलहंस कहावा ॥ ॥
दई कीन्ह अस जगत[3] अनूपा[4] ॥ एक एक तें आगर रूपा ॥ ॥ ॥
के मन गर्ब[5] न छाजा काहू ॥ चाँद घटा और लाग्यो राहू ॥
लोन[6] बिलोन तहाँ को कहै ॥ लोनी[7] सोइ कंथ[8] जेहि चहै ॥
काहि पूँछ सँघल की नारी ॥ ॥ दिनहिं न पूजै निस[9] अँधियारी ॥
कनिक[10] सुगन्ध सुतेहिं की काया[11] जहाँ माथ का बरणौं पाया ॥ ॥

गढ़ी सुसोने सोंधी भरे सो रूपे भाग ॥ ॥
सुनत रोख[12] भई रानी हिये[13] लोन अस लाग ॥

जो यह सुआ मन्दिर महँ अहै ॥ को न होय राजा सों कहै ॥ ॥
सुनि राजा पुनि होय बियोगी[14] छाड़ै राज चलै होय योगी ॥
बिष राखें नहिं होत अँगूरू ॥ शब्द[15] न दे बहुर हम चूरू ॥ ॥
धाय[16] दामिनी[17] बेगि[18] हकारी[19] ॥ ॥ वह सौंपा हिय[20] रिस न सभारी ॥
देखेा यह सोता[21] है मुँड चाला[22] ॥ भयो न ताकर जाकर पाला ॥
मुख की आनि पेट बस आना तेहि अवगुण दसहाट बिकाना
पंख न राखी होय कुभाषी ॥ ॥ ले तहँ मारि जहाँ नहिं साखी[23]

जेहि दिन का मैं डरत हौं रैन[24] छिपावौं सूर[25] ॥
सो लै दे कमल[26] कहँ मो कहँ होय मयूर[27] ॥ ॥

धाय[28] सुआ ले मारै गई ॥ ॥ समुझि ज्ञान हिये[29] मन्त भई ॥
सुआ सुराजा करि बिसराम[30] ॥ ॥ मार न जाय चहै जेहि स्वामे[31] ॥

देखना १ तालाब २ दुनिया ३ बेमिसाल ४ गरूर ५ खूबसूरत वा बदसूरत ६ खूबसूरत ७ खाविन्द ८ रात ९ सोना १० बदन ११ गुस्सा १२ दिल १३ दुखी १४ आवाज़ १५ लौंडी १६ बिजुली १७ जल्द १८ बुलाया १९ दिल २० तोता २१ बदराह २२ गवाह २३ रात २४ सूर्य्य २५ पद्मावत २६ मोर २७ लौंडी २८ दिल २९ आराम ३०

वह पण्डित खण्डित बैरागू । दोष[1] ताहि जेहि सूझि न आगू ॥
जो तिरिया[2] के काज न जाना । परै धोख पाछे पछताना ॥
नागमती नागिन बुध[3] ताऊ । सुआ मयोर[4] होय नहिं काऊ
जो नहिं कंथ[5] की आय[6] सुमाहीं । कौन भरोस नारि[7] की बाहीं
मग[8] यहि खोज होय तस आय । तुरी[9] रोग हरि[10] माथे जाय ॥ ॥

दुइ सुछि पाये नाछि पैड़क हत्या अरु पाप
अंत करहिं बिनास यह मैं साखी दै आप

राखा सुआ धाय[11] मति साजा । भयो खोज तस आयो राजा ॥
रानी उतर मानि[12] सो दीन्हा ॥ पण्डित सुआ मजारी[13] लीन्हा ॥
मैं पूछ्यों सिंहल पदमिनी । उतर[14] दीन्ह तुम्ह को नागनी
का तोर पुरुष रैन[15] खर राऊ ॥ उलू न जानि दिवस[16] कर भाऊ
वै जस दिन तू निसि[17] अंधियारी । जहाँ बसंत करील को वारी[18]
का वह पंख[19] कूट[20] मुँह कूटे ॥ अस बड़ बोल जीभ मुख छोटे
ज़हर चुवै जो जो कहि बाता । अस हत्यार लिये मुख राता[21]

माथे नहिं बैसारी[22] जो सठ सुआ सलोन[23] ॥ ॥
कान टूटि जेहि आभरन[24] का लै करब सुसोन

राजा सुनि बियोग[25] तस माना । जैसे हिये[26] बिक्रम[27] पछताना ॥
वह हीरामन पण्डित सुआ ॥ जो बोलै मुख अमृत चुआ ॥
पण्डित दुख खण्डित निरदोषा । पण्डित हिये[28] परै नहिं धोखा
पण्डित केर जीभ मुख सोधे । पण्डित बात न कहै बियोधे[29] ॥ ॥

पाप १ औरत २ अक़िल ३ मोर ४ ख़ाविन्द ५ हुक्म ६ औरत ७ शायद ८ घोड़ा ९ बन्दर १० लौंडी ११ जवाब ग़रूर से १२ बिल्ली १३ जवाब १४ रात १५ १७ दिन १६ बाग़ीचा १८ उड़नेवाला जानवर १९ ज़हर २० लाल २१ बैठालबा २२ ख़ूबसूरत २३ ज़ेवर २४ दुख २५ दिल २६-२८ बिक्रमाजीत राजा २७ बेहूदा २९

पंडित सुमत दै पंथहि[1] लावा ॥ जो कुपंथ[2] तेहि पण्डित न भावा
पण्डित राती[3] बदन सरेखा ॥ जो हत्यार रुहर[4] पै देखा ॥ ॥ ॥
की प्रान घट आनहि मती[5] ॥ की जल होहिं सुआ सँग सती ॥

जन जानहु किय अवगुण मंदिर होय सुखराज
आय[6] सुमेर कंत[7] कर काकर भान अकाज ॥

चाँद जैस धन[8] उजेर अहे ॥ ॥ भा पीउ रोस गहन अस गहे ॥ ॥
परम सुहाग निबाह न पारी ॥ भाव[9] धाग सेवा जब हारी ॥ ॥
इतनक दोय[10] बीरज पिव रूठा ॥ जो पिव आपन कहै सुझूठा ॥
ऐसे गर्ब[11] नहिं भूलै कोई ॥ ॥ जेहिं डर बहुत पियारी सोई ॥ ॥
रानी आय धाय[12] के पासा ॥ ॥ भुआ भवा सेमर की आसा ॥
परा प्रीति कंचन[13] महँ सीसा ॥ ॥ बिथर न मिले श्याम[14] पै दीसा ॥
कहाँ सुनार पास जेहिं जाऊँ ॥ दे सुहाग कौ इक ठाऊँ[15] ॥ ॥ ॥

मैं पिय प्रीति भरोसे गर्ब[16] कीन्ह जिय माहँ ॥
तेहिं रिस हौं परहेली[17] नगर रोस की नाँह[18] ॥ ॥

उत्तर[19] धाय[20] तब दीन्ह रिसाई ॥ रिस आपहिं बुधि अवरहि खाई
मैं जु कहा रिस काहु न बाला[22] ॥ को न गयो यहि रिस कर घाला[23]
बिरस बिरोध रसहि पै होई ॥ रिस मारै तेहि मार न कोई ॥ ॥
तुइ रिस भरी न देखेसि आगू ॥ रिस महँ का कहि भयो सुहागू
जेहिं रिस तेहिं रस जोग न जाई ॥ बेरस हरदि[24] होय पीराई ॥ ॥
जेहि के रिस मिलाय रस दीजे ॥ सो रस तज रिस कोह न कीजे ॥
कंत[25] सुहाग की पाई साधा ॥ ॥ पावै सो जो वही चित बाँधा ॥

राह १ बदराह २ लाल मुहँ ३ खून ४ नागमती रानी ५ हुकुम ६ खाविन्द ७ रानी ८ छोड़ना ९ कसूर १० गरूर ११ लौंडी १२ सोना १३ खाविन्द १४ जगह १५ गरूर १६ दर १७ खाविन्द १८ जवाब १९ लौंडी २० अकिल २१ औरत २२ खराब २३ हलदी

रहै जो पिय की आय[1] सुऔ बरती होय हीन ॥
निरमल[2] देखै चाँद जस जन्म न होय मलीन[3]

जुवा हार मन समुझी रानी । सुआ दीन्ह राजा कहँ आनी
नानमती हौं गर्ब न लीन्हा ॥ कंथ[5] तुम्हार मर्म[6] पिय लीन्हा ।
सेवा करै जो बारह मासा ॥ अतनाकि अवगुण करै नियासा[7]
जो तुम देइ नाय के गीवाँ[8] ॥ छाँड़हि नहिं बिन मारे जीवाँ ।
मिलतहि महँ जन अहो निरारे[9] तुम सों अहो अदेस[10] पियारे ॥
मैं जाना तुम मोहे माहाँ ॥ देखो ताक तोहौ सब माहाँ ॥
का रानी का चेरी कोई ॥ ॥ जेहँ कहँ मया[11] करै भल सोई ॥

तुम सों कोई न जीता हारा बिक्रम भोज ॥
पहिले आपाहे खोय कर करै तुम्हारा खोज

राजैं कहा सत्य कहु सुआ ॥ बिन सत कस जस सेमर भुआ
हो मुख राती[14] कहो सत बाता जहाँ सत्य तहँ धर्म सँघाता
बाँधी सृष्टि[15] अहै सत केरी ॥ लक्ष्मी अहै सत्य की चेरी ॥
सत्य जहाँ साहस सिधि[16] पावा औ सत बाँधी[17] पुरुष[18] कहावा ॥
सत कहि सती सँवारै सरा ॥ आग लाय चहुँ दिस[19] सत जरा ॥
दुइ जग[20] तरा सत्य जे राखा ॥ और पियार दीन्ह सत भाखा[21]
सो सत छाँड़ि जो धर्म बिनासा[22] का मत कीन्ह हियें[23] सत नासा

तुम सयान औ पण्डित असत[24] न भाखो काउ
सत्य कहो मो सों वहँ का कर अपनाव[25]

सत्य कहत राजा जीव जाउ पै मुख असत[26] न भाखौं काउ

हुक्म १ पाक साफ़ २ मैला ३ ग़रूर ४ खाविन्द ५ भेद ६ खराब ७ गरदन ८ अलग ९ सारा जहान १० मुहब्बत ११ राजा विक्रमाजीत १२ नाम राजा १३ लाल १४ दुनिया १५ कामिल १६ सच बोलनेवाला १७ मर्द १८ चारों तरफ़ १९ दोनों जहान २० बोली २१ नास २२ दिल २३ झूँठ २४ क़सूर २५ झूँठ २६

हौं लिये सत निसद्यो यहते सिंहलदीप राज घर ते ॥ ॥
पद्मावत राजा की बारी ॥ पद्मगन्ध शीस दई सँवारी ॥
शीस मुख अंग मलैगिरि रानी कनक सुगन्ध दादस बानी
है पदमिन जो सिंहल माहा ॥ सुगन्ध सरूप सो वहकी छाहाँ
हीरामन हौं तिहके परेवा ॥ काढा फूटि करत तेहि सेवा ॥
औ पायौं मानुष को भाखा ॥ नाहीं तो पंख मूठभर पाखा ॥

जबलगि जियौं रात दिन सेवौं मरौं वही लै नाउँ
मुख राता तन हरियर कीन्हा दुहू जगत ले जाउँ

हीरामन जो कमल बरेवाना। सुनि राजा होय भँवर भुलाना
आगे आव परेव ठजियारे ॥ कहे सुदीप पतंग किये मारे ॥
रहा जो कनिक सुवास वो ढाँगु कमल न होय हीरामन नाँगु ॥
को राजा कस दीप अतंगू ॥ ॥ जेहि सुनत मन भयो पतंगू
सुनि सुसमंद चरव भये कलकला कमला चाहि भँवर होय मिला
कहो सुगन्ध धनि कस निमली भा अलि संग कि अबही कली
औ कहु तहा जो पदमिनी लोनी घर घर सब के होहि जस होनी

सबै बरवान तहाँ कर कहत सो मोसो आव ॥
चहौं दीप कहँ देखा सुनत उठा तस चाव ॥ ॥ ॥

का राजा हौं बरनौं तासू ॥ ॥ सिंहलदीप अहै कैलासू ॥
जोगा तहा भुलाना सोय ॥ गये जुग बीत न बहुरा कोय ॥
घर घर पद्मनी छतीसौ जाती ॥ सदा बसत दिवस अरु राती
जोहि जोहि बरन फूल फुलवारी तेहि तेहि बरन सुगन्ध सुनारी

लड़की १ कमल की खुशबू २ चाँद ३-४ बदन ५ चन्दन ६ सोना ७ खालि-
स ८ जानवर परिंद ९ आवाज़ १० जानवर परिंद ११ लाल १२ दुनिया १३
बयान करना १४ जानवर परिंद १५ सोना १६ जगह १७ आख १८ नाम जानवर
१९ पद्मावत २० पाकसाफ़ २१ भँवर २२ खूबसूरत २३ बयान २४-२५ दिन २६ रंग २७

गन्धप सेन तहाँ बड़ राजा ॥ अप्सरहिं माहिं इन्द्रासन साजा
सो पद्मावत ताकर बारी ॥ औ सब दीप माहिं उजियारी ॥
चहूँ खण्ड के बर जोउ आहीं गर्बहिं राजा बोलहिं नाहीं ॥

उदित सूर जस देखी चाँद छिपै जेहि धूप ॥
ऐसे सबै जाहिं छिप पद्मावत की रूप ॥॥

सुनि रबि नाउँ रतन भा राता ॥ पण्डित यही फेर कहु बाता ॥
तुइ सुरंग मूरत वह कही ॥ चित महँ लाग चित्र होय रही
जनु होय सूर्य्य आय मन बसे सब घट पूर हिये परगसे ॥
अबहीं सूर्य्य चाँद वह छया ॥ जल बिन मीन रक्त बिन कया
करन करान भा प्रेम अँगूरू । जो शसि स्वर्ग चढ़ौं होय सूरू
सहस किरान रूप मन भूला ॥ जहँ जहँ दृष्टि कमल जनु फूला
तहाँ भँवर जहँ कमला गन्धी भइ शसि राहु केरन बन्धी

तीन लोक खंड चौदह सबै परै मोहि सूझ ॥
प्रेम छाँडि कुछ और नहिं लुना जो देखौं मन बूझ

प्रेम सुनत मन भूल न राजा ॥ कठिन प्रेम शिर दिये तेहि छाजा
प्रेम फंद जो पड़ा न छूटा ॥ जीव दीन्ह पै फाँद न छूटा ॥
गीरगिट छन्द धरै दुख तीता । खन हो पीत राति खन सीता ॥
जानि पुछार जो भये बनवासी रोवँ रोवँ परी फादन को असी ॥
पाँख फरफरा सो फाँदू ॥ उड़ न सकहिं उर झे भये बाँदू
मेउँ मेउँ निस दिन चिल्लाय वही रोय नागिन धर खाय ॥
पाडुक सुआ कराठ वह चीन्हा जेहि गै परा चाहि जिव दीन्हा

इन्द्रलोक की परी १ लड़की २ चारौं तरफ़ ३ ग़रूर ४ सूर्य्य ५-६ राजा रतनसेन ७ दीवाना ८ तसवीर ९ दिल १० खिलना ११ मछली १२ बदन १३ नस नस में १४ चाँद १५ आसमान १६ सूर्य्य १७ हज़ार जोति तथा पद्मावत १८ निगाह १९ चाँद २० रंग २१ गर्म २२ पीला २३ लाल २४ सफ़ेद २५ मोर २६ प्रेम का फन्दा २७ रात २८ गुस्सा २९ कुमरी ३० तोता ३१

तीतर गये जो फाँद है नितहि पुकारै दोष ॥
मुक्ति हँकार फाँद गैं मेलेकित मारै पुनि मोष

राजा लीन्ह ऊब के स्वाँसा ॥ ऐसे बोल नहिं बोल निरासा
पहिलहिं प्रेम है कठिन दुहेला दो जग तरा प्रेम जेहिं खेला ॥
दुख भीतर सो प्रेम मधु राखा किंचन मरन चहै सो चाखा
जैं नहिं सीस प्रेम पथ लावा । सो पृथ्वी महँ काहे कहँ आवा
अब मैं पाय प्रेम पथ मेला ॥ पाय न ठेल राख कै चेला ॥
प्रेम बार सो कहै जो देखा ॥ जैं न देखि का जानि बिसेखा
तब लग दुख प्रीतम नहिं भेटा मिला तो गा जरमक दुख मेटा

जस अनूप तुइ बरनी नख सिख बरन सिंगार
है मोहँ आस मिलन की जो पुरवै करतार ॥

खण्ड सातवाँ सिंगार खण्ड पद्मावत

का सिंगार वह बरनौं राजा ॥ वह क सिंगार वही पै छाजा ॥
प्रथम सीस कस्तूरी केशा ॥ वलि बासुक को और नरेशा ॥
भँवर केस वह मालति रानी ॥ बिसहर लरहिं लेहिं अरघानी
बेनी छोरि झार जो बारा ॥ स्वर्ग पतार होय अँधियारा ॥
कोमल कुटिल केस नग कारे लहरें भरी भुअँग बैसारे ॥
बेधी जानि मलै गिरि बासा ॥ सीस चढ़ी लोटहिं चहु पासा
घूँघुर वार अलकैं बिष भरे ॥ संकरें प्रेम ज्यों गये परे ॥

गरदन १ हमेशा २ चुप ३ बोलाना ४ गरदन ५ नजात ६ नाठमेद ७ मुशकिल ८ भारी ९ दोनों जहान १० शराब ११ शिर १२ राह १३ ज़मीन १४ राह १५ दरवाज़ा १६ मुलाक़ात १७ बहुतदिन १८ बयान करना १९ नाख़ून से शिर की चोटी तक २० बयान २१ ईश्वर २२ तारीफ़ २३ पहिले २४ शिर २५ मुश्क २६ बाल २७ न्योछावर २८ नामसाँप २९ आदमी ३० बाल ३१ साँप ३२ खशबू ३३ चोटी ३४ आसमान ३५ मुलायम ३६ पेचदार ३७ बाल ३८ साँप ३९-४० चन्दन ४१ शिर ४२

अस फंदवार केसे वै राजा परा सीस[21] गे फांद[22] ।
यहाँ[23] कली नाग[24] स बडरके मये[25] केस[26] के बांद[27] ॥

बरनों[28] नाग सीस[29] उपराही ॥ सेंदुर[30] अभे चढ़ा जेहि नाही ॥
बिन सेंदुर अस जान नहि दिया उजेर[31] पंथ[32] रतन[33] मनि किया ॥
कंचन[34] रेख कसौटी कसी ॥ जनु थन[35] मह दामिन[36] परगसी[37]
सूरुज[38] किरन जनु गगन[39] बिसरी यमुना[40] मांझ सरस्वती देखी ॥
खंडाडोर[41] धार[42] रुधिर जनु भरा ॥ कांवट[43] लेबेनी पर धरा ॥
तेहि पर पूरि[44] थार[45] जो मोती ॥ यमुना मांझ गंग की सोती
कांवट[46] तपा[47] लीन्ह होय चूर ॥ मांग सुरुंथिर[48] लेदेइ सेंदूर

कनक[49] दाद[50] स बानि होय चही सुहाग वह मांग
सेंथा कोर[51] नखत[52] ससि[53] तरइ[54] उवे गगन[55] तस मांग ॥

कहौं[56] लिलाट दुइज की जोती ॥ दुइजहि जोति कहां जग ओती
सहस[57] किरन जो सूरुज दिपाये दीखि[58] लिलाट सोउ छिप जाये
का[59] सिर बरनो दिपै[60] मयंकू[61] ॥ चांद[62] कलंक की वह निहकलंकू
आध चांद पुनि नाह गिरासा ॥ वह बिनु राहु सदा परकासा ॥
तेहि लिलाट पर तिलक जो बैठा दुइज पास जानहु[63] धुंव[64] दीठा ॥
कनक[65] पाट[66] जनु बैठा राजा ॥ सबै सिंगार[67] अस्त्र ले साजा ॥
वह आगे थिर[68] रहै न कोऊ ॥ वह का कहि अस जुरा[69] सं जोऊ[70]

धनुक भौंह कनक बान दुइज गगन मारन लागु ॥
सुनि के पग मुरछ कै राजा मो कहँ भये एकठांगु

बाल २ शिर २ गरुन ३ नाम साँप ४ बाल ५ गुलाम ६ नागिन ७ शिर ८ राह ९
रात १० सोना ११ बिजुली १२ चमक १३ आसमान १४ खून १५ सोदके १६
चोटी १७ नाम जगह जहाँ शिर कटाते हैं १८ फ़की १९ शायद २० खून २१ सोना २२
खांसि २३ चांद २४ नखत २५ आसमान २६ शिर २७ बुनिया २८ हज्जाम २९
शिर ३० नागिन ३१ चांद ३२ ऐब ३३ रोशन ३४ शिर ३५ नाम नखत ३६

मांग में सिंदूर भरना सुहाग का काम है सिंदूर

भौंहैं श्याम[1] धनुक[2] जनु ताना । जासों हेर[3] मारि बिष बाना ॥
ओही धनुक वह भौंह चढ़ा । कैं हत्यार काल[4] अस गढ़ा ॥
ओही धनुक कृस्न पै अहा । ओही धनुक राघव कर[5] गहा ।
ओही धनुक रावन संहारा[6] । ओही धनुक कंसासुर मारा
ओही धनुक बेधा हत राहू । मारा वही सहस्रा[7] बाहू ॥ ॥
ओही धनुक मैं उपनहि चीन्हा । धानिक[8] आप पनच[9] जग[10] कीन्हा
वहि भौंहहिं शर[11] कोई न जीता । अप्सरें[12] छिपी छिपी गोपिता[13] ॥

भौंहैं धनुक धन[14] धानक दूसर सर न कराय
गगन[15] धनुक उगवै लाजहिं सों छिप जाय

नयन बांक सर[16] पूचन कोऊ । मानु समुन्द्र अस उलटहिं दोऊ
राती[17] कमल करहिं अलभवा[20] । गूंजहिं मात जिन अपसवा ॥
उठहिं तुरंग[21] लेहिं नहिं बागा । जानो उलट गगन[22] कहँ लागा
पवन झकोरें देहिं हिलोरा ॥ स्वर्ग[23] लाय भुई लाय बहोरा ॥
जग[24] डोलै डोलत नयनाहाँ[25] । उलट औडार चाहे पल माहाँ
जबहि फिराये कंगन बूरा । अस वै भौंहैं भँवर की जोरा
समन्द्र हिलोर करहिं जनु झूले । खंजन[26] लरहिं मिरग[27] बन भूले

भरे समन्द्र अस नयन दुइ मानक[28] भरे तरंग[29]
आवहिं तीर[30] जाहिं फिर काल भँवर तेहि संग

बरनी का बरनौं[31] इम[32] बनी[33] ॥ ॥ साधी बान जानु वेहि अनी[34] ॥
जुरी राम रावन की सैना[35] ॥ बीच समुन्द्र भये वह नैना

सियाह १ कमान २ देखना ३ मौत ४ हाथ ५ मारडालना ६ नामराजा ७ तीरअंदाज़ ८ निशाना ९ दुनिया १० बान ११ इन्द्रलोक की परी १२ गोपी १३ पद्मावत तीर-अंदाज़ १४ बराबर १५ आसमान १६ आँख १७ बराबर १८ लाल १९ भँवर २० घोड़ा २१ आसमान २२-२३ दुनिया २४ आँख २५-२८ ममीला २६ हिरन २७ जवाहिर २९ लहर ३० किनारा ३१ पलक ३२ तारीफ़ ३३ इस तरह ३४ फ़ौज ३५ ३६

वारहिँ पार नयावर साँधे ॥ जासोँ हेर[1] लाग बिष बाँधे ॥ 104
उन्ह बानहि अस को को न मारा बेध रहा सगरा संसारा ॥ ॥
गँगन[2] नखत जस जाहिँ न गिने वे सब बान वही के हने ॥ ॥
धरती बान बेध सब राखे ॥ साखा ठाढ़ वही सब साखे ॥
रोवँ रोवँ मानुष तन ठाढ़े ॥ सूतहिँ[3] सूत बेध अस गाढ़े ॥

बरनि[4] बान जस उपनहिँ बेधी रन बन ढंख ॥
सो जेहिँ तन सबू रोवाँ पंखहिँ[5] तन सब पंख ॥

नासक खर्ग देवों केहि जोगू । खर्ग[6] खीन वह बदन सँजोगू
नासक[11] देखि लजान्यो सुआ सूक[12] आय बेसर होय उआ ॥ 105
सुआ जो पियर हीरामन लाजा और भाव का बरनौं[13] राजा ॥
सुआ सुनाक कँठोर[14] बनवारी[15] । वह कोमल[16] तिल पुहुप[17] सँवारी
पुहुप[18] सुगन्ध करहिँ सब आसा मँग[19] हर[20] काय लेइ हम पासा ॥
अधर[21] दसन[22] पर नासक[23] सोभा दाड़िम[24] देखि सुआ मन लोभा
खंजन[25] वेहिँ दिस[26] केलि कराहीँ वेहिँ वह रस को पावको उ नाहीँ

देखि अमी[27] रस आधरन्ह भयो नासिक[28] कीर[29] ।
पवन[31] बास पहुँचावै आश्रम छाँड़ि न तीर[32] ॥ ॥

अधर[33] सुरंग अमी रस भरे ॥ ॥ बिम्ब[34] सुरंग लाज बन फरे ॥ ॥
फूल दुपहिरी जानहुँ राता[35] ॥ फूल झरहिँ जो जो कहि बाता 106
हीरा लीन्ह सुबिद्रुम[36] धारा ॥ वेहि सत[37] जगत[38] होय उजियारा ॥

देखना १ आसमान २ सूराख ३ पलक ४ जानवर परन्द ५ नाक ६ तलवार ७ बराबरी ८ तलवार ९ पतली १० नाक ११ नाम नखत १२ बयान करना १३ मरख़ १४ टेढ़ी १५ मुलायम १६ फूल १७-१८ शायद १९ बोलाना २० होंठ २१ दाँत २२ नाक २३ अनार २४ ममोला २५ तरफ़ २६ अमृत २७ होंठ २८ नाक २९ तोता ३० हवा ३१ किनारा ३२ होंठ ३३ कुँदरू ३४ लाल ३५ मूँगा ३६ हंसना ३७ दुनिया ३८

भइ मजीठ[1] बातहिं रंग लागें | कुसम रंग थिर[2] रहै न आगें ॥
वहि के अधर[3] अमी[4] भर राखे | अबहिं अछूत न काहूं चाखे
मुख तम्बोल[5] धार नहिं रसा ॥ | केहि मुख योग सो अमृत बसा
राता जगत देख रंग राती[6] ॥ | रुधिर[7] भरी आछहिं बिहसाती[8]

अमी अधर अस राजा सब जग[10] आस करेइ ।
केहि का कमल बिकासा[11] को मधुकर[12] रस लेइ

१३

दसन चौक बैठे जनु हीरा ॥ | औ बिच बिच रंग[14] श्याम गंभीरा
जनु भादौं निशि[15] दामिन[16] दीसी[17] | चमक उठै तस तहीं बतीसी ॥
वह सो जोति हीरा उपराहीं ॥ | हीरा वेहिं सो तेहिं परछाहीं ॥
जेहि दिन दसन[18] जोति निरमई[19] | बहुतें जोति जोति दा भई ॥
रबि[20] शसि[21] नखत दीन्ह वह जोती | रतन[22] पदारथ माणिक मोती ॥
जेहिं जेहिं बिहसि[23] सभा महँ हँसी | तहँ तहँ छिटक जोत परकसी[24]
दामिन[25] चमक न सरबर[26] पूजा | पुनि वह जोति होय को दूजा

वेहँसत हँसत दसन[27] तस चमकी पाहन[28] उठी छुर्क[29]
दाड़िम सर[30] जो न कैसका फाट्यो हिया दर्क ॥

३२

रसना कहौं जो कह रस बाता | अमृत बचन सुनत मन राता
हरी शिसिर[33] चातिक[34] कोकिला | बीन बसि वे बैन[35] जेहि मिला
चातिक कोकिल रमाहिं जो नाहीं | सुनि वे बयन[37] लाज छिप जाहीं
भरै प्रेम मधु[38] बोलहिं बोला | सुनै सो मात घूम के डोला

लाख १ कायम २ होंठ ३ अमृत ४ पान ५ लाल ६ खून ७ हँसना ८ होंठ ९ दुनिया १० खिलना ११ भँवरा १२ दाँत १३ बहुत काला १४ रात १५ बिजुली १६ देखपड़ना १७ दाँत १८ बनाई गई १९ सूर्य्य २० चाँद २१ जवाहिरात २२ हसना २३ उजियारा २४ बिजुली २५ बराबर २७ पत्थर २८ लूक २९ अनार ३० बराबरी ३१ जीभ ३२ दूर करना सरदी का ३३ पपीहा ३४-३६ आवाज़ ३५-३७ शराब ३८

चतुर[1] वेद मति सब वह पाहाँ । ऋग[1] यजुर[2] शाम[3] अथरवन[4] माहाँ[5]
इक इक बोल अर्थ जो गुना । इन्द्र मोहि ब्रह्मा शिर धुना ॥
भागवत भर्थ[2] पिङ्गल औ गीता । अर्थ जो जहि परिडत नहिं जीता

भाव सती[3] औ व्याकरन मुनी पिङ्गल पाठ पुरान
वेद भेद सों बात कहि जनु लागें हिये[4] बान ॥

पुनि वरनों[5] का सुरंग कपोला[6] । इक नारंग के दो किये मोला ।
पुहुप पंग रस अमृत साधे । कै अस सुरंग खरोरा[8] बाँधे ॥
तेहि कपोल[6] बायें तिल परा । जो तिल देखि सो तिल तिल जरा
जनु घुंगची वह तिल कर[10] मुहाँ । बिरह बान साधो सा महाँ ॥
अगिन बान तिल जानहु सूझा । इक कटाक्ष लाख दुइ जूझा ॥
सो तिल काल मेट नहिं गयो । अब वह काल काल जग[11] भयो
देखत नयन[12] परी परछाहीं । तेहि ते रात[13] श्याम[14] उपराहीं ॥

सो तिल देखि कपोल[15] पर गगन[16] रहा ध्रुव गाड़
खन हिं उठै खन बूड़े डोलै नहिं तिल छाड़ ॥

श्रवण सीप दुइ दीप सँवारे ॥ कुण्डल कनिक रचे उजियारे
मणि कुण्डल चमकहिं अति लोने[20] । जनु कौंधा लव कहिं दुइ कोने
दोउ दिस चाँद सूर्य्य चमकाहीं । नखतहँ भरी निरख[21] नहिं जाहीं
तेहि पर घूँट[22] दीप दुइ बारे ॥ । दुइ ध्रुव[23] दुहूँ खूँट बैसारे ॥ ॥
पहिरे घूँटी[24] सिंहल दीपी ॥ जानहु भरे कहु जही सीपी
खन खन जोहि चीर शिर गहा[25] । काँपत बीज[26] धौल[27] दिस[28] रहा ॥
डरपहिं देव लोक सहला ॥ पड़ै न बीज[29] टूटि तेहि कला ॥

चार १ महाभारत पुराण २ पोथी ३ दिल ४ बयान करना ५ गाल ६ फूल ७ लड्डू ८ गाल ९ काला मुहँ १० दुनिया ११ आँख १२ लाल १३ सियाह १४ गाल १५ आसमान १६ नाम नखत १७ कान १८ सोना १९ खूबसूरत २० देखना २१ बाली २२ २४ नाम नखत २३ खैंचना २५ बिजुली

२६ २९ सफेद २७ तरफ २८

करहिं नरवत सब सेवा श्रवण दीन्ह अस देउ।
चाँद सूर्य्य अस कहँ और जगत का केउ ॥

बानौ ग्रीव कौंव की रीसी ॥ कंचन तार जनु लाग्यो सोसी
कूड़ें फेर जानु गयँ गाढ़े ॥ हरी पुखार ठगे जनु ठाढ़े ॥ ॥ ॥
जनु हिये काढ़ि पोव बाढ़ा। तेहि ते अधिक भाव गयँ बाढ़ा
चाक चढ़ाय साँच जनु कीन्ह बाग तुरंग जानु गढ़ि लीन्हा।
गयँ मया तमे चोर जोहारा ॥ ऊन्हे पुकारे साँझ सकारा
पुनि तोहि देउ परी पियारेवा घूँट जो पीक लीक तस देखा
धन वह ग्रीव दीन्ह बिधि भाऊ यहि का कूहि लेउ को सिराऊ

कराठ श्रीमुक्तावल माला सोहै आभरन ग्रीव।
को होय हार कराठ लागे कै तप साधा जीव ॥

कनक दण्ड दुइ भुजा कलाईं जानहु फेर कँडेर भाईं ॥ ॥ ॥
बाहल गाभ कीजानौं जोरी औ राती वह कमल हथोरी
जानेउ रक्त हथोरी बूड़ी ॥ ॥ रवि प्रभात तात वैजूड़ी ॥
हिया काढ़ि जनु लीन्ह महाथा रुधिर भरी अंगुरी तेहि साथा ॥
औ पहिरे नग जड़ी अँगूठी जग बिनु जीव जीव वह मूठी ॥
बाहू कङ्कन ताड़ सलोने ॥ डोलत बाहु भाव गत लोने ॥
जानौ गति बेरन देर बराय ॥ बाहु डुलाय जीव लै जाय

भुज उपमा पौन्हारि न पूजी रवीन भई तेहि चिंत
हाँवहि ठाँव बेध भइ हृदय कु बसि सास लेनिंत ॥ ॥ ॥

कान १ दुनिया २ नारीफ़ ३ गरदन ४ कलग ५ सोना ६ खराद ७ गरदन ८ मोर ९
दिल १० कबूतर ११ बहुत १२ गरदन १३ चोड़ा १४ मोर १५ मुरग १६ जगह १७
गरदन १८ २४ दूरुस्त १९ मुलाक़ात २० नामज़ेवा २१ मोती का हार २२ ज़ेवर
२३ सोना २५ खराद २६ लाल २७ लहू २८ सूर्य्य २९ भोर ३० दिल ३१ खून
३२ दुनिया ३४ नामज़ेवा ३५ खूबसूरत ३६ ३७ तबायफ़ ३८ बराबरी ३९ ४१

कमख़ाब की तारीफ़ २ मोर ४२ जगह ४३ सुराही ४४ दिल ४५

हिय थार कुच कंचन लाडू । कनिक कचूर उठै कै चाडू ॥
बेधे भँवर कटक केतकी ।। चाहै बेध कीन्ह कंचुकी ॥
कुन्दन बेल साज जनु गूँदे । अमृत भरे रतन दुइ मूँदे ॥
जोबन बान लेहिं नहिं बागा ॥ चाहहि हुलसि हियम हुलागा 113
अंगित बान दुहु जानो साँधे ॥ जग बेधे जो होहिं न बाँधे ॥
ऊँत गज मीर होय रखवारी ॥ खुद कोसक राजा की बारी ॥
दाड़िम दारव फरी अब चाखा अस नाग वोहि का कहि राखा

राजा बहुत मुयेउ तप लाय लाय भुइँ माथ ।।।
काहूँ छूय न पारी गये मरोरत हाथ ॥ ॥ ॥

पेरपनी जलु चन्दन लावा । काहू कहू केसर वरन सुहावा ।
हीर अहार न कर सुकमारा पानफूल लेहि अधारा ॥
श्याम भुअंगिन रोमावली नाभी निकस कसलकहँ चली 114
आय दुहौं नागंग बिच भये ।। देखि मयूर ठसक रहि गये ।।
आय जुरी भवरन की पाँती । चन्दन गाभ वास की माती ।।
गइ कालिन्दी बिरह सताई ॥ चलि पराग अरबर बिच आई
नाभी कुण्ड सोवा नारसी । सौ हे को होय सींचनेहि लिखी

शिर का वट नन काशी लैलै बहुत सीक तेहु आस
बहुत धूमे घूर मैं देखी ऊतर न देइ निरास ।।

चौरी पीठ लीन्ह वै पाछे ।। जनु पहिर चली अपसरा काछे
मेलया गिर की पीठि सँवारे ।। बेनी नाग चढ़ा जनु कारे
लहरैं देत पीठ जनु चढ़ा ।।।। चीर उढ़ावा के चुल मढ़ा ।।

छाती १-२ सोना ३-४ सूराख ५ तथा दंडी छाती की ६ नोक छाती के दंडी की
७ सूराख ८ भेंगिया ९ पोशाक १० दिल ११ दुनिया १२ नीबू १३ बेरी १४
अनार १५ अंगूर १६ खुशबू १७ रंग १८ दूध १९ काली नागिन २० यमुना
२१ नाम मुकाम २२ मुकाबिल २३ मौत २४ धुआँ २५ जवाब २६ नाफ मेढ़ २७

इंदुरी २८ चौली २९ चन्दन ३० चौरी ३१

बेहिं काकहँ अस बेनी[1] कीन्ही | चन्दन बास भुअंगहि लीन्ही
कृष्ण[2] करा चढ़ा वह माथें ॥ | तब सो छूटि अब छूट न नाथें
कारे[3] कमल गहैं[4] मुख देखा ॥ | शसि[5] पाछे जनु राह बिसेखा
को देखै पावै वह नागू ॥ ॥ | सो देखै माथे[6] मन भागू ॥ ॥

पन्नग जो पंकज मुख गहैं खंजन तहँ शिर बैठ
छात सिंहासन राज धन ताकहँ होइ जो दीठ

लिंक[10] खीन अस आहि न काहू | केहर[12] कहूँ न वह सर ताहू ॥
बसा[13] लंक[14] परबनी जग झीनी[15] | तेहि ते अधिक[16] लिंक[17] वह खीनी[18]
परहस[19] पियर भये तहँ बसा[20] । | लिये डंख मानुष कह डसा
मानहु नलिन[21] खंड दुइ भये | दुहुँ बिच लिंक[22] तार रहि गये ॥
हिये[23] सों मूड़ पर चली वह नागा | पैग देत कित सहसक[24] लागा
छुद्र[25] घण्ट मोहहिं नर राजा । | इन्द्र अघाड़ आय जनु बाजा
नाभ बीन[26] गहैं[27] कामिनी ॥ | लाकहिं सबै राग रागिनी ॥

सिंहन जीता लंक[28] शरहार लीन्ह बन बास
तेहि रिस रक्त पिये मानुष खाय मार के मांस

नाभी कुण्ड सो मलय[30] समीरू | समन्द्र भँवर जस भवै गँभीरू[31]
बहुत भँवर बौन्डर भये ॥ | पहुँच न सके स्वर्ग[32] कहँ गये ॥
चन्दन माँझ कुरंगिन[33] खोजू | वेहिं को पाव को राजा भोजू
को वह लाग हिवंचल सीझा | का कहिं लिखी ऐस को रीझा
सोहै कमल सुगन्ध सरीरू ॥ | समन्द्र लहर सोहै तन चीरू

चौंटी १ काला साँप २-३ पकड़ना ४ चाँद ५ साँप ६ कमल ७ पकड़ना ८ भमोला ९ कमर १० पतली ११ चीता १२ भँवरा १३ कमर १४ बहुत पतली १५ बहुत १६ कमर १७ बारीक १८ डाह १९ भँवरा २० कोका बेली २१ कमर २२ छाती २३ डर २४ करधनी २५ नाम बाजा २६ पकड़े हुये २७ चीता २८ कमर २९ चन्दन की हवा ३० गहरा ३१ आसमान ३२ हरिनक के पावँ का

116

117

झूलहिं रतन पाट के झोंपा[1] | साज मदन[2] बेहि का कहँ कोपा
अबहिं सो अहै कमल की करी | न जनों कौन भँवर कहँ धरी

बेध रही जग बासना निरमल[3] मेद[4] सुगन्ध
तेहि अरघान भँवर सब लुब्धे तजहि न दिये बंध

बरनों तम्बलिक[5] की सोभा | औ गज गवन देख सब लोभा
जुरे जंघ सोभा अति पाये ॥ | केला खंभ फेर जनु लाये ॥
कमल चरण अति रात[10] बिसेषी | रहै पाट[11] पर भूमि[12] न देखी ॥
देवता हाथ हाथ पग[13] लेह ॥ | जहँ पग परै सीस[14] तहँ देही ॥
माथे भाग न कोउ अस पावा | चरण कमल लै सीस चढ़ावा
चौरा चाँद सूर्य्य उजियारा ॥ | पायल बीच करहिं झनकारा
अनवट बिछिया नखत तराई[15] | पहुँच सकै को पाइन ताई ॥

बरन सिंगार न जान्यों नख सिख जैस अभोग
तस जग[17] कुछ न पायों उपमा[18] देउ वह जोग ॥

सुनि कै राजा गयो मुरझाथ | जानो लहर सूर्य्य के पाय ॥
प्रेम घाव दुख जानि न कोई | जेहि लागै जानै पै सोई ॥ ॥
परा सु प्रेम समुन्द्र अपारा ॥ | लहरहिं लहर होय बिसंभारा[19]
बिरह भँवर होइ भाँवर देय । | खन खन जीव हिलोरहि लेय
कितहिं निसास[20] बूड़ि जिव जाइ | कितहिं उठै निससे[21] बोराइ ॥
कितहिं पीत[22] खन हो मुख सेता[23] ॥ | कितहिं चेत[24] खन होय अचेता[25]
कठिन भरन तें प्रेम बिवस्था ॥ | ना न जिये न जाय अवस्था[26]

लहँगा १ कामदेव २ पाक साफ़ ३ केसर ४ छोड़ना ५ तारीफ़-करना ६ चूतर ७ कमर ८ दुनिया ९ बहुत लाल १० तख़्त ११ ज़मीन १२ क़दम १३ शिर १४-१५ छोटे नखत १६ दुनिया १७ मिसाल १८ बेक़रार १९ बेदम २०-२१ पीला २२ सफेद २३ होश २४ बेहोश २५ हाल २६

जनु लेंहारहिं लीन्ह जिव हरहिं त्रासहि ताहि
दूतना बोल न आव मुख करैं त्राहि त्राहि

जहँ लग कुटुम्ब लोग औ नेगी
जानवंत गुनी कारी आये ॥
चरचहिं चेष्टा परखहिं नारी ॥
है राजा लक्ष्मण के करा ॥
तहँ सो राम हनुमंत बल दौरी
बिनय करहिं जो तो गढ़पती
कहो सो पियर काहि पुनि खागा

राजा राय आय सब बेगी ॥॥
ओझा बैद सयान बुलाये
नेर नाहिं औषद तहिं बारी
सक्ती बान मोह है परा ॥
को लै आव सजीवन मूरी ॥
का जीव कीन्ह कौन मत मती
समन्द सुमेर और तुमहि माँगा

धावन तहाँ पठावैं देहिं लाख दस रोक ॥
होय सो बेल जेहिं बारी आनहिं सबै बरोक

जो भा चेत उठा बैरागा ॥ ॥
आय जगत बालक जस रोवा
हौं तो अहा अमर पुर जहाँ ॥
कै उपकार मरन पर कीन्हा
सोवत रहा जहाँ सुख साखा ॥
अब जिव कहाँ यहाँ तन सूना ।
जो जिव घटै काल के हाथाँ

बावर जनो सोय उठ जागा
उठा रोय हा ज्ञान सो खोवा ॥
यहाँ मरन पुर आयौं कहाँ ॥
मुक्ति जगाय जीव हर लीन्हा
कसन तहाँ सोवत बिधि राखा
कब लग रह यहि प्रान बहूना
कठिन नेक पै जीवन साथा

उठहिं हाथ तन सरवर हिया कमल तेहिं माहि
नैनहि जानहु नैरें कर पहुँचत अवगाहि ॥

सबहिं कहा मन मम को राजा
तासों जूझ जात जो जीता ॥

काल सेतें कुछ जूझ न छाजा
जात न कृष्ण तजहि गोपिता

बुखदेना १ जल्द २ चेहिरे काहालत ३ नज़दीक ४ मानिन्द ५ राजा ६ दूत ७ नक़द ८ जल्द ९ दुनिया १० बैकुण्ठ ११ अहसान १२ चुपचाप १३ ईश्वर १४ बलग १५ तालाब १६ दिल १७ आँख १८ हाथ १९ गहरा २० मौत २१ लड़ाई २२

ऊनहिं नेह काहू से कीजे ।। नाउँ मोर लै काहे जिव दीजे ।।
पहिलहिं सुख नेह जब जोरा । पुनि दोउ कठिन निबाहत ओरा ।
रहत हाथ तन जीस सरीरू ।। पहुँचन जाय परा तस फेरू ।।
गगन दृष्टि सौं जाइ पहुँचा । प्रेम अदृष्टि गगन तें ऊँचा ।।
ध्रुव तें ऊँच प्रेम ध्रुव ऊआ । शिर दै पाठ दिये सो कुआ ।।

तुम राजा औ सुखिया करा राज सुख भोग ।
यहि पंथ सो पहुँचे सहे जो दुख बियोग ।।

सुवा कहा मत तुम्ह सब कोऊ । करत प्रीति कठिन है काऊ ।।
तुमहिं अबहिं जरई धुख पोई । कमल न भेंटहि भेंटहि कोई ।।
जानहि भवर जोति हिय लूरे । जीव देहि औ दिये न चूरे ।।
कठिन आह सिंहल कर सजू । पाई नाहिं जूझ कै साजू ।।
वह पथ जाव जो होय उदासी । योगी जती औ तपा सन्यासी ।।
भोग किये पावत वह भोगू ।। तज सो भोग कोइ करत न जोगू ।
तुम राजा चाहौ सुख पावा ।। जोगहि भोग करत नहिं भावा ।

साधन सिद्ध न पाई जौ लौ साधन तप ।।
सो पै जानहि बापुरो सीस जो कर न हिय कंप ।

का भाखै कहानी कथा । निकसै पीउ त बिरह मथा ।
जो लहि आप हेरा नहिं कोई ।। तौ लहि हेरत पावत सोई ।।
प्रेम पहाड़ कठिन बिधि गढ़ा ।। सीपै जाय सीस सो चढ़ा ।।
पथ सूरि नगर उठा आगू ।। चोर चढ़ा के चढ़ि सकै न कोई ।।

मुहब्बत १-२ मुश्किल ३ बदन ४ आसमान ५ निगाह ६ अदेख ७ असमान ८ नामनरवन ९-१० एह ११ बिरह १२ मुश्किल १३ मुलाक़ात १४ कौका बेली १५ एह १६ मुश्किल १७ लड़ाई १८ एह १९ क़िसिम फ़की २०-२१-२२-२३ छोड़ना २४ फ़की २५ शिर २६ दूध २७ मुश्किल २८ ईश्वर २९ शिर ३० एह सूरी की ३१ नाम फ़कीर ३२

तुइँराजा कापहिरसिकंथा ।।
काम क्रोध तिस्नामनमाया
नवसेधें गढ के मोंकयाए ।।
नोरे चरहिं सातभेदंस पंथा ।
पाँचो चोर न छाड़हिं काया ।
चरमूसहिं निसिकेउजियारा ।

अबहूँ जागि अयानीहोत आवनिसभोर
पुनि कुछहाथ न लागि मूस जायँजब चोर ।।

सुनिसो बातराजा मनजागा
नैननहि हुरहिं मोतिअौसूगा
हियेकी जोतिदीपकहसूझा
उलटि दृष्टि माया सोरूढी ।।
जोपे नाहीं अस्थिर दसा ।।
गुरुबिरह चिनगीपैमेल्ह ।।
अबकीपतंग भृंगकीकेरा

नोरे चरहिं सातभेदंस पंथा ।
पाँचो चोर न छाड़हिं काया ।
चरमूसहिं निसिकेउजियारा ।
पलक न मारि टकटकालागा ।।
जस गुड़ स्वादुरहा होय गूँगा
यहजोदीप अँधेरा बूझा ।।
पलट नफिरी ज्ञानकेमूढी ।
जगउजागि काकीजबसा ।।
जोमूलगाय लिये सोचेला
भँवरहोनोजेहिं कारनजरा

फूलफूलफिरपूछौजोपूछौवहकौन ।।
ननन्याछाकरकैमिलौंज्योंमधुकरजिवदेत

हिन्दू मीतबहुतसमुझावा
उपजैपेमपीरजेहिआवे ।।
अमृतबात कहतबिषजाना
जोवहबिषेमानिकैखावे ।।
पूछौबातभरथरिहिजाय ।।
जोमहेसबड़सिद्ध कहावा ।।

मानैनराजागवनभुलावा ।
परबुधितहोअधिकसोआवे
प्रेमकोबचनमीठकैमाना
पूछौताहीप्रेमसिठाय ।।
अमृतराजातजोबिषखाय
उनहूबिषेकरदपैलावा ।।

गुदड़ी १ बीच २ रहतथा नाक-कान आरव-मुह-गुदा-लिंग ३ गुस्सा ४ हवस ५ बदन ६ मूरख ७ किला ८ दर्मियान ९ ज्ञान १० नादान ११ गगन १२ आँख १३ दिल १४ नजर १५ परवाना १६ नामकीड़ा १७ मालिक १८ कैनकी १९ भँवरा २० होश २१ नसीहत २२ बहुत २३ बात २४ राजा भरथरी २५ छोड़ना २६ महादेवजी २७

होत उयो रबि किरन निकासा | हनुवंत होय को देइ सु आसा

तुम्ह सब सिद्धि मनावहु होय गणेश सिध लेहु
चेला की न चलावै तुलै गुरु जेहिं भेहु ॥

तजा राज राजा भा जोगी ॥ | करे किंकरी तन कियो बियोगी
तन बिस भर मन बावर लटा | उरझा प्रेम परी शिर जटा ॥
चन्द्र बदन औ चन्दन देहा ॥ | भस्म चढ़ाय कीन्ह तन खेहा
मेखल सिंह चक्र ढिढारे ॥ | लीन्ह हाथ तिर सूल सँभारे ॥
कंथा पहिर दंड कर गहा ॥ | सिद्धि होय कहँ गोरख कहा ॥
मुन्द्रा श्रवण कंठ जपमाला | कर उहियाँ काँध सिंह छाला
पाँवर पाय लीन्ह शिर छाता | खप्पर लीन्ह भेस कै राता ॥

चला भक्ति माँगने कहँ साज किया तप जोग
सिद्धि होय पद्मावत पायँ हिरदँ जब कि बियोग

गणिक कहहिं कर गवन न आजू | दिन लै चलहिं होय सिध काजू
प्रेम लुब्ध दिन घड़ी न देखा | तब देखी जब होय सरेखा ॥
जेहँ तन प्रेम कहाँ तेहि माँसू | कया न रक्त न नयनहिं आँसू
पंडित भुलान न जानहिं चालू । | जीव लेत दिन पूँछ न कालू ॥
सती कि बौरी पूँछै पाँडे ॥ ॥ | औ धर बैठि न सेतै भाँडे ॥
मरि जो चलै गङ्गा गति लेइ ॥ | तेहि दिन कहाँ घड़ी को देइ ॥
मैं घर बार कहाँ कर पावा ॥ | घर काया पुनि अंत परावा

हेरे परेवरु पखी जेहिं बन मोर निबाहि ॥ ।
खेल चला तेहिं बन कहँ तुम अपने घर जाहि ।

सूर्य्य १ छोड़ना २ हाथ ३ दुखी ४ बेक़रार ५ मुहँ ६ राख ७ मस्त हाथी ८ गुदड़ी ९ हाथ १० पकड़ना ११ पूरा होना १२ नाम फ़क़ीर का मिल १३ बाला १४ कान १५ गरदन १६ सुमिरनी १७ चीते की खाल १८ खड़ाऊँ १९ सूरत २० लाल २१ कामिल २२ कामिल २३ दिल २४ दुख २५ नजूमी २६ पूरा २७ दीवाना २८ होशियार २९ बदन ३०

३१ आखिर ३२

चहुँदिस[१] आन सो डौंडी फेरी ॥ भइ कटकाई[२] राजा केरी ॥
जानवंत अहहि सकल[३] दरकाना[४] सांभर[५] लेहु दूर है जाना ॥
सिंहल दीप जाय सब चाहा ॥ मोल न पावब जहाँ बिसाहा
सब निबहै पुनि आपन साँठी[५] साँठी[६] बिन सो रहँ मुख माटी
राजा चला साज कै जोगू ॥ साजो बेग[७] चलै सब लोगू ॥
गर्ब[८] जो चढ़ी तुरी[९] के पीठी ॥ अब भुइँ चलहु स्वगे[१०] सोंडीठी[११]
मंत्री[१२] लीन्ह होहु संग लागू ॥ गुदर जाय सब होय यह आगू ॥

का निचिंतरे[१३] मनै अपनी चिन्ता[१४] आछ ॥
लेह सजग[१५] भा आरामन[१६] पुनि पछतास न पाछ

बिनवै रतन सेन की माया ॥ भाथे छात पाट[१७] नित पाया
बरसहिं नव[२०] निधि लक्ष पियारी राज छाँड़ि जन होहि भिखारी
नित[२१] चन्दन लागै जेहि देहा ॥ सो तन देखि भरब अब खेहा[२२]
सब दिन रहे करत तुम भोगू सो कैसे साधब तप जोगू ॥
कैसे धूप सहब बिन छाहाँ कैसे नींद पड़ै भुइँ माहाँ ॥
कैसे ओढ़ब काँथर[२३] कंथा ॥ कैसे पाय चलत भुइँ पंथा[२४]
कैसे सहब खनहि खन भूँखा कैसे खाब कर[२५] कटा सूखा

राज पाट[२६] दर[२७] पुरुष सब तुमहिं सों उजियार ॥
बैठि भोग रस माहिं के न चल तेहि अँधियार

मोहिं यहि लोभ सुनाव न माया काकर सुख काकर यह काया
जो नियान[२८] तन होइ यह छारा[२९] माटी पोत मरै को भारा ॥
का भूलौं यहि चन्दन चोवा। बैरी जहाँ अंग के रोवा ॥

चारौं तरफ़ १ फ़ौज २ सब ३ अरकान दौलत ४ पूँजी ५-६- जल्द ७ ग़रूर ८ घोड़ा ९ आसमान १० निगाह ११ सलाह १२ ग़ाफ़िल १३ फ़िकिर १४ होशियार १५ पहिले १६ अरज़ करना १७ तख़्त १८ हमेशा १९ सब दुनिया की दौलत २० हमेशा २१ राख २२ गुदड़ी २३ राह २५ तख़्त २६ फ़ौज २७

आख़िर २८ राख २९

हाथ पाँय श्रवन[1] औ आँखी[2] ॥ ये सब भरहिं आय पुनि साखी
सूति[3] सूति तन बोलहिं दोखो[4] कहो कहँ हो यह गति मोखो[5] 131
जो भल होत राज औ भोगू गोप[6] चन्द नहिं साधत जोगू
उन्हों सृष्टि जो देख परेवा तजा[8] राज कजरी बन सेवा

देखि अंत अस होयहि गुरु दीन्ह उपदेस ॥
सिंहल दीप जाव मैं माता तुम सों मोर अदेस[10]

रोवैं नागमती रनवास ॥ कै तुम कंत[11] दीन्ह बनबास ॥
अब को हमहिं करेहि भोगनी हमहि साथ होय हहिं जोगनी
की हम लावहु आपन साथा । की अब मार चलहु सँहाथा ।
तुम अस बिछुड़े पीव पिरीता ॥ जहवाँ राम तहाँ संग सीता ॥ 132
जबलहि जिव संग छाड़ि न काया[12] करिहों सेव परवारहु[13] पाया ॥॥
भली पदमिनी रूप अनूपा[14] ॥ हमते कोई न आगर[15] सूपा ॥
भौंहें भली पुरुष[16] न कीडीठी[17] जहँ जाना तहँ दीन्ह न पीठी ॥

दीन्ह असीस सबै मिल तुम माथे नित[18] छात
राज करो चित्तौर गढ़ राखौ पिय अहिवात ।

तुम तिरया[19] मत हीन तुम्हारी मूरुख सोई मता घर नारी ॥
राघव जो सीता संग लाई ॥ रावन हरी कौन सिधि पाई[20] ॥
यहि संसार स्वपन जस हेरा[21] ॥ अंत[22] न आपन को कहि केरा ॥
राजा भरथरिहँ नहिं सुनी अयोनी[23] जेहि के घर सोरह[1600] सै रानी ॥ 133
कुच[24] लीन्हे तरवा सहराई ॥ भा जोगी कोउ सेग न लाई ॥
जोगी काहि भोग सों काजू ॥ चहीं न मे हरी चहै न राजू ॥

कान १ गवाही २ सूराख ३ पाप ४ नजात ५ नामराजा ६ संसार ७ छोड़ना ८ आखिर ९ सलाम १० खाविन्द ११ बदन १२ धोना १३ बेमिसाल १४ खूबसूरत १५ मर्द १६ दोखना १७ हमेशा १८ औरत १९ कमाल २० देखना २१ आखिर २२ नादान २३ छाती की दंडी २४

जूड़ि[1] कर कटा पै भीर वहि चाहा | जोगिह तात[2] भात सों काहा

कहा न मानी राजा तजी[3] सबाई[4] भीर ॥ ॥
चला छाँड़ि के रोवत फिर के दीन्ह न धीर[5] ॥

रोवै माता फिरै न बारा[6] ॥ | रतन चला जग[7] भा अँधियारा
बार[8] मोर जिया[9] वर रता ॥ | सो लै चला सुआ[10] परबता ॥
रोवहिं रानी तजहिं[11] पराना ॥ | फोरहिं बरी[12] करहिं खरिहाना
चूरहिं गै अँभरन[13] उर हारू[14] । | अब का कहँ हम करब सिंगारू
जा कहँ कही रहसि के पीउ | सोई चला का कर यहि जीव
मरी चहहिं पै मरै न पावहिं । | उठै आगि सब लोग बुझावहिं
घड़ी एक सुठ भयो अँडूरा[15] ॥ | पुनि पाछे बीता होय रूरा[16] ॥

टूटि मने नव[17] मोती फूटि मने दस[18] काँच ॥
लीन्ह समेटि सब आभरन होयगा दुख कर नाँच

निकसा राजा सुन के पूरे ॥ | छाँड़ि नगर मेला होय दूरे ॥
राय[19] राँग सब भये बियोगी[20] ॥ | सोरह सहस[21] कुँवर भये जोगी
माया मोह हरी सें हाथा ॥ | देखि न बूझ नियान[22] न साथा
छाँड़हिं लोग कुटुम्ब सब कोऊ | भये निरास दुख सुख तज[23] दोऊ
सँवरहिं राजा सोइ अकेला[24] । | जेहि रे पंथ[25] खेले होय चेला ॥
नगर नगर औ गावहिं गावाँ । | छाँड़ चला सब ठावहिं[26] ठाँवाँ
काकर घर काकर मढ़ माया | ताकर सब जाकर जिव काया[27]

चला कटक[28] जोगिन कर के गेरुवा सब भेस ॥
कोस बीस[29] चारहु[30] दिस जानहुँ फूला टेस[30] ॥

ठंडी रोटी का टुकड़ा १ गरम २ छोड़ना ३ सब ४ धीरज ५ लड़का ६ दुनिया ७ ज़िन्दगी का सबस ८ तोता १० छोड़ना ११ चूड़ी १२ गरदन के ज़ेवर १३ छाती १४ शोर १५ १६ ज़ेवर १७ शोर १८ राजा के भाई १९ दुखी २० हज़ार २१ आख़िर २२ छोड़ना २३ परमेश्वर २४ राह २५ जगह २६ बदन २७ फ़ौज २८ चारहुँ

तरफ़ २९ टेसू ३०

आगें सगुन सगुन[1] यहिं ताका ॥ दही माझ रूपे[2] कर टाका ॥
भरे कलश तरुनी[3] चलि आईं दही लिये ग्वालिन गुहराईं ॥
मालिन आय मौर ले गाथे ॥ खंजन[4] बैठि नाग के माथे ॥
दाहिन मिरग[5] आय गा धायें ॥ प्रतीहार[6] बोला घर बायें ॥
बिरख सवरिया[7] दाहिन बोला ॥ बायें दिस[8] गीदर[9] नहिं डोला
बायें अकाशी[10] धूरें आये ॥ लोंबा[11] दरश आय देखराये ॥
बायें कुररी[12] दाहिन कोचा[13] ॥ पहुंची[14] भुक्ति जैस मन रोचा[15]

जाकहं सगुन होहिं अस औ गवने[16] जेहि आस ।
अष्टो[17] महा सिद्धि पंथहि[18] जस कवि कहा व्यास

भयो पयान[19] चला तब राजा ॥ संख नाद[20] योगिन कर बाजा ॥
कहिन आज कुछ थोर[21] पयाना काल्ह पयान[22] दूरे है जाना ॥
वह मिलान[23] जो पहुंचै कोई ॥ तब हम कहब पुरुष[24] भल सोई
है आगें परबत की बाटें[25] ॥ बिषम[26] पहाड़ अगम[27] सठ घाटें
बिच बिच कोह नदी औ नारा ॥ ठावहिं[28] ठाव बैठि बट[29] पारा ॥
हनुमत[30] केर सुनत पुनि हांका वहिं को पार होय को थाका ॥
अस मन जानि संभारहु आगू ॥ अगवा[31] केर होहु पछ लागू ॥

करहिं पयान[32] भोर उठि नितहि कोस दस जाहि
पंथी[34] पंथा[35] जो चलहिं ते कित रहै औ ठाहि

नजूमी १ रूपिया दही में रखके २ जवान औरत ३ ममोला ४ हिरन ५ तीतर ६ साढ़ ७ तरफ़ ८ सियार ९ चील्ह १० लोंवड़ी ११ कौवा १२ उल्लू १३ रोज़ी १४ चाहना १५ जाना १६ कामिल १७ राह १८ कूच १९ शंख की आवाज़ २० कूच तथा मरने का दिन २१ कूच दूर तथा कयामत का दिन २२ मिलना २३ जवांमर्द २४ राह २५ टेढ़ा २६ जहां कोई न पहुंच सके २७ जगह २८ राह लूटने वाले २९ बंदर ३० गुरु ३१ कूच ३२ हररोज़ ३३ राह चलने वाले ३४ राह ३५

करहु दृष्टि[1] थिर[2] होय वटोऊ[3] ॥ आगू देखि धरहु भुईं पाऊ ॥
जोरि ओवट मुई परी भलाय की मरि पंथ[5] चलै न जाये ॥
पायन पहिर लेहु सब पंवरी[6] ॥ काँट न चुभै न गठै अँकरोरी
परी आय अब वन खंड माहाँ डराडा कारन बीच निवाहाँ ॥
सघन[8] ढाख वन चहुँदिस[10] फूला बहु दुख सिलै वहाँ कर भूला ॥
झाँखर जहाँ सुक्ख डहु पंथा ॥ हिलग सकोय न फारहु कंथा[12]
दहिने बिदर[13] चँदरी[14] बायें ॥ वहि कहँ होब बाँटदु[15] इठायें[16]

एक बाट गई सिंहल[17] दूसर लंक[18] समीप ॥ ॥
है आगे पंथ[21] दोव नहि गवनव[22] केहि दीप ॥ ॥

ततखन बोला सुआ सरेखा[23] अगवा[24] सोई पंथ[25] जेहि देखा ॥
सो का उडै न जेहि तन पाखू ॥ लै सो पिला[25] सहि बोडै साखू
जस अन्धा आँधी कर संगी ॥ पंथ[26] न पाव होय सहँ[27] लंगी ॥
मुनि मति[28] काज चहसि जो साजा बीजा[29] नगर बिजै गिर राजा ॥
पूँछा जहाँ कुंड औ गोला ॥ तजि[30] बायें अंध्यार[31] खटोला
दखिन दहिने रहै तिलंगा[32] ॥ ॥ उतर माँझ होय करहा कटंगा[33]
माँझ रतनपुर[34] सौंहँ दुवारा ॥ झार खंड वे बायें पहरा

आगे वाउ उडै सो बायें देहि सु बाट[35] ॥ ॥ ॥
दहिना वरत लाय के उतर समुन्द्र की घाट ॥

निगाह १ क़ायम २ मुसाफ़िर ३ राह बताने वाला ४ राह ५ खड़ाऊं ६ जंगल ७ नाम जगह ८ गुंजान ९ चारों तरफ़ १० राह ११ गुदड़ी १२ नाम मुल्क १३-१४ राह १५ जगह १६ राह १७ नाम मुल्क तथा स्वर्ग १८ नाम मुल्क तथा नर्क १९ बराबर २० राह २१ जाना २२ तोता होशियार २३ राह बताने वाला २४ नाम दरख़्त २५ राह २६ झोला माराहुवा २७ सलाह २८ नाम मुल्क २९ छोड़ना ३० नाम मुक़ाम योग की क्रियां ३१-३२-३३ नाम मुल्क तथा मुक़ाम मतलब ३४ नाम मुल्वा ३५ राह ३६

होत पयान जाय दिन केरा ॥ ॥ | सिंगारन महिं दीन्ह बसेरा
कुश्रा साँढ़र भई सूमि सपेती ॥ | करवट आय बनी भइ सेती ॥
कया मिली जस भूमि सरीजा ॥ | चरिउ दिस कोस आसतन भीजा
राघव दाव सबै सोवहिं चेला ॥ | राजा जागे आप अकेला ॥ ॥ ॥ 140
जेहि के हिये प्रेम रंग जामा ॥ ॥ | का तेहि नींद भूख बिसरामा
बन अंधार रैन अंध्यारी ॥ | भादौं बरन भयो अति भारी ॥
किंगरी गहे हाथ बैरागी ॥ ॥ ॥ | पाँच तंत्त धुनि आही लागी ॥

नयन लागि तेहि मारा पदमावति जेहि दीप ॥
जैसे स्वाति बूँद कह बन चाँचिक जल सीप ॥

सांसक लागि चलत तेहि बाटा | उतरे जाय ससुद्र की घाटा ॥
रतनसेन भा योगी यती ॥ | सुनि भेंटे आवा गजपती ॥
योगी आप कटक सब चेला ॥ | कौन दीप कह जाहु हि खेला ॥
भलहिं आय सब माया कीजे | पदुमाई कहं आय सुदीजे ॥ 141
सुनहु गजपती उत्तर हमारा ॥ | हम तुम एकै भाव निरारा ॥
सो तेहि कहं जेहि मन यह भावा | जो निरास तेहि लाडु न सावा ॥
यही बहुत जो बोहित पाऊँ ॥ | तुमते सिंहल दीप सिधाऊँ ॥

जहां मोहिं निज जानां कटक होंसिये बार ॥
जोरे जियों तो लैफिरों मरौं तो वहकी बार ॥

कूच १ शाम के वक़्त २ जंगल तथा क़ब्रिस्तान ३ नाश्क और लिहाफ़ ४ तकिया ५ ज़मीन ६ जगह ७ रतनसेना मुराद परमेश्वर ८ दिल ९ आराम १० रात ११ नाम बाजा १२ पांचतार १३ आरव १४ राह १५ पपीहा १६ एक महीना १७ रसता १८ नाम राजा १९ फ़ौज २० जाना २१ मेहरबानी २२ ज़्याफ़त २३ दुकान २४ नाम राजा २५ जवाब २६ नाख़ुदा २७ नुकसान २८ नाव २९ फ़ौज ३० दरवाज़ा ३१-३२

142

राजपति[1] कही सीस[2] बर माँगा ॥ एतनी बोल न होइ है खाँगा ॥
यहि सब देउँ आन पै गढ़ी ॥ फूल सोई जो महेश[3] बर चढ़ी ॥
पै गुसाईं सौं एक नवाती[4] ॥ मारग[5] कठिन[6] जाब केहि भाँती[7]
सात समन्द्र असूझ अपारा । मारहिं मगर मच्छ घड़ियारा
उठै हि लोर न जाय सँभारी भागहिं[8] कोई निबहै बैपारी
तुम सुखिया अपने घर राजा एत दुख जो सहो केहि काजा
सिंहल दीप जाय सो कोई ॥ हाथ लेहैं आपन जिव होई

खारि[9] क्षीर[10] दधि[11] उदधि[12] सुरा[13] जल पुनि किल[14] कला कूत[15]
को चढ़ि नाँघ समन्द्र ये सातौं है काकर असपूत ।

143

गजपति[15] यहि मन सकती[16] सेवा पै जेहि प्रेम कहाँ तेहि जीवा ॥
जो पहिले शिर दे पग[17] धरिये ॥ मुये केर का भाँचु[18] करिये ॥
सुख संकल्प दुख साँभर[19] लीन्हा तौ पयान[20] सिंहल कहँ कीन्हा
भँवर जानि पै कमल पिरीती जेहिं महँ बिथा प्रेम की बीती
औ जे समन्द्र प्रेम कर देखा तें यहि समन्द्र बूँद बर[21] लेखा
सात[22] समन्द्र सत लीन्ह सम्हारू जो धरती[23] का गरु पहारू
जो पै जी बाध सत बेरा ॥ पर जिव जाय फिरे नहिं फेरा

रंग नाथ हौं जाकर हाथ वही के नाथ ॥
गहे[24] नाथ सो खीचे फिरे न फेरे माथ ॥

प्रेम समुद्र जो अति अवगाहा जहाँ न वार न पार न थाहा ॥
जो वह समुद्र गाह यहि परे ॥ जो अवगाह हंस होइ तरे

नाम राजा १ सिर २ महादेव जी ३ अरज़ करना ४ राह ५ मुशकिल ६ किस तरह ७ क़िसमत ८ खारी ९ दूध १० दही ११ मीठा पानी १२ शराब १३ नाम समुद्र १४-१५ सख़ती १६ क़दन १७ मौत १८ तोशा १९ कूच २० बराबर २१ खारी - मीठा पानी - दही - दूध - शराब - किलकिला - कूत - ये सात समन्द्र है २२ ज़मीन २३ पकड़ना २४ गहिरा २५-२६

हौं पद्मावत कर भिख संगा ॥ दृष्टि न आव समुद्र औ गंगा ॥
जेहि कारन गै काँथर कंथा ॥ जहाँ सो मिलै जाउँ तेहि पंथा ॥
अब यह समुन्द्र परौं होय मरा ॥ प्रेम मोर पानी के करा ॥ ॥
मर भा कोइ कतहूँ लै जाऊ ॥ वह की पंथ कोऊ घर खाऊ
अस मन जान समुन्द्र महँ पर्यौं जो कोइ खाय बेगि निसतर्यौं ॥

स्वर्ग सीस धर धरती हिया सो प्रेम समुन्द ॥
नयन कौडिया होय रही लेले उठ तेहि बुन्द

कठिन बियोग जोग दुख दाहू ॥ जन्म जरत हौं ओर न पाहू ॥
डर लज्या तहँ दोउ गवानी ॥ देखे कछू न आगनु पानी ॥ ॥
आग देखि वह आगे धावा ॥ पानि देखि वह सोहि धसावा
जस बावर न बुझाये बूझा ॥ कौन भाँत जाय का सूझा ॥
मगर मच्छ डर मनै न लेखा ॥ आपहि चहौं पार भा देखा ॥
औ नहिं खाय वह सिंह सिंदूरा काढै जाहि अधिक यह झूरा
काया माया संघ न आथी ॥ ॥ जेहि जिव सौंपा सोई साथी ॥

जो कुछ दर्ब आहा संग दान दीन्ह संसार ॥
का जानी केहि की सत दई उतारै पार ॥ ॥

धन जीवन औ ताकर जिया ॥ ऊँच जगत महिं जाकर दिया
दिया सो सब जप तप उपराहीं ॥ दिया बराबर कुछ जग नाहीं ॥
एक दिया तें दस गुन लाहा ॥ दिया देखि सब को मुख जाहा
दिया करै आरो उजियारा ॥ जहाँ न दिया तहाँ अँधियारा ॥

तिगाह १ वास्ते २ गरदन ३ गुदड़ी और कंटा ४ राह ५ मानिन्द ६ रास्ता ७ जल्द ८ छूट जाना ९ असमान १० सिर ११ ज़मीन १२ दिल १३ आँख १४ नाम जानवर १५ मुश्किल १६ जुदाई १७ जलना १८ सामने १९ किसतरह २० शेरलाल २१ ज़्यादा २२ बदन २३ दुनिया दौलत २४ रूपिया २५ ईश्वर २६ ज़िन्दगानी २७ दुनिया २८ ३० ऊपर २९

दिया मंदिर[1] निश[2] करै उजोरा ॥ दिया नाहिं घर मूसहिं चोरा ॥
हातिम[3] करण[4] दिया जो सिखा दिया रहा धर्मन महिं लिखा
दिया सो काज दोहूं जग आवा ॥ यहां जो दिया वहां सब पावा ॥

निरमल[5] पंथ[6] कीन्ह तेहि जहिं रे दिया कुछ हाथ
कुछ नहिं कोई लै जाय हि दिया जाय पै साथ ॥

खंड ग्यारहवां बोहित खण्ड

सत[7] न डोल देखा गज[8] पती ॥ राजा दत्त[9] सत[10] दोनहु सती ॥
आपन नाहिं कया[11] पी कंथा ॥ जीव दीन्ह अगमन[12] तेहि पंथा[13]
निश्चै चला भर्म डर खोय साहस[14] नहां सिद्धि[15] तहं होय ॥
निश्चै चला छांड़ के राजू ॥ बोहत[16] दीन्ह दीन्ह सब साजू ।
चढ़ा बेग[18] औ बोहत पेली ॥ धन वह पुरुष[20] प्रेम पंथ[21] खेली
प्रेम पंथ[22] जो पहुंचे पारा ॥ बहुर[23] न आय मिले यहि छारा[24]
तेहि पावा उत्तम[25] कैलाश ॥ जहां न मीच[26] सदा सुख बास ॥

यहि जीवन की आस का जिं स शुप्त तिल आध
मुहम्मद जीत हि जो मुये ते पुरुष[20] सिधि साध ॥

जस दिन रैन[28] चलै गज[29] भांती बोहत[30] चली समुन्द्र की पांती
धावहिं बोहित[31] मन उपराही ॥ सहस[32] कोस एक पल महं जाहीं
समुन्द्र अपार स्वर्ग[33] जनु लागा स्वर्ग[34] न खोल[35] गिने बैरागा ॥
तत[36] खन एक चाल्ह[37] देखराये जनो धौला[38] गिरि परवत आये
उठै हिलोर जो चाल्ह[39] निराजे[40] ॥ लहर अकाश लागि भुई बाजे

मकान १ रात २ नाम सख़ी ३-४ पाक साफ़ ५ राह ६ ईमान ७ नाम राजा ८ सख़ात ९ सच्चाई १० बदन ११ पहिले १२ राह १३ बहादुर १४ कामिल १५ नाव १६ सामान १७ जल्द १८ जहाज़ १९ मर्द २० राह २१-२२ लौटना २३ मीठा २४ बैकुण्ठ २५ मौत २६ मर्द २७ रात २८ हाथी २९ नाव ३०-३१ हज़ार ३२ आसमान ३३ ऊंचा ३४ नीचा ३५ एकायक ३६ नाम जानवर ३७ नाम पहाड़ ३८

राजा सिते कुँवर सब कहैं ॥ ।
तेहिरे पंथ[1] हम चाहत गवना[2] ॥

अस अस मच्छ समुन्द्र महिं अहै
होहु सजोत[3] बहुर[4] नहिं अवना

गुरु हमार तुम राजा हम चेला तुम नाथ ॥
जहाँ पाउँ गुरु राखे चेला राखे माथ ॥ ॥

केवट[5] हँसे सुनत को बंजा[6] ॥
यहि तो चाल्ह[8] न लागे कोहू ॥
सो अबही तुम देखे नाहीं ॥
राज[10] पंख तेहि पर मँडराहीं ॥
ते वे मंच्छ ढौर गहि लेहीं ॥
गर्जे गगन[14] पंख जो खोलहिं ॥
तहाँ[15] न सूर्य्य न चान्द असूझा ॥

समुन्द्र न जानि कुवाँ कर मंजा[7]
का कहियो जब देखब रोहू ॥
जेहि मुख ऐसे सहस[9] समाहीं ॥
सहस[11] कोस तिन की परछाहीं
सावक[13] मुख चारा ले देहीं ॥
डोले समुन्द डहन जो डोलहि
चढे सोई जो अगमन[16] बूझा ॥

दस महँ इक जाय कोइ कर्म धर्म सत नेम ॥
बोहित[17] पार होय जो तौहो कुसल[18] औ खेम ॥

बात कहत भइ देस गुहारी ॥
हस्ती[21] लाय सिष्ट[22] सब ढीला ॥
केवट[24] लागि लागि सब बली[25] ॥
बोहित[27] सहस[28] जाहिं चहुँ औरा ॥
सुनि के आप चढ़ासे[32] राजा ॥ ।
भाल बाँस खाँडे[33] बहु परही ॥ ॥
चारा लील जो माँछर बाझी ।

केवटहि[19] चाल्ह[20] समुन्द्र महँ मारी
दौड़ आय इक चाल्हहि[23] लीला
फिरै न चाल्ह[26] जाय बहि चली
होय कलोल[29] जाहिं तरि[30] बोरा
औ सब लोग देस मिलि बाजा[32]
जान परवाल[34] बाज के चढ़ही ॥
कहाँ जाय जो जाकर खाँझी[35] ॥

राह १ जाना २ होशियार ३ लौटना ४ मल्लाह ५ बातचीत ६ मेंडुक ७ नाम जानवर ८ हज़ार ९ सीमुर्ग़ १० हज़ार ११ पकड़ना १२ बच्चा १३ आसमान १४ तथा परमेश्वर की राह १५ दूर अंदेशी १६ नाव १७ खैरियत १८ नाखुदा अर्थात् मल्लाह १९-२४ नाम जानवर २०-२३-२६ हाथी २१ ज़ंज़ीर २२ जबरदस्त २५ नाव २७ हज़ार २८ शोर २९ पानी के नीचे ३० फौज ३१ पहुँचना ३२ तलवार ३३ नास जानना ३४ खुरा-

माँछरकर भूखहि[1] हृदे तेहि साधे बिय[2] बान ॥
सबहिं पहुँच के मारा चालहि[3] तजा[4] परान ॥

जस धौला[5] गिरि परबत होई ॥ तेही भाँति उतरान्यो सोई ॥
सबे देस मिलि तैरहिं आना ॥ लिये कुल्हाड़ी लोग जहाना ॥
जनु परबत कहँ लागहि चाँटी[6] ॥ लेगये माँस रही सब काटी ॥
माँजरि परी कोस दस बेंड़ी ॥ माँजरि कस जस स्वेत[7] बरेंड़ी ॥
नयन[8] सो जानि कोटि[9] की पवरें ॥ कित अस गहे[10] फिरै तेहि भवरें ॥
रतन सेन से संधी कहैं ॥ ॥ अस अस मच्छ समुन्द्र महिं अहैं ॥
राजा तुम चाहो तहिं गवना[11] ॥ होहिं संयोग[12] बहुरि[13] नहिं अवना ॥

तुम राजा औ गुरु हम सेवक औ चेर[14] ॥ ॥ ॥
कीन्ह चहैं सब आयसु[15] अब गवनी[16] तहिं फेर ॥

राजे कहा कीन्ह मो प्रेमा ॥ ॥ जहाँ प्रेम कहाँ कुशल[17] क्षेमा ॥
तुम खेवौ जो खेवहि पारहिं ॥ जैसे आप तरहि मोहिं तारहिं ॥
भोहिं कुशल[18] कर सोच न ओता ॥ कुशल[19] होत जो जन्म न होता ॥
धर्ती[20] स्वर्ग[21] जाँट[22] पर दोऊ ॥ जो यहि बिच जिव राख न कोऊ ॥
हौं अब कुशल एक पै माँगौं ॥ प्रेम पंथ[23] सत बाँधि न खाँगौं[24] ॥
जो सत हिये[25] तो पंथहि[26] दिया ॥ समुन्द्र न डरै देखि मरजिया ॥
तहँ लगि हेरौं[27] समुन्द्र ढिढोरौं ॥ जहँ लगि रतन[28] पदारथ जोरौं ॥

सप्त पतार[29] खोज के काढ़ौं वेद गरंथ[30] ॥ ॥ ॥
सात समुन्द्र चढ़ि धावौं पदमावत जेहि पंथ[31] ॥

पेट १ ज़हर २ नाम जानवर ३ छोड़ना ४ नाम पहाड़ ५ चूंटी ६ सफ़ेद ७ आँख ८ क़िले का दरवाजा ९ पकड़ना १० जाना ११ होशियार १२ लौटना १३ ग़ुलाम १४ हुक्म १५ जाना १६ खैरियत १७-१८-१९ ज़मीन २० आसमान २१ चक्की का पिल २२ राह २३-२६ कमी २४ दिल २५ देखना २७ लाल जवाहिर तथा पदमावत २८ सात पाताल २९ पोथी ३० राह ३१

खंड बारह बांसात समुद्र खंड

सायर[1] तरे हिय[2] सत पूरा ॥ ॥ जो जी सत कायर पुनि सूरा ॥
तहँ सब बोहित[3] पूर चलाई ॥ जहँ सत पवन पंख जनु लाई
सत साथी सत गुरु हम[4] वारू ॥ सत गही ले लावे पारू ॥ ॥
सती नाक सब आगू पाछू ॥ जहँ जहँ मगर मच्छ औ काछू
उठै लहर जनु उठै पहाड़ा ॥ चढ़ै स्वर्ग[6] और परै पतारा ॥
डोलहिं बोहित[7] लहरें खाई ॥ सहस[10] कोस इक पल महँ जाई
राजे सो सत हिरदे[11] बाँधा ॥ जेहि सत टेक कर गुर कांधा ॥

खारि समुन्द्र सब नाँघा आये समुन्द्र जहँ क्षीर[12]
मिले समुद्र वे सातौ बेहर[13] बेहर[14] नीर ॥ ॥

क्षीर समुन्द्र का बरनौं[15] नीरू ॥ स्वेत[16] स्वरूप पियत जस क्षीरू[17]
उलटहिं माणिक मोती हीरा दर्ब देखि मन होय न धीरा ॥
मनो अन चाह दर्ब औ मोगू पंथ[18] भुलाय बिनासे जोगू ॥
जोगी मनहिं उहीं रिस मारहिं दर्ब हाथ के समुन्द्र पयारहिं[19]
दर्ब लेइ जो इस्थिर[20] राजा ॥ ॥ जो जोगी तेहिं के केहि काजा
पंथी[21] पंथ[22] दर्ब रिपु होई ॥ ॥ ठग बटपार[23] चोर संग सोई ॥
पंथी[24] सोई दर्ब[25] सों रूसे ॥ ॥ दर्ब समेट बहुत अस मूसे ॥

क्षीर समुंद्र सब नाँघा आये समुद्र दधि[26] माहिं
जो है पंथ[31] के बावर नातेहिं धूप न छाहिं ॥

दधि समुंद्र देखत तस दहा[28] ॥ प्रेम का लुब्ध[29] दग्ध[30] पै सहा

बहादुर १ दिल २ सच्चाई ३ नामर्द ४ नाव ५ हवा ६ मददगार ७ आसमान ८ जहाज़ ९ हजार १० दिल ११ दूध १२ अलग १३ पानी १४ तारीफ़ १५ सफ़ेद १६ दूध १७ राह १८ तैरना १९ कायम २० मुसाफ़िर २१ रास्ता २२ राह लूटने वाले २३ राह चलने वाले २४ सर्वात् माल वा दौलत पास अपने न रक्खे २५ दही २६ राह २७ दीवाने २८ जलता हुवा २९ आशिक ३० आँच ३१

प्रेम जो डाढ़ा[1] धन वह जीव ॥ दधि[2] जमाय मथि काढ़ै घीव ॥
दधि[3] इक बूंद जामि सब क्षीरू[4] कांजी[5] बूंद बिनसि होय नीरू[6] ॥
स्वांस डाढ़[7] मन मथनी गाढ़ी ॥ हिये[8] जोत बिन फूटि न साढ़ी ॥
जेहिं जिय प्रेम चंदन तेहि आगे प्रेम के भवन[10] फिर डर नहिं भागे ॥
प्रेम की आग जरै जो कोय ॥ ताकर दुखन अमित्थ्या[11] होय
जो जानहि सत आपहिं जारा ॥ नास्त[12] हिये[13] सत करै न पारा ॥

दधि[14] समुद्र पुनि पार भे प्रेमहि कहां संभार
भांव पानी सिर परै भादे परहिं अंगार ॥

आय उदधि[15] जल समुद्र अपारा धती स्वर्ग[16] जरै तेहिं झारा ॥
आग जो उपनी[18] ओही समुन्दा लंका जरी वही एक बुन्दा ॥
विरह जो उपना[19] ओही काढ़ा खन न बुझाय जाय तन बाढ़ा
जेहि सो बिरह तेहि आग न डीठी सौंहि[20] जरै फिर देहि न पीठी ॥
जग[22] महं कठिन[23] खड़ग[24] की धारा तेहि ते अधिक[25] बिरह की झारा
अगम[21] पंथ[27] जो ऐसे न होई ॥ साधु कहैं पावै सब कोई ॥
तेहि समुद्र महं राजा परा ॥ जरा चहै पै रोवां न जरा ॥

तलफै तेल कराह जिमइ[28] मि[29] तलफै सब नीरे[30]
यहि जो मली[31] गिरि प्रेम का मुवुन्द समुद्र शरीर

सुरा[32] समुद्र पुनि राजा आवा ॥ महवा मधु[33] छाती देखरावा ॥
जो तेहि पिये सो भांवर लेय ॥ सीस[34] फिरे पंथ[35] पेग[36] न देय ॥

अवटा हुवा १ दही २-३ दूध ४ खटाई ५ पानी ६ रस्सी ७ दिल ८ बालाई ९ मकान १० जाया अर्थात् खराब ११ कमहिम्मत १२ दिल १३ दही १४ नाम समुद्र १५ ज़मीन १६ आसमान १७ पैदा होना १८ १९ देखना २० सामने २१ दुनिया २२ मुशकिल २३ तलवार २४ ज़्यादा २५ जहां कोई न पहुंच सके २६ राह २७ जिस तरह २८ इस तरह २९ पानी ३० चन्दन ३१ शराब ३२ ३३ सिर ३४ राह ३५ क़दम ३६

पेम सुराजिउ के जिय माहाँ
किन बैठे महवा की छाहाँ

गुड़ की पास दीन्ह बर सरसा ॥
बैरी बैर मारि मन गाँसा ॥

बिरहिन दगध कीन्ह तन भोरे
हाड़ जराय दीन्ह जस कोरे

नयन नीर सेां पोतै कया ॥
तस मधु चुवै बोज जस दिया ॥

बिरह सुरोगं भूँजे मासू ॥
गिर गिर पड़ै रकत के आसू ॥

मुहम्मद जो प्रेम का हिये दीप तेहि रात ॥
सीस न देइ पतंग ज्यों तब लग चाख न बात

पुनि किलकिला समुद्र महँ आई
गए धीरज देखत डर खाई ॥

भा किलकिल कित्त असउँहि लोगा
जनु अकास दूटै चहुँ ओरा

उठै लहर पर बत की नाईं ॥
फिर आवै योजन लख ताईं

धँसती लेत सरग लहि बाढ़ा ॥
सकल समुद्र जानो भा ठाढ़ा

नीर होय तरि ऊपर साईं ॥
मही अरम्भ समुद्र महँ होई ॥

फिरत नीर योजन लख ताका
जैसे फिरै कुम्हार का चाका

भा पर लेा नेगा नाजन ट्टी ॥
मरै सेा ताकाह पर लेा तबही

गये ओ मान सबन के देखत समुद्र की बाढ़
नीर हीन जनु लीलत रहा नयन अस काढ़

हीरामन राजा सेां बोला ॥
यही समुद्र आस सब डोला ॥

सिंहल दीप जो नाहिं निबाहू
यहि किलकिल कित्त अस समुद गँभीरू

यहि किलकिल कित्त अस समुद गँभीरू
जेहि गुन होय सेा पावै तीरू ॥

यही समुद पथ मंझ धारा
खंडि को अस रावै हजारा ॥

शराव १ कोंकर २ अंगूर ३ बेर नाम मेवा अस लीछ ४ लेना ५ गरदि ६ भरी ७ आरव ८ आँसू ९ बदन १० शराव ११ सीरव १२ खून १३ दिल १४ सिर १५ पारवी १६ नाम समुद १७ आसमान १८ सब १९ पानी २० ओस २१ चालीस कोस २२ कपासत २३-२४ हवास २५ आरव २६ नाम नीता २७ बदहवास २८ जगह २९ मुशकिल ३० नाम समुद ३१ गहरा ३२ किनारा ३३ गह ३४

तिन्ह महँ को सन की बारा[2] | अस सांकर चढ़ि सकै न चाहा
खाँडे[3] चाहि पैन पैनाई[4] ॥ | बाँच चाहि पानर पतराई[5] ॥
वही पंथ सब काहू जाना[6] | होय दूसर बिसवास निदाना[7]

मन जिय यत्न यहि पंथहि यही आस[8] निरास[9]।
॥ पड़ा सो गयो पतालहि तरा सो गा कैलास[10]॥

राजे दीन्ह कटक[11] कहँ बीरा ॥ | सपुरुष होहु करहु मन धीरा ॥
ठाकुर[12] जेहि क सूर भा कोई ॥ | कटक सँवरि पुनि आपहि होई[13]
जौ लहि मन जिय मन बाँधा | तौ लहि देइ कहा न काँधा ॥
प्रेम समुद्र महँ[14] बाँधा बेरा ॥ | यहि सब समुद्र बूँद जेहि केरा ॥
नाहीं[15] स्वर्ग न चाहौं राजू ॥ | ना मोहि नरक सि तैं कुछ काजू
चाहौं वह कर दरसन पावा ॥ | जेहि मो आन प्रेम पंथहि[16] लावा
काढ़ काहि गाढ़ काढ़ीला ॥ | बूड़ न समुद मगर नहि लीला

कौन्ह समुद्र धस लीन्हसि भा पाछे सब कोय
कोइ काहू न सभारे आपन आपत होय।

कोइ बोहित[17] जस पवन न डोलहीं[18] | कोई चमक बीजु पर जाहीं[19] ॥
कोई भल जस धाव तुरंगा[20] | कोइ जैस बैलगाड़ी[21] यो हू ॥
कोई हरुए[22] जानि रथ हाँका ॥ | कोई गरु पहाड़ भा थाका ॥
कोई रेंगहि जानहु चाँटी[23] ॥ | कोई टूटि होहिं सर माटी[24] ॥
कोई खाय पवन कर झोला[25] | कोई गिरहिं पात जेउँ डोला ॥
कोई परहिं भँवर जल माहाँ ॥ | फिरत रहहिं कोइ दिये न बाहाँ
राजा कर भा आगम[26] सुना | खेवक[27] आगे सुखा परेवा ॥

राह १-५-१६ तलवार २ ग्यारह ३ पानी ४ नाहान ६ रास्ता ७ उमदा ८ नाऊमेद ९ नाम वे कुराह १० फ़ौज ११ कायम १२ बहादुर १३-१४ बेकुराह १५ श्री कृष्ण चन्द्रजी १७ नाव १८ हवा १९ बिजुली २० घोड़ा २१ भारी २२ हलका २३ चींटी २४ हवा २५ आगे २६ मल्लाह २७

कोइ दिन मिला सबेरे[५] कोइ आवा पछरात ॥
जाकर हुत जस साजू[१] सो उतरा तेहिं भांत[५] ॥

सतें समुद्र मान[२] सर आये ॥
देखि मानसर[४] रूप सुहावा ॥
गा अंधियार रैन[८] मसि[६] छूटी ॥
अस्त[११] अस्त सब साथी बोले
कमल बिकस[१४] तस बेहसी[१५] देही
हंसहि हंस औ करहिं कुरेरा[१६] ॥
जो अस आव साधि तप योगू ।

सत जो कीन्ह सहस[३] सिधि पाये
हियें[५] हुलास[६] पुरइन[७] होय छावा
भा भिनसार किरन रवि[१०] फूटी
अन्ध जो अहे नयन[१२] बिधि[१३] खोले
भंवर दरस होय होय रस लेही
चुनहिं रतन[१७] मुक्ताहल[१८] हेरा ॥
पूजी आस मान रस भोगू ॥

भंवर जो मन्सा[१९] मान[२०] सर लीन्ह कमल रस आय
घुन जो हियावन[२१] कैसका झूर काठ तस खाय

खंड तेरहवां सात समुद्र पार भाव सिंहलदीप खंड

पूंछा राजें कहु गुर सुवा ॥
पवन[२२] वास सीतल[२३] ले आवा ॥
कबहुं न ऐसो जुड़ान सरीरू[२६]
निकसत आव किरन रबि[२८] रेखा
उठै मेघ अस जानहु आगे ॥
तेहिं ऊपर जनु ससि[३४] पर कासा[३५]

न जनों आज कहां दिन उवा
कया[२४] दहत[२५] चन्दन जनु लावा
पड़ा अगिन महं जानहु नीरू[२७]
तिमिर[२९] गई निरमल[३०] जग[३१] देखा
चमके बीज[३२] गगन[३३] पर लागे
ओसो गर्वी[३६] चहं भयो गिरासा ॥

सामना १ नाम तालाब जिसमे हंस रहता है २-४ हज़ार तरह की आराम ३ दिल ५ ख़ुश ६ कमल ७ लाल ८ सियाही ९ सूर्य्य १०-२८ वाह-वाह ११ आंख १२ ईश्वर १३ खिलना १४-१५ कुलेल करना १६ जवाहिर जिसकी पैदाइश खानसे होती है १७ मोती १८ हिम्मत बांधना १९ नाम तालाब २० दिलेरी करना २१ हवा २२ ठंढी २३ बदन २४-२६ जलना २५ पानी २७ अंधियारा २९ पाक साफ़ ३० दुनिया ३१ बिजुली ३२ आसमान ३३ चांद ३४ रोशनी ३५ छोटे नखत ३६

और नखत चहुं[1] दिस उजियारी | ठावहिं ठाव दीप[2] अस बारी ।।

और दरिवन दिस नेरें कंचन मेरु[3] दिखाउ ।
जैसे बसंत रितु अवतरि आवु ।।

तुइ राजा जस बिक्रम आदी ।। | तुइ हरिचन्द बैन सतबादी ।।
गोपिचन्द[4] तुइ जोता योगा ।। | औ भरथरी[5] न पूज बियोगा ।।
गोरख[6] सिद्धि दीन्ह तुहि हाथू ।। | तारी गुरु मुछन्दर[7] नाथू ।।
जीति प्रेम तुइ भूमि अकास[8] | दृष्टि परा सिंहल के पास[9] ।।
बेजो मेघ गाढ़ लागि अकासा | बज्जरी[10] कोटि कोटि चहु पासा
और नखत वहि के चहुं पासा | सबरातिन की अहं उड़ासा[11] ।।
तेहि पर सेस जोग[12] चहं चहि भरा | राज मंदिर सोने नग जरा ।।

गगन[13] सरोवर[14] सहस कमल कुमुद[15] तरइ[16] पास
तुइ रबि उवा भंवर होय पवन मिला ले बास

सो गढ़ देखि गगन[17] तें ऊंचा ।। | नयन[18] देख कर ज्ञान न पहुंचा
बिजरी[19] चक्र फिरे चहुं फेरे ।। | औ जम[20] कात फिरहिं[21] यम घेरे
धाय[22] जो बाजा[23] किये मन साधा | सारा चक्र भयो दुइ आधा ।।
चांद सूर्य्य औ नखत तराई | तेहि डर अंतरिक्ष फिरें[24] सबाई
पवन जाय तहं पहुंचा चहा ।। | सारा तेसो खोदि भुई रहा ।।
अगिन उठी जरि बुझे नियाना[25] | धुवां उठा उठि बीच[26] सिलाना
पानी उठा उठि जाय न छुवा | फिरा रोय आय भुई चुवा ।।

चारों तरफ़ १ हर जगह २ सोना ३ नाम पहाड़ ४ दुनिया ५ राजा बिक्रमाजीत ६ नाम राजा ७ सच्च बोलने वाला ८ नाम राजा ९-१० दुखी ११ नाम योगी १२-१३ ज़मीन १४ निगाह १५ क़िला १६ बुर्ज १७ महल १८ चांद २० छोटे नखत २१ आसमान २२ तालाब २३ हज़ार २४ कोकाबेली २५ नखत २६ सूर्य्य २७ हवा २८ आसमान २९ चारख ३० बिजुली ३१ गैंद ३२ यमराज ३३ दौड़ना ३४ पहुंचना ३५ बीचोबीच ३६ सब ३७ नारान ३८

रावन चहा सौंहि[1] के हेरों[2] उतरद सो गये माथ ॥
शंकर धरा ललाट[3] मुंड और को योगी नाथ ॥

तहां देख पद्मावत रामा ॥ ॥ भंवर न जाय न परखै[4] नामा ॥
अब सिष[5] एक देउं तुहि योगी ॥ पहिले दरसन होय तो भोगी ॥
कंचन[6] मेरु दिखावे जहां ॥ महादेव कर मंडफ़ तहां ॥
वह खंड[7] जस परवत मेरू[8] ॥ मेरुहि[9] लाग होय तस फेरू ॥
माघ मास पाछल पख लागें ॥ श्रीपंचमी होय यहि आगें ॥
उघरे महादेव कर वारू[10] ॥ पूजन जाय सकल[11] संसारू
पद्मावत पुनि पूजन आई ॥ ह्वै है वह दिन दृष्टि[12] मिराई ॥

तुम गवनो[13] वह मडफ़ कहं हो पद्मावत पास
पूजे आय बसंत जो पूजे मन की आस ॥

राजें कहा दरसन जो पाऊं ॥ परवत काहि गगन[14] कहं धाऊं
जेहिं परवत पर दरसन लीन्हा सिर सों चढ़ो पाय का कीन्हा
मोहिं सो भावे ऊंचे ठाऊं[15] ॥ ऊंचे लेवों प्रीतम नाऊं ॥
पुरुष[16] चाहिय ऊंच हियाऊ[17] ॥ दिन दिन ऊंचे राखे पाऊं ॥
सदा ऊंच पै सेये वारू[18] ॥ ॥ ऊंचे से कीजे व्योहारू ॥
ऊंचे चढ़ै ऊंच खंड सूझा ॥ ऊंचे पास ऊंच मति बूझा ॥
ऊंचे संग संगत नित[19] कीजे ॥ ऊंचे लाय जीव बलि[20] दीजे ॥

दिन दिन ऊंच होय सो जेहिं ऊंचे पर जाव
ऊंच चढ़े जो खसि पड़े ऊंच न छाड़े काव

नीचें संग नित[21] होय निचाई जैसे हंस काग की नाई ॥
नीचे कबहुं न होय भलाई ॥ नीचें सों पर होय मुड़ाई[22] ॥

सामने १ देखना २ सिर ३ उड़नेवाले जानवर ४ सलाह ५ सोने का पहाड़ ६ ८-९ वीहड़ ७ दरवाज़ा १० सब ११ दीदार १२ जाना १३ आसमान १४ जगह १५ मर्द १६ हिम्मत १७ दरवाज़ा १८ हमेशा १९-२१ कुरबान २० गुमनामी

166

167

नीच न कबहूं जिय महं ताकै[1] | नीच नहीं कबहूं मुख[2] भाखे
नीच न कबहूं आवे काजा ॥ | नीचे अहे न एको लाजा ॥
168 नीचें का संग कबहुं न कीजे । | नीचे पंथ[3] पाउं नहिं दीजे ॥
नीचें नहिं कीजे ब्योहारू ॥ | नीच न कबहूं दीजे भाँसू[4] ॥
नीचे केर न कीजे साथा ॥ | नीचे गहे[5] कुछु आव न हाथा

होय नीच नहिं कबहू जेहि ऊंचे मन भाउ
नीच ऊंच ते हंसी नीचें केर सुभाउ ॥

हीरा[6] मन दे बचा[7] कहानी ॥ | चला जहां पद्मावत रानी ॥
राजा चला संवरि सोलता[8] ॥ | परबत कहं जो चला परबता[9] ॥
का परबत चढ़ि देखे राजा ॥ | ऊंच मंडफ सोने सब साजा[10] ॥
169 अमृत फर सब लागि अपूरे ॥ | औ तहं लागि सजीवन[11] मूरे ॥
चौमुख मंडफ चहूं[12] केवारा ॥ | बैठे देवता चहूं दुवारा ॥ ॥
भीतर मंडफ चार खम्भ लागे | जेहिं वे छुवे पाप तेहिं भागे ॥
संख घंट नित[13] बाजहिं सोई ॥ | औ बहु होम जाप तंह होई ॥

महादेव कर मंडफ सकल[14] यात्रा आव
जस इच्छा मन जेहि की सो तैसी फल पाव ॥

खंड चौदहवां गवन मंडफ खंड राजा रतन सेन ॥

राजा बावर बिरह बियोगी[15] ॥ | चेला सहस[16] तीस संग योगी ॥
पद्मावत की दरसन आसा ॥ | दंडवत कीन्ह मंडफ चहुं पासा
170 पूर्व द्वार[17] होय के सिर नावा ॥ | नावत सीस[18] देव पुनि आवा
नमो नमो नारायण देवा ॥ | कामें जोग सकों कै सेवा[19] ॥
तुइ दयाल[20] सब के उपराही[21] ॥ | सेवा केर आस[22] तुहि नाही

ख़याल करना १ मुंह से बोलना २ राह ३ बोझ ४ पकड़ना ५ नाम तोता ६ क़ौल ७ बन ८ तोता ९ सामान १० नाम बूटी ११ चार १२ हमेशा १३ सब १४ दुखी १५ हज़ार १६ दरवाज़ा १७ शिर १८ ख़िदमत १९ दया करनेवाला २२

ऊपर २१ उम्मेद २२

ना मोहिं गुन[1] नजीभ रस बाता । तुइ दया[2] ल गुन[3] निरगुन[4] दाता ॥
पुरवहु मोर दरस की आसा ॥ हौं मारग[5] जो धरो स्वांसा ॥

तेहिं बिधि बिनय[6] न जान्यों जेहि बिधि अस्तुति तोर
कर सुदृष्टि[7] औ कृपा इच्छा पूजै मोर ॥ ।।।।

कै अस्तुति जो बहुत मनावा ॥ शब्दा[8] कोटि मंडफ महं आवा
मानुष प्रेम भयो बैकुण्ठी ॥ नाहत काहि छार[9] एक मूंठी ॥
प्रेमहि माहिं बिरह रस रसा ॥ प्रेम की घर मधु[10] अमृत बसा
नष्ट[11] धाय जो मरे तो काहा ॥ सत जो करै बैठि तेह लाहा[12] ॥
एक बार जो मन दै सेवा ॥ सेवहि फल प्रसन्न हो देवा ॥
सुनि के शब्द[14] मंडफ झंकारा बैठो आय पुरव के द्वारा ॥
पिंड[15] चढ़ाय छार[16] चित आंटी माटी होय अंत जो माटी ॥

माटी मोल न कछु लहे औ माटी सब मोल
दृष्टि[17] जो माटी सों करे माटी होय अमोल ॥

बैठि सिंह छाला होय तपा ॥ पद्मावत पद्मावत जपा ॥
दृष्टि[18] समाधि वही सों लागी जेहिं दरसन कारन[19] बैरागी ॥
किंगरी गहें[20] बजावे झूरी ॥ भोर सांझ सुनि केनित[21] पूरी
कंथा[22] जरे अगिन जनु लाये बिरह ढंढोर[23] जरत न बुझाये
नयन[24] राति निस[25] मारग[26] जागे चष[27] चकोर जानु ससि[28] लागे
कुण्डल गहें[29] सीस[30] भुई लावा पांवर[31] होउं जहां वै पावा ॥
जटा छोर के बार[32] बहारों ॥ जेहिं पंथ[33] आव सीस तहं वारों[34]

हुनर १ दया करने वाला २ दाना ३ नादान ४ अर्थात उसी राह का दमबदम ढूंढनेवाला हूं ५ तारीफ़ ६ निगाह अच्छी ७ आवाज़ ८ माटी ९ शराब १० बदराह ११ फ़ायदा १२ खुश १३ आवाज़ १४ बदन १५ बिभूत १६ निगाह १७-१८ वास्ते १९ पकड़ना २०-२९ हररोज़ २१ गुदड़ी २२ जंगल २३ आंख लाल २४ रात २५ राह २६ आंख २७ चांद २८ सिर ३० ३४ खड़ाऊं ३१ दरवाज़ा ३२ राह ३३ न्योछावर

चारहु[1] चक्र फिरे मन खोजत डंड[2] न रहूं थिर[3] बार ॥
होय के भस्म पवन[4] संग धाऊं जहां सो प्रान अधार

पद्मावत तहं योग[5] संजोगा ॥ परी प्रेम बस गहि[6] बियोगा[7] ॥
नींद न परी रैन[8] जो आवे ॥ सेज के बांच जानु कोइ लावे ॥
दहे[9] चन्द औ चन्दन चीरू[10] ॥ दग्ध[11] करे तन बिरह गंभीरू[12] ॥
कल्प समान[13] रैन ही बाढ़ी ॥ तिल[14] तिल मरु जुग जुग पर गाढ़ी
गहै[15] बीन मग[16] रैन बिहाये[17] ॥ ससि[18] बाहन नित[19] रहै उनाये ॥
पुनि धुन[20] संग और ही लागे ॥ ऐसी बिथा रैन सब जागे ॥ ॥
कहां सो भंवर कमल रस लेवा आय परी होय घरन[21] परेवा ॥

सो धन[22] बिरह पतंग भई जरा चहै तेहि दीप ॥
कंत[23] न आव भृंग होय को चन्दन तन लीप ॥

परी बिरह बन जानो घेरी ॥ अगम[24] असूझ जहां लग हेरी[25] ॥
चतुर दिसा चितवे जनु भूले ॥ सो बन कौन जो मालति फूले ॥
कमल भंवर ओही बन पावे ॥ को मिलाय तन तपन बुझावे
अंग अंग अस कमल सरीरा ॥ हिय[26] भा पियर प्रेम की पीरा ॥
चही दरस रवि[27] कीन्ह बिकासू[28] भंवर दृष्टि[29] मन लाग अकासू
पूंछे धाय[30] बारि[31] कहु बाता ॥ तुई जस कमल करी रंग राता[32] ॥
केसर[33] बरन रंग भा तोरा ॥ ॥ मानो मनहिं भयो कुछ फोरा

पवन न पावै संचरी भंवर तेहो नहिं बैठि ॥ ॥
भूल कुरंगिन[34] कस भई जासु सिंह[35] तुई डीठ ॥

चारों तरफ़ १ घड़ी २ क़ायम ३ हवा ४ अर्थात फ़क़ीरी का हाल ५ लेना ६ दुख ७ रात ८ जलना ९ ११ कपड़ा १२ भारी १२ बराबर १३ तिल के बराबर कम और क़रन से ज़्यादा १४ पकड़ना १५ शायद १६ आख़िर १७ हिरन चांद के रथ का १८ हमेशा १९ आवाज़ २० कबूतर २१ पद्मावत २२ खाविंद २३ मुश्किल २४ देखना २५ दिल २६ सूर्य २७ खिलना २८ निगाह २९ लौंडी ३० लड़की ३१ लाल ३२ पीला ३३ हिरनी ३४ शेर ३५

धाय सिंह पर खात्यो मारी ॥ | की तस रहत अहे जस बारी ॥
जोबन सुनो कीन बल बसंत | तेहि बन परा हस्ति मैमंत ॥
अब जोबन बारी को राखा ॥ | कुंजल बिरह बिधांसे सारवा ॥
सैं जानों जोबन रस भोगू ॥ | जोबन कठिन संताप बियोगू ॥
जोबन गरुवा पेलत पहारू ॥ | सहि न जाय जोबन कर भारू
जोबन अस मन मत्त न कोई | नवे हस्ति जो अंकुस होई ॥
जोबन भरि भादों जस गंगा ॥ | लहरें देई समाय न अंगा ॥

पर्‌यो अथाह धाय हौं जोबन उदधि गंभीर
तहं चिन्तवों चारहु दिस को गहि लावे तीर

पद्मावत तुई समुद्र सयानी ॥ | तुहि सरि समुद न पूजी रानी
नदी समाय समुद्र महं आई | समुद्र डोलि कहु कहां समाई
अबही कमल करी हिय तोरा | अइहै भंवर जो तोकहं जोरा ॥
जोबन तुरी हाथ गहि लीजे ॥ | जहां जाय तहं जाय न दीजे ॥
जोबन जोर मातं गज अहे ॥ | गहहु ज्ञान अंकुस जिमि रहे
अबहिं बारि तुई प्रेम न खेला | का जानसि कस होय दहेला
गगन दृष्टि कर पाय तराहीं ॥ | सूर्य्य देख कर आवत नाहीं ॥

जब लगि पीउ मिलै तुहि साधि प्रेम की पीर
जैसें सीप स्वाति कहं तपै समुद्र मंझ नीर

दहन धाय जोबन ओ जीव ॥ | जानहु परा अगिन महं घीव
करवट सहों होन दुइ आधा ॥ | सही न जाय बिरह कर दाहा
बिरह समुद्र बिसहर अस भारा | भंवर मेलि जिय लहरन्ह मारा

शेर ने क्या मारेहै १ अर्थात् लड़काई गके साथी २ नया ३ हाथी मस्त ४ ६ बागीचा ५ मुश्किल ७ दुख ८ बोझ ९ मस्त १० हाथी ११ समुद्र गहरा १२ चारों तरफ़ १३ पकड़ना १४ किनारा १५ बराबर १६ हिल १७ घोड़ा १८ जवानी १९ मस्त हाथी २० लड़की २१ भारी २२ आसमान २३ नज़र २४

बिरह नाग होय सिर चढ़ डसा ॥ वही अगिन चन्दन महं बसा
177 जोबन पंखी[1] बिरह बियाधू ॥ केहर[3] भयो कुरंगिन[4] खाधू[5] ॥
कनक[6] पानि[7] कित जोबन कीन्हा औटन कठिन[8] बिरह वह दीन्हा
जोबन जलहि बिरह मसि[9] छुवा भूलहिं भवर फिरहिं भा सुवा[10]

जोबन चन्द उवाज सबिरह भयो संग राहु ॥
घटतहि घटत खीन[11] भय कहे न पारों[12] काहु ॥

नयन[13] जो चक फिरे चहुं ओरा चरची धाय[14] समाय न कोरा ॥
कहिस प्रेम उपना[15] जो बारी[16] ॥ बांधि सत्त मन डोल न भारी ॥
जेहि जिय मनहिं सत्त होय भारू परे पहार नहिं वांके बारू ॥
178 सती जो जरी प्रेम पै लागी जो सत हिय[17] तो सीतल[18] आगी
जोबन चांद जो चौदस[19] करा बिरह की चिनगा सो पुनि जरा
पवन[20] बन्ध सो जोगी जती ॥ काम बन्ध सो कामिन[20] सती
आव बसंत फूल फुल वारी ॥ देव बार[22] सब जेहहिं बारी[23] ॥

तुम पुनि जाहु बसंत लै पूज मनावहु देव ॥
जिव पाये जग जन्म है पिय पाई कै सेव[24] ॥

जब लग अवध[25] आय नेराई ॥ दिन जुग जुग बिरहिन कहं जाई
नींद भूख निस[26] दिन गइ दोऊ ॥ हियें माझ जस कलपै कोऊ
179 रोयं रोयं जनु लागहिं चांटे[27] ॥ सूत[28] सूत बेधै जनु काटे ॥ ॥
दग्ध[29] कराह जरे जस घीव ॥ बेग[30] न आव मली[31] गिरि पीवं ॥
कौन देव कहं जाय परासों[32] ॥ जेहि सुमेरु[33] हियें[34] लाय गिरासों

परदार जानवर १ बहेलिया २ शेर ३ हिरन ४ खाना ५ सोना ६ पानी ७ मुशकिल ८ सियाही ९ तोता १० बारीक ११ कहि नहीं सकता १२ आंख १३ दाया १४ पैदा होना १५ लड़की १६ दिल १७ ठंढा १८ चांद चादहीं के बराबर १९ हवा २० औरत २१ दरवाज़ा २२ लड़की २३ ख़िदमत २४ हद २५ रात २६ चूंटी २७ सूराख २८ गरम २९ जल्द ३० चन्दन ३१ पूजन ३२ नाम पहाड़ ३३ दिल ३४

गुप्त[1] जो फल सा सहि परगटें[2] ॥ अब होय सुभ[3] चहहिं हम घटें
भइ संयोग जुरा अस मरना ॥ भूंखहि गई भोग का करना

जोबन चंचल ढीठ है करै न काजै[4] काज ॥॥
धन कुलवंत जो कुल धरै की जीबन मन लाज

तेहिं बियोग[5] हीरामन[6] आवा ॥ पद्मावत जानहु जिव पावा ॥
कराठ लगाय सुआ[7] सों रोई ॥ अधिक[8] मोह जो मिले बिछोई[9] ॥
आग उठी दुख हिये[10] गंभीरू[11] ॥ नयन[12] नहिं आय चुवा होय नीरू[13] ॥
रही रोय जब पद्मिन रानी ॥ हंसि पूंछहिं सब सखी सयानी
मिले रहस[14] भा चाहि दूना ॥॥ कित रोई जो मिले बिछोना
तेहिक उतर[15] पद्मावत कहा ॥ बिछुरन दुख जो हिये[16] भर रहा
मिलत हिये[17] आये सुख भरा ॥ वह दुख नयन[18] नीर होय ढुरा ॥

बिछुरंता जब भेटे सो जाने जेहि नेह[20] ॥
सुख सुहेला उगवे दुख झरे जिमि मेह[21] ॥

खंड पंद्रहवां मुलाकात खंड पद्मावत और हीरामन

पुनि रानी हसि कुशल[23] पूंछा ॥ कित गवनेहि[24] कै पिंजर छूछा
रानी तुम युग युग सुख पाटू[25] ॥ छाजन[26] पंखी[27] पिंजर ठाटू ॥
जो भा पंख कहां थिर[28] रहना ॥ चाहि उड़ा पंख जो डहना[29] ॥
पिंजर महं जो परेवा[30] घेरा ॥ आय मंजार[31] कीन्ह तहं फेरा
दिवसक[32] आय हाथ पै मेला ॥ तेहिं डर बनो वास कहं खेला[33]
तहां जाय व्याध नर सांधा ॥ छूट न पाव मींच कर बांधा
वे धर बेचा बाह्मन हाथा ॥ जंबूदीप गयो तेहि साथा ॥

छिपा १ जाहिर २ हर रग में भरा है कि दम बदम घटती हूं ३ मुलाकात ४ कामवाला ५ दुःख ६ नाम तोता ७-८ बहुत पियार ९ बिछुड़ा हुआ १० दिल ११ भारी १२ आंख १३ पानी १४ खुश १५ जवाब १६ दिल १७-१८ आंसू १९ मुहब्बत २० इसतरह २१ बादल २२ खैरियत २३ कहां २४ तख्त २५ सोहना २६ जानवर परंद २७-३० कायम २८ बाज़ू २९ बिल्ली ३१ एक दिन ३२ जाना

तहां चित्र[1] चितौर गढ़ चित्रसेन कर राज ॥
टीका[2] दीन्ह पुंत्र कहं आप लीन्ह शिवसाज[3]

बैठि जो राज पिता[4] कर ठाऊं[5] ॥ राजा रतनसेन वह नाऊं ॥
का बरनो[6] धन देस दुवारा ॥ जहं अस नग उपना[7] उजियारा
182 धनि माता औ पिता बखाना जेहिं के बंस अंस[8] अस आना
लक्षन बती सो कुल निरमला[9] बरणा[10] न जाय रूप औ कला
वेहौं लीन्ह[11] अहा अस भागू ॥ चाहै सोने मिला सुहागू ॥
सु नग देख इच्छा भई मोरी है यह रतन[12] पदारथ जोरी ॥
है ससि[13] योग यही पै भानू[14] ॥ तहं तुम्हार मैं कीन्ह बखानू[15]

कहां रतन रतना गढ़ कंचन[16] कहां सुमेर ।
दई जो जोरी दूहुं लिखी मिली सो कौन हिं फेर

सुनि के बिरह चिनग वह परी रतन पाव जो कंचन[17] करी ॥
कठिन[18] प्रेम बिरहा दुख भारी राज छांड़ि भा योगि भिखारी
मालति लाग भंवर जस होय होय बावर[19] निसरा बुध खोय ॥
183 कहेसि पतंग होय रस लेऊं ॥ सिंहल दीप जाय पंग[20] देऊं ॥
पुनि वह कोउ न छांड़ अकेला सोरह सहस[21] कुंवर भय चेला
और गिनै को संग सहाई[22] महादेव मढ़ मेला जाई ॥
सूर्य्य पुरुष[23] दरसन की ताईं चितवे चन्द चकोर की नाईं

तुम बारीं[24] रस जोग जहिं कमलहि जस अरघान
तस सूरय परकास[25] कै भंवर मिलायो आन

होरों मन जो कहीं यहि बाता सुनि के रतन पदारथ राता ॥

तसवीर १ राजतिलक २ मरना ३ बाप ४ जगह ५ तागीफ़ ६ पैदा होना ७ अक़बाल वाला ८ पाक साफ़ ९ बयान करना १०-१५ उसका मोल लिया हुआ ११ जवाहिर लाल १२ चांद १३ सूर्य्य १४ सोना १५ सोने की अंगूठी १७ मुशकिल १८ दीवाना १९ क़दम २० हज़ार २१ फ़ौज २२ मर्द २३ लड़की २४ उजियारा २५

जैसे सूर्य्य देख होय ओपा[1] ।। तस भा बिरह कामदल कोपा[2]
सुनि के योगी केर बखानू[3] ।। पद्मावत मन भा अभिमानू[4] ।।
कंचन[5] करी न कांचहि लोभा ।। जो नग जड़े होय तस सोभा ।।
कंचन जो कसिये कै ताता ।। तब जानै वह पीत[6] कि राता[7]
नग कर मर्म[8] सो जड़िया जाना ।। जड़े जो अस नग हेर[9] बखाना[10] ।।
को अस हाथ सिंह[11] मुख घालै ।। को यह बात पिता[12] सों चालै ।।

स्वर्ग[13] इन्द्र डर कांपै बासुक[14] डरै पतार ।।।
कहं ऐसो बर[15] प्रथमी[16] मोहिं योग संसार ।।।

तुइं रानी ससि[17] कंचन कला ।। वह नग रतन सूर[18] निरमला[19] ।।
बिरह बिजाग[20] बीजगा कोई ।। आग जो छुवै जाय जर सोई ।।
आग बुझाय धोय जल गाढ़ै ।। वह न बुझाय आग अति बाढ़ै ।।
बिरह की आग सूर[21] जर कपा ।। रातहि दिवस[22] जरै औ तपा ।।
खनहि[23] स्वर्ग खन जाय पतारा ।। थिर[24] न रहै यहि आग अपारा ।।
धनि सुजीव दग्ध[25] इमि[26] सहा ।। ऐसो जरै दूसर नहिं कहा ।।
सुलग सुलग भीतर होय स्यामा[27] ।। प्रगट[28] होय नहिं काढ़ै नामा

काह कहों ओही सों जो दुख कीन्ह निमेट ।
तेहि दिन आग करों यह बाहर जेहि दिन होय सुभेट

सुना जो अस धन[29] जारा कया[30] ।। तन भा सांच[31] नयन[32] भा मया[33]
देखौं जाय जरै जस भानू[34] ।। कंचन[35] जरै अधिक[36] होय बानू[37]

उदय होना १ गुस्सा करना २ तारीफ़ ३ १० ग़रूर ४ सोने की अंगूठी ५ पीला ६ लाल ७ भेद ८ देखना ९ शेर ११ बाप १२ आसमान १३ नाम राजा सांपों का १४ ख़ाविन्द १५ ज़मीन १६ चन्द्रमा १७ सूर्य्य १८-२१ पाक साफ़ १९ आग २० दिन २२ कभी २३ क़ायम २४ तपिश अर्थात् जलन २५ इस तरह २६ सियाह २७ ज़ाहिर २८ औरत अर्थात पद्मावत २९ बदन ३० सांचा ३१ आंख ३२ मोम ३३ सूर्य्य ३४ सोना ३५ बहुत ३६ खरा ३७

अब जो जरै सो प्रेम बियोगी[1] | हत्या मोहिं जेहि कारन[2] योगी
हीरामन सो कही रस बाता ॥ | सुनि के रतन[3] पदारथ राता ॥
योगी योग संभारहि छाला ॥ | देहों भुक्त[4] देहों जै माला[5] ॥
आव बसंत कुसल सो पाऊं ॥ | पूजा मिस मंडफ कहं आऊं ॥
गुरु के बचन फूल हिय[7] गाथे ॥ | देखों नयन[8] चढ़ाऊं माथे ॥

कमल बरन[6] तुम बरना मैं माना पुनि सोय
चांद सूर्य्य कहं चाही जोरी सूर्य्य वह होय ॥

हीरामन[10] जो कही रस बाता ॥ | पाय पान भयो सुख राता[11] ॥
चला सुवा तब रानी कहा ॥ | भा जो पराउ सो कैसे रहा ॥
जो नित[12] चलै संवारहि पाखा ॥ | आज जो रहा काल्हि को राखा
नाजनों आज कहां दिन उआ | आयहि मिलै चलहि मिल सुवा[13]
मिल के बिछुर मरन की आना[14] | कित[15] आयहु जो चलहि निदाना[16]
अन[17] रानी जो रहतो रांधा[18] ॥ | कैसे रहों बचन[19] कर बांधा ॥
ताकर दृष्टि[20] ऐसो तुम्ह सेवा ॥ | जैसे कुंज[21] मन सेज परेवा ॥

बसै मीन[22] जल धरती[23] अंबा[24] बर्ष अकाश ।
जो प्रीति पै दोउ महं अंत[25] होहिं एक पास ॥

आवा सुआ बैठि जहं योगी ॥ | मारग[26] नयन[27] बियोग[28] बियोगी[29]
आय प्रेम रस कहा संदेशू ॥ | गोरख[30] मिला मिला उपदेशू[31] ॥
तुम कहं गुरु मया[32] बहु कीन्हा | कीन्ह अदेस[33] आव कहं दीन्हा
शब्द[34] एक होय कहा अकेला | गुरु जस भृंग[35] पतंग[36] जस चेला

दुखी १ सबब २ जवाहिर ३ सुख ४ जिसके गले मे पड़ै उसीके साथ शादी हो ५ पहाना ६ दिल ७ आंख ८ रंग ९ नाम तोता १० लाल ११ हररोज़ १२ तोता १३ बराबर १४ कहां १५ जल्द १६ ऐ रानी १७ नज़दीक १८ क़ौल १९ निगाह २० नाम जानवर परंद २१ मछली २२ ज़मीन २३ पानी २४ आख़िर २५ राह २६ आंख २७ जुदाई २८ दुखी २९ नाम फ़कीर ३० नसीहत ३१ मेहरबानी ३२ सलाम ३३ बात ३४ नाम

कीड़ा ३५-३६

सृंगी[1] मोही पंरब[2] पै लेई ॥ | एकहि बार चहै जिव देई ॥
नाकहं गुरु मया[3] भल कीन्हा | नव अवतार ज्ञानी[4] दीन्हा ॥
होय अमर असमर[5] के जिया | भंवर कमल मिलि के मधु पिया

आवै रितु बसंत जब तबहि धुंकार[6] नव बास
योगी योग जो दुमि[7] सहै सिद्धि समापत तास ॥

रंवड सोरन्हवां बसंत रंवड

दई दई कर सुरति[8] गंवाई ॥ | श्री पंचमी पूजी आई ॥
भयो हुलास[9] नवल ऋतु माहां | दरपण नसुहाय धूप औ छाहां
पद्मावत सब सखी हंकारी[10] ॥ | जानेवंत सिंहल की बारी[11] ॥
आजु बसंत नवल ऋतु राजा | पंचम होय जगत सब साजा
नवल[12] सिंगार बनाव[13] हन कीन्हा | सीस परासहि[14] संदुर[15] दीन्हा ॥
बिकसे कमल फूल बहु बासा[16] | भंवर आय लुब्धे चहुं पासा[17]
पियर पान दुख झरे निपाते[18] ॥ | सुख पल्लव उपजी[19] होय राते[20] ॥

अवध[21] आय सो पूजै जो दुख्छा मन कीन्ह ।
चलहु देव मढ़ गोहन[22] चहा सो पूजा दीन्ह ।

फिरे आन रितु बाजन बाजे | औ सिंगार बारिह[23] सब साजे ॥
कमल कली पद्मावत रानी ॥ | होय मालति जानो[24] बिगसानी
नारा[25] मन्द्र पहिर भल चोला | भरी सीस[26] सब नरवत अमोला
सखी कुमोद[27] सहस दस संगा[28] ॥ | सबै सुगन्ध चढ़ाये अंगा ॥
सब राजा रायन की बारी[29] ॥ | बरन बरन पहिरे सब सारी[30] ॥
सबै सरूप पदमिनी जाती ॥ | पान फूल सेंदुर सब राती[31] ॥

नाम कीड़ा १ पारवती २ महरवानी ३ नया जन्म ४ अक्किल ५ महेश ६ जिंदा ६ भंवरा ७ हुलसना ८ कामिल ९ खुशी १० नया ११ खुलाना १२ जहांतक १३ लड़की १४-२५-३४ दुनिया १५ नया १६ दरख्त १७ सिर १८ छोरव १९ बिखलना २०-२८ खपिरना २१ झरना २२ पैदा २३ लाल २४ हद २५ साथ २६ नाम कपड़ा २८ सिर ३० को कोवे सीढ़ी

कुमार अवस्था ३ अंगरखा ४ अंगरखा ५

कौं[1] कलोल सुरंग रंगीली ॥ औ चोवा चन्दन सब रेली

चहुं[2] दिस रही बासना फुलवारी अस फूल
वे बसन्त सौं फूली गा बसन्तु वहि भूल

भई अहा पदमावत चली ॥ छत्तिस[3] करि भइ गौंहन[4] भली
भई गौरी संग पहिर पटोरा[5] बाम्हनि आय सहस[6] अगोरा
अग वारि गज[7] गवन कइ[8] देई ॥ बेसि पांव हंस गत देई ॥ ॥
चन्देलिन ठमकहि पग[9] ढारा । चल चौहान होय झनकारा
चली सुनारि सुहाग सुहाती । औ कलवारि प्रेम मधु[10] माती ॥
बानिन चली सिंदुर दिये मांगा कौथिन[11] चली समायन अंगा
पटिवनि पहिर सुरंग तन चोला औ बरइन सुख रवात तमोला

चली पवन[12] संग गोहन[13] फूल डार लिये हाथ
बिश्व नाथ[14] की पूजा पदमावत के साथ ॥

ठठेरिन ठकुरइ राखी कीन्ही ॥ चली अहीरिन काजर दीन्ही
गूजरि चली गोरस की साती ॥ बढ़ई नि चली भाग की ताती
चली सुहासिन बांकी नैना ॥ भाटिन चली मधुर[15] अति बैना[16]
गन्धिन चली सुगन्ध लगाये छीपिन चली सो चीर रंगाये
रंगरेजिन बहु रांती[17] सारी ॥ चली युक्ति सौं नाउन बारी ॥
मालिन चली हार लिये गाथे तेलिन चली फुलाय तन माथे
किये सिंगार बहु बिस्वा चली जहं लग मूंदी बिकसी कली ॥

नटनी डोमिन डारिन सहनायन परकार ।
निरतत[18] नाद[19] बिनोद[20] सो बिहसत खेलत नार[21]

कमल सुभाय चली फुलवारी फर फूलन की इच्छा बारी ॥

खुशी १ चारों तरफ़ २ छत्तीस क़ौम ३ साथ ४ गोर ब्राम्हनी ५ हज़ार ६ बदन ७ हाथी की चाल ८ क़दम ९ शराब १० बदन ११ हवा १२ साथ १३ ईश्वर १४ भीड़ १५ बोल १६ बात १७ मिलना १८ नाचना १९ गाना २० खुशी २१

आप आप महं करहिं जोहारू[1] | यह बसन्त सब कहं त्यौहारू ॥
चहीं मनोरा[2] झूमक होई ॥ | फर औ फूल लियो सब कोई
फाग खेल पुनि दाहब[3] होली | सेतत खेह[4] उठावब झोली ॥
आज छांड़ पुनि दिवस[5] न दूजा | खेल बसन्त लेहु के पूजा ॥
भा आयसु[6] पदमावत केरा ॥ | फेर न आय कर बहम फेरा ॥
तस हम कहं होय है रखवारी | पुनि हम कहां कहां यह बारी[7]

पुनि रेचल बघर आपने पूज बिशेखर देव ।
जेहिं को होय खेलना आज खेल हंस लेव ।

काहूं गही[8] अंब[10] की डारा ॥ | कोई बिरह जाम्ब[11] अति छारा
कोई नारंग[12] कोइ झारचिरौंजी[13] । | कोइ कटहर[14] बड़हर[15] कोइ न्योजी[16]
कोइ दाडिमं[17] कोइ दाख[18] खरेरी[19] | कोइ सुसदां[20] फर तुरंज[21] जंभीरी
कोइ जेफर[22] कोइ लौंग सुपारी । | कोइ कमरख कोइ कोवा[23] छारी
कोइ बिजोर[24] कोइ नरियर चूरी[25] । | कोइ अमली कोइ महवा खजूरी
कोइ हरफा कोइ चोर करोंदा ॥ | कोइ अनार कोइ बेरि कसोंदा
काहू गही केला की घौंरी ॥ ॥ | काहू हाथ पड़ी निब कौंरी ॥

काहू पाई नेरें काहू कहं गये दूर ॥ ॥ ॥
काहू खेल भयो बिय[26] काहू अमृत मूर ॥ ।

पुनि बीनहिं सब फूल सहीली | जो जेहिं आस पास सब बेली ॥
कोइ क्योड़ा कोइ चंपनेवारी । | कोइ केतकि मालति फुलवारी
कोइ सतबर्ग[27] गोंद औ करना[28] । | कोइ चबेलि[29] नागेसर[30] बरना
कोइ सुगुलाल[31] सुदरसन[32] कूजा[33] । | कोइ सोन[34] ज़रद भल पूजा ॥

साहेब सलामत १ रस्म गाने औ बजाने की २ जलाना ३ राख-धूर ४ दिन ५ हुक्म ६ बाग़ीचा ७ नाम देवता ८ लेना ९ आंब १० यामुन ११ नाम मेवा फ़सली १२-१३-१४-१५-१६ अनार १७ अंगूर १८ खिरनी १९ नाम मेवा २०-२१-२२-२३-२४ टुकड़ा २५ ज़हर २६ नाम फूल २७-२८-२९-३०-३१-३२-३३-३४

कोइ सो बोलसर[1] पुहुप बकोरी[2] | कोइ रूप[3] मंजरी औ गोरी ॥
कोइ सिंगार[4] हार तेहिं पाहां ॥ | कोइ सेवती[5] कदम[6] की छाहां ।
कोइ चन्दन फूलहिं जनु फूली | कोइ अजान बिरवा तरु भूली

कोइ फूल पाव कोइ पाती जेहि कहाथ जेहिं आंट
कोई हार चीर[8] उर झानी जहां छुवे तहं कांट

फर फूलन सब डार भिराई ॥ | झुण्ड बांध के पंचम गाई ॥
बाजत ढोल द्वंद[9] औ भेरें[10] ॥ | मान्दर[11] तूर झांझ[12] चहुं फेरें
सींगी[13] संखडफ[14] सगम बाजे ॥ | बंसकार[15] महुर[16] सुर साजे ॥
और कहा जित बाजन भले ॥ | भांति भांति सब बाजत चले
रथहिं चढ़ी सब रूप सुहाई ॥ | लिये बसन्त मड़मडफ सिधाई
नवल[17] बसन्त नवल वे बारी[18] ॥ | सेंदुर बूका करैं धमारी ॥
खनहिं[19] चलहिं खन चाचर होई | नाच कूद भूला सब कोई ॥

सेन्दुर खेह[20] उठी तस गगन[21] भयो सब रात[22]
राति सकल[23] महि धरतो[24] राति बृक्ष बनपात

यहि बिधि खेलत सिंहलरानी | महादेव मठ जाय तुलानी[25] ॥
सकल[26] देवता देखे लागे ॥ | दृष्टि[27] पाप सब उन के भागे
ये कैलास सुनैं अप्सरी ॥ | कहां ते आय दूटि भुईं परी ॥
कोई कहे पद्मिनी आईं ॥ | कोइ कह ससि[28] औ नखत तराई[29]
कोई कहै फूल फुलवारी ॥ | फूली सबै देख के बारी[30] ॥
एक सुरूप औ सेन्दुर सारी ॥ | जानहुं दिया सकल महि[31] बारी
मुर्छ परै जोई मुख जोहे ॥ | मानहुं मिरगद[32] वारहि मोहे ॥

नाम फूल १-२-३-४-५-६ नामालूम ७ कपड़ा ८ नान बाजा ९-१० ११-१२-१३-१४-१५-१६ नया १७ लड़की १८ कभी १९ धूर २० आसमान २१ लाल २२ सब २३ ज़मीन २४ पहुंचना २५ सब २६ निगाह २७ चांद २८ छोटे नखत २९ लड़की ३० ज़मीन ३१ हिरन ३२

कोई परा भंवर होय बास लीन्ह जनु चांप[1] ॥
कोइ पतंग[2] भा दीपक कोइ अधजरतन कांप

पदमावत गइ देव दुवारां ॥ भीतर मंडफ कीन्ह पैसारा
देवै संसू भा जिय केरा ॥ भागों केहि दिस मंडफ घेरा
एक जुहार[3] कीन्ह औ दूजा । तिसरे आय चढ़ायसि पूजा
फर फूलन सब मंडफ भरावा चन्दन अगर देव अन्हवावा
भरि सेन्दुर आगे भइ खड़ी ॥ परसि देव पुनि पायन पड़ी
और सहेली सबै विवाहीं ॥ मो कहं देव कितहुं बर[4] नाहीं
हों निरगुन[5] जें कीन्ह न सेवा गुन[6] निरगुन[7] दाता[8] तुम देवा

बर[9] संजोग मोहिं मिर बहु कलस जात हौं मान
जा दिन इच्छा[10] पूजे बेग[11] चढ़ाऊं आन ॥

इच्छ[12] इच्छ बिन्ती जस जानी पुनि कर[13] जोर ठाढ़ भई रानी
उतर[14] को देव देव सो गयो ॥ शब्दा[15] कोट मंडफ महं भयो
काटि पयारा[16] जैसे परेवा ॥ सो गयो ईस[17] उतर[18] को देवा ॥
भये जीव बिन नाउत ओझा बिष भई पूरि कालि भये गोझा
जो देखे जनु बिसहर[19] डसा ॥ देख चरित पद्मावत हंसा ॥
भल हम आय मना वा देवा गा जनु सोय को मानै सेवा[20]
को इच्छा पुरवै दुख खोवा ॥ जहिं मन आय सो तन तन सोवा

चहुं[21] दिस सखी उठा बहिं सीस[22] बिकल नहिं डोल
धर कोई जीव न जाने मुख रे बकत कुबोल

ततरवन[23] आय सखी बेहसानी कौतुक एक न देखहु रानी ॥
पूर्ब द्वार[24] मठ योगी छाये ॥ न जनो कौन देस ते आये

चम्पा १ पारवी २ सलाम ३ खाविन्द ४ बेहुनर ५-७ हुनर ६ देनेवाल ८ खाविन्द लायक ९ आरजू १०-१२ जल्द ११ हाथ १३ जवाब १४ आवाज १५ छोड़देना १६ देवता १७ जवाब १८ सांप १९ खिदमत २० चारोतरफ २१ सिर २२

यकायक २३ एकाजा २४

जनु उन्ह योग तंत सब खेला
सिद्ध होय निसरे सब चेला ॥
उन्ह महँ जो एक गुरु कहावा
जनु गुड़ दे काहू बौरावा ॥
200 कुँवर बतीसौं लक्षण राता ॥
हँसे लखन कह एक बाता ।
जानौ आहि गोपँचन्द योगी ॥
कोमु आहि भरथरी बियोगी ।
वै पिंगला गये कजरी आँगन ॥
ए सिंहला सोवहिं केहि कामन

यह मूरत यह मुद्रा हम न देख अवधूत ।
जानहुँ होहिं न योगी कोइ राजा के पूत ॥

सुनि सुबात रानी रथ चढ़ी ॥
कहं अस योगि जो देखौं महँ
लै लंग सखी कीन्ह तहँ फेरा
योगि आय जनु अपछर नहिं घेरा
नयन कचूर प्रेम मधु भरे ॥
भइ सुदृष्टि योगी सो दुरे ॥
201 योगी दृष्टि दृष्टि सों लीन्हा ॥
नयन रूप नयनहिं जिव दीन्हा
जो मधु रूक कपूरा तेहि पासे ।
सुध न रही वह एक पियासें
पड़ा भोर गोरख कर चेला ।
जिवतन छाँड़ स्वर्ग कहँ खेला
किंगरी गही जोहु तब रागी ॥
मरती बार वही धुन लागी ॥

जेहि धन्ध जाकर मन बसे सपने सूझि सुधन्ध
तेहि कारन तपसी तप साधहिं करहिं प्रेम चित बंध

पद्मावत जस सुना बखानू ॥
सहँस किरा देखे तस भानू ॥
मोतिन चन्दन मरगज जागा
अधिकौ सीत सीर तन लागा ।
तब चन्दन आरत रहि सखी
भीख बा लई तुम योगिन आसा
202 बार आय तब गा तुइ सोई ॥
कैसे मुक्ति परापत होई ॥

कामिल १ बतीसहुन जानने वाला २ अंदाज़ से बात करता है ३ नाम योगी ४ ५ मामरानी ६ जंगल ७ इन्द्र की परी ८ आब पियाले की जगह ९ पराव १० निगाह ११-१२ आब १३ पराव १४ नाम योगी १५ आसमान १६ जाना १७ नाम बाजा १८ पकड़ना १९ बासे २० तारीफ़ २१ हज़ार २२ सूर्य २३ छिड़कना २४ शब्द २५ बहुत २६ ॥ ३ह्ड्डी २७ ऐफ़ २८ दिल २९ भीख मागना ३० दरवाज़ा ३१ रोज़ा ३२

अब जो सूर[1] अहे ससि[2] राता ॥ आये चढ़ सो गगन[3] पुनि साता
लिख सो बात सखिन सो कही यही ठांव[4] हों बारति[5] रही ॥ ॥
परगट[6] हों तो होय अस भंगू[7] ॥ जगत[8] दिया कर होय पतंगू[9] ॥

जा सों चख[10] हेरों सोई ठांव जिव देय ॥ ॥
यह दुख कतहुं न निसरों को हत्या असलेय

कीन्ह पयान[11] सबहिं रथ हांका परवत छाड़ सिंहल गढ़ ताका
बलि[12] भये सबै देवता बली[13] ॥ हत्यारिन हत्या लै चली ॥
को अस हितू[12] मुवे गहि[15] बाहीं जोपै जिव आपन तन नाहीं
जौ लह आपन जिव सब कोई बिन जिव कोई न आपन होई
भाइ बन्धु औ मीत[16] पियारा बिन जिव घड़ी न राखै पारा[17]
बिन जिव पिंड[18] छार[19] कर कूरा छार मिलावै सौ हित[20] पूरा
तेहि जिव बिन अब मरभा राजा को उठि बैठि करब सो काजा

परी कया भुइं लोटे कहारे जिव बलि भीउं
को उठाय बैठारे बाज[22] पियारे जीव ॥॥

पद्मावत सो मन्दिर पैठी ॥ हंसत सिंहासन जाये बैठी ॥
निस[23] सोती सुनि कथा बहारी भा बिहान सब सखी हंकारी[24]
देव पूज तम आयो काली ॥ सप्ता एक निस देख्यों आली
जनु ससि[25] उदय पूर्व दिस लीन्हा औ रवि उदै पश्चिम दिस कीन्हा
पुनि चल सूर चांद पहं आवा चांद सूर्य्य दुहुं भयो मिरावा[27]
दिन औ रात जानहु भये एका राम आय रावन गढ़ छेका
नस कुछ कहा न जाय निवेदा अर्जुन बान राहु को बेधा ॥

सूर्य्य १- ६ चांद अर्थात् रात का आवे २ आसमान अर्थात् क़िला ३ जगह ४ वर्त ५ ज़ाहिर ६ नुक़सान ७ दुनिया ८ पारवी ९ आंख से देखों १० कूच ११ क़ुर्बान १२ ज़बरदस्त १३ दोस्त १४-१६ मुरदे की बांह पकड़े १५ रख नहीं सक्ता १७ बदन १८ राख १९-२० पहुंचता २२ रात २३ बुलाया २४ चांद २५ सूर्य्य २६ मुला -

जनहुं लंक सब लूसी[1] हनू[2] बिधांसी[3] वार ।
जागउठों अस देखत कहु सखी स्वप्न बिचार

सखी सो बोली स्वप्न बिचारी । काल्ह जो गई देव[4] कर बारू ॥
पूजि मनायो बहुत बिनाती[5] ॥ परशन[6] आय भयो तुम्ह राती
सूर्य्य पुरुष[7] चांद तुम रानी ॥ अस बर[8] देव मिलावे आनी
पछों खंड कर राजा कोई ॥ सो आवै बर[9] तुम कहं होई ॥
कुछ पुनि जूझ लाग तुम रामा रावन सेते होय संग्रामा[10] ॥
चांद सूर्य्य सों होय विवाहू ॥ बार[11] बिधांस बेधै राहू ॥
जस ऊखा[12] कहं अनरुध मिला मेट न जाय लिखा परबला[13]

सुख सुहाग है तुम कहं पान फूल रस भोग ॥
आज कान्ह भाचा है अस सपने का संजोग[14] ॥

खंड सत्तरहवां सती खंड राजा रतनसेन

किये बसंत पद्मावत गई राजा तब बसंत सुध भई
जो जागा न बसंत न वारी ॥ नासो खेलन खेलनहारी ॥
नावहं की वह रूप सुहाई ॥ गई हिराय पुनि दृष्टि[15] न आई
फूल झड़ी सूखी फुलवारी ॥ दृष्टि परी उकटी सब छारी[16] ॥
कैं यह बसंत बसंत उजारा ॥ गा सो चांद अथवा ले तारा ॥
अब तेहि बिन जग[17] भा अंध कूपा[20] वह सुख छांह जरा दुख धूपा
बिरह दवां[20] को जरत सिरावा ॥ को प्रीतम सो करै मिलावा ॥

हिये[21] देख जो चन्दन घुरा मिलके लिखा बिछोह[22]
हाथ मींज सिर धुन सो रीवे जो निचिंत अस सोय

जस बिछोह[22] जल मीन[25] दुहेला[26] जल हति काढ़ आगन[27] महं मेला

लूटना १ हनूमानजी २ दरवाज़ा तोड़ा ३-११ महादेव के मंडफ ४ आजजी ५ खुश ६ मर्द ७ खाविन्द ८-९ लड़ाई १० नाम लड़की १२ ज़बरदस्त १३ ताबीर १४ बाग़ १५ निगाह १६-१७ जलजाना १८ दुनिया १९ कुवां २० आगे २१-२७ दिल २२ जुदाई २३-२५ मछली २४ भारी २६

चन्दन अंक दाग होय परे ॥ बुझहिं नते आरवा पर जरे ॥
जेहि सिर आगे होय होयलागी सबतन दागसिंहे बनदागी ॥
जरै मृगबन खंड वहज्वाला कौती जरहिं बेदि तेहि छाला ॥
कितते अंक लिखे जहं सोवा मेंगे अंकितते हि कंत विछोवा
जैसदुखित कंसा कोतला ॥ माधौ नलहि कामकन्दला ॥
भयो अंक नल जैसो दमावत ॥ नयनामूंद छिपी पसावत ॥

आय बसंता छिपरहा होय फूलन की भेश ॥
केहि विधि पाऊं भंवा होय कवन सो को उदेश

रोवन मान मालजनु चूरा ॥ जहं होय ठाढ़ होय तहं कूरा ॥
कहां बसंत सो कोकिल बैना कहां कुसुम अलि बेधी नयना
कहां सुमूरति परी जोडीठी ॥ काढ़ि लिहे सजिय हिये पैठी ॥
कहे सोदरस परसि जेहि लहा ॥ जो सुबसंत करी लहि कहा ॥
पात बिछोह रुख जो फूला ॥ सो मधुवा रोवे अस भूला ॥
टपकहिं मधुव आंस तस परहीं हीय मधुव बसंत ज्यो झरहीं
मोर बसंत सो पदमिन नारी ॥ जेहि बिन भयो बसंत उजारी ॥

पावा नेवल बसंत पुनि बहु आसन बहु भोग ॥
से सो न जाना अंत होय पात झरहिं हैं या कोय

अरे भंवर बिस वासी देवा ॥ कित मैं आय कीन्ह तुम सेवा
आपन नाव चहे जो देइ ॥ सो तो पार उतरे खेइ ॥
सुफल जानि पेंगे रे क्यों नोरा ॥ सुवा का सेमर तू भा भोरा
पाहन चहि जो चहि भा पारा ॥ सो ऐसे बूड़े मंझ धारा ॥

हंकी १ २ ओर ३ हिरन ४ आवट कुलाक़ात नहो ५ राजा कंस रानी कोतला लिये
६ माधो नलरानी कामकंदला को लिये ७ राजा नलरानी दमन के लिये दुखी ८ आंख ९
तरवा १० टूटना ११ आवास १२ भंवर १३ नज़र १४ दिल १५ डीठ बाकदम बोधी
१६ जिसका उलटा कांटा होगा है १७ नया १८ दुख १९ आशिक २० सो २१ जोगा २२

पाहन[1] सेवा[2] कहां पसीजा ॥ जन्म न पत्थर जोजल भीजा
व[3] का सोई सु पाहन पूजा । सकत[4] की भार लई सिर दूजा
काहे न पूजे सोई निरासा । मुए[5] जीत मन जाकर आसा

सिंह नरेंदा जेहि गहा पार भये ते साथ ॥
ते पै बूड़े वारहि भेंड पूंछ जेहि हाथ

देव कहा सुनि बीर राजा ॥ देवहि आगम न मारा गाजा
जो पहिले अपने सिर परी[6] सोका काहुक धर धीर करी
पद्मावत राजा की बारी[7] ॥ आय सरिवन सो मंडप[8] गारी
जैसु चांद गोहन[9] सब तारा पर्‌यो भुलाय देख उजियारा
चमके दसन[10] बीज कै नाहीं नयन[11] चुंक चमकात भवांहीं
हों तोहि दीप पतंग होय परा । जिव जिमि काढ़ि[12] स्वर्ग लै धरा
फेर न जानो वहि का भई[13] ॥ वहि कैलास कि कहं अपमई[14]

अबहूं मरों निसासी हिये न आवै सांस ।
रुपिया की को चालै वेदहि जहां उपास ॥

अस[15] हौं देख देउं का काहू ॥ सुलके[16] कया[17] भयो नहि ताहू
हिनू[18] पियारा मीत[19] बिछोई[20] साथ न लाग आप गा सोई ॥
का मैं कीन्ह जो काँया[21] पोरी[22] दोष न मोहि आपनि दोषी
फाग बसंत रवेल गइ गोरी ॥ मोहि तन लाग आग जस होरी
अब अस काहि छार सिर मेलों छार हुतों फा गत सरवेलों
कित तप कीन्ह छांड़ि कै राजू आंधर गयों न भा सिधि काजू
पायों न होय योगी जती ॥ अब सर चढ़ो जरौं जस सती

पत्थर २ शिवलिंग ३ मुशकिल समय का साथी कौन दूसरा उठता है ३ माल मेंट ४ मरना ५ मुए ६ पकड़ना ७ पहिले ८ बिजुली ९ ९ इस गीरी १० लड़की ११ साथ १२ दांत १३ आंख १४ घूमना १५ जिसने रह १० आसमान १८ छिपना १९ वेश २० दिल २१ वस्त्र २२ मेहरबानी २३ दोष २४ २५ सुलगाई २६ तन पालना २७

आय प्रीतम फिर गया मिलान आय बसंत ॥
अबतन होरी लायके जार दारौं भसमंत ॥

कुकनो[1] पंख जैसो[2] सरि साजा
सकल[3] देवता आय[4] तुलाने ॥
बिरह अगिनि बज्रागि[5] अस भूका
तेहिके जरत जो उठै बिजोगी
अबकी घड़ी चिनगि तेहि छूटै
देवता सबै भस्म होय जाहीं ॥
धौती[10] स्वर्ग[11] होय सब[12] ताता ॥

नख सरिवँदि जरै चहि एजा ॥
वहि कस[6] हेय देव अस्थाने ॥
जरै सूर नबुझाये बूझा ॥
तीनों लोक जरहिं तेहि लागी
जरहिं पहाड़ पहन[9] सब फूटे ॥
छार समेटे पावन नाहीं ॥
है कोई यहि रागि बिधाता ॥

मुहमद चिनगि प्रेम की सुनै[13] सो गगन[14] निडाय ।
धन बिरहिन औ धन हिया जहं यह अगिनि समाय

हनुवन्त बीर लंक जे जारी ॥
बैठि तहां भा लंका ताका ॥
तेहिकी आग वहू पुनि जरा
तहां जाय यह कहा संदेश ।
योगी आहि बियोगी कोई ॥
जरी लंक[21] सुरौती[22] ऊहां ॥
तेहि बज्रागि जोर हौं लागा

पवन उठी अहा रखवारी ॥
छूटे मौंस[15] वहीं उड़ हांका ॥
लंका छोड़ि[16] पलंका परा ॥
पारबती औ जहां महेसू[17] ॥
तुम्हरे मंडप आगि तेहि दीन्ही[18]
निकसि जो भाग भये कर मुहं
बज्रागि[19] जरि उठा तो भागा

रावन लंका मैं[23] दही वे मोहि[24] हाँकी आय ॥
गगन पहाड़ होत हैं रावर[25] को रावेगौ[26] पाय ।

खंड अठारहवां पार्बती महेश खंड

तत रवन पहुंचे आय महेसू बाहन बैल कुष्टि कर भेसू

नाम चिड़िया १ चिता २ सब ३ पहुंचना ४ मकान ५ साल ६ बहादुर ७ लूक ८
पत्थर ९ ज़मीन १०-१४ आसमान ११-१५ गर्म १२ ईश्वर १३ दिन १६ महीना १७ कहो
१८ महादेवजी १९ दुखी २० लाल २१ पत्थर सा बदन २२ जलाना २३-२४ रावण

कांथर[1] कया[2] हड्डि[3] वर बांधे | सुंड माल औ जनेउ कांधे ॥
शेस[4] नाग सोहै कंठ माला | तन बिभूत हस्ती[5] कर छाला
पहुंचीरुद्र कमल की कटा | ससि माथे औ सिर पर जटा
चंवर[6] घंट औ डमरु हाथा ॥ | गौरा पारबती धनि साथा ॥
औ हनुमंत बीर संग आवा | धौरे भेयउ जनु बन्दर छावा ॥
औ तेहि कहिन लाव[7] अागी | ताकर[8] सपन जरहिं जेहि लागी

की तप करैन पारहिं कीरि[9] न सायहि योग[10] | जियत जीव कस काढ़हि कहो सो मोसों बियोग[11][12]

कहेसि को मुहिं बातहिं बिल भावा | हत्या कैर न तोहि डेरावा ॥
जोरे देहु दुख जरी अपारा ॥ | निसिनिर परो जाय यक बारा
जस भँवरी लाग पिंगला[13] | मोकहं पद्मावत सिंहला ॥
मैं पुनि तजौं राज औ भागू | सुनि सुनाउ कीन्हें तप योगू
यह मठ सेयों आपनि सेवा | को सो पूज मन पूजा न आसा
तेहि जिव डाँढ़े[14] पर डाढ़ा | आधा निकस रहा घट आधा
जो औधि जर सो बिलंब न लावा | करत बिलंब बहुत दुख पावा

रतना बोल कहन मुख उठी बिरह की आग | जोगहि[15] सेइ न हि[16] सकी बुझावन[17] सकै[18] त जाग न हत लाग

पारबती मन उपना चाऊ[19] | देखौं कुंवर केर सतु भाऊ[20] ॥
वहि यह बीच कि प्रेम हि पूजा | तन मनु एक कि मागै दूजा
भई सुरूप जानहु अप्सरा | बिहसे कुंवर का अँचर धरा
सुनो कुंवर मोसों एक बाना | जस संग मोर न औहि[21] रोना

उदही १ बदन २ हाड़ों की माला ३ साप ४ गदन ५ हाथी ६ चांद ७ घंटी ८ कसम ९ निबाहना १० बाबाद ११ बुध १२ बिहाई १३ नामयोगी १४ नामरानी १५ छोड़ना १६ बिरहमत १७ जलाना १८ महादेवजी १९ अमृत २० सब २१ बिदा होना २२ चाहना २३ राह २४ इस लोक की परी २५ हंसना २६ लाल २७

औ बिधि रूप दीन्ह है तोका
तबहीं तोकहं इन्द्र पठाई ॥
अबतजि जरन मरन तप योगू
मोसों मालिनि चन्द भर भोगू

उठा सुरेंद्र लाव शिव लोका
की पद्मिन तुई आँपर पाई
होंअप्सर कैलाश की जेहि सर पूजन कोय।
मोतजि संवर जो वह मरिस कौन लाभ तोहि होय

अलहिं रंग तोहि अप्सर रौंता
मोहं वह संचमि मुयें अस लेहा
अबहिं ताह जिव दिये न पावा
जोजिव देहौं वहि की आसा
हौं कैलाश काहि लै करौं ॥
वहकी बाउ जीव निरबारौं ॥
ताकर चाहु कहै जो आई ॥

मोहि दूसर सो भाव न आना
नयन जोरि देखिसि पूछिसि कहा
तोहि अस अप्सर ठाढ मनावा
नजनौ काह होय कैलासा
सो कैलाश लागु जेहि मरौं
सिर उतार न्योछावर डरौं ॥
देउ जागेत तोहि देउं बड़ाई ॥

वह न मोर कुछ आस हौ वह आस करेउं
तोहि निरास प्रीतम कहं जिवन देउं का देउं

गौरी हंसि महेश सो कहा ।
निश्चै यहि वह कानन तपा ॥
निश्चै प्रेम पीर यहि जागा ॥
बदन पियर जल टपकै नयना
यहि यह जन्म लाग केसीझा
महादेव देवन के पिता ॥
एहू कहं तस मया करेहू ॥

निश्चै यहि विरहा नल दहा
प्रबल प्रेम न आछ छिपा ॥
कसें कसौटी कंचन लागा ॥
प्रगटै दीउ प्रेम के बयना ॥
चही न औरहि चाही रीझा।
तुम्हरे शरण राम रणजिता
पुरवहु आस कि हत्या लेहू

टिप्पणी १ आवाज़ २ इन्द्र लोक भेजोगी ३ इन्द्र लोक की परी ४ ६ ठहराना ५-८ बराबर ७ फ़ायदा ९-११ लाल १० आरज़ १३ सवाल १४ न्योछावर १५ ख़बर १६ जहान १७ महादेव जी १९ विरह की आग २० जलना २१ सबब २२ ज़बरदस्त २३ सोना २४ ज़ाहिर २५ आवाज़ २६ मेहरबानी २५

हत्या दुइ के चढ़ा यहि कांधे औ तिनके अपराध
तिस रेहु लेहुं कि माथे जोरि लिये किये साध

सुनि के महादेव की भाखा[1] | सिद्धि[2] पुरुष राजें मन लाखा
सिद्धहिं अंग[3] न बैठै माखी। | सिद्ध पलक नहिं लावहिं आंखी
सिद्धहिं संग होय नहिं छाया | सिद्ध होय नहिं भूख न माया[14]
220 जो जग[5] सिद्धि गुसाईं कीन्ही। | प्रगट[6] गुप्त[7] रहै को चीन्हा॥
बैल चढ़ा कुष्टी कर भेसू[8]॥ | कहि राजें सत आहि महेशू[9]॥
चीन्हे सोई रहै तेहि खोजा॥ | जस बिक्रम[10] औ राजा भोजा
के जिव तंत[11] मंत सों हेरा[12]॥ | गयो हिराय जो वह भा मेरा

बिन गुरु पंथ[13] न पावै भूला सोई जो भेट॥
योगी सिद्धि होय तब जब गोरख[14] सों भेट

तत[15] खन रतन सेन घबरा॥ | छांड़ि डफार पायं लै परा॥
माता पिता जन्म कित पाला | जो अस फांद पेम[16] गै घाला
221 धर्ती[17] स्वर्ग[18] मिले हत दोऊ॥ | कित निरार[19] कर दीन्ह बिछोऊ[20]
पदक[20] पदारथ[21] कर हुत खोवा | टूटहिं रतन[22] रतन तस रोवा॥
गगन[23] मेघ जस बरसहिं भली | धर्ती पूर सलिल[24] होय चली॥
सायर[25] उबट सिखिर[26] की पाटी॥ | चढ़ी पानि पाहन[27] हिय[28] फाटी
बूंद पानि होय होय सब गिरे॥ | प्रेम फन्द कौऊ जन परे॥

तस रोवे जस जिव जरै गिरै रक्त[29] औ मास।
रोम रोम सब रोवहिं सूत[30] सूत भर आंस॥

बातचीत १ मर्द कामिल २ बदन ३ दुनिया दौलत ४ दुनिया ५ जाहिर ६ छिपा हुवा ७ सूरत ८ महादेवजी ९ राजा बिक्रमाजीत १० तलाश ११ देखना-बाढ़ूंढ़ना १२ राह १३ नाम योगी १४ यकायक १५ गरदन १६ ज़मीन १७ आसमान १८-२३ अलग १९ लाल वा जवाहिर २० हाथ २१ आंसू २२ आसमान २३ पानी २४ तालाब २५ धोबी का पाटा २६ पत्थर २७ छाती २८ ख़ून २९ सूराख़ ३०

रोवत बूड़ ओहा संसारू ॥ महादेव तब भयो सँवारू
कहेसि नरोठ बहुत तैं रोवा अबईश्वर भा दारिद खोवा
जो दुख सहै होय सुख ओका दुख बिनु सुख न जाय शिव लोका
अबनें सिद्धि भया सुध पाई दरपन काया छूरि गहु काई
कहूं बात अबहूं उपदेसी ॥ लाग पंथ भूले परदेसी ॥
जो लहि चोर सेंध नहिं देई राजा कोरन मूसै पैठी ॥
चढ़ै तो जाय पार वह बूंदी परै तो सेंध सीस सो मूंदी

कहेसो तोहि सिंहल गढ़ है खंड सात चढ़ाव
फिरा न कोई जीति जिय स्वर्ग पंथ दै पाव।

गढ़ तस बाँक जैस तोर काया पुरुष देखि ओहो की छाया
पाई नाहिं जूझ मुह ढ कीन्हे ॥ जे पावा ते आपुहि चीन्हे ॥
नौ पौरी तेहि गढ़ भीतर बारा पौ नहे फिरहि पांच कुत्तवारा
दसवें दुवार गुप्त एक नाके ॥ अगम चढ़ाव बाट सुठि बाँके
भेदी जाय कोई वह घाटी ॥ जो लहि भेद चढ़ै होय चाँटी
गढ़ तरि कुंड सुरंग तेहि माहाँ तेवे पंथ कहौं तोहिं पाहाँ ॥
चोर पैठि जस सेंध सँवारी ॥ जुवा पैत जस लाय जुवारी

जस मानिया समुद्र अस मोहाय आवत बसीए
हेहि लेहु जो स्वर्ग दुवारे चढ़ै सो सिंहल दीए ॥

मेहरबानी करने वाले १ कामिल २ आईना ३ बदन ४ नसीहत ५ एह ६ पूंजी ७ खाई ८ सिर ९ आसमान १० किला तथा बदन आदमी ११ पेचदार १२ बदन १३ मर्द १४ नौ दरवाजा तथा नौ सूराख बदन के आँख २ कान २ सुंह १ नथुना २ गुदा १ लिंग १ १५ दरमियान १६ पंच कोतवाल यहां मुराद काम क्रोध अहंकार लोभवगैरा सेहे १७ दस इन्द्रियां बदन की कर्मइन्द्री ५ ज्ञानइन्द्री ५ १८ छिपाहुवा १९ जहां किसी का दखल नहो २० एह २१ बकुन टेढ़ा २२ चूंटी २३ दोव २४

222

223

दसो दुवार ताल का लेखा । उलट दृष्टि जो लाव सो देखा ।
जाय सो जाय सास मन बन्दी जस धसि लीन्ह कान्ह कालिंदी
तू मन नाथ मार के स्वांसा नोपै नरहि आप कर नासा
224 प्रगट लोक चारक हुं बाना ॥ गुप्त लाव मन जासो राता ॥
होहूं कहन सबै मति खोई ॥ जो तू नाहिं आहि सब सोई
जीतहि जुरी मरै इक बारा ॥ पुनि को मीचे मरे को मारा
आपहिं गुरु सो आपहिं चेला आपहिं सब औ आप अकेला

आपहिं मीच जिवन पुनि आपै नन मन आपै साय
आपहिं आप करै जो चाहै कहा सो दूसर कोय

खंड उन्तीसवां राजा गढ़ छेंका खंड ।

सिधि गुटका राजे जो पावा औ भई सिद्धि गरोश मनावा
जब शंकर सिधि दीन्ह कुटेका परी हूल योगिन गढ़ छेका ॥
सबै पद्मिनी देखहि चढ़ीं सिंहल घर गई उठि मढ़ीं ॥
225 जस घर फिरा चोर मति कीन्ही तेहि बिधि सेंध चाहि गढ़ दीन्ही
गुप्त चोर जो रहे सो सांचा परगट होय जीव नहिं बांचा
पंवर पंवर गढ़ लागे केवारा औ राजा सो भई पुकारा ॥
योगी आय छेंक गढ़ मेली ॥ नउ नेवं कीन्ह देस वहं रेवली

भयो रजाय सुदेवा को भिखार असढ़ीठ ॥
बैगे बरज तेहि आवहिं जन दुई चार बसीठ

तथा इस दरवाज़े बदन आदमी के १ निगाह २ योगा की क्रिया पैर बांये कीरण दहने पैरसे पकड़ सांस को तोंदी के नीचे सरोकदो अंगुली से हींग वीच की अंगुली सेदो तो नथुने दोनो अंगूठन की अंगुली मे सांस वदो अंगली से कानके मूराख बन्दकरदेश्व रजनाम तोंदी से वीचकर ब्रह्मांड पर सांस चढ़ा-
य ३ श्रीकृष्णजी ४ यमुना ५ ज़ाहिर ६ छिपा ७ लाल ८ मैं ९ अक़्ल १० मौन ११
मुंह १२ दरवाज़ा १३ दुश्मन १४ क़ैद १५ वकील १६

उतर बसीठ[1] दुइ आय जुहारी[2] | की तुम योगी की बनजारी
भयो रजायसु[3] आगें खेलहिं[4] | गड़[5] तरु छांड़ि अंत[6] होय मेलहिं
अस लागहि केहि के सिय[7] दीन्हें | आयहि मरहि हाथ जिव लीन्हे
यहां इन्द्रासन राजा तपा ।। | जाहि रिसाय सूर[8] डर छिपा ।
हो बनजार तो बनज[9] बिसाहो | भर व्योपार लेहु जो चाहो ।।
योगी होहु तो युक्ति[10] सों मांगहु | भुक्ति[11] लेहु लै मारग[12] लागहु ।
यहां देवता आस केहारी ।।। | तुम पतंग[13] को आहि भिखारी

तुम योगी बैरागी कहत न मानहि कोह ।
लेहु मांग कुछ भिक्षा खेल[14] अंत कंह होह

आन[15] जो भीख हों आयों लिये | कस न लेवों जो राजा दिये ।।
पद्मावत राजा की बारी[16] ।। | हों योगी वह लाग भिखारी ।
खप्पर लिये बार[17] भा मांगों | भुक्ति[18] देइ लै मारग[19] लागों ।।
सोई भुक्ति परापत पूजा ।। | कहां जाउं अस बार न दूजा ।
अब धर यहां जीव वह ठाऊं[20] | भस्म हों पै तजों[21] न नाऊं ।।
जस बिन प्रान पिंड[22] है छूंछा | धर्म लाग कहिय जो पूंछा ।
तुम सो बसीठ राजा की ओरा | साख[23] होहु यह भीख निहोरा

योगी बार आव सो जेहि भिक्षा की आस ।
जो निरास दृढ़ आसन कित[24] गवने केहि पास

सुनि बसीठ मन अपने रिसा | जब पीसत घुन जायहि पिसा
योगी ऐस कहे नहिं कोई ।। | सो कहु बात योग[25] तेहि होई
वह बड़ राज इन्द्र कर पाटा[26] | धर्ती परे स्वर्ग[27] को चांटा

वकील १ सलाम २ हुक्म ३ जाना ४ क़िला ५ और जगह ६ सिखाना ७ सूर्य्य ८ माल ९ तदबीर १० रोज़ी ११ राह १२ पांखी १३ चले जाउ और कही १४ भीख के वास्ते १५ लड़की १६ दरवाज़ा १७ भीख १८ रास्ता १९ जगह २० छोड़ना २१ बदन २२ शाख मेवा मरी २३ कहां जाउं २४ लायक़ २५

जो यह बात जाय तहं चली । छूटहिं अबहिं हस्ति सिंहली ॥
औ छूटहिं तहं बज्र के कूटा । बिसरे भुक्ति होय सब खूटा ॥
जहं लग दृष्टि न जाय पसारी तहां पसारे सहाथ भिखारी ॥
आगे देखि पांव धरि जाथा । तहां न देखि दृष्टि जहं माथा ॥

वह रानी जेहि जुगत महं तेही राज पै पाट ।
सुंदर जाय राज घर योगिहि बन्दर काट ॥

जो योगी सत बन्दर काटा । एके योग न दूसर बाटा ॥ ॥
और साधना आवै साधे ॥ योग साधना आपहिं दाधे ।
सो पहुंचाउ योग कर साथू ॥ दृष्टि चाहि अगमन होय हाथू
तुम्हरे जोर सिंहल के हाथी ॥ हमरे हस्त गुरू है साथी ॥ ।
हस्ती ने सो वह करत न बारा पर्वत कौर पांव की छारा ॥ ।
जो गिरि गह जानवंत भये जो गह गर्व करहिं ते नये ॥ ।
अंत जो चलना कोउ न चीन्हा जो आवा सो आपन कीन्हा ।

योगिहि कौन न चाही तबन मोहि सिल लाग ।
योग संत ज्यों पानी काहि करै तेहि आग ॥

बसीठहिं जाय कही सब बाता राजा सुनत कोह भा राता ॥
ठांवहिं ठांव कुंवर सब मांखे के अबहीं यहि योगी राखे ॥
अबहूं वेगहि करो संयोऊ तस मारहु हत्या किन होऊ ॥
मंत्रिन कहा रहो मन बूझे पति न होय योगिहि सो जूझे
वै मारे तो का हु भिखारी लाज होय जो मानी हारी

हाथी १ पत्थर के गोले २ भीख मांगना ३ चारों तरफ ४ निगह ५ तख्त
६ एह ७ जलाना ८ आखिर ९ नज़र से ज्यादा १० पहित ११ हाथी १२
नास १३ देर १४ एह १५ पहाड़ १६ जहांनक १७ गरूर १८ मरना १९
खुदवीनी की २० गुस्सा २१ ख कील २२ लाल २३ जगह २४ बोलाया २५
जल्द २६ मर्दवीर २७ सन्नाह का २८ बड़ाई २९ लड़ाई ३०

ना भल मुयें[1] न मारे मोषू[2] | दुहूं बात तुम्ह लागहि दोषू[3]
रहे देहु जो गढ़[4] तर मेली। | योगी कित[5] आछे पुनि खेली

आछे देहु जो गढ़ तरे जनि चालहु यह बात
नितहि जो पाहन भख करहिं अस केहु के मुख दांत

गये बसीठ[6] पुनि बहुर न आये | राजें कहा बहुत दिन लाये॥
न जनों स्वर्ग[10] बात धौं काहा | काहुं न आय कही फिर चाहा[11]
पंख न काया[12] पवन[13] न पाया | केहि बिधि मिलों होउं केहि छाया
सवंर रक्त नयनहि भर चुवा | रोय हंकारेसि[14] माझी[15] सुवा[16]॥
परी जो आंसु रक्त[17] की टूटी॥ | रेंग चली जस बीर बहूटी
वही रक्त लिख दीन्ही पाती | सुवा जो लीन्ह चोंच भई राती[18]
बांधी कंठ[19] पड़ा जस कांथा[20] | बिरहिक[21] जरा जाय कहं नाथा

मसि[22] नयना लिखनी वरन[23] रोय रोय लिखा अकत्थ[24]
आखर[25] दहे[26] न कोई छुवे सु दीन्ह परेवा हत्थ॥

औ मुख बचन सो कहिस परेवा | पहिले मोर बहुत के सेवा॥
पुनि रे संवार कहिस अस दूजी | जेउ बल[27] दीन्ह देवतन पूजी[28]
सो अबहीं तबसे बल लागा | बल जिव रहा न तन सो जागा
भलहिं ईसहू[29] तुम्ह बल दीन्हा | जहं तुम तहां भाव बल कीन्हा
जो तुम मया[30] कीन्ह पग धारा | दृष्टि[31] दिखाय बान बिष मारा
जो अस जा कर आसा मुखी | दुख महं ऐस न मारै दुखी॥
नयन[32] भिखार न मानहिं सीखा | अगमन[33] दोरे लीन्ह पै भीखा

मरना १ नजात २ पाप ३ क़िले के नीचे ४ कितने आये औ चले गये ५ रहने दो ६ हरगेज़ ७ पत्थर ८ वकील ९ आसमान तथा क़िला १० ख़बर ११ बदन १२ हवा अर्थात् जोर १३ बुलाया १४ दरमियानी १५ तोता १६ ख़ून १७ लाल १८ गरदन १९ निशान २० आशिक़ २१ काजल आंखका २२ पलक २३ हाल २४ हर्फ़ २५ जलना २६ ज़ोर २७ मौजूद २८ ईश्वर २९ मेहरबानी ३० नज़र ३१ आंख ३२ आगे ३३

नयन[1] नहिं नयन जो बिधगये नहिं निकसे वै बान[2]
हिये[3] जो आखर[4] तुम लिखी ते सठ घटहिं परान

ते बिष बान लिखूं कहं ताईं। रक्त[5] जो चुवा भीज दुनियाई
जान सुकारी[6] रक्त पसेऊ[7]। सुखी न जान दुखी कर भेऊ[8]
जिन न पीर तिन का कर चिंता[9] प्रीतम निठुर[10] होहिं अस निंता[11]
233 कासों कहूं बिरह की माया जासों कहों होय जर राखा
बिरह आग तन जर मैं जरै। नयन नीर[12] सायर[13] सब भरै॥
पाती लिखी संवरि तुम नामा रक्त लिखे आखर भय स्यामा[14]
आखर जरहिं न कोऊ छुवा॥ तब दुख देख चला लै सुवा।

अय सठ मरों छूछि[15] गइ पाती प्रेम पियारे हाथ
भेट होत दुख रोय सुनावत जीव जात जो साथ

कंचन[16] तार बांध गेयें पाती॥ लैगा सुआ जहां धन[18] राती
जैसे कमल सूर्य्य की आसा तीर[19] कथ बहु मरै पियासा॥
बिसरा भोग सेज सुख बासू जहां भंवर सब तहां हुलासू[20]॥
234 तब लगि धीर सुना नहिं पीऊ सुना तो घड़ी रहै नहिं जीऊ॥
तब लग सुख हिय[21] प्रेम न जाना जहां प्रेम का सुख बिसरामा[22]
अगर चंदन दुख दहै[23] सरीरू[24]॥ औभा अगिन कया[25] कर चीरू[26]
कथा कहानी सुनि सुठ जरा जानो घीव बसन्दर[27] परा॥

बिरह न आप संभारे मैल चीर[28] सिर रूख॥
पीउ पीउ करत रात दिन पपीहा मुख भै सूख

आंख १ तीर २ छाती ३ हर्फ़ ४ ख़ून ५ काला सांप ६ लाल पसीना ७ भेद ८ अंदेशा ९ बदर्द १० अर्थात हमेशा से होते आये हैं ११ आंख की पानी तथा आंसू १२ तालाब १३ अर्थात काले हर्फ़ १४ ख़ाली १५ सोने का तार १६ गरदन १७ अर्थात पद्मावत १८ ख़ाविन्द १९ ख़ुशी २० दिल २१ आराम २२ जलना २३ बदन २४-२५ कपड़ा २६-२८ आग २७

ततखन[1] गाहीरा मन[2] आई ॥ मरत पियास छांह जनु पाई ॥
भल तुम सुआ कीन्ह है फेरा ॥ गाहे[3] न जानहु प्रीतम केरा ॥
बातहिं जानो बिषम[4] पहारा हृदय[5] मिला न होय निरारा[6] ॥ 235
मम पानि[7] कर जान पियासा जो जल महं ताकहं का आसा
का रानी यहि पूछहु बाता ॥ जन कोइ होय प्रेम कर राता[9] ।
तुम्हरे दरश न लाग बियोगी[10] अहा सो महादेव मठ योगी ॥
तुम बसंत लै तहां सिधाई । देव पूज पुनि औ फिर आई ॥

दृष्टि[11] बान तस मरेहु खाय रहा तेहि ठांव[12] ।
दूसर बार न बोलहि लै पद्मावत नांव ।

रुयें रुयें बान वै फूटी ॥ सूतहिं[13] सूत रुधिर[14] मुख छूटी ।
नयनहिं[15] चली रक्त की धारा कंथा[16] भीज भयो रतनारा[17] ।
सूरज बूड़ उठा परभाता[18] ॥ औ मजीठ[19] टेसू बन राता[20] ॥ 236
भयो बसंत राती बनपती[21] ॥ औ जेतने सब योगी यती ॥
भूमि[22] जो भीज भयो सब गेरू औ राती तहं पंख[23] परवेरू ॥
राती सती आगेन सब काया[24] गगन[25] मेघ राती तंह छाया ॥
ईंगुर भा पहाड़ जो भीजा ॥ पै तुम्हार नहिं रूम पसीजा ॥

तहां चकोर कोकिला तिनहिं हिये मया[26] पैठ ।
नयनन[27] रक्त भरायहि तुम फिर कीन्ह न डीठ

ऐसो बसंत तुम्ही पै खेलहु रक्त परायें सेन्दुर मेलहु ॥
तुम तो खेल मन्दिर कहं आई वह का मर्म[28] जस जान गुसाई[29]
कहेसि मरै को बारहिं बारा ॥ ऐकहि बार होंहु जर छारा[30]

उसी वक्त १ नाम तोता २ मुशकिल ३ टेढ़ा ४ दिल ५ अलग ६ भेद ७ पानी ८ अर्थात दीवाना ९ दुखी १० निगाह ११ जगह १२ सूराख १३ खून १४ आंख १५ गूदड़ी १६ लाल १७-२१ भोर १८ लाख १९ जंगली बूटी २१ ज़मीन २२ परिंद जानवर २३ बदन २४ आसमान २५ मेहरबानी २६ खून २७ भेद २८ ईश्वर

सर[1] रच चहा आग जो लाई | महादेव गौरी सुध पाई ॥
237 आय बुझाय दीन्ह पंथ[2] तहां | मरन खेल कर आगम[3] जहां ।
उलटा पंथ प्रेम की बारा[4] ॥ | चढ़ै स्वर्ग जो परै पतारा ॥
अब धस लीन्ह चही तेहि आसा | पावै सांस कि मरै निलासा

पाती लिख सो पठाई लिखा सबै दुख रोय ॥
धौं जिव रहै कि निसरै कहा रजाय[6] सु होय ।

कहि के सुवा छोड़ दई पाती | जानहु दब्ब छूट तस ताती[8] ॥
गैंउ जो बांधा कंचन[10] तागा | राती[11] स्याम कंठ जर लागा ॥
अगिन स्वांस मुख निसरे ताती | तरवर[12] जरहिं तहां को पाती
238 रोय रोय सुवे कही सो बाता । | रक्त की आंस भयो मुख राता
देख कंठ जर लाग सो केरा ॥ | सो कस जरै बिरह अस घेरा ॥
जर जर हाड़ भये सब चूना । | तहां मांस को रक्त बहूना ॥
वैं तोहि लाग कैया[13] सब जारो | तपत मीन[14] जल रहै[15] न पारी

तुहि कारन[16] वह योगी भस्म कीन्ह तन दाह[17]
तूं अस निठुर[18] निछोही[19] बात न पूछी ताह

कहेसि सुवा मोसों सुनि बाता | चहों तो आज मिलों जस राता
पै सो मर्म[20] न जानै भोरा[21] ॥ | जानै मर्म जो मर कै[22] होरा
239 हौं जानत हूं अबहूं कांचा ॥ | नाजेहिं प्रीति रंग थिर[23] राचा ।
नाजेहिं भयो मैली[24] गिर बासा | नाजेहिं रवि[25] होय चढ़ेउ अकासा
नाजेहिं होय भंवर कर रंगू ॥ | नाजेहिं दीपक होय पतंगू ॥
नाजेहिं किरा भृंग[26] की होई | नाजेहिं आप जिये मर सोई ॥
नाजेहिं प्रेम औट इक भयो ॥ | नाजेहिं हिये[27] माझ डर गयो

चिता १ राह २ पहिले ३ दरवाज़ा ४ आसमान ५ दुक्ख ६ निहाई ७ गर्म ८ गरदन ९ सोना १० लालवा काला ११ पेड़ १२ बदन १३ मछली १४ बिकरार १५ वास्ते १६ जलाना १७ बेदर्द १८-१९ भेद २० नादान २१ मरके जलना २२ काया २३

तेहिं[1] का कहीरहन कहन जो है प्रीतम लाग
जो वह सुनें लेइ धस का पानी का आग

पुनि धन[2] कनक[3] बान मसि[4] मांगी
उत्तर लिखत भीज तन आंगी
तस कंथन[6] कहं चही सुहागा
जो निरमल[7] नग होय सुलागा
हौं योगी मठ मडफ बहोरी[8]
तहवां कसन गांठ तुम्ह जोरी
गाबिस[9] भार देख के नयना
सखिन लाज का बोलों बयना[10]
खेल मिसें[11] मैं चन्दन घाला
मग[12] जागेसि तो देवों जै माला
तबहूं न जागा गा तूं सोई ॥
जागे भेंट न सोये होई ॥
अब जा ससि[13] होय चढ़ै अकासा
जो जिव देय सो आवै पासा

तब लग भुक्ति[14] न लैस का रावन सिय इकसाथ
कौन भरोसें अब कहों जीव पराये हाथ ॥॥

अब जो सूर[15] गगन[16] चढ़ आवै ॥
राहु होय तौ ससि[17] कहं पावै
बहु तेहिं ऐसो जीव पर खेला
तूं योगी किन मांह अकेला
बिक्रम[18] धसा प्रेम के बारा[19] ॥
संपावत[20] कहं गयो पतारा ॥
सुदी पच्छ[21] खंडरावत[22] लागी ।
गंगन[23] पूर होय गा बैरागी ॥
राजकुंवर[24] कंचनपुर[25] गयऊ ॥
मिरगावत[26] कहं योगी भयऊ
साध[27] कुंवर खंडावत[28] योगू ।
मधुमालति[29] कहं कीन्ह बियोगू[30]
पेमावत[31] कै सुरसर[32] सांधा ॥
ऊषा[33] लगि अनुरुध[34] बर बांधा

हौं रानी पद्मावत सात स्वर्ग पर बास ॥॥
हाथ चढ़ों सो तेहि के प्रथम[35] करै अपनास

तिपको रहने के वास्ते क्या कहूं १ पद्मावत २ क़लम ३ सियाही ४ जवाब ५ सोना ६ पावाणफ़ ७ जाना ८ बेहोश ९ आवाज़ १० बहाना ११ एायद १२ चांद १३. १७ भीख १४ सूर्य्य १५ आसमान १६ राजा बिक्रमाजीत १८ दरवाजा १९ नामरानी २० राजा भोज २१ नामरानी २२ नाम जगह २३. २५ नामराजा २४ नामरानी २६. २८ ३१ नामराजा २७. ३२ भंवरा २९ दुखी ३० बेटी बानासुर ३३

बेटा श्री कृष्ण चंद्र ३४ पहिले ३५

हौं पुनि अहों ऐस तुम राती[1] | आधी भेट पिरीतम पाती ।
तोहूं जो प्रीति निबाहे[2] आंटा | भंवर न देख केतमहं कांटा
होहु पतंग आव गहु[3] दिया । | लेह समुंद धस होय मराजिया
242 राति[4] रंग जिमि[5] दीपक बाती । | नयन[6] लाव होय सीप सेवाती
चात्रिक होहु पुकार पियासा । | पियो न पानि सेवाति की आसा
सारस हो बिछुरी जस जोरी ॥ | रैन[8] होह जल चकइ चकोरी
होहु चकोर दृष्टि[9] ससि[10] पाहां | औ रबि[11] होह कमल वह माहां

होहूं ऐसि तुहि राती सकेसि तो प्रीति निबाह
राहु बेध अर्जुन[12] होय जीत दुरपदी ब्याह ॥

राजा यहां तैस तप झूरा । | भा जर बिरह छार कर कूरा ॥
जिव गंवाय सो गयो बिमोही ॥ | भा बिन जिव जिब दीन्हेस ओही
कहां पिंगला[13] सुख[14] मन नारी । | सुन्न समाधि लाग गई तारी ॥
243 बूंद समुंद जैसो हो मेरा ॥ | गाहे राय तस मिले न हेरा ॥
रंगहि पान मिला जस होय | आपहिं खोय रहा होय सोय
सु बैं आय देखा भा नासू | नयन रक्त भर आये आंसू
सदा प्रीतम गाढ़े[15] करेई ॥ | वह न भूल भूला जिव देई

मूर[16] सजीवन आन के औ मुख छिड़का नीर[17]
गरुड़ पंख जस झारै अमृत बरसा कीर[18]

मुवा जिया अस बास जो पावा | लीन्हेसि खांस पेट जिव आवा
देखिसि जाग सु आसिर नावा | पाति दीन्ह मुख बचन सुनावा
244 शब्द[19] सुनाय अमीं मुख मेला | गुरु बुलाव बेगु[20] चल चेला ॥
तोहि अल[21] कीन्ह आप भा केवा[22] | हौं पठवा गुर बीच[23] परेवा ॥

लाल तथा खुश १ निवाह करना २ पकड़ना ३ सुर्ख ४ जिस तरह ५ आंख ६ पपीहा ७ रात ८ निगाह ९ चांद १० सूर्य्य ११ नाम माई राजा युधिष्ठिर १२ रग १३-१४ जुल्म १५ नाम बूटी १६ पानी १७ तोता १८ बोल १९ जल्द २० भंवरा २१ केतकी

२२ बिचवानी तोता २३

पवन स्वांस तो सों मन लाई | जौवै सोग हरि बिछाई ॥
जस तुम कया कीन्ह उकदोहू | सो सब गुरु कहं भयो अगोहू
तपावंत छाला लिखदीन्हा । | बेग चलाव चहूं सिंध कीन्हा ॥

औ अस कहि बेग चल आवो जीव बसै तुम नाउं
नयन नहि भीतर पंथ है हिरदय भीतर ठाउं

सुनि पद्मावत की अस मया | भाव संत उपनी नई कया ॥
सुवा का बोल पवन होय लागा | उठा सोय हनुवंत होय जागा
चांद मिलै कहं दीन्हेसि आसा | महं किरन सूर्य्य परकाशा
पानि लीन्ह लै सीस चढ़ावा | दृस्टि चकोर चांद जस पावा
अस पियासा जो जेहि केरा | जो झिंझकार वही सों हेरा
अब यहि कौन पानि मैं पिया | भै तन पांख पतंग मरजिया
उठा फूल हिरदय अस माना | कंथो दूकूटक भर आना

जहां प्रीतम वे बसहिं य हि जिव बलै नेहि बार
जो सो बुलावै पांव सों हम तहां चलैं लिलार

जो पंथ मिला भूंहें सहि सेई | गयो समुद्र आही धस लेई
जहां वह कुंड बिंब मों गाढ़ा | जाय परा नहं पावन थाहा ॥
बावर अंध प्रेम कर लागू ॥ | सोहं धसा कुछ सूझ न आगू
लीन्हेसि धंसि स्वांस मन मारा | गुरु सबद नाथ संभारा
चेला परी न छाड़हि पाछू ॥ | चेला मच्छ गुरु जस काछू
जस धस लीन्ह समुद मजिया | उघो नयन बरै जस दिया ॥
खेवा जस लीन्ह सो स्वर्ग दुवारा ॥ | बज्र जो मूंदे जाय उघारा ॥

हवा १ ढूंढना २ राह ३ निगाह ४ जलाना ५ खबर ६ दूर मिला ७ खत ८ जख्म ९ काम पूरा १० आखर ११ राह १२ २३ दिल १३ जगह १४ मेहरबानी १५ पैदा होना १६ बदन १७ हजार १८ सिर १९ देखना २० गुदड़ी २१ न्योछावर २२ माथा २४ महादेव जी २५ टेढ़ा २६ खबर २७ सामने २८ आसमान २९ पत्थर ३०

बांक चढ़ाव स्वर्ग गढ़ चढ़त गयो होय भोर
भई पुकार गढ़ ऊपर चढ़े सेंध दै चोर

एजें सुना योग गढ़ चढ़ें ॥ पूंछी पास पंडित जो पढ़ें ॥
योगी गढ़ जो सेंध दे आवहिं बोलहु शब्द सुद्ध जस पावहिं
कहहिं वेद पण्डित पढ़ वेदी योग भंवर जस मालति भेदी
247 जैसें चोर सेंध सिर मेलहिं तस ये दोऊ जीव पर खेलहिं
पंथ नहिं चलै वेद जस लिखी स्वर्ग जाय सूली चढ़ सिखी ।
चोरि होय सूली पै मोखौ ॥ दे जो सूरी तेहिं नहिं दोखो ।
चोर पुकार बेध घर मूंसा खोली राज भंडार मंजूसा ॥

जस यहि राज मंदिर कहे दीन्ह रैन होय सेंध
तेसो इन्ह कहं मोख होय मारहु सूली बेध

खंड बीसवा · मंत्री खंड गन्धर्पसेन

रांध जो मंत्री बोले सोई ॥ ऐसो जो चोर सिद्ध पै कोई
सिद्ध निशंक रैन दिन भोंहीं ताका जहां तहां अपसोंहीं ॥
सिद्ध निडर पै अपने जीवा स्वर्ग देख के नावहिं गीवां ॥
248 सिद्ध जाय पै जिव बध तहां औरहि मरन पंख अस कहां
सिद्ध अमर काया जस पारा जरहिं मरहिं पर जाय न मारा
चढ़ा जो कोप गगन उपराहीं थोरे साज मरें ते नाहीं ॥
जंबुक जूझ चढ़ै जो राजा । सिंह साज के चढ़ैं सो छाजा

छरहि काज कृष्ण कर साजा राजा चढ़ैं रिसाय ॥
सिद्ध गिद्ध जहं दृष्टि गगन महं बिन छर कुछ न बिसाय

आवहु करहु कदर मस साजू चढ़हि बजाय जहां लहि राजू

आसमान २ कहो क्या दंड २ राह ३ नजात ४ पाप ५ राज ६ मर्द कामिल ७ फिरना ८ देखना ९ पहुंचना १० गरदन ११ हमेशा ज़िन्दा १२ बदन १३ आसमान १४ सियार १५ शेर १६ प्रारेव १७ निगाह १८ लश्कर तेयार हो

होह संजोवल[1] कुंवर जो भोगी | सब दल छेंक धरहु अब योगी ।
चौबिस लाख छत्रपति[2] साजे । | छपन कोटि दर[3] बाजन बाजे ।
बाइस सहस[4] सिंहली चाले । | गिरि[5] पहाड़ पेई सब हाले ।। 249
जगत बराबर वै सब चांपा । | डरा इन्द्र बासुक[6] हिय कांपा
पदम कोटि रथ साजे आवहिं | गढ़ होय खेह[7] गगन[8] कहं धावहिं
जनु भौ चाल चलत महं परा | कूर्महि[10] पीठ टूटि हिया डरा ।।

छत्रहि स्वर्ग[11] छायगा सूरज गयो अलोप ।
दिनहि रात अस देखी चढ़ा इन्द्र होय कोप

देख कटक[12] औ मन मत[13] हाथी | बोले रतन सेन के साथी ।।
होत आव दल बहुत असूझा | अस जानब कुछ होय है जूझा
राजा तूं योगी होय खेला ।। | यही दिवस[14] कहं हम भये चेला
जहां गढ़[15] ठाकुर[16] कहं होई ।। | संग न छाड़े सेवक सोई ।। 250
जो हम मरन दिवस मन ताका | आज आय पूजी वह साका ।
परजिव जाय जाय नहिं बोला | राजा सत सुमेरु नहिं डोला ।
गुरु केर जो आयसु[17] पावहिं | सौंह[18] होहिं औ चक[19] चलावहिं

आज करैं रण भारथ सत बाचा दे राख ।।
सत गुरु सत कौतुक[20] सत भरैं पुनि साख

गुरु कहा चेला सिध होहू ।। | प्रेम बार[21] होय करो न कोहू[22] ।।
जा कहं सीस[23] नाय के दीजे ।। | रंग न होय जूझ जो कीजे ।
जेहिं जिय प्रेम पानि[24] भा सोई | जेहिं रंग मिले वही रंग होई । 251
जो पै जाय प्रेम सों जूझा[25] । | कित तप मरहिं सिद्ध जेहि बूझा

मुक़ाबिला १ राजा ३ फ़ौज ४-१२ हज़ार ४ पहाड़ ५ नाम राजा सांपों का ६ दिल ७ राख ८ आसमान ९-११ कछुवा १० मस्त १३ दिन १४ मुसीबत १५ मालिक १६ हुक्म १७ सामने १८ नाम हथयार १७ तमाशा २० दरवाज़ा २१ गुस्सा २२ सिर २३ पानी २४ लड़ाई २५

यहि सत बहु तजूझ[1] नहिं करिये | खर्ग[2] देख पानी होय छुरिये ।
पानी काह खड़ग की धारा | लौट पान सोई जो मारा ॥
पानी सेतें आग का करेई ॥ | जाय बुझाय पानी जो परेई

सीसे[3] दीन्ह मैं अगमन[4] प्रेम पान सिर मेल ॥
अब सु प्रीति निबाहूं चलों सिद्ध होय खेल

राजें छेंक धरी सब योगी । | दुख ऊपर दुख सहै बियोगी[5] ॥
नाजिय धड़क हिये[6] कोई | नाजिय मरन जिवन कस होई
नाग फांस उन्ह मेली गीवं[7] ॥ | हरष[8] न बिसमो[9] अब को जीवां
252 जेंजिव दीन्ह सो लेव निरासा । | बिसरे नहिं जौ लह तन स्वासा ।
कर[10] किंगरी तेहि तंत बजावा । | यही गीत बैरागी गावा ॥ ॥
भलहिं आन गयें[11] मेली फांसी । | हिये[12] न शोच ऐसी रिस नासी
मैं गयें फांद वही दिन मेला ॥ | जेहिं दिन प्रेम पंथ होय खेला

प्रगट[13] गुप्त[14] सकल[15] महं पूर रहा सो नाउं ॥
जहं देखों वह देखों दूसर नहिं कहं जाउं ॥

जब लग गुरु मैं अहा न चीन्हा | कोटि अंतर पट[16] बिच हुत दीन्हा
जो चीन्हा तौ और न कोई ॥ | तन मन जिव जोबन सब सोई
हों हों कहत धोख अंतराही | जो भासिद्ध कहां परछाहीं ॥
253 मारै गुरु कि गुरु जियावा । | और को मार मरै सब आवा ।
सूरी मेल हस्ति[17] गुरु परू । | हौं नहिं जानों जानै गुरू ॥
गुरु हस्ति पर चढ़े सो पेखा[18] | जगत[19] जो नास्त[20] नास्त सब देखा
अन्ध मीन[21] जस जल महं धावा | जल जीवन[22] जल दृष्टि[23] न आवा

लड़ाई १ तलवार २ सिर ३ पहिले ४ दुखी ५ दिल ६ १२ गरदन ७-११ खुशी ८ दुख ९ हाथ १० ज़ाहिर १३ छिपा हुवा १४ सब १५ करोरों परदा का बीच १६ हाथी १७ देखना १८ दुनिया १९ नास होनवाला २० मछली २१ ज़िन्दगी २२ निगाह २३

गुरु मोर मोरे सिर दिये तुरंगहि[1] ढाढ ॥ ॥
भीतर करे डुलावै बाहेर नाचै काठ ॥ ॥

सों पद्मावत गुरु हौं चेला ॥ योग तंत जेहिं कारन[2] खेला
तज[3] वह बार[4] न जानों दूजा ॥ जेहिं दिन मिलौ याजा पूजा ॥
जीव काढ भुइं धरों ललाटू[5] । वेहिं कहं देउं हिया[6] महं पाटू[7] ॥
को मुहिं लै सो छुवावे पाया नौ अवतार[8] देइ नइ काया[9] ॥
जीव चाहि[10] सो अधिक[11] पियारी मांगै जीव देउं बलहारी ॥
मांगै सीस[12] देउं सैं गीवां[13] ॥ अधिक तरै जो मारै जीवां
अपने जिव कर लोभ न मोही प्रेम बार होय मांगो ओही ॥

दरशन वह का दिया जस हौं सुभिखारी पतंग
जो करवट[14] सिर सारी मरत न मोरों अंग ॥ ॥

पद्मावत कमला ससि[15] जोती हसै फूल रोवै तब मोती
परजापतें[16] हंसी औ रोजू[17] ॥ लाये दूत होय नित[18] खोजू ॥
जबहिं सूर्य्य[19] कहं लागा राहू ॥ तबहि कमल[20] मन भयो अगाहू[21]
बिरह अगस्त[22] जो बिसमो[23] भयेउ सरवर[24] हरष[25] सूख सब गयेउ ।
परगट[26] ढार सकै नहिं आंसू ॥ घुट घुट मांस गुप्त[27] होय नासू
जस दिन मांझ, रैन होय आई बिगसत कमल गयो मुरझाई
राता[28] बदन गयो होय सेता[29] ॥ भंवत भंवर रहि गई अचेता

चितहिं[30] जो चित्र[31] कीन्ह धन[32] रों रों अंग समीप
सहस[33] साल दुख आह भर मुरछ[34] परी कामीप

घोड़े की बाग १ वास्ते २ छोड़ना ३ दरवाज़ा ४ सिर ५ दिल ६ तख़्त ७ नया जन्म ८ बदन ९ ज़्यादा १० ११ सिर १२ गरदन १३ सिर उतारना १४ चांद १५ बाप पद्मावत १६ रोना १७ हर रोज़ तलाश १८ तथा राजा रतनसेन १९ तथा पद्मावत २० ख़बर २१ आग २२ तेज़ २३ तालाब २४ ख़ुशी २५ ज़ाहिर २६ छिपा २७ लाल २८ सफ़ेद २९ याद ३० तसवीर ३१ पद्मावत ३२ हज़ार ३३ बेहोशी दूर होती ३४

पद्मावत संग सखी सयानी | गन के नखत पीर ससि जानी
जानेहु मर्म[2] कमल कर कोई[3] | देखि बिथा बिरहिन की रोई ॥
बिरहा कठिन काल की कला | बिरह न सही काल पर भला
256 काल काढ़ लै जीव सिधारा। | बिरह काल मारे पर मारा ॥
बिरह आग पर मेलै आगी। | बिरह घाव पर घाव बिजागी[4]
बिरह बान पर बान पसारा। | बिरह रोग पर रोग संचारा ॥
बिरह साल[5] पर साल न वेला | बिरह काल पर काल दहेला[6]

तन रावन होय सिर चढ़ा बिरह भयो हनुमंत
जारे ऊपर जारै तजै[7] न कै भसमंत ॥।

कोइ कुमोद[8] पर सहिं कर पाया | कोइ न लया[9] गिर छिड़कहिं काया
कोइ मुख सीतल[10] नीर चुवावैं | कोइ अचल सों पवन डुलावैं
257 कोइ मुख अमृत आन निचोवा | जनु बिष दीन्ह अधिक[11] धन[12] सोवा
जोवहिं स्वांस खनहि[13] खन सखी | कब जिव फिरे पवन औ पंखी
बिरह काल होय हियें[14] जो बैठा | जीव काढ़ लै हाथे बैठा ॥
खनक मवन बांध खन खोला | गहि[15] सै जीभ मुख जाय न बोला
खनहि बीज[16] की बान न मारा | कंप कंप नारि मरै बिकरारा[17] ॥

कतहूं बिरह न छाड़ै भा ससि[18] गहन गिरास
नखत चहूं दिस रोवहिं अंधेर धरत अकास

घड़ी चार इमि[19] गहन गिरासी | पुनि बिष[20] हियें[21] जोत परकासी[22]
निसस[23] ऊभ मर लीन्हे स्वासा | भइ अधार[24] जीवन की आसा
बिनवहिं सखी छट ससि[25] राह | तुम्हरी जोत जोत सब काहू ॥

चांद तथा पद्मावत १ भेद २ कोका बेली ३-८ आग ४ सूराख ५ भरी ६ छोड़ना ७ चन्दन ९ ढंडा पानी १० बहुत ११ पद्मावत १२ हर घड़ी १३ दिल १४ रुकना १५ बिजुली १६ बेकरार १७ चांद गहन १८ इसतरह १९ ईश्वर २० दिल २१ रोशनी २२ बेहोश २३ कुछ खाया २४ चांद २५

तूं ससि[1] बदन जगत[2] उजियारी | कैहर[6] लीन्ह कीन्ह अँधियारी[7]
तू गज[3] गामिन गर्ब[4] गहेली ॥ | अब कस अस सत छाड़ दहेली[5]
तूं हर लकै[6] हराई कैहर[7] ॥ | अब कस हार करेसि है हेहर ॥
तू कोकिल बैनी[8] गज मोहा | को व्याध होय गही निछोहा[9]

कमल करी तूं पद्मिन गई निस[10] भयो बिहान
अबहुं न संपुट खोलिस जोरे उठा जग भान[11]

भान नाउं सुनि कमल बिकासा | फिर कै भंवर लीन्ह मधु बासा
सरद[12] चंद मुख जीभ उघेली। | खंजन नैयन[13] उठी कर केली
बिरह न बोल आव मुख माई | मरमर बोल जीव बरयाई[14] ॥
डोल बिरह दारुन[15] हिया[16] कांपा | खोल न जाय बिरह दुख झांपा
उदधि[17] समुंद जस तरंग[18] देखावा | चय[19] घूमहिं मुख बात न आवा
यह सठ लहर लहर पर धावा | भंवर परा जिव थाह न पावा
सखी आन बिय देव तो मरनूं | जिव न पेट मरन का डरनूं ॥

खनै[20] उटै खन बूड़ै अस हिया कमल सकेत[21]।
हीरामनहिं बुलावहि सखी कहन जिव लेत

चेरी धाय सुनत खन धाई। | हीरामन लै आय बोलाई ॥
जनहु बैद औषध लै आवा। | रोगियै रोग मरत जिव पावा
सुनत असीस नयन धन खोली | बिरह बैन कोकिल जिमि बोली
कमलहि बिरह बिथा जस बाढ़ी | केसर[23] बरन पीर हियें काढ़ी ॥
कित कमलहि भा प्रेम अंगूरू | जोपै गहन लेह दिन सूरू[22] ॥
पुरयन छांहि कमल की करी | सकल[25] बिथा सुनि अस तुम हरी

चांद केसा मुंह १ दुनिया २ हाथी की चाल ३ ग़रूर ४ भारी ५ कमर ६ चीता ७ आवाज़ ८ बेदर्द ९ रात १० सूर्य्य ११ कातिक की पूरनमाशी का चांद १२ ममोला की आंख १३ भारी १४ मुशकिल १५ दिल १६ नाम समुंद १७ लहर १८ आंख १९ कभूं २० बंद २१ जिस तरह २२ पीला २३ सूर्य्य २४ सब

पुरुष[1] गंभीर न बोलहिं काहू | जो बोलहिं तौ औरनि बाहू ॥

एतना बोल कहत मुख पुनि होय गई अचेत
पुनि कै चेत संभारी वही बकत मुख लेत ॥

और दग्ध[2] का कहूं अपारा | सती सो जरै कठिन[3] अस झारा
होय हनुमंत पैठ है कोई ॥ | लंका दाह[4] लाग तन सोई ॥
261 लंका बुझी आग जो लागी | यहि न बुझै तस आंच बिजागी[5]
जनहु अगिन के उठहिं पहारा | वै सब लागहिं अंग अंगारा ॥
कटकट मास सराग[6] पुरावा । | रक्त की आंस मांस सब रोवा ।
खनक[7] बार मास अस भूजा | खनहिं चपाय सिंह[8] अस गूजा
यहरी दग्ध हत अतम मरीजे | दग्ध न सही जीव पर दीजे ॥

जहं लग चंदन मलीगिर[9] औ सायर[10] सब नीर[11] ।
सब मिल आय बुझावैहिं बुझै न आग सरीर

हीरामन जो देखेसि नारी ॥ | प्रीति बेल उपनी[12] हिय[13] बारी
कहेसि न तुम कस होहु दहेली[14] | उरझी प्रेम प्रीति की बेली ॥
प्रीति बेल जन उरझे कोई । | उरझा मुयें न छूटै सोई ॥
262 प्रीति बेल ऐसे तन डाढ़ा ॥ | पलहत सुख बाढ़त दुख बाढ़ा
प्रीति बेल की अमर को बोई | दिन दिन बढ़ै छीन[15] नहिं होई
प्रीति बेल संग बिरह अपारा | स्वर्गी[16] पतार जरै तेहि झारा ॥
प्रीति अकेल बेल जहं छावा | दूसर बेल न सरबर[17] पावा ॥

प्रीति बेल उरझाय जब तब सुजान सुख साख
मिले प्रीतम आय के दाख[18] बेल रस चाख

पद्मावत उठ टेके पाया ॥ ॥ | तुम हुत देखौ प्रीतम छाया

अच्छे लोग १ जलन २ मुशकिल ३ जलाना ४ आग ५ सीख ६ कमी ७ शेर ८ चन्दन ९ तालाब १० पानी ११ पैदा १२ दिल १३ भारी १४ घटना १५ आसमान १६ बराबरी १७ अंगूर १८

कहत लाज और हिये[1] न जीउ | इक दिस[2] आग दुसर दिस पीउ
तुम सो मोर खेवक[3] गुरु देवा | उतरों पार तेही बिध खेवा ।
सूर[4] उदय गढ़ चढ़त भुलाना | गहने गहा कमल कुंभिलाना
ओहत होय मरों नहिं झूरी | यह सठ मरों जो नेरहि दूरी ॥
घट[5] महं बकत बकत भा मेरू | मिलहि न मिलहि परा तस फेरू
दमन[6] नहिं नलहि[7] जो हंस मिलावा | तब ही रामन नाउं कहावा ।

मूर[8] सजीवन दूर है सालै[9] शक्ती बान ॥
प्रान मुक्ति[10] अब होत है वेगि[11] देखावहि आन ॥

ही रामन भुइं धरा ललाटू[12] । | तुम रानी जुग[13] जुग सुख पाटू[14]
जेहिं के हाथ जरी औ मूरी[15] । | सो योगी अब नाहीं दूरी ॥
पिता तुम्हार राज कर भोगी | पूजै बिप्र[16] मरावै योगी ॥
पंवर[17] पंवर कुतवाल सो बैठा ॥ | प्रेमक[18] लुब्ध सुरंग होय पैठा
चढ़त रैन गढ़ होय गा भोरू ॥ | आवत बार[19] धरा कै चोरू ।
अब लै गये देय वह सूरी ॥ | तेहि सो अगाह[20] बिथा तुम पूरी
अब जिव तुम काया[21] वह योगी | कया का रोग जान पै रोगी

रूप तुम्हार योगी अपन पिंड कमावा फेर ॥
आप हेराय रहा तेहि खंड होय काल न पावे हेर ॥

ही रामन जो बात यहि कही । | सूर्य्य की गहन चांद पुनि गही
सूर्य्य की दुख जो ससि[22] होय दुखी | सो कित दुख मानै कर मुखी ।
अब जो योगि मरै मोहिं नेहा[23] ॥ | मोहिं वह साथ धर्त गग[24] नेहा
रहै तो करों जन्म भर सेवा । | चलै तो यह जिव साथ परेवा

छाती १ इक तरफ़ २ मल्लाह ३ सूर्य्य ४ मुलाक़ात ५ रानी दमन ६ नाम राजा ७ नाम बूटी ८ सूराख़ ९ आख़िर १० जल्द ११ सिर १२ हमेशा १३ तरसा १४ जड़ १५ ब्राह्मन १६ ड्योढ़ी १७ प्रेम का भरा हुवा १८ दरवाज़ा १९ ख़बर २० बदन २१ चांद २२ मुहब्बत २३ ज़मीन - आसमान २४

कौन सो कर[1] लै गहि[2] गुरु सोई | परकाया[3] प्रवेस जो होई ॥
पलट सो पंथ[4] कौन बिध खेला | चेला गुरु गुरु होय चेला ॥
कौन खंड अस रहा लुकाई ॥ | आवै काल हेरै फिर जाई ॥

चेला सिद्ध[5] सो पावै गुरु सों करै अछेद[6] ॥
गुरु करै जो कृपा कहै सो चेला भेद ॥

अनरानी तुम गुरु वह चेला | मोहिं पूछहु कै सिद्ध नबेला[7] ॥
तुम्ह चेला कहं परशन भई | दरशन देय मँडफ चल गई
रूप गुरु कर चेलै डीठा[8] ॥ | जित समाय होय चित्र[10] सो पैठा
जीव काढ़ लै तुम अपसई[11] ॥ | वह भा कया जीव तुम भई ॥
कया जो लाग धूप औ सेऊ[12] ॥ | कया न जान जान पै जीऊ ॥
भोग तुम्हार मिला वह जाई | जो वह बिथा सो तुम कहं आई
तुम्ह वह की घट वह तुम माहां | काल कहां पावै वह छाहां

अस वह योगी अमर[13] भा परकाया परवेस ।
आवै काल गुरु तन देखी फिर सो करै अदेस[14] ।

सुनि योगी की आमर करनी | न्यौरी[15] निरह बिथा की मरनी
कमल करी होय बिकसा[16] जीव | जनु रबि[17] उदय छूट गा सीव ॥
जो भा सिद्ध को मारै पारा ॥ | जीवू रस ते जी होय छारा[18] ॥
कहो जाय अब मोर संदेसू ॥ | तजो[19] योग अब होहु नरेसू[20] ॥
न जानहु हौं तुम सों दूरी ॥ | नयनहिं मांझि गड़ी वह सूरी
तुम [illegible] घटै घट केरा ॥ | मोहिं घट जीव घटत नहिं बेरा[22]
तुम कहं प[illegible] में साजा ॥ | अब तुम मोर दुहूं जुग राजा

हाथ १ पकड़ना २ बदन [illegible] ४ देखना ५ कमाल ६ बुई नराखे ७ नया ८ देखना ९ तसवीर १० छिपना ११ जाड़ा १२ [illegible] जिंदा १३ सलाम १४ आखिर १५ खिलना १६ सूर्य्य के उदय जाड़ा जाय १७ राख १८ छोड़ना १९ बहादुर २० पसीना २१ देर २२ तख्त २३ दिल २४

जोरी जियहिं मिलगलरहैं मरहिं तो एकहिं दोउ
तुम पै जिय जन होय कुछ मो जिय होय सो होउ

खंड इक्कीसवां - सूरी खंड रतनसेन

बाध तपा[1] आनी जहं सूरी ॥ जुरे आय सब सिंहल पूरी ॥
पहिले गुरु देय कहं आना ॥ देख रूप सब कोउ पछताना
लोग कहैं यहि होय न योगी । राज कुंवर कोउ अहै बियोगी[2] ॥
काहू लाग भयो है तपा ॥ हिय[3] सुमाल करै मख जपा ॥
जस मारै कहं बाजा तूरू[4] ॥ सूरी देखि हंसा मंसूरू[5] ॥
चमके दसन[6] भयो उजियारा । जो जहं तहां बीज[7] अस मारा ।
योगी केर करो पै खोजू[8] मग[9] यहि होय न राजा भोजू ॥

सब पूछहिं कहु योगी जात जन्म औ नाउ ।
जहां ठांव रोवे कर हंसा सो कहु केह भाउ

का पूंछौ अब जात हमारी ॥ हम योगी औ तपा भिखारी
योगी जात कौन हो राजा ॥ गारि न कोह[10] मार नहिं लाजा
निलज भिखार लाज जेहिं खोई तेहिं की खोज परै जन कोई ।
जाकर जीव मरै पर बसा ॥ सूरी देख सो कस नहिं हंसा
आज नेह सों होय निबेरा[11] ॥ आज भूमि[12] तजे[13] गगन[14] बसेरा
आज कया[15] पिंजर बंद टूटा ॥ आजहि प्रान परेवा[16] छूटा ॥
आज नेह सो होय नियारा ॥ आज प्रेम संग चला पियारा

आज अवध[18] सर[19] पहुंची गये जाउं मुख रात[20] ॥
बेगे[21] होहु मोहिं मारहु जन चालहु यहि बात

कहहिं सबरि जेहिं चाहेसि संवरा हम तुह करहिं केति कर भंवरा

योगी १ दुखी २ दिल ३ नाम बाजा ४ नाम मर्द कामिल ५ दांत ६ बिजुली ७ तलाश ८ शायद ९ गुस्सा १० जुदाई ११-१७ ज़मीन १२ छोड़ना १३ आसमान १४ बदन १५ उड़नेवाला १६ हद १८ बराबर १९ लाल २० जल्द

कहेसि वही संवरों हर फेरा ॥ मुयें जीत आहो जेहिं केरा ॥
औ सुमिरों पद्मावत रामा ॥ यहि जिव न्यो छावर तेहि नामा
270 रक्त की बूंद कया[1] जब परही ॥ पद्मावत पद्मावत कहही ॥
रहै तो बूंद बूंद मह ठाऊं[2] ॥ परहुं तो सोई लैलै नाऊं ॥
रोव रोवं तन तासो औधा[3] ॥ सूतहि सूत बेध[4] जिव सोधा
हाड़हि हाड़ शब्द[5] सो होई ॥ नस नस मांह उठै धुन सोई

खाय बिरह गा ताकर गूद मांस किये हान[6]
हौं पुनि सांचा होय रहा वह की रूप समान

योगिह जबहिं गाढ़[7] अस परा ॥ महादेव कर आसन टरा ॥
औ हंसि पारबती सों कहा ॥ जानहुं सूर[8] गहन अस गहा ॥
आज चढ़े गढ़ ऊपर तपा[9] ॥ राजैं गहा सूर तब छिपा ॥
271 जग देखैगा कौतुक[10] आजू ॥ कीन्ह तपा मारे कहं साजू
पारबती सुनि पायन परी ॥ चलौ महेश[11] देखैं इक घड़ी ॥
भेष भाट भाटिन कर कीन्हा ॥ औ हनुमंत बीर संग लीन्हा
आय गुप्त[12] होय देखन लागे ॥ वह मूरत कस सती[13] सभागे

कटक[14] असूझ देखवे आपन राजा गर्बि[15] करेय
दई की दसा[16] न देखे वह का कहं जय[17] देयय

आसन सो लिये रहा होय तपा ॥ पद्मावत पद्मावत जपा ॥
मन समाध तासों धुन लागी ॥ जोहिं दरसन कारन बैरागी ॥
272 रहा समाय रूप वह नाऊं ॥ और न सूझ बार[18] जहं जाऊं ॥
औ महेश[19] कहं करों अंदसू[20] ॥ जेहिं यह पंथ[21] दीन्ह उपदेशू ॥
पारबती पुनि सत्य सराहा ॥ औ फिर मुख महेश कर जाहा[22]

बदन १ जगह २ बेधना ३ सूराख ४ आवाज़ ५ सनामा ६ मुशकिल ७ सूर्य्य ८ योगी ९ तमाशा १० महादेवजी ११-१९ छिपकर १२ सती ज़ातरह क़ायम १३ फ़ौज १४ सरूर १५ ईश्वर की तरफ़ १६ जीत १७ दरवाज़ा १८ सलाम २० राह २१ देखना २२

हिये[1] महेश[2] भई जो महेशी[3] | कित सिरनावहिं ये परदेशी
मरतेहु लीन्ह तुम्हारा नाऊं | तुम चित कीन्ह रहीं यह ठाऊं[4]

मारतहीं परदेशी रारव लेहु यहि बीर ।।।
कोइ काहु कर नाहीं जो हो चलै न तीर ।।

लै संदेश सोंदा गा तहां ।। | सूली देहि रतन को जहां ।।
देख रतन हीरामन रोवा ।। | राजा जिव लागन हठ खोवा
देख रोदन हीरामन केरा[5] ।। | रोवहिं सब राजा सुख हेरा ।।
मांगहि सब बिधना सो रोई | कोउ पकार छुड़ावै कोई ।।
कहि संदेश सब बिपत सुनाई | बिकल बहुत कुछ कही न जाई
काढ़ि प्रान बैठ लिये हाथा । | मेरे तो मरौं जियों इक साथा ।
सुनि संदेश राजा तब हंसा ।। | प्रान प्रान घट घट महं बसा

हीरामन औ भाट दसोंधी भये जिय पाइ कठाऊं
चलसो जाय अबदेखतहै जहं बैठा राऊ ।।।।

राजा रहा दृष्टि[10] कै औंधी ।। | रह नसका तब भाट दसोंधी
कहेसि मेल कै हाथ कटारी | पुरुष न आखें बैठि पिटारी ।।
कान्ह कोप कै मारा कंस ।। | गोकुल सांझ बजाय हबंस
गन्धर्वसेन जहां रिस बाढ़ा ।। | जाय भाट आगें भा ठाढ़ा ।।
ठाढ़ देख सब राजा राऊ ।। ।। | बायें हाथ दीन्ह बर[11] भाऊ ।।।।
बोला गन्धर्वसेन रिसाई ।। | कैस योगि कस भाट[12] असाई
योगी पानि आग तू राजा ।। | आगहि पानि जूझ[13] नहि छाजा

आगबुझाई पानिसो जूझ न राजा बूझ ।।
नीर[14] बार खप परहै लीन्ह भिक्षा दीह न जूझ ।।

योगि न होय आहि सो भोजू ।। | जानहु भेद करो सो खोजू ।।

दिल १ महादेवजी २ मेहरवानी ३ जगह ४ नोता ५ रोना ६ देखना ७ ईश्वर ८ कोशिश ९ निगाह १० आशिरवाद ११ बे अदब १२ लड़ाई १३ सवाज़ा १४

273

274

भारथ[1] होय जूझ[2] जो ओधा ॥ होहिं सहाय[3] आय सब जोधा
महादेव रन घंट बजावा ॥ सुनि के शब्द[4] ब्रह्म चलि आवा
275 बासुक[5] फण पतार सों काढ़ा । अष्टो[6] केली नाग भा ठाढ़ा ॥
छपन कोटि बसंदर[7] बरा ॥ सवा लाख पर बत फुरहरा[8] ॥
चढ़े अस्त्र[9] लै कृष्ण मुरारी । इन्द्र लोग सब लाग गुहारी ॥
तेंतिस कोटि देवता साजा ॥ औ छान्ये मेघ दल गाजा ॥

नब्बे नाथ चलि आवहिं औ चौरासी सिद्ध ॥
आज महा भारथ रन चलै गगन[10] गरुड़[11] औ गिद्ध

भइ अज्ञा[12] को भाट औ भाऊ[13] बायें हाथ दिये बरं भाऊ[14] ॥ ।
को योगी अस नगरी मोरे ॥ । जो दै सेंध चढ़ै गढ़ चोरे ॥
276 इन्द्र डरै नित नावै माथा ॥ जानत कृष्ण शेष जे नाथा ।
ब्रह्मा डरै चतुर[15] मुख जामू ॥ औ पाताल डरै बल[16] बासू[17] ॥
धर्ति डरै औ मंडफ मेरू[18] ॥ । चन्द्र सूर्य्य औ गगन[19] गंभीरू
मेघ डरहिं बिजुली जेहिं डीठी[20] कूर्म[21] डरै धर्ती जेहिं पीठी ॥
चहों तो सब मौकों धर केशा औरको गिनज[23] अनेग नरेशा[24]

बोला भाट नरेश सुनि गर्ब[25] न छाजा जीव ॥
कुंभकरन की खोपड़ी बूड़त बाचा[26] भीव[27] ॥

रावन गर्ब बिरोधा[28] रामू ॥ ओही गर्ब भयो संग्रामू[29] ॥
277 तस रावन अस को बर[30] बंडा । जेहि दस सीस[31] बीस भुज दंडा
सूरज जेहि की तपै रसोई ॥ निज बसंदर धोती धोई ॥

भारी लड़ाई १ मारना २ मदद ३ आवाज़ ४ नाम राजा सांपोंका ५ १७ नाम हाथी ६ आग ७ मौजूद ८ हथयार ९ आसमान १० १९ नाम राजा पक्षी ११ हुक्म १२ बैअदब १३ सलाम १४ चारमुंह १५ राजा दैत्य १६ नाम पहाड़ १८ निगाह २० कछुवा २१ फेंकवा देना २२ गिनती २३ राजा २४ ग़रूर २५ बचना २६ नाम पहेलवान २७ सज़ा देना २८ लड़ाई २९ ज़बरदस्त ३० सिर ३१

सूक[1] सुनेटा[2] ससि[3] मसयारा। पवन[4] करै नित बार[5] बोहारा।
मींच[6] लाय के पाटी बांधा॥ रहा न दूसर सुपने कांधा॥
जो अस बज्र टरै नहिं टारा॥ सोउ मुवा दोइ तपसी करमारा
नाती पूत कोटि दस अहा। रोवन हार न एको रहा॥

ओछ जान के काहू जन कोइ गर्ब[7] करेय।
ओछी पार[8] दई है जीत पत्र जो देय॥

अब जो भाट वहां हत आगें। बिनय[10] उठा राजा रिस लागें॥
भाट अहै ईश्वर की कला। राजा सब राकहं[11] अरकला॥
भाट मींच पै आपनि दीसा ताकहं कौन करै रिस रीसा॥
भयो रजाय[12] सु गन्धर्प सेनी॥ काहि मीच के चढ़ा न[13] सेनी
कह आनी बानी अस पढ़ै॥ करसि न बुद्ध[14] भेट जो कढ़ै॥
जात भाट कित औगुन[15] लावस बार्यं हाथ राज बरं भावस[16]॥
भाट नाउं का मारों जीवा॥ अबहूं बोल नाय कै ग्रीवा[17]॥

तुइ रे भाट वै योगी तोहि यह वैहां क संग
कहां चढ़ै अस पादा कहां भयो चित भंग

जो सत पूंछेसि गन्धर्प राजा सत पै कहों परै नहिं गाजा[18]॥
भाटहिं काहि मींच सो डरना हाथ कटार पेट हन मरना॥
जंबू दीप चितावर देशू॥ चित्र सेन बड़ तहां नरेशू[19]॥
रतन सेन यहि ताकर बेटा॥ कुल चौहान जाय नहिं मेटा।
खांड़े[20] अचल सुमेरु भारू॥ टरै न जो लागै संसारू॥
दान सुमेरु देत नहिं खांगा[21]॥ जो वह मांग न औरहि मांगा
दाहिन हाथ उठायों ताही॥ और को अस बरं भावो जाही॥

नाम गुरु राछसों का १ चोपदार २ चांद मशालची ३ हवा ४ दरवाज़ा ५ मौत ६ श्रीराम लक्ष्मण ७ ग़रूर ८ कम ज़ोर की तरफ़ ९ अर्ज़ १० मुकाबिला न चाही ११ हुक्म १२ राजा १३ अक़िल १४ बेहुनर १५ सलाम १६ गरदन १७ बिजुली १८ राजा १९ मलबार बहादुर २० कमी २१

नाउं महा पात्र मुहिं तेहे कि भिखारी डीठ[1]।
जोखर बात कहें रिस लागे खरि पै कहैं बसीठ[2]

ततखन[3] सुनि महेश[4] मन लाजा
भाट किरीन[5] होय बिनवा[6] राजा।
गंधर्प सेन तू राजा महा ॥
हों महेश मूरत सुनि[7] कहा ॥
पै जो बात होय भल आगे ॥
कहा चही का भा रिस लागे ॥
राजकुंवर यहि होहिं न योगी
सुनि पद्मावत भयो बियोगी[8]
जंबूदीप राज घर बेटा ॥ ॥
जो है लिखा सो जाय न मेटा।
तूरें सुवें जाय वह आना ॥
औ जाकर बिरोक[9] तें माना ॥
पुनि यह बात सुनी शिव लोका
कर सु बिवाह धर्म है तोका

खप्पर लिये भीख पै मांगै मुये न छाड़ै बार[10] ॥
बूझ देख जो कनक[11] कचूरी भीख देह नहिं मार

ओहट[12] होहरे भाट भिखारी।
का तूं मोहिं देय अस गारी ॥
को मोहिं योग[13] जगत होइ पारा
जासों हेरा[14] जाय पतारा ॥ ॥
योगी यती आव जित कोई ॥
सुनत त्रास[15] मान भा सोई ॥
भीख लेहु फिर मोरो आगे ॥
यहि सब रैन[16] रहै गढ़ लागे ॥
जस चहि इच्छ[17] चहूं तेहिं दीन्हा
नाहिं बेध सूली जिव लीन्हा ॥
जेहि अस साध होय जिव खोवा
सो पतंग दीपक तस रोवा ॥
सुर नर मुनि गुनि गंधर्प देवा ॥
तेहिं को गिनै करहिं नित सेवा

मोसों को सरबर[18] करै अरे सुनि झूठे भाट ॥
छार[19] होय जो चालों गज[20] हस्तिन[21] के ठाट ॥

योगी धर मेले सब पाछे ॥
उरये मोल[22] आये रन काछे ॥
मंत्रिन[23] कहा सुनो हो राजा ॥
देखहु अब योगिन कर काजा

शोख १ वकील २ उसी वक्त ३ महादेवजी ४ मानिंद ५ तारीफ़ ६ कहना मान ७ दुखी ८ गुस्सा ९ दरवाज़ा १० सोने की कटोरी ११ दूर हो १२ लायक़ १३ देखना १४ डर १५ रात १६ चाहना १७ बराबरी १८ राख १९ हाथी मस्त २० हाथी २१ पहलवान २२ सलाहकार २३

हम जो कहा तुम करहु न जूझू[1] | होत आव दर[2] जगत असूझू ॥
खन[3] इक महं झुरमट हो बीता | दर महं चढ़ै जो रहै सो जीता ॥ 282
कै धीरज राजा तब कोपा ॥ | अंगद[4] आय पावं रण रोपा ।
हस्ति[5] पांच जो अगमन[6] धाये | ते अंगद धर सूंड फिराये ॥
दीन्ह उड़ाय स्वर्ग कहं गये । | लौट न फिरे तहहिं के भये ॥

देखत रहे अचंभो योगी हस्ती बहुर न आय
योगिहि कर अस जूझब भूमि[8] न लागत पाय

कहहिं बात योगिहं हम पाये | छिन इक माहं चहत है धाये
जौलहि धावहिं अस का खेलहु | हस्तिहिं केर जूह[9] सब पेलहु ॥
जो गज[10] पेल होय रन आगे ॥ | तस बग मेल करहु संग लागे
हस्ति की जूह आय अगसारी[11] | हनुमत तबै लंगूर पसारी ॥ 283
जोहि सो सैन[12] बीच रन आई | सबै लपेट लंगूर चलाई ॥
बहुतक टूट भये नौ खंडा ॥ | बहुतक जाय परे ब्रह्मंडा[13] ॥
बहुतक भुवान[14] सोह अंत्रीयो[15] | रहे जो लाख भये ते लेखा ॥

बहुतक परे समुंद महं परत न पावा खोज ॥
जहां गर्ब[16] तहं पीरा जहां हंसी तहं रोज[17] ॥।

फिर आगे का देखै राजा ॥ | ईश्वर[18] केर घंट रण बाजा ॥
सुना संख जो बिष्णु अपूरा । | आगे हनुमत केर लंगूरा ॥। 284
लीन्हे फिरहिं लोक ब्रह्मंडा ॥ | स्वर्ग पतार लोवा मृत[19] मंडा ॥
बलि[20] वासुक[21] औ इन्द्र नरन्दू[22] । | राहु नखत सूरय औ चन्दू ॥
जानवंत दानव राक्षस पुरे ॥ | अहतो बज्र[23] आय रण जुरे ॥

लड़ाई १ फ़ौज २ पल ३ बालि का बेटा ४ हाथी ५ पहिले ६ आसमान ७ १३ ज़मीन ८ हलका ९ मस्त हाथी १० मुक़ाबिला ११ फ़ौज १२ फिरना १४ बीच १५ ग़रूर १६ रोना १७ महादेवजी १८ ज़मीन १९ नाम राजा दैत्य २० नाम राजा सांप २१ राजा २२ पत्थर २३

जोहि कर गर्ब[1] करत हुत राजा ॥ सो सब फिर बैरी होइ साजा ॥
जहवां महादेव रण रवड़ा ॥ शीश नाय नृप[2] पायन पड़ा ॥

कोहि कारन[3] रिस कीजये हौं सेवक औ चेर ॥
जोहि चाही तेहि दीजिये बारि[4] गुशाई केर ॥

जब महेश[5] उठ कीन्ह बसीठी[6] पहिले कड़ू अंत होय मीठी ॥
तूं गंधर्व राजा जग पूजा ॥ गुण चौदह सिख देइ को दूजा
285 हीरामन जो तुम्हार परेवा ॥ गाचि तौर औ कीन्हेस सेवा
तेहि बोलाय पूछौ वह देशू । औ पूछो योगिह जस भेशू ।
हमरे कहत रीस नहिं मानो । जो वह कहै सोई पर मानो ॥
जहां बारि तहं आव बर ओका । करि भ्याह धर्म बड़ तोका
जो पहिले मन मानन कांधे । पर खैरतन गांठ तब बांधे ॥

रतन छिपाये ना छिपै पारख होय सो पेख ।
घाल कसोटी दीजियो कनक[8] कचोरी भेख

हीरामन जो राजें सुना ॥ रोष[9] बुझाय हिये[10] महं गुना ॥
अज्ञा भई बोला वहु सोई ॥ पण्डित हू तें दोष[11] नहिं होई ॥
एक कहत सहसक[12] दस धाये हीरामनहि बेग लै आये ॥
286 खोला आगे आन मंजूसा[13] ॥ मिला निकसि बहु दिन कर रूसा
अस्तुत करत मिला बहु[14] भांती राजें सुना हिये भइ शांती[15] ॥
जानो जरत अगिन जल परा । होय फुलवार रहस हिय भरा ॥
राजें मिल पूंछी हंस बाता ॥ कस तन पियर बरन मुख राता[16]

चतुर[17] वेद तुम्ह पण्डित पढे शास्त्र बेद ॥
कहां चढ़े योगी गढ़ आन कीन्ह घर भेद ॥

ग़रूर १ राजा २ वास्ते ३ लड़की ४ महादेवजी ५ वकालत ६ जानवर परिंद ७ यक़ीन ८ सोनेकी कटोरी ९ गुस्सा १० दिल ११ क़सूर १२ हज़ार १३ पिंजरा १४ बहुत तरह १५ तसल्ली १६ लाल १७ चार १८

हीरामन रसना[1] रस खोला | दै असीस औ अस्तुत बोला
इन्द्र राज राजस्वेर महा ।। | सुनि हिय[2] रिस कछु जायन कहा
पै जो बात होय भल आगे ।। | सेवक निडर कहै रिस लागे ।।
सुवा सुफल अमृत पै खोजा | होय न बिक्रम[3] राजा भोजा ।।
हौं सेवक तुम आदि[4] गुसाईं ।। | सेवा करौं जियों जब ताईं ।।
जें जिव दीन्ह देखावा देशू ।। | सो पै जिय महं बसै नरेशू[5] ।।
जो वह संवरै एकै तोहीं ।।।। | सोई पंख जगत रति मोहीं[6] ।।

नयन[7] बैन औ श्रवन सब ही तोर प्रसाद ।।
सेवा मोर यही नित बोलों आशिर बाद ।।

जो अस सेवक जेहि तप[8] कसा | तेहिक जीभ अमृत पै बसा ।।
तेहिं सेवक के करमहि दोषू[9] । | सेवा करत करै पति रोषू[10] ।।।।
औ जेहिं दोष निदोषहि[11] लागा ।। | सेवक डरा जीव लै भागा ।।।
जो पंछी कहवां थिर[12] रहना ।। | ताकै जहां जाय जो डहना[13] ।।
सप्त[14] दीप फिर देखेंउ राजा ।। | जंबू दीप जाय तब बाजा[15] ।।
तहं चितोर देखो गढ़ ऊंचा ।। | ऊंच राज सिर तो पहं पहुंचा
रतन सेन यह तहां नरेशू ।। | सो आन्यो योगी कर भेशू ।।

सुवा सुफल लै आनीहै तेहि गुन मुख राति[16] ।।
कयों[17] पीत सो तासों सवरों बिक्रम बात ।।

पहिले भयो भाट सत भाखी | पुनि बोला हीरामन साखी
राजा भा निश्चय[18] मन माना | बांधा रतन छोड़ कै आना ।।
कुल पूंछा चौहान कुलीना ।। | रतनन बाधे होय मलीना ।।
हीरा दसन पान रंग पागी ।। | बिहसत सबन बीज[19] बर तागी

ज़बान १ दिल २ राजा बिक्रमाजीत ३ सबसे पहिले ४ राजा ५ लाल मुहं ६ आंख-ज़बान-कान ७ मेहनत की ८ क़सूर ९ गुस्सा १० बेक़सूर ११ क़ायम १२ बाज़ू १३ सातों मुल्क १४ पहुंचा १५ लाल १६ बदन १७ यक़ीन १८

सुंद्रा[1] श्रवन वीन सो चांपे ॥ राज बैन[2] उघरे सब झांपे ॥
आना काटर एक तुरवारू[3] ॥ कहा सुफेरि भयो असवारू ॥
फेरा तुरी[4] छतीसो खुरी ॥ सबहिं बखानो[5] सिंहल पुरी ॥

कुंवर बतीसो लक्षना सहस[6] किरन जस भान[7]
काह कसौटी कसिये कंचन[8] बारह बान ॥

देख सूर्य्य[9] बर कमल[10] संजोगू ॥ अस्त[12] अस्त बोला सब लोगू ॥
मिला सो बंश अंश उजियारा ॥ भा बिरोके[11] औ तिलक संवारा
अनुरुद्ध को जो लिख जय मारा ॥ को मेटै बाना सूर हारा ॥
आज मिली अनुरुध कहं ऊखा ॥ देव इन्द्र दीन्ह सिर दूखा ॥
खर्ग सूर[13] भुई सरवर[14] केवा ॥ बनखंड भंवर होय रस लेवा ॥
पछ्छम का बार[15] पूर्ब की बारी[16] ॥ लिखी जो जोरी होय न निरारी[17]
मानुष साज लाख मन साजा ॥ सोई होय जो बिधि[18] उपराजा ॥

गये बाजन जो बाजत जिय मारन रन माह ।
फिर बाजन ते बाजे मंगल चार उनांह

बोल गुसाई कर मैं माना ॥ कहि सो जगत उत्तर[19] कहं आना
माना बोल हरष[20] जिब बाढ़ा ॥ औ बिरोके[21] भाटी का गाढ़ा ।
दोनो मिले मनावा भला ॥ पुरुष आप आप कहं चला ॥
लीन्ह उतारी जो हत योगू ॥ जो तप करै सो मानै भोगू ॥
वह मन चित जो ऐके अहा ॥ मारै लीन्ह न दूसर कहा ॥
जो अस कोई जिव पर छेवा[22] ॥ देवता आय करहिं तेहि सेवा
दिन दस जीवन जो दुख देखा ॥ भा युग युग सुख जहां न लेखा

कानकी बाली १ सरदारी की बातें २ घोड़ा ३-४ तारीफ़ ५ हज़ार ६ सूर्य्य ७ सोना ख़ालिस ८ तथा रतन सेन ९ तथा पद्मावत के लायक १० वाह वाह ११ टीका १२-२१ सूर्य्य १३ तालाब १ कमल १४ लड़का १५ लड़की १६ अलग १७ ईश्वर ने पैदा किया १८ जवाब १९ ख़ुशी २० खेलना २२

रतनसेन का बरनों पद्मावत कर ब्याह ।
मन्दिर बेग सवारो मन्दिर तोरा छाह ॥

खंड बाइसवां ब्याह राजा रतनसेन और पद्मावत

लगन धरी औ रचा बिवाहू । सिंहल निवत फिरा सब काहू
बाजन बाजे कोटि पचासा ॥ भा आनन्द सगरे कैलासा ।
जेहि दिन कानित देव मनावा सोइ दिवस पद्मावत पावा ॥ 292
चांद सूर्य्य मन माथे भागू । औ गावहिं सब नखत सुहागू
रचरच माणिक मांड़ो छावहिं औ भुइं राति बिछाव बिछावहिं
चन्दन खंभ रचे चहुं पाती । माणिक दिया बरहिं दिन राती
घर घर मन्दिर रचे दुवारा ॥ जहंतक नगर गीत झंकारा

हाट बाट सब सिंहल जहं देखी तहं राति ॥
धन रानी पद्मावत जाकर ऐसी बरात ॥

रतनसेन कहं कपड़ा आये । हीरा मोति पदारथ लाये ॥
कुंवर सहस संग अहं सभागे बिनय करैं राजा पहं लागे ॥ 293
जहिं लग तुम साधा तप योगू लेहु राज मानो सुख भोगू ॥
मज्जन करहु बिभूत उतारो करो अस्नान चित्र सभ सारो
काढ़हु मुंद्रा फटक अभाऊ पहिरो कुण्डल कनक जड़ाऊ
छोरहु जटा फुलायल लेहू ॥ झारहु केस मुकट सिर देहू ॥
काढ़हु कंथा चिरकुट लावा । पहिरहु राता दगल सुहावा ॥

पांवर तजहु देहु पग पैरी आवा बांक तुरवार
बांध मोर छत्र सिर बेग होहु असवार ॥

साजा राजा बाजन बाजे ॥ मदन सहाय दोउ दल गाजे ॥

तारीफ़ करना १ जल्द २ १७ दिन ३ तथा सहेलयां ४ जवाहिर ५ लाल ६ ७ १५ हज़ार ८ अर्ज़ ९ नहाना १० तसवीर ११ बाली माचीज़ १२ सोना १३ गुदड़ी १४ घोड़ा १६

औ राता[1] सोने रथ साजा ।। भइ बरात गोहेन[2] सब राजा ।
बाजत गाजत भा असवारा ।। सब सिंहल ने कीन्ह जुहारा[3] ।
294 चहुँ दिस यश अल नखत तराई[4] सूरज चढ़ा चांद की ताईं ।।
सब दिन तपै जैस हिय माहां । तैसि रात पाई सुख छाहां ।।
ऊपर छत्र रातितस छावा[6] ।। इन्द्र लोक सब सेवा आवा ।
आज इन्द्र अप्सर[7] सों मिला । सब कैलाश होहि सोहला ।

धर्ती स्वर्ग[8] चहूं दिस पूरही मशयार ।।
बाजत आवे मंदिर कहं होहिं मंगला चार ।।

पद्मावत धौराहर[9] चढ़ी ।। धौ कस रबि[10] जा कहं शशि[11] करी
देख बरात सखिन सों कहा । यह महं कौन सो योगी अहा
295 कै सो योग लै ओर[12] निबाहा । भयो सूर[13] चढ़ चांद बिवाहा ।
कौन सिद्ध सो ऐसो अकेला जें सिर लाय प्रेम सो खेला ।
कासों पिता बचन असहारी उत्तर[14] न दीन्ह दीन्ह तेहि बारी[15]
का कहं दई ऐसो जिव दीन्हा जें जिह मार जीत रन लीन्हा ।।
धन पूरुष अस नवै न नाये ।। औसपर[16] सहो देस परायें ।।

को बरवंद[17] बीर अस भोहिं देखे कर चाव[18] ।।
पुनि जायहि जनवासहिं सखी री बेग[19] देखाव

सखी देखावहिं चमकहिं बाहू तू जस चांद सूर्य्य तोर नाहू[20] ।
छिपा न रहै सूरज परकाशू ।।। देख कमल मन भयो बिकासू[21]
296 वह उजियार जगत उपराहीं ।। जग उजियार सो तेहि पर छाहीं
जस रबि[22] देख उठै पर भाता[23] ।। उठा छत्र देखहिं सब राता[24] ।।
वही मांझ भा दूलह सोई और बरात संग सब कोई ।।

लाल १-६ ४ साथ २ सलाम ३ छोटे सितारे ४ दिल ५ इन्द्र लोक की परी ७ आसमान ८ महल ९ सूर्य्य १०-१३-२२ चांद ११ आखिर तक १२ जवाब १४ लड़की १५ इतमीनान १६ ज़बरदस्त १७ चाह १८ जल्द १९ खाविंद २० खिलना २१

सहसहिं[1] किरन रूप बिधि[2] गढ़ा | सोने के रथ आवै चढ़ा ॥
मन माथे दरसन उजियारा | सौंह[3] निरख नहिं जाय निहारा

रूपवंत जस दरपन धन तू जाकर कंत ॥
चाही जैसो मनोहरा मिला सो मन भावंत

देखा चांद सूर्य्य जस साजा ॥ | सहसहिं[4] भाव मदन[5] तन गाजा
हुलसे नयन दरस मद माते ॥ | हुलसे अधर रंग रस राते ॥
हुलसा बदन[7] ऊपर[8] बिआई ॥ | हुलसा हिया[9] बांचुक[10] न समाई ॥
हुलसे कुच[11] कसनी बंद टूटी ॥ | हुलसे भुजवलियां[12] कर फूटी ॥
हुलसी लंक किरावन राजू ॥ | राम लषण दर[13] साजहिं साजू ॥
आज चांद घर आवा सूरू[14] ॥ | आज सिंगार होय सब चूरू ॥
आज कटक[15] जोरा हत कामू | आज बिरह कर होय संग्रामू[16] ॥

अंग अंग सब हुलसै कोइ कतहूं न समाय ।
ठावहिं ठांव बिमोही गइ मुरछा गत आय ।

सखी संभार पियावहिं पानी | राज कुंवर काहे कुंभिलानी ॥
हम तो तोहि देखावा पीव ॥ | तू मुरझान कैस भा जीव ॥
सुनहुं सखी सब कहै बिवाहू | मोकहं जैसो चांद कहं राहू ॥
तुम जानहुं आवै पिउ साजा । | यह धमधम मोकहं सब बाजा
जते बराती औ असवारा ॥ | यह सब मोरे चालनहारा ॥
सो आगम[17] देखतहों झकी | आपन रहन न देखों सखी ॥
होय बिवाह पुनि होय है गौना | गवनब तहां बहुरि[18] नहिं अवना

अब सो मिलन कित है सखी परा बिछोवा टूट
तैसि गांठ पिउ जोरब जन्म न होय है छूट ॥

हज़ार १-४ ईश्वर २ सामने देखना ३ काम पैदा हुआ ५ होंठ ६ मुंह ७ सूर्य्य ८-१४ दिल ९ अंगया १० छाती ११ चूड़ी १२ फौज १३-१५ लड़ाई १६ दूर अंदेशी १७ लौटके १८

आय बजावत बैठ बराना। पान फूल सेंदुर सब राना।
जहं सोने कर चित्र संवारी आन बरात तहां बैठारी ॥
299 सो भुइं सिंहासन पाँट संवारा दूलह आन तहां बैठारा ॥
कनक खंभ लागे चहुं पानी मारिउ दिया बरहिं दिन रानी
भयो अचल ध्रुव योग पंसेरू फूल बैठ थिर जैसे समुमेरू ॥
आजु दई हौं कीन्ह सुभागा जस दुख कीन्ह तेस सब लागा
आजु सूर ससि के घर आवा चांद सूर्य्य दोहुं भयो मिलावा

आजु इन्द्र होय आयो सैं बरात कैलाश।
आजु मिली मुहिं अप्सर पूजी मनकी आस

होय लाग ज्योनार पसारा। कनक पत्र पसरे पनवारा।
सोन थार मन मारिउ कजरे राय रंक सब आगे धरे ॥
रतन जड़ाऊ खोरा खोरी ॥ जन जन आगें सो सो जोरी
300 गड़ बन हीरे पदारथ लागे ॥ देख बिमोहे पुरुष सभागे
जानहुं नखत करहिं उजियारा छिपगये दीपक चौ मसयारा
भइ मिल चांद सूर्य्य की कला भाऊ दोत सैसी निरमला ॥
जेहि मानुष कहं जोत न होती तेहि भइ जोत देखि वह जोती

पांति पांति सब बैठी भांति भांति ज्योनार।
कनक पत्र तर दीन्हे कनक पत्र पनवार

पहिले भात परोसे आना जनहुं सुबास कपूर बसाना
कौनिहिं भाड़ा चौ ची पोई ॥ उजियर देख पाप गयि धोई ॥
301 सुचरुई पूरि सुहारी पूरी ॥ डुक तो तानी चौ सुठ कंवरी
खंडरा खांड जोर खंडे खंडे ॥ बैरी अकोतर सो कहे हंडे ॥

लाल १ मसवी २ बीचो बीच ३ नरवन ४ सोना ५ १३ १६ जवाहिरात ६ नामन रत्न जिसको कुलब कहते हैं ७ कायम ८ नामवर ९ सूर्य्य १० चांद ११ इन्द्रपरी १२ राजा के भाई १४ कटोरा कटोरी १५ रोशनी १६ पाक साफ़ १७ रौनक १८

बाएँ का माड़ी २० किसमिस की २१

पुनि संधान[1] आने बहु सांधी | दूध दही की मुरन्दा[2] बांधी ।।
पुनि बांवन प्रकार जो आये | नहिं अस देख न कबहूं खाये
पुनि जावर[3] पी झावर[4] आई । | घृत खांड का कहों मिठाई

जेवंत अधिक सुबासिक मुंह में परत बिलाय
सहस[4] स्वाद सों पावै एक कौर जो खाय ।।

जेवन[5] आवा बीन न बाजा । | बिन बाजहिं नहिं जेवैं राजा
सब कुंवरन पुनि खैंचा[6] हाथू | ठाकुर जेवं तो जेवैं साथू ।।
विनय करैं पण्डित बिचवाना । | काहे नहिं जेवहिं यजमाना
वह कैलाश इन्द्र कर बासू | जहां न अन्न न माछर मासू
पान फूल आछी[7] सब कोई | तुम कारन यह कीन्ह रसोई
भूख तजन[8] अमृत है सूखा | धूप तो सीरक[9] नीबी रूखा ।।
नींद तो भुइं जनु सेज सपेती[10] | छांड़ो[7] का चतुराई येती ।।

कौन काज केहि कारन बिकल भयो यजमान
होइ रजायसु[11] सोई बेग[12] देहि हम आन ।।।।

तुम पण्डित जानहुं सब भेदू | पहिले नाद भयो तब बेदू ।।
आदि[13] पिता जो बिधि[14] अवतारा | नाद संग जिव[15] ज्ञान सँचारा
सो तुम बरज[16] नेक का कीन्हा | जेवन संग भोग बिधि दीन्हा
नयन[17] बैन नासक दुइ श्रवना | यहि चारहुं सँग जेवन अवना
जेवन देखा नयन सिरानी ।। | जीभहि स्वाद भुक्त[18] रस जानी
नासक सबै बासना पाई ।। | श्रवनहि का सँवरत पहुनाई ।
तेहिं का होय नाद पै पौषा[19] ।। | तब चारहुं कर होय संतोषा[20]

अचार बहुत तरह का १ लड़ुवा २ खीर ३ मुरब्बा ४ हज़ार ५ खुराक ६ वास्ते ७ छोड़ाना ८ बंडा रहै धूप लगने पर भी ९ सफ़ेद बिछौना १० हुक्म ११ जल्द १२ ब्रह्मा १३ ईश्वर १४ बदन में जान आई १५ रोक १६ आंख-मुंह-नाक-कान १७ खुराक १८ आसूदगी १९ क़रार २०

302

303

औसब सुनहुं शब्द[1] इक जिनहिं पड़ा कुछ सूझ।
पण्डित नाद सुनहिं कहं बरजहिं कहो सो तुम का बूझ

राजा उतर[2] सुनहु अब सोई ॥ मंहि[3] डोलै जो बेद न होई ॥
नाद वेद मद[4] पैंड़[5] जो चारी ॥ काया[6] महं ते लेहु बिचारी ॥
304 नाद हिये[7] मन उपजी काया[8] जहं मद तहां पैंड़[9] नहिं छाया
होय अनमद जूझ सो करिये जो न बेद आंकुस सिर धरिये
योगी होय नाद सो सुना ॥ जेहि सुनि काम जरै चौगुना
किये जो परम[10] तंत मन लावा घूम मांत सुनि और न भावा
गये जो धर्म पंथ[11] होय राजा। ताकहं पुनि जो सुनै तो छाजा[12]

जस मद पियें घूम कोउ नाद सुनै पुनि घूम
तेहि ते बरजे नेक है चढ़ै रहस[13] के दूम ॥

भइ ज्यों नार फिरा खड़वानी[14] फिरा अरगजा[15] कुह कहं बानी।
फेरे पान फिरा सब कोई ॥ लाग्यो व्याह चार सब होई ॥
305 मांड़ो सो नकि गगन[16] संवारा वंदनवार लाग सब बारा[17] ॥
साजा पाट[18] छत्र के छाहां ॥ रतन[19] चौक पूरी तेहि माहां
कंचन[20] कलस नीर[21] भरि धरा इन्द्र[22] पास आनी अप्सरा[23] ॥
गांठ दुलहिन दूलह की जोरी दुहूं जगत जो जाय न छोरी
वेद पढ़ैं पण्डित तेहि ठाऊं ॥ कन्या तुला राशि लै नाऊं ॥

चांद सूर्य्य दोउ निरमल[24] दोउ संयोग[25] अनूप
सूर्य्य[26] चांद[27] सों भूला चांद सूर्य्य के रूप ॥

दोहूं नाउं लै गावहिं बारा[28]। करहिं सो पद्मिन मंगल चारा

बात १ जवाब २ ज़मीन ३ मस्ती ४ शरीयत ५-६ बदन ६-८ दिल ७ मेहनत ११ राह ११ तारीफ़ १२ राग सुन्नेसे दूनी कैफ़ियत होती १३ शरबत १४ अतर १५ आसमान १६ दरवाज़ा १७ तख़्त १८ जवाहिरात १९ सोना २० पानी २१ तथा राजा २२-२६ तथा पद्मावत २३-२७ पाक साफ़ २४ मिलना २५ लड़की २८

चांद के हाथ दीन्ह जयमाला । चांद आन सूरज गये घाला ।
सूरज लीन्ह चांद पहिराई ॥ हार नखत नेरहिं सो पाई ॥ 306
पुनि धनभर अंजुलि जल लीन्हा जोबन जन्म कंत कहं दीन्हा ।
कंत लीन्ह दीन्हा धन हाथा । जोरी गांठ दुहुं हूंइक साथा ॥
चांद सूर्य्य दुइ भांवर लीन्ही नखत भोत न्योछावर कीन्ही
फिरहिं दोउ सत फेर गुते के ॥ सातहिं फेर गांठ सो एके ॥

भइ भांवर न्योछावर राज चार सब कीन्ह
दायज कहं कहां लगि लिखन जाय तन दीन्ह

रतन सेन जो दायज पावा । गन्धर्प सेन आय कंठ लावा
मानुष चिंत आन कुछ निंता । करे गुसाईं न मन महं चिंता ।
अब तुम सिंहल दीप गुसाईं । हम सेवक काहे सेवकाईं । 307
जस चित तोर गढ़ तुम्हरो देशू । तस तुम यहां हमार नरेशू ॥
जंबूदीप दूर का काजू ॥ ॥ सिंहल दीप करहु नित राजू ।
रतन सैन बिनवा कर जोरी । अस्तुति योग जोभ कहं मोरी
तुम गुसाइ जेंवर छोर छुड़ाई । की मानुष अस दीन्ह बड़ाई

जो तुम दीन्ह सो पावा जिवो जन्म सुख भोग
नाहत खेहं पाय की हो योगी कोहि योग ॥

धौरहर पर दीन्हा बास ॥ सात खंड जहवां कैलास ॥
सखी सहस दस सेवा पाईं । जनहुं चांद संग नखत तराईं 308
होय मंडल शशि के चहुं पासा शशि सूरहि लै चढ़ी अकासा
चल सूरज दिन अथवे जहां शशि निरमल तंत पावे सि तहां
गन्धर्प सेन धौरहर कीन्हा दीन्ह नराजहि योगिहु दीन्हा

तथा पद्मावत ५५१ सूर्य्य तथा रतन सेन २ १५ गरदन ३ तथा सहेलियां
४ गोत वाले ६ राजा ७ अर्ज करना हाथ जोड़के ८ धूर ९ १० महल ११
१२ हज़ार १२ छोर सिनोर १३ साफ़ १६

मिलीजाहिं शशि[1] केचहुं पाहां | सूर्य्य[2] न चापै पावै छाहां ।
अब योगी गुरु पायो सोई | उतरा योग भस्म गा धोई ॥

सात खंड धौराहर[3] सात रंग नग लाग ॥ ॥
देखत का कैलाशहि दृष्टि[4] पाप सब भाग

सात खंड सातों कैलाशा । | का बरनों[5] जस उत्तम बासा ॥
हीरा ईंट कपूर गिलावा ॥ | मलयागिर[6] चन्दन सब लावा
चूनां कीन्ह औट गज मोती | मोतिंहि चाह अधिक[7] तेहि जोती
बिश्वकर्महिं सैं हाथ संवारा | सात खंड सातहिं चौपारा ॥
अति निरमल[8] नहिं जाय बिशेषा | जस दरपन महं दरसन देखा
भुइं गच जानहुं समुंदहि लोरा | कनक[9] खंभ जनु रचो हिडोरा
रतन पदारथ[10] होय उजियारा | भूले दीपक औ मसियारा ॥

तहां अप्सर पद्मावत रतन सेन के पास ॥
सात स्वर्ग[11] हाथ जनु आये औ सातों कैलास

पुनि तहं रतन सेन पग धारा । | जहां रतन नौ सेज संवारा ॥
पुतरी गढ़ गढ़ खंभन काढ़ी | जनु सजीव सेवा सब ठाढ़ी ॥
काहू हाथ चंदन की खोरी[12] ॥ | कोइ सेंदुर कोइ गहे सिंधौरी ।
कोइ कुंकहि केसर लिये रहैं | लावै अंग[13] रहस जनु चहैं ॥
कोई लियें कुमकुमा चोवा | धन कब चहै ठाढ़ मुख जोवा[14]
कोइ बीरा कोइ लीन्हे बीरी | कोइ परमल अति सुगंध समीरी[15]
काहु हाथ कस्तूरी[16] मेदू[17] ॥ ॥ | भांतिहि भांति लाग सब भेदू ॥

पांतिहि पांति चहूं दिस सब सोंधी कर हाट ॥
मांझ[18] रचा इन्द्रासन पद्मावत कहं पाट[19] ॥

चांद तथा पद्मावत १ तथा राजा खिलवत न करसका २ महल ३ निगाह ४ तारीफ़ ५ चन्दन ६ ज़्यादा ७ पाक साफ़ ८ सोना ९ जवाहिरात १० आसमान ११ कटोरी १२ बदन १३ देखना १४ हवा १५ मुश्क १६ अंबर १७ बीचोबीच १८

खंड तेरूसवां मिलाप पद्मावत वा राजा रतनसेन

सात खंड ऊपर कैलाशू ॥ तहवां नार सेज सुख बासू
चार खंभ चारहुं दिस धरे हीरा रतन पदारथ जरे ॥
मोणिक दिया जड़े औ मोती होय उजियार रहा तेहि जोती
ऊपर राता चंदवा छावा । औ भुइं सुरंग बिछावबिछावा
तेहि मां पालंग सेज सुदासी कीन्ह बिछावन फूलहि बासी
दोहुं दिस गेंदवा औ गल सोई काची पाट भरीं धुन रोई ॥
फूलहिं भरे एसो केहि जोगू को तहं पौढ़ मान रस भोगू ॥

अति सुकमार सेज सो डासी छुवै न पावै कोय
देखत नवै खनहिं खन पांव धरत कस होय

राजैं तपत सेज जो पाई ॥ गांठ छोर धन सखिन छिपाई
अहै कुंवर हमरे अस चारू आज कुंवर कर करब सिंगारू
हरद उतारि चढ़ावब रंगू ॥ तब निसि चांद सूर्य्य सों संगू ।
जनु चात्रक मुख बूंद सेवाती राजा चक चौहत तेहि भांती
योग छुटा जनो अप्सर साथा योग हाथ कर भयो बिहाथा
वै चतुरा कर लै असई ॥ मित्र अमोल छीन लै गई ॥
वैठो खोय जरी औ बूटी ॥ लाभ न पाव मूल भइ टूटी ॥

खाय रहा ठग लाडू तंत मंत बुधि खोय ।
भा धौराहर बनखंड नाहस आव न रोय

अस तप करत गयो दिन भारी चार पहर बीते जुग चारी ॥
परी सांझ पुनि सखी सो आई चांद रहा अपनी जो तराई ॥
पूंछहिं गुरू कहां रे चेला ॥ बिन शशि रे कस सूर अकेला

चारो तरफ़ १ जवाहिरात २-३ लाल ४ तकया ५ रेशम ६ बिछाना ७ पद्मावत ८ रस्म ९ रात १० पपीहा ११ होशयारी १२ छिपजाना १३ महल १४ जंगल १५ छोटे नखत १६ चांद १७ सूर्य्य १८

धातकसायसिखेतूं योगी। अबकसजसनिरधातवियोगी[1]
कहांसोखोयहुबिरवालोना जेहिंतेहोयरूपऔसोना ॥
कसहर्तार पारनहिंपावा। गंधक कहांकरकटाखावा[2]
कहांछिपायहूचंन्दहमारा जेहिबिनरैन[3]जगतअंधियारा

नयनकौड़ियाहियसमुंदगुरुसोतेहिमहंजोति
मनमरजियानहायपरेहोयनआवेमोति

कापूंछौतुमधातनिछोहीं[4] जोगुरकीन्हअंतरपटओहीं
सिधिगुटकाजोमोसोंकहा भयोरांगसतहियेनरहा ॥
314 सोनरूपजासोंदुखखोलों गयोभरोसतांबकाबोलों ॥
जहंलोनाबिरवाकीजाती। कहिकोसंदेसआनकोपाती
कीजोपारहरतारकरेजे ॥ गंधकदेखअभहिंजिवदीजे
तुमजोराकीसूर[5]मयंकू[6] ॥ पुनिबिछोयसोलीन्हकलंकू
जोयहघड़ीमिलावैमोही सीसदेउंबलहारीओही ॥

होयअबरकईगुरहुवा फेरअगिनमहंदीन्ह
काया[10]पीतरहोयकनक[11]जोतुमचाहोकीन्ह

काबिसायजोगुरअसबूझा चका[12]व्यूहअभिमन[13]ज्योंजूझा
बिषजोदीन्हअमृतदेखराई तेहिंरेनिछोहें[14]कोपतियाई
315 मरैसोजानहोयतनसूना पीरनजानैपीरबहूना[15] ॥
पारनपावजोगंधकपिया सोहरतारकहोकिमजिया।
हमसिधिगुटकाजानहिंनाहीं कौनधातपूंछहुतेहिपाहीं।
अबतेहिबाज[16]रांगभाडोलों होयसार[17]तौबरगी[18]बोलों
अबरककैतनईगुरकीन्हा सोतनफेरअगिनमहंदीन्हा

दुखी १ जोड़ना २ रात ३ दिल ४ बेदर्द ५ १४ छिपाना ६ कलेजा ७ सूर्य्य ८ चांद ९ बदन १० सोना ११ नाम किला १२ बेटा अर्युज १३ अलग १५ बिदूनउसके १६ फ़ौलाद १७ तिपतया १८

मिलजो प्रीतम बिछुरहिं जोगी जरा मरन जरि जाय
कै सो मिलै तन तप बुझै कै अब मोहिं बुझाय

सुनि के बात सखी सब हंसी | जानहुं रैन तरइं परगसी ॥
अब सो चांद गगन महं छिपा | लालच कै किन पावसु तपा ।
हम हुं न जाने धौं सो कहां । | करब खोज जौ बिनवब तहां
जौ अस कहब आहि परदेसी | कर माया हत्या जन लेसी ॥
पीर तुम्हार सुनत भा छोहू | देव मनावहोय अस जोहू ॥
तूं योगी तप कर मन जिता ॥ | योगिहि कौन राज की कथा
वह रानी जहवां सुख राजू ॥ | बारह अभरन कै सो साजू

योगी ईंह आसन का इ स्थिर धर मन ठांव ॥
जौ न सुनै तौ अबसुनि बारह अभरन नाव

प्रथम मज्जन होय सरीरू ॥ | पुनि पहिरै तन चन्दन चीरू
साज मांग सिर सेंदुर सोभा । | पुनि ललाट रचि तिलक सँवारा
पुनि अंजन दीन्ह नयन करे ॥ | पुनि कानन कुण्डल पहिरे
पुनि नासक भल फूल अमोला | पुनि राती सुख स्वाद तमोला
गीवं अभरन पहिरे जहं नाई | औ पहिरे कर कंगन कलाई ॥
कटि छुद्रावल अभरन पूरा । | पायन पहिरे पायल चूरा ॥
बारह अभरन यही बरवानै । | ते पहिरे बारह अस्थानै ॥ ॥

पुनि सोरह सिंगार जस चारहु जोग कुलीन
दीघ चार चार लघु चार सुभ्र चहु बीन ॥

पद्मावत जो संवारी लीन्ही | पूर्‍यो रतन दई शशि कीन्ही ॥

बदन १ रात २ छोटे नयन ३ रिवलना ४ आसमान ५ योगी ६ मज़ाकना
७ मेहरबानी ८ ९ ज़ेवर १० मज़बूत ११ क़ायम १२ पहिले १३ नहाना १४
लाल १५ गरदन १६ हाथ १७ कमर १८ कारधनी १९ पाज़ेब वा छड़े २० बड़े
२१ छोटे २२ मोटे २३ पतला २४ फूलगाशी २५

करि मज्जन[1] तन कीन्ह नहानू | पहिर्यो चीर गयो छिप भानू[2]
रचि[1] पत्रावल[3] मांग सेंदूरी ॥ | भरि मोतिन औ माणिक[4] पूरी
318 चन्दन चीर पहिर बहु भांती | मेघ घटा जानहुँ बक[5] पांती
श्री[6] जो रतन मांग बैठारा ॥ | जानहुं गगन[7] टूट निशतारा[8]
तिलक ललाट[9] धरा तस दीठा | जनहु दुइज पर नखतन बैठा
कानन कुण्डल खूंट[10] औ खूंटी[11] | जानहु परी कचीची[12] टूटी ॥

पहिर जड़ाऊ ठाढ़ भइ कहि न जाय तस भाव
मानहुं दरपन गगन[13] भा तो शशि[14] तार देखाव

बोक नयन औ अंजन रेखा | खंजन[15] जानु सरद ऋतु देखा
जो जो हेरै[16] फेर चष[17] मोरी ॥ | लरै सरद महि खंजन जोरी
319 भौंहें धनुक धनुक पै हारा | नयन सांध जनु बानन मारा
करन फूल नासक अति सोभा | शशि[18] मुख आय सूक जनु लोभा
सुरंग अधर[19] औ लीन्ह तँबोरा[20] | सोहै पान फूल कर जोरा ॥
कुसुम गेंद अस सुरंग कपोला | तेहि पर अलक[21] भुवँगिन[22] डोला
तिल कपोल अल पंकज बैठा | बेधा सोई जो वह तिल दीठा

देख सिंगार अनूप[23] बिधि बिरह चला तब भाग
काल कष्ट वह उनवा सब मोरे जिय लाग

का बरनों अभरन[24] औ हारा ॥ | शशि पहिरे नखतन की मारा
चीर चार औ चन्दन चोला । | हीरहार नग लाग अमोला ॥
320 तेहि झांपी रोमावल कारी ॥ | नागिन रूप डसी हत्यारी ॥
कुच[25] कंचुकी[26] स्त्री फल उभे । | हुलराहिं चहहिं कंत हिय चुभे

उबटन १ सूर्य्य २ नामदाया ३ जवाहिर ४ बगुला ५ टीका ६ आसमान ७ १३ रात ८ माथा ९ बीरी १० करनफूल ११ नाम छोटे नखत १२ चांद १४ १८ ममाला १५ देखना १६ आख १७ होट १९ गाल २० बाल २१ नागिन २२ बामसाल २३ ज़ेवरा २४ छाती २५ अंगया २६

वाहहिं बाहू[1] ताड़[2] सलोनी[3] ॥ डोलत बांह भाव गत लोनी ॥
तरवन कुमल कली जनु बाधे बसा[4] लंक[5] जानहु दुइ आधे ॥
छुद्र[6] घंट कटि कंचन तागा । चलते उठहिं छती सो रागा

चूरा[7] पायल[8] अनवट बिछिया पायन परी बियोग[9] ।
हिये[10] लायदु कहम कहं समंद[11] नहिं[12] तुम जान सो भोग

अस बारह सोरह धन[13] साजी । छाजन[14] और वही पै छाजी ॥
बिनवहिं सखी गहर[15] का कीजै जेंजिव दीन्ह ताहि जिव दीजै ।
संवरि सेज धन मन भइ संका ठाढ़ तेवान टेक कर लंका[16] ॥ 321
अनचीन्हा पिव कांपों मन माहां कामें कहब गहब[17] जो वांहां ।
बारि बैस गइ प्रीति न जानी ॥ तरुन[18] भई मैमंत[19] भुलानी ॥
जोबन[20] गर्बन कछु में चेता नेह न जानो श्याम[21] कि सेता ।
अब जो कंत पूछहि मन बाता कस मुख होइ है पीत किराता[22]

हौं सो बार औ दुलहिन पिय सो तरुन[23] औ तेज
ना जानों कस होय है चढ़त कंत की सेज ॥

सुनि धन डर हिरदय तब ताई जौलहि रहस मिला नहिं साई
कौन कली जो भंवर न राई डार न टूट पुहुप[24] गरुवाई ।
मात पिता जो ब्याहै सोई ॥ जन्म निबाह कंत संग होई ॥ 322
भरय[25] मेवार चहै जहं रहा ॥ जायन मेटा ताकर कहा ॥
ता कहं बिलंब न कीजै बारी जो पिय आयसु[26] सोइ पियारी
चलहु बेग[27] आयसु भा जैसे ॥ कंत बोलावै रहै सो कैसे ॥
मान न कर थोरा कर लाडू ॥ मान करत रस मानै चाडू[28] ॥

नाम ज़ेबर १-२-८-९ ख़ूबसूरत ३ भंवर ४ कमर ५-७ १६ कारधनी ६ दुखी १० दिल ११ मुलाक़ात १२ पद्मावत १३ सोहना १४ देर १५ पकड़ना १७ जवान १८-२३ मस्त १९ जवानी का ग़रूर २० काला या सफ़ेद २१ लाल २२ फूल २४ मरने के दम तक २५ हुक्म २६ जल्द २७ गुस्सा २८

साजन लिये पठाई आय[1] सु जाय न मेट ।
तन मन जोबन साज सब देइ चली लै भेट

पद्मिन गवन[2] हंस गये दूरी ॥ हस्ति[3] लाज मेलहिं सिर धूरी
बदन[4] देख घट चंद छिपाना । दशन[5] देख के बीज[6] लजाना
खंजन[7] छिपे देख के नयना । कोकिल छिपी सुनत मधु[8] बैना
ग्रीव[9] देख कर छिपा मयूरू । लंक[10] देख के छिपा सेंदूरू[11] -
भौंह धनक जो छिपा अकारा[12] । बेनी[13] बासुक[14] छिपा पतारा ।
खड्ग[15] छिपी नासिका बिशेषी । अमृत छिपा अधर[16] रस देखी
पहुंचिहिं छिपा कमल पौनारी । जंघ छिपा कदली[17] होय बारी

अप्सर रूप छिपाई जोहि चलै धन[18] साज
जानवंत गर्ब गहेल जग सबै छिपी मन लाज

मिली सो गोहन[19] सखी तराईं[20] । लीन्ह चांद सूरज[21] पहं आई ॥
पारस रूप चांद देखराई ॥ देखत सूर्य्य गयो मुर झाई
सोरह किरन दृष्टि[22] शशि[23] कीन्ही । सहस[24] किरन सूर्य्य कहं लीन्ही
भारबिअ[25] स्त तराई[26] हंसी ॥ सूर्य्य न रहा चांद परगसी[27] ॥
योगी आहि न भोगी कोई ॥ खाय कर[28] कटा गयो पर सोई
पद्मावत निरमल[29] जस गंगा । नाहिं युक्ति योगी भिख मंगा
आय जगावहिं चेला जागहु । आवा गुरु पाय उठ लागहु ।

बोलहिं शब्द[30] सहेली कान लाग गहि माथ
गोरख[31] आय ठाढ भा उठरे चेला नाथ ॥

गोरख शब्द सुद्ध भा राजा ॥ रामा सुनि रावन होय गाजा ॥

हुक्म १ चाल २ हाथी ३ मुंह ४ दांत ५ बिजुली ६ ममोला ७ मीठी बोली ८ गरदन ९ कमर १० चीता ११ आसमान १२ चौटी १३ नामराजा सांपों का १४ तलवार १५ होंठ १६ केला १७ पद्मावत १८ साथ १९ छोटे नखत २० २६ सूर्य्य २१ २५ निगाह २२ चांद २३ हज़ार २४ खिलना २७ टुकड़ा गिरी २८ पाक २९ आवाज़ ३०

नामयोगी ३१

गही[1] बांह धन[2] सेजवां आनी | अंचल ओट रही छिप रानी ॥
सकुची डरी मुरी मन बारी | गहु न बांह रे योगि भिखारी
ओहट[3] हो योगी तोर चेरी ॥ | आवै बास कर कटा[4] केरी ॥
देखि बिभूतं छूत मोहिं लागा | कांपै चांद राहु सों भागा ॥
योगी तोर तपसी कै कया[5] ॥ | लागी चहै अंग[6] मोर छया[7] ॥
बार[8] भिखार न मांगेसि भीखा | मांगे आय स्वर्ग[9] चढ़ सीखा ॥

योगि भिखारी कोई मंदिर न पैसे[10] पार ॥
मांग लेहु कुछु भिक्षा जाय ठाढ़ हो बार ॥

अन तुम कारन[11] प्रेम पियारी | राज छांड़ के भयों भिखारी
नेह तुम्हार जो हिये[12] समाना । | चितौर सों निसर्यो होय आना
जस मालत कहं भंवर बियोगी[13] | चढ़ा बियोग चल्यों होय योगी
भंवर खोज जस पावै केवा[14] ॥ | तुम कारन मैं जिव पर छेवा[15] ॥
भयों भिखार नारि तुम लागी | दीप पतंग होय अंगयों आगी ॥
एक बार मरि मिलै जो आये ॥ | दूसर बार मरै कित जाये ॥
कित तेहिं मींच[16] जो मरके जिया | भंवर कमल[17] मिल के रस पिया

भंवर जो पावै कमल कहं बहु आरत बहु आस
भंवर होय न्यो छावर कमल देय हंस बास ॥

अपने मुहं न बड़ाई छाजा । | योगी कतहुं होहिं नहिं राजा
हौं रानी तूं योगि भिखारी | योगिहि भोगिहि कौन चिन्हारी
योगी सबै छंद अस खेला ॥ | तूं भिखार केहि मांह अकेला
पवन बांध[18] अपसवहिं[19] अकासा | मंसहिं जहां जगहिं तहं बासा
येही भांति सृष्टि[20] बहु छरी | यही भेष रावन सिय[21] हरी ॥

पकड़ना १ पद्मावत २ दूर हो ३ सूखा टुकड़ा रोटी ४ बदन ५-६ छाया ७ दरवाज़ा ८ आसमान ९ न पैठ सके १० वास्ते ११ दिल १२ दुखी १३ कमल १४ दुख १५-१७ मौत १६ सांस रोक के १८ छिपना १९ दुनिया २० श्रीसीता २१

भवरहिं मीच[1] नेर जो आवा। केतकि बास लेय कहं धावा
दीपक जोत देख उजियारी। आय पंख होय परा भिखारी

रैन[2] जो देखे चन्द मुख मसि[3] तन होय अलोप[4]
तुहं योगि अस भूला होय राजा के रूप ॥

अन[5] धन तू ससेर[6] निशि माहां हौं दिनेर[7] जेहि के तू छांहा ॥
चांदहि कहां जोति औ कला। सूर्य्य की जोत चांद निरमला[8]
328 भंवर बास चंपा नहिं लेई ॥ मालति जहां तहां जिव देई ॥
तुम हुत भयों पतंग की किरा[10] सिंहल दीप आय उड़ परा ॥
सेयों महादेव कर बारू[11] ॥ तजा[12] अन्न भा पवन अहारू
तुम सो प्रीति गांठि मैं जोरी ॥ कटै न काटै छुटै न छोरी ॥
सितै[13] भीख रावन कहं दीन्ही तूं अस निठुर अंतर[14] पट दीन्ही

रंग तुम्हारे रात्यों चढ़्यों गगन[15] होय सूर[16] ॥
जहं शशि सीतल कहं तपों मन इच्छा धनपूर

योगि भिखार करेसि बहु बाता कहेसि रंग देखों तुहि राता[17] ॥
कपरा रंगे रंग नहिं होई ॥ हिये[18] औट उपजै रंग सोई ॥
329 चांद की रंग सूर्य्य जो राता ॥ देखी जगत सांझ पर भाता[19]
दग्ध[20] बिरह नित होय अंगारू दहक आंच दग्धै संसारू ॥
जो मजीठ औटै बहु आचा सो रंग जन्म न डोलै राचा ॥
जरै बिरह जो दीपक बाती ॥ भीतर जरि ऊपर होय राती ॥
जरै पलास कोइला के भेसू ॥ तब फूला राता होय टेसू ॥

पान सुपारी खैर तहं मिलै करै चकसून[21] ॥
तब लग रंग न राची जब लग होय न चून

मौत १ रात २-७ सियाही ३ गायब ४ ऐ पद्मावत ५ चांद ६ सूर्य्य ८-१६ पाक साफ ९ मानिन्द १० दरवाज़ा ११ छोड़ना १२ श्री सीताजी १३ औट १४ आसमान १५ लाल १७ दिल १८ भोर १९ जलाना २० रेज़ा २१

धनया[1] का सुरंग का चूना ॥ जेहिं तन नेह दग्ध[2] तेहि दूना ॥
हौं तुम नेह पियरभा पानू ॥ पेड़ी हुत सन रास बखानू ॥
सुनि तुम्हार संसार बडौना । योग लीन्ह तन कीन्ह गड़ौना[3] ॥ 330
करहि[5] जो किंगरी लै बैरागी । नेवती[6] होय बिरह की आगी ॥
फेर फेर तन कीन्ह भुजौना[7] । औट रकत रंग हिरदे अवना
सूख सुपारी भा मन मारा ॥ सरसरौन जनु करवट[8] सारा ।
हाड़ चून भै बिरहै दही ॥ जानै सोई जो दग्ध[9] इमि[10] सही

कैसो जानि बहु पीरा जेहिं दुख ऐसो सरीर ।
रक्ति पियासे जे अहहिं का जानैं पर पीर ॥

योगिहिं बहुत छंद[11] औराहीं । बूंद सेवाती जैसे पराहीं ॥
पड़हिं भूमि[12] पर होय कचूरू[13] । पड़हिं कदल[14] पर होय कपूरू ।
पड़हिं समुंद खार जल ओहीं । पड़हिं सीप सब मोती होहीं ॥ 331
पड़हिं मेरु[15] पर अमृत होई ॥ पड़हिं नाग मुख बिष होय सोई
योगी भंवर निदुर ये दोऊ ॥ । केहि आपन भै कहो सो कोऊ
एक ठांव[16] यहि थिर[17] न रहाहीं । रस लै खेल[18] अंत कहं जाहीं ॥
होय ग्रही पुनि होय उदासी ॥ अंत काल दोनों बिस्वासी[19] ॥

तासों नेह जो दृढ़[20] करहिं थिर आछहिं सहदेस
योगी भंवर भिखारी दूर रहहिं आदेस[21] ॥

थल थल नग न होहिं जेहिं जोती । जल जल सीप न उपनहि मोती
बन बन वृक्ष न चन्दन होई । तन तन बिरह न उपनै[22] सोई ॥ 332
जहं उपना सो औट मर गयो । जन्म निरीर[23] न कबहूं भयो

पद्मावत १ जलन २ बड़ाई ३ गड़ौना ४ हाथ ५ मेहिमान ६ भूजना ७ सिर कटाना ८ इसतरह १० मक्र करना ११ ज़मीन १२ नरकचूर १३ केला १४ पहाड़ १५ जगह १६ काइम १७ जाना १८ बेसबर १९ मज़बूत २० सलाम २१ पैदा २२ अलग २३

जल अंबुज[1] रबि[2] रहै अकासा | जो प्रीति जानहुं इक पासा ॥
योगी भंवर जो थिर[3] न रहाहीं | जेहि खोजहिं तहं पावै नाहीं
मैं तौं पावा आपन जीव ॥ | छाड़ सेवात जाय नहिं पीव ॥
भंवर मालती मिलै जो आई ॥ | सो तजै आन फूल कित जाई ॥

चंपा प्रीति जो तेल है दिन दिन आकर बास
गलगल आप हेराय जो मुयहिं न छाड़ै पास

ऐसैं राजकुंवर नहिं मानौं । | खेल सारे[5] पासा तब जानौं
कच्ची बारहि बार फिरासी ॥ | पक्की तौ फिर थिर न रहासी ॥
रहै न आठ अठारह भाखा | सोरह सत्रह रहै सो राखा ॥
सतयें धरे सो खेलनहारा ॥ | ढारा ग्यारा जासु न मारा ॥
तूं लीन्ही आछेसि मन दुवा | औ जुग सार चहेसि पुनि छुवा
हौं तूं नेह रच्यों तोहि पाहां ॥ | दसौं दाव तोरे हिय[6] माहां ॥
तब चौपर खेलौं कै मया ॥ | जो तर[7] हेल होय सो तिया ॥

जेहि मिल बिछुरन औ तपन अंत[8] तत तेहि नंत
तेहि मिल कंचन[10] को सहै पर बिन मिले न चंत

बोलौं बचन नारि सुनि सांचा | पुरुष क बोल सप्त औ बाचा
यहि मन लाग्यो तुहि अस नारी | दिन तुहि पासा औ निश[11] सारी
मैं पर बारह बार मनायों ॥ | सिर सो खेल निपट जिव लायों
भल भांती मैं रचनी राची । ॥ | मारेसि तोहि सबै कै काची ॥
पाक उठायों आस करीता ॥ | हौं जीतहि हारा तूं जीता ॥
मिल के जुग नहिं होहुं निरारा[12] | कहां बीच दो[13] तीं दिनहारा ॥
अब जिव जन्म जन्म तुहिं पासा | चढ़्यो योग आयों कैलासा ॥

कमल १ सूर्य्य २ क़ायम ३ छोड़ना ४ चौपर ५ दिल ६ मेहरबानी ७ जो मेरे साथ बाज़ी हार जाय ८ आख़िर को सुख ९ सोना १० रात ११ अलग १२ दो तीन का क्या काम है १३

जाकर जिव बसि जेहिं सेनें नेहि पुनि नाकर टेक[1]
कनक सुहाग न बिछुड़हिं[2] औटि मिलहिं जो सेक[3][4]

वेहिं सी धन सुनि कै मन गाता[5] | निश्चै नूं मोर रंग राता ॥ ॥
निश्चै भंवर कमल रस रसा | जो जेहि मन सो तेहिं मन बसा
जब ही गमन भयो पदेशी[6] | तहुन मंडप गयो प्रदेशी ॥
नोर रूप न सदेरंव उ सोना ॥ | जनु योगी नूं मेली टोना ॥
सिधि गुटका जो दृष्टि कमाई[7] | पारे मेल रूप बसियाई[8] ॥ ॥
भुलि देन कहं मैं तुहि डीठा[9][10] ॥ | कमल नयन हेय भंवर जो बैठा
नयन पुतुरि पैठ नूं[11] पैसि मासो भी[12] | रहा बेध न सउड़ सि न सो भी

जाकर बास हेय अस जाकहं नहु पुनि नाकर आस
भंवर जो दीठा[13] कमल का कमल न पावस बास।

कौन मोहनी धौं कुन नोही ॥ | जो नोहि बिधा सो[14] ठपनी मोही
बिनु जल मीन[15] न पै जस जीव ॥ | चातिक[16] भयो कहन पीउ पीव॥
जस योगी बिहु नस दीपक बाती | पंथ[17] जोवन भई सीप सेवाती
डगडार ज्यों कोयल भई ॥ | भयो चकोर नीद[18] निसो गई ॥
मोरे प्रेम प्रेम तुहु भयो ॥ ॥ | रातो[19] हेम अगिन ज्यों तयो ॥ ॥
हीरा दिपहिं जो सूर उदानी[20][21] ॥ | नाहत किन पाहन कहं जोती[22]
रवि परकासे कमल विकासा | नाहन किन मधुकर किन बासा

नासो कौन अंजन[23] रूप जो अस प्रीतम पीव।
न्योछावर करौं आपनु तन मन जोबन जीव

हंस पद्मावत मानी बाता ॥ | निश्चै नूं मोर रंग राता ॥ ॥
नूर जहि निकुल उजियारा। | अस कै चल्यो मैं[24] मैं तुम्हारा ॥

मदद्गार १ सोना २ पद्मावत हंसी ३ यकीन ४ मस्त ५ खूबसूरत ६ निगाह ७ पारा मिलाके चांदी किया ८ भीख ९ देखना १० फूल ११ भंवरा १२ आशिक १३ पैदा होना १४ मछली १५ पपीहा १६ राह १७ रात १८ लाल सोना १९ चमक २०

335

336

सूची २१ पत्थर २२ मोर २३ मैं २४

पै तूं जंबू दीप बसेरा ।।। काजानेसि कस सिंहल मेरा
337 काजानेसि सो मानसर[1] केवा[2] सुनि सो भंवर भाजिव पर छेवा[3]
नातूं सुनी न कोहू दीठी[4] ।। कैसें चित्र[5] होय चित पैठी ।।
जौलह अगिन करै नहिं भेदू[6] तौ लहि औट चुवहिं नहिं मेदू[7]।
कहं शंकर तूं ऐसु लखावा। मिला अलख[8] तस प्रेम चखावा

जेहि के सत संधाती ताकर डर सो अमेट ।।
सो सत कहु कैसें भा दुहूं साथ सो भेंट ।।

सत कहूं अब सुनि पद्मावती जहां सत पुरुष तहां सरस्वती
पायों सुवा कहे वैं बाता ।। भा निश्चों देखत मुख राता
रूप तुम्हार सुन्यों अस नीका नाजेहिं चढ़ा काहु कहं टीका
338 चित्र कियों पुनि लैलै नाऊं नयनहिं लागहिये[10] भा ठाऊं ।।
हौं भा सांच सुनत वह घड़ी। तुम होय रूप आय चित चढ़ी
हौं भा काठ मूर्ति मन मारे। जहं जहं कर सब हाथ तुम्हारे ।।
तुम जो डुलावहु सोई डोला। मवन स्वांस जो दीन्ह तो बोला

कोइ सोवै कोइ जागे अस हों गयों बिमोह[11] ।।
प्रगट[12] गुप्त न दूसर जहं देखों तहं तोह ।।

बिहसी[13] धन सुनके सत भाऊ हौं रामा तू रावन राऊ ।।
रहि जो भंवर कमल की आसा कस न भोग मानै रस बासा
339 जस सत कहा कुंवर तूं मोही। तस मन मोर लाग पुनि तोही
जबहुत कहिगा पंख संदेशी। सुन्यों कि आवा है परदेशी ।।
तबहुत तुम बिन रहे न जीव। चात्रिक[14] भयो कहत पिउ पीव
भयों चकोर सो पंथ[15] तिहारे। समुंद सीप जस नयन पसारे
बिरह भयों दहि[16] कोयल कारी डार डार जिमि पीउ पुकारी ।।

नाम तालाब १ कमल २ जानपर खेला ३ देखना ४ तसवीर ५ शोला ६ अमर ७ ईश्वर ८ लाल ९ दिखु १० दीवाना ११ ज़ाहिर वा छिपा १२ हंसी पद्मावत १३ पपी

कौन सो दिन जब पिउ मिलै[1] हौं मन राजा जासु
वह दुख देखै जेस सब हौं दुख देखौं तासु ॥ ॥

कंह सत भाव भई कंठ लागू । जनु कंचन बेंगि मिला सुहागू ॥
चौरासी आसन पर योगी । खटरस बन्दक चतुर सो भोगी
कुसैम[2] माल असमालति पाई । जनु चंपा गहि डार नवाई ॥
कली बेंध[3] जनु भंवरतु भाना[4] । हना राहु अर्जुन के बाना ॥
कंचन कली जड़ी नग जोती ॥ । बसा सो बेधा जनु मोती ॥
नारंग जाति कीर नख दिये ॥ । अधर आम्बरस जानहु लिये[5]
कोनुक केलकरहिं दुख नसा[6] । कंहि कुरलहिं[7] जनु सरहंसा

रही बसाय बासना चोवा चन्दन मेद[8] ॥
जो असपद्मिन रावी[9] सो जानै यह भेद ॥

रतनसेन सो कंत सुजानू ॥ । खटरस परिडत सो गहवानू ॥
तस होय मिलै पुरुष जो गोरी । जैसी बिछुड़ी सारस जोरी ॥
रची सार[10] दोनों इक पासा ॥ । होय जुग जुग आवहिं कैलासा
पिय धन गहि दीन्ही गल बांहा । धन बिछुड़ी लागी उर मांहा ॥
नेहु क रस नव केलि करेहीं ॥ । चोक[11] लाय अधरन रस लेहीं ॥
धन नव सात मान जो पांवा[12] । पूरुष दस नेहु किन बांवा ॥
लीन्ह बिधंस[13] बिरह धन माजा[14] । जौ लव रचन जीत हत राजा ॥

जबहुं जोट के मिलगये तस दोनों भये एक
कंचन कसत कसौटी हारयन कोउ टेंक[15] ॥

चतुर नार चित अधिक[16] चहूंटी[17] । जहां प्रेम बाढ़ी किमि छूटी ॥

दीवाना १ सोना २-१६ कुसुम की बोंड़ी की तरह छूती ३ पकड़ना ४ कली में भंवरा
बेसमाल[?] कया ५ तीर निशाने में मारे ६ सोने की कली सा बदन मोती की तरह बरसों
सेंधा ७ सोना ८ होंठ ९ कुतेल १० गालाब ११ अतर १२ भोगना १३ चौपड़ १४
होंठ चूमना १५ पसारना हारी १६ राजा सोना १७ लूटना १८ पकड़ना १९ बहुत २१

340

341

कुरैला कामकीर मनुहारी ॥ | कुरैला जहंनहं सोन सुनारी ।
कुरैलो होय कंत कर तोखू ॥ | कुरैला गहै पाव धन मोखू ॥
तेहिं कुरैला मो सुहाग सभागी | चन्दन जैस स्याम कैट लागी ॥
गेंदै गोंद कै जानहु लये ॥ | गेंद चाहि धन कोमल भये
डाड़िम दारव बेलरस चारखा । | पिय के खेल धन जीवन राखा
भयो बसंत कली मुख खोली | बैनै सुहावन कोकिल बोली

पिउ पिउ करन जीभ धन सूखी बोली चातक भांति
परी सो बूंद सीप जनु मोती हिये पैरी सुख शांति

भयो जूझ जस रावन रामा ॥ | सेज बिछास बिरह संग्रामा ।
लीन्ह लंक कंचन गढ़ टूटा ॥ | कीन्ह रंग रस अहा सब लूटा ॥
औ जोबन मैमंत बिधासा । | बिचला बिरह जीव लै नासा
टूटी अंग अंग सब भेखा ॥ | छूटी मांग भंग भये केशा
कंचुक चूर चूर भइ तानी ॥ | टूटे हार मोंन छहरानी ॥
बारी ताड़ सलोनी टूटी ॥ | बांह कंगन कलाई फूटी ॥
चन्दन अंग छूट तस भेंटी | बेसर टूट तिलक गा मेटी ॥

पूंछ सिंगार संवार सब जोबन नवल बसंत ।
आगे जस्यों हिय लाय के भरौ जो कीन्ह कंत

बिनय करौं पद्मावत बाला । | सुभंन सुराही पियो पियाला
पिय आयेसु माथे पर लेऊं ॥ | जो मांगै नयन नय सिर देऊं ॥

मस्ती में काम का मोता आया १ जोबन में सोना सुनार के हाथ से आया २ गलबा किया ३ बाबिंदने ३ गलबा करके पैर चौरत का वास फरागत के पकड़ा ४ गलबा ५ जैसे गेंदे ने गेंद के फूल को गोद में लिया ६ गेंद से मुलायम ७ अनार ८ अंगूर ९ आवाज़ १० पपीहा ११ दिल १२ लड़ना १३ लड़ाई १४ कमर १५ सोने का कलिया तथा बदन १६ मस्त १७ भेगया १८ नाम ज़ेवर १९ एजा के मुलाक़ात से २० फूल २१ खुशबू २२ दलमल २३ शराब सुब्बत सुराही से पियाला पियो २४

पै पीय बचन[1] एक सुनि मोरा | चारवो पिय मधु[2] थोरा थोरा
प्रेम सुरा सोई पै पिया ॥ | लखै न कोऊ कि काहूं दिया
चुवा दारव[3] मधु जो इक बारा | दूसर बार लेत बेस भारा ॥
एक बार जो पीके रहा ॥ | सुख जीवन सुख भोजन लहा
पान फूल रस रंग करीजे ॥ | अधर[4] अधर सों चारवा कीजे

जो तुम चाहो सो करो ना जानों भल मंद।
जो भावि सो होय मोहिं तुम पिय चहूं अनन्द

सुनि धन[5] प्रेम सुरा के पियें। | मरन जिवन डर रहि नहिं हियें[6]
जहं मधु तहां कहां निसतारा | की सुघुम रहा की मतवारा ॥
सो पी जानि पिये जो कोई | पै न अघाय जाय पर सोई।
जा कहं होय बार इक लाहा[7] | रहै न वह विन ओही चाहा
अर्ब दर्ब सब देइ बहाई ॥ | कै सब जाव न जाय पियाई ॥
रातहिं देवस[8] रहै सब भीजा | लाभ न देख न देखी छीजा[9]
भोर होत तब पलहु[11] सरीरू ॥ | पाय घुम[11] रहा सीतल[10] जीरू ॥

एक बार भर देहु पियाला बार बार को माग
मुहम्मद किमन पुकारे ऐस दाव जेहि खाग[13]

भयो बिहान उठा रबि साईं[14] ॥ | चहुं दिस आई नखत[15] तराई
सब नशि[16] सेज मिला शशि[17] सूरू[18] | हार चीर बलयो[19] भै चूरू ॥
सुधन[20] पान चून भई चोली | रंग रंगील निरंग[21] भइ डोली ॥
जागत रैन[22] भयो भिनसारा | भई बेस[23] भार सोत बेकरारा ॥
अलक[24] नु रंगिन हिरदय[25] परीं | नौरंग[26] छुइ नागिन बिष भरी।

बान १ शराब २ अंगूर ३ हींठ ४ पद्मावत ५-२० दिल ६ फ़ायदा ७-९ दिन ८ नुक़सान १० नशा ११ ठंढा पानी १२ कमी १३ सूर्य्य तथा राना १४-१८ सहेली १५ रात १६ चांद १७ चूड़ी १९ बेरौनक़ २१ रात २२ बेहोश २३ चौवास २४ छाती २५ तथा छातियां २६

लरी[1]मुरी हिये[2]हार लपेटे ॥ सुर[3]सरि जनु कालिंदी[4] भेटे ॥
जनु प्राग[5] आरयल[6] बिच मिली बीना[7] भई सो रोमावली ॥

नाभी लाभे[8] ते गये काशी कुंड[9] कहाव ॥
देवता मरहिं कलप[10] सिर आपहिं दोष[11] न लाव

बिहंस जगावहिं सखी सयानी सूर[12] उठा उठ पद्मिन रानी ॥
सुनत सूर[13] जनु कमल बिकासा[14] मधुकर[15] आय लीन्ह मधु बासा
347 जनहुं मांत[16] बेस यानी बसी । अति बिसभर फूली जनु अरसी
नयन कमल जानहु दुइ खोले चितवन मृग[17] सो अति जनु भूले
तन बेस भार केश औ चोली चित अचेत जनु बाली भोली
कमल मांझ जनु केसर[18] दीठी जोबन हत सो गवाई बैठी ॥
भये शशि[19] गहे गहन अस गहे बिथरे नखत[20] सेज भर रहे ॥

बेल जो राखी इन्द्र कहं पवन बास नहिं देहि
लाग्यो आय भंवर तेहि कली बेध रस लेहि

हंस हंस पूंछें सखी सरेखी[21] ॥ जनहु कुमुद[22] चन्दन मुख देखी
रानी तुम ऐसी सुकमारा ॥ वास फूल तन जीव तुम्हारा ॥
सहि नहिं सको हृदय[23] परहारू कैसें सहो कंत कर भारू ॥
348 बदन[24] कमल बिकसत[25] दिन राती सो कुंभलात कहो केहि भांती
अधर[26] कमल जो सहत न पानू कैसें सहा लाग मुख भानू[27] ॥
लंक[28] जो पैग देत मुरझाई । कैसें रही जो रावन[29] राई ॥
चन्दन चोंप पवन अस पीव भयो चित्र[30] सम कस भा जीव

पचलरी वासतलरी १ छाती २ गंगा जी तथा छाती ३ यमुना तथा छाती के बाल ४ नाम तीरथ ५ नाम मुकाम ६ त्रिवेनी ७ लालच ८ मणि करंका कुंड ९ सिर कटाना १० गुनाह ११ सूर्य्य १२-१३ खिलना १४-२५ भंवर १५ मस्तीवसी १६ हिरन १७ ज़र्दरंग १८ नांद १९ तवाहार के मोती २० होशियार २१ कोकाबेली २२ छाती २३ मुंह २४ होंठ २६ सूर्य्य तथा राजा २७ कमर २८

सब अरगज[1] मरगज[2] भा लोचन[3] बिंब[4] सरोज[5]
सत्य कहो पद्मावत सखी परीं सब खोज ॥

कहों सखा आपन सत भाऊ । हौं जो कहत कस रावन[6] राऊ ।
कापों भंवर पुहुप पर देखें ॥ जनु शशि[7] गहन तैसि मुहिं लेखें
आज मर्म[8] मैं जाना सोई ॥ जस पियार पिय और न कोई ॥
डरतब लग अहमिलान पीव भानु[10] की दृष्टि[11] छूटगा सीव[12] ॥
जत खन भानु लीन्ह परकासू[13] कमल कली मन कीन्ह बिकासू[14]
हिये छोह[15] उपना[16] औसेव[17] ॥ पिय न रिसाय लेव पर जीव ॥
हत जो अपार बिरह दुख दूखा जनहुं अगस्त्य उदधि[18] जल सूखा

हमहूं रंग बहु जानब लहरैं जेत समुंद ॥
पिय लै गये चतुराई सक्यों न एको बुंद[20] ॥

कर सिंगार तापन कहं जाऊं ओही देखो ठावहिं[21] ठाऊं ॥
जो जिय महं तो वही पियारा । तन महं सोई न होय निरारा[22]
नयन हिं महं तो वही समाना देखों जहां न देखों आना ॥
आपहिं रस आपहिं पै लेइ ॥ अधर[23] सहस लागे रस देइ ॥
हियाथार[24] कुच कंचन[25] लाडू अगमन[26] भेट दीन्ह कै चाडू[27]
हुलसी[28] लंक[29] लंक सो लसी । रावन[30] रहस कसौटी कसी ॥
जोबन सभै मिला वह जाई हौं री बिच हुत गयों हेराई ॥

जस कुछ दीजे धरन[31] कहं आपन लेह संभार
तस सिंगार सब लीन्हेसि कीन्हेसि मोहिं ठठार[32]

खुशबू १ दलमल २ आंख ३ कुंदरू की तरह लाल ४ कमल ५ तथा औरत मर्द की सुहबत ६ फूल ७ चांद ८ भेद ९ सूर्य्य १० निगाह ११ जाड़ा १२ रोशनी १३ खिलना १४ दिल १५ मेहरबानी १६ पैदा १७ खिदमत १८ समुंद १९ दांव २० जगह २१ अलग २२ होंठ २३ छाती २४ सोने के लड़वासी छातियां २५ पहिले २६ पियार २७ खुश होना २८ कमर २९ तथा राजा ३० धरो

एरी छबीली तुहिं छब लागी | नेत्र[1] गुलाल कंत[2] संग जागी ॥
चंप सुदरसन अस भा सोई ॥ | सोन जर्द जस केसर[3] होई ॥
357 बैठि भंवर कुच[4] नारंग बारी[5] | लागी नख[6] अछरें रंग धारी ॥
अधर[7] अधर सों भीजत बोरी | अलकावल[8] मुरमुर गई मोरी ।
राय मुनी[9] तुम्ह औरत[10] मुही ॥ | अलि[11] मुख लाग भई फुल चुही[12]
जैस सिंगार हार सों मिली ॥ | मालति ऐसि सदा रहि खिली
पुनि शृंगार रस किरा[13] नेवारी | कदम सेवती पियहि पियारी

गोंद कली सम[14] बिकसी[15] ऋतु बसंत औ फाग ।
फूलहु फरहु सदा सुख औ सुख सुफल सुहाग

कहि यह बात सखी उठ धाईं | चंपावत[16] कहं जाय सुनाईं ॥
352 आज निरंग[17] पद्मावत बारी ॥ | जीव न जानि पवन अधारी ॥
तड़क तड़क गा चन्दन चोला | धड़क धड़क डर उठै न बोला
अहे जो कली कमल रस पूरी | चूर चूर होय गई सो चूरी ॥
देखो जाय जैसि कुंभलानी | सुनि सुहाग रानी बेहसानी[18]
ले संग सबही पद्मिन नारी ॥ | आई जहं पद्मावत बारी ॥ ॥
आय रूप सबहीं जो देखा ॥ | सोन बरन[19] होय रही सो रेखा

कुसुम फूल जस मखी निरंग[20] देख सब अंग
चंपावत भइ बारी चंबू केश औ मंग ॥

सब रनवास बैठि चहुं पासा । | शशि[21] मंडल जनु बैठ अकासा
353 बोली सबहिं बारि कुंभलानी | करहु सिंगार देहु खड़ेवानी[22] ॥
कमल कली कोमल रंग भीनी | अति सुकमार लंक[23] की क्षीनी
चांद जैसि धन बैठि गिरासी ॥ | सहस किरन होय सूर्य्य बिकासी

आंख १ खाविन्द २ पीली ३ छाती ४ लड़की ५ नाखून लगने से रंग जाता रहा ६ होंठ पर पान की लाली ७ बाल ८ लाल ९ मुर्ख मुंह १० भंवर ११ नाम चिड़या १२ बराबर १३-१४ खिलना १५ माय पद्मावत १६ बेरंग १७-२० हंसना १८ पीला १९ चां

तेहिके भार गहन असगही | भइ निरंग सुख जोग नरही ॥
दुइ वार कुछ पुन्य करेहू ॥ | औ ले बार सन्यास हि देहू ॥
भर के थार नरवत्त गजमोती | वरती कीन्ह चांद की जोती ॥

कीन्ह अरंगजा मरवन औ सुख दीन्ह नहानू
पुनि भइ चांद जो चौदस रूप गयो छिप भानू

पटवहिं चेर आन सब छोरी ॥ | सारी कंचुक पहिर पटोरी ॥
पहेंया और कांस्या रेनी ॥ | छायल पिंड वाही गुजरानी
बंकवा चीर भरे बोना लोने | मोति लाग औ छोप सोने ॥
सुरंग चीर भल सिंह दीपी | कीन्ह जो छपा धनवह छीपी
पेम चौड़ रंगा और बेदेरी ॥ | ऐसो मेंसे त पीरी औहरी
सात रंग सो चित्र चित्तेरें ॥ | भर के दीठ जाहिं नहिं हेरें ॥
चंदन औ तो जो खरादु कुभारी | बांस पूर भिरे मिल कोसारी

पुनि अभरन बहु काढ़ा आनी मोति जड़ाव
फेर फेर सब पहिरहिं जेस जेस मन भाव

रतन सेन गये अपनी सभा | बैठे पौंट जहां अठ सभा
आय मिले चित्तौर के साथी | सभै बिहंस के दीन्ह हथी
राजा कर भल मानहु भाई | जैं हम कहं यहि भूमि दरबारू
जो हम कहं नहिं एतनन रेखू ॥ | तब हम कहां कहां यहि देखू
धनि राजा तुइं राज बिशेखा | जेहि की राज अस सब कुछ देखा
भोग बिलास सभी कुछ पावा | कहौं जो भल अस्तुति आवा
अब तुम आय चंतर पट साजा | दरशन कहं नैन पावहु राजा

किसके मुला कान केलूकसे १ बेरंग २ दरबाजा ३ न्योछावर ४ खुशबूदार ५ सूर्य ६ दुशाला ७ नोशा दामाद ८ चोली ९ रेशम १० लाल कपड़ा ११-१२-१३-१४-१६-१८-१९-२०-२१-२२ लाल १२ खूबसूरत १७ काला २३ सफेद २४ नक्काशी २५ निगाह २६ किस्म लहंगा २७-२९ जेवर २८ लम्बा ३०

नयन[1] सेरान भूँख गइ देखदरस तुम आज ॥
नव[2] अवतार आज सब भयो औ सब भैनये काज

हंसके राज रजाय[3] सु दीन्हा ॥ मैं दरशन कारन[4] तप कीन्हा ।
अपनी योग लाग अस खेला । गुरु भा आप कीन्ह तुम चेला
अहक मोर बरषा[5] ऋतु देखहु । गुरु चीन्ह के योग बिशेषहु
जो तुम तप साधा मुहिं लागी । अब जन हियें[6] होहु बैरागी[7] ॥
जो जेहिं लाग सहै तप योगू ॥ सो तेहि के संग मानें भोगू ॥
सोरह सहस[8] पद्मिनी मांगी ॥ सबै दीन्ह नहिं काहू खांगी[9] ।
सबक धौरहर[10] सोने साजा । सब अपने अपने घर राजा ॥

हस्ति[11] घोर औ कापर सब हिं दीन्ह बड़ साज ।
भये गृहस्त सब लखपती घर घर मानहुं राज

पद्मावत सब सखी बोलाई ॥ चीर[12] पटोर हार पहिराई ॥
सीस[13] सबन के सेंदुर पूरा ॥ । सीस पूर सब मांग सिंदूरा ॥
चन्दन अगर चित्र[14] सम भरीं । नयन चार जानहुं औ तरीं[15] ।
जानु कमल संग फूली कोईं[16] । औ सो चांद संग तरईं[17] उईं ।
धन पद्मावत धन तोर नाहूं[18] ॥ जेहिं अभरन[19] पहिरा सब काहू ।
बारह अभरन सोरह सिंगारा । तोहि सोहे पिय शशि[20] मसयारा
शशि सुकलंकी राहुहि पूजा । तुइ निकलंक न कोइ सरदूजा[21]

काहूं बीन गहा कर[22] काहूं नाद मृदंग ॥
सब दिन अनन्द बधावा रहस कूद इक संग

पद्मावत कहि सुनहुं सहेली ॥ हौं सो कमल तुम कुमदन[23] बेली
कलश मानि हौं तेहि दिन आई । पूजा चलो चढ़ावहिं जाई ॥

आंखठंडी १ नई पैदाइश २ हुक्म ३ वास्ते ४ तथा रोना ५ दिल ६ दुखी ७ हज़ार ८ कमी ९ महल १० घोड़ा ११ क़िस्म कपड़ा १२ सिर १३ तसवीर के बराबर १४ छोटे नखत १५-१७ कोका बेली १६-२३ ख़ाविंद १८ ज़ेवर १९

मंझ[1] पद्मावत का जो बिवानू | जनु पर[2] भात उठै रीति[3] भानू ।
आस पास बाजत चौंडोला[4] | द्वंद[5] मृदंग[6] झांझ डफ ढोला
एक संग सब सोंधी[7] भरी ॥ | देव दुवार उतर भई खरी
सैं सो हाथ देव अन्हवावा ॥ | कलश सहस[8] इक घृत[9] भराव
पोता मंडफ अगर औ चन्दन | देव भरा अरगज[10] औ बिन्दन

कै प्रणाम[11] आगें भई बिनय[12] कीन्ह बहु भाति
रानी कहा चलहु घर सखी होत है राति ॥

भइ निश[13] धन[14] जस शशि[15] प्रकसी[16] | राजें देख भूमि[17] फिर बसी ॥
भइ कटक[18] कई सरद शशि आवा | फेर गगन[19] रबि चाही छावा ॥
सुनि धन[20] धनक भौंह कर फेरी | काम कटाछ[21] मकोरत[22] हेरी ॥
जानहु[23] न कै बीच पै खांचौं ॥ | पिता सप्त[24] हौं आजन बाचौं ॥
काल्ह न होय रहै सुख रामा | आज करौं रावन[25] संग्रामा ॥
सैन[26] शृंगार मुहूं है सजा ॥ | गज[27] गत चाल अंचल गत धुजा
नयन समुंद खड्ग[28] नाशिका[29] | सरबर[30] जूझ कौ मोसों जिता

हौं रानी पद्मावती मैं जीता सुख भोग ॥
तूं सरबर[31] कर तासों जस योगी तेहि योग ॥

हौं अस योगि जान सब कोऊ । | बीर[32] शृंगार जिते मैं दोऊ ॥
वहां तो हनू[33] बीर घट माहां ॥ | यहां तो काम कटक[34] तुम्ह पाहां
वहां तो हये[35] चढ़के[36] महि मंडो ॥ | यहां तो अधर[37] अमीं रस खंडो ।
वहां तो खड्ग नरंदहि मारों | यहां तो बिरह तुम्हार संहारों ॥

बीच १ भोर २ लाल सूर्य्य ३ नाम बाजा ४-५-६ सहेली ७ हज़ार ८ घीउ ९ खुशबू १०
दंडवत ११ आजज़ी १२ रात १३ पद्मावत १४-२० चांद १५ रोशनी १६ ज़मीन १७ हुकुम
१८ आसमान पर सूर्य्य तथा कोठे पर जाना १९ ग़मज़ा २१ कोर से देखना २२ —
भौंह चढ़ाके न बचौगे २३ क़स्म २४ रावन की तरह लड़ो २५ फ़ौज २६ २७ हाथी २८
तलवार २९ नाक २९ बराबरी ३०-३१ मैदान लड़ाई-वा भोग ३२ हनूमानजी ३३

वहां तो गज[1] पेलों होय केहर[2] ॥ यहां तो कुच[3] कामिन करहेहर
वहां तो लूटों कटक[4] खंडारू ॥ यहां तो जीत तुम्हार सिंगारू
वहां तो कुंभस्थल गज नाऊं ॥ यहां तो गज कलस हि कर लाऊं

पड़ा बीच तब धर धर प्रेम[6] राज के टेक ॥
मानौ भोग छह ऋतु मिल दोनो होय एक

खंड चौबीसवां छह ऋतु बारह मास

प्रथम[7] बसंत नवल ऋतु आई सुऋत चैत बैशाख सुहाई ॥
चन्दन चीर पहिर धन[8] अंगा ॥ सेंदुर दीन्ह बेहंसि भर मंगा ॥
कुसम हार औ परबल[9] बासू ॥ मलयां[10] गिर छिड़का कैलाशू
सूर[11] सपेती फूलन दासी ॥ ॥ धन औ कंत मिले सुख बासी
पिय संजोग[12] धन जोबन बारी भंवर पुहुप[13] संग करहिं धमारी
होय फाग भल चाचर जोरी बिरह जराय दीन्ह जस होरी ॥
धन शशि[14] सीर[15] तपी[16] पिय सूरू[17] नखत सिंगार होहिं सब चूरू ॥

जेहि घर कंथा ऋतु भली आव बसंता नित्त
सुख भर आवहिं देवहरे[18] दुःख न जाने कित्त

ऋत ग्रीषम की तपन नहिं तहां जेष्ठ असाढ़ कंत घर जहां ॥
पहिरें सुरंग चीर धन झीना परमल[19] मेद रही तन भीना ॥
पद्मावत तन सीर[20] सुबासा ॥ नैहर राज कंत घर पासा ॥
औ बड़ जूड़ तहां सोनारा[21] ॥ अगर पोत सुख नंत[22] उहारा ॥
सेत[23] बिछावन सूर[24] सपेती ॥ भोग बिलास करहिं सुख सेती
अधर[25] तंबोर कपूर भीउ सैना चन्दन चरच लाव नित बैना

हाथी १ शेर २ औरत की छाती से काम ३ फ़ौज ४ नाम हाथी ५ प्रेम ने बीच बचाव कर दिया ६ पहिले ७ पद्मावत ८ खुशबूदार ९ चन्दन १० तोशक लहाफ़ ११ २४ मुलाकात १२ फूल १३ चांद १४ ठंडा १५ २० गर्म १६ सूर्य्य १७ महादेवजी १८ बहुत खुशबू १९ रात के रहने का मकान २१ फ़र्श २२ सफ़ेद २३

भाअ नन्द सिंहल सब कहूं | भागवंत कहं सुख ऋत चहूं ॥

दाड़िम[1] दाख[2] लोहि रस बरसहिं आंब छुहार
हरियर तन सोटा[3] कर जो अस चाखन हार ॥

ऋतु पावस[4] बरसै पिव पावा ॥ | सावन भादौ अधिक[5] सुहावा
पद्मावत चाहत ऋतु पाई ॥ | गंगन[6] सुहावन भूमि[7] सुहाई
कोकिल बैन पांत बर्ग छूटी | धन[8] निसरी जनु बीर बहूटी
चमक बीज[9] बरसै जल सोना | दादुर[11] मोर शब्द[12] सुठ लोना
रंगराती प्रीतम संग निशि[13] जागी | गरजे गंगन[14] चौंक कंट लागी
सीतल बूंद ऊच चौपारा ॥ | हरियर सब देखे संसारा ॥
मलै समीर[15] बास सुख बासी | बेल फूल सेज सुख दासी ॥
हरियर भूमि[16] कुसम्मी चोला । | औ धन पिय संग रचो हिंडोला

पवन झकोरे है हरष[17] लागै सीतल बास ॥।
धन जानी यहि पवन है पवन सो अपने आस

आय सरद ऋतु अधिक[18] पियारी | नाउं कुवार कातिक उजियारी
पद्मावत भई पून्यों कला[19] ॥ | चौदह चांद उई सिंहला ॥
सोरह किरन शृंगार बनावा | नखत भरा सूर्य्य शशि[20] पावा
भानि रमल[21] सब धर्ती अकासू | सेज संवार कीन्ह बलदासू ॥
सेत[22] बिछावन औ उजियारी | हंस हंस मिलहिं पुरुष औ नारी
सोने फूल प्रथमीं[23] फूली ॥ | पिय धन सो धन पिय सों भूली
चख[24] अंजन दैरंवज[25] न दिखावा | होय सारस जोरी रस पावा ॥

यहि ऋतु कंथा पास जेहिं सुख तिनके हिय मांह
धन हंस लागी पिय गले धन गल पीके बांह ॥

अनार १ अंगूर २ तोता ३ बरसात ४ बहुत ५ आसमान ६ ज़मीन ७ २३ बगुला ८ पद्मावत ९ बिजुली १० मेढक ११ आवाज़ १२ रात १३ असमान १४ हवा १५ ज़मीन १६ खुश १७ बहुत १८ पूरन माशी का चाद १९ चांद २० साफ़ २१ सफेद २२

आख २४ ममला २५

आयशिशिर ऋतु नहीं नसीऊ। अगहन पूष जहां घर पीऊ॥
धनै औ पिय महँ सेव सुहागा दुहूं अंग एकै मिल लागा॥
मनसो मन तन सो तन गहा हिय सो हिय विचहार न रहा
जानहुं चन्दन लाग्यो अंगा। चन्दन रहे न पावै संगा॥॥
भोग करहिं सुख राजा रानी बंह लेवसूवर्ष्ट सुड़ानी॥
जूझ दुहूं जोबन सो लागा॥ बिचहुन सेवजीवले भागा॥
दुइ घट मिलन एकहोय जाहीं ऐसि मिलन हिन बहीं न आहीं

हंसा केलकरहिं ज्यों संवर कंदै नाहि दोउ॥
सेव पुकारे पार भा जस चकवी कविकोउ

ऋतु हेमंत संग पियो पियाला मानहुं फागुन सुखं सेव साला।
सेंर सेपती महं दिन रानी॥ दगल चीर पहिरहिं बहु भांती।
घर घर सिंहल होय सुख भोजू रहा न कंत हूं दुख कर खोजू॥
जहं धन पुरुष शीत नहिं लागा जानहुं काग दरव सर भागा
जाय इन्द्र सो कीन्ह पुकारा हौं पद्मावति देस निसारा॥
यहि ऋतु सदा संग मैं सोवा अब दरशन ते भार बिछोवा।
अब हंसि के शशि सूरहि भेटा जहां जोशीत बीच हुत मेटा॥

भयो इन्द्र को चोर सुरैसहवहिं भइ सोय
कोहु काहु को पीर भा को हि काहि की होय

नागमती चितौर पथ हेरा॥ पिय योगी पुनि कीन्ह न फेरा
नागर नारि काहु बस परा॥ नेंबि मोहि मोसो चित हरा॥
सुवा कौंल होय लेगा पीव॥ पीवन जान जान पर जीव॥
भयो नरायण वावन किरा॥ राजकरत नल राजा छरा॥

झाड़ि का मौसिम १ पद्मावत २ जाड़ा ३ दंड बदन ४ कांती ५ सारी दुनिया ६
लड़ाई ७ जवानी ८ तालाब ९ सुखसेकलोल ११ तोशक लहाफ़ १२ अलग
१३ चांद १४ सूर्य १५ कुबन १६ तनसीर १७ राहदेखना १८ मोहलेना १९ मौन

कस्तूरी बास नीम्ह कै छंद ॥ भर थोहि भयो। भेलसिलानन्दू
मानत भोग गोपि चन्द भोगी लै चपसवोजन लधर यागा ॥
लैके कंथ भा कुररा लोपी ॥ कठिन बिछोह जियहि किमि गोपी

सारस जोरी किमहरी मारगयो कित्तर दाग ॥
झुर झुर सांजर धंन भई विरह की लागी आग

पिय बियोग अस बाउर जीव पपिहा जस बोलै पिय पीव ॥
अधिक काम दगंध सो कामा हरि लै सुवा गयो पिय नामा ॥
बिरह बान तस लाग न डोली रकत पसीज भीज तन चोली
संग ही हीर हार हिय बारी ॥ हरहर प्रान तजी अब नारी ॥
स्वान उदक आव पेट महं वासा स्वान हि जाय जिव हेय निरासा
पवन डुलावहिं सींचहिं चोला फिर के नारि समुझ मुख बोला
प्रान पयान होत को रोका। कोय ल स्रो चातिक मुख भाखा

आह जो मारी विरह की आग उठी तेहि हाग
हंस जो सहा सरीर महं पांख जरे तब भाग ॥

पाट महादेव हिये निहारू ॥ समझ जीव चित चेत संभारू
भंवर कमल संग हेय मिलावा संवर नेह मालति पुनि आवा
पपीहा स्वांति सो जैसी प्रीती ॥ टेक प्यास बांध जिय सेती ॥
धर्ती जैसि गगन सो नेहा ॥ पलट फिरै बरखा रितु मेहा ॥
पुनि बसंत रितु आवन वेली। सुरस सुमंधु कर सारस वेली ॥
जनु अस जीव करसि तू बारी ॥ वह तरवर पुनि उठहिं संवारी ॥
दिन दस बिनु जल सुखा कासा पुनि सोइ सरवर सोइ हासा

मिलहिं जो बिछुड़े साजन कैकी भेंट कहंत ।
तपन मिरग जस बिरिख सहै ते अठा पलहंत ।

नाम राजा १ नाम योगी २-४ दुरवपाया ३ छिपना ५ खाविन्द ६ कोआ ७ नागमती
८ दुख ९ बहुत १० जलना ११ छोड़ना १२ पल १३ कूद १४ पपीहा १५ तरवन १६

दिल्ली २ जायसी १८ भवर १९ पेड़ २०

368

369

चढ़ा असाढ़ गगन[1] घन[2] गाजा । साजा बिरह दुंद दल बाजा ॥
धूम[3] श्याम धोरी घन धाये । सेत[4] धुजा बक[5] पांति देखाये
खड्ग[6] बीज[7] चमकै चहुं ओरा । बुन्द बान बरसहिं घन धोरा ।
उनई घटा आय चहुं फेरी ॥ कंत उबार मदन[8] हौं घेरी ॥
दादुर[9] मोर कोकिला पीउ ॥ गिरहि बीज घट रहै न जीउ ॥
पुष्य नक्षत्र सिर ऊपर आवा ॥ हौं बिन नाँह[10] मंदिर को छावा
अद्रा लाग बीज भुइं लेई ॥ मो पिय बिन को आदर देई ॥

जेहिं घर कंता ते सुखी तेहि गारू तेहि गर्ब[11]
कंत पियारे बाहरे हम सुख भूला सर्ब ॥

सावन बरस मेह अतवानी[12] ॥ भरन परी हौं बिरह झुरानी ॥
लाग पुनरबस पीउ न देखा ॥ भइ बावर कहं कंत सरेखा[13] ॥
रक्त[14] की आंस परहिं भुइं टूटी ॥ रेंग चली जनु बीर बहूटी ॥
सखि न रचा पिय संग हिंडोला । हरिया भूमि[15] कुसुंभी चोला ॥
हिय[16] हिंडोल जस डोलै मोरा ॥ बिरह झुलावै देइ झकोरा ॥
बाट[17] असूझ अथाह गभीरी[18] ॥ जिव बावर भा फिरै भभीरी ॥
जग जल बूड़ जहां लग ताकी ॥ मोर नाव खेवक[19] बिन थाकी ॥

परबत समुंद अगम बन औ बीहर घन ढंख ॥
किमकर भेटूं कंत तुम ना मो पावन पंख

भर भादों दुपहर अति भारी ॥ कैसे भरौं रैन अंधियारी ॥
मंदिर सून पिय अंतहि बसा ॥ सेज नाग भइ दहि दहि डसा ॥
रहौं अकेल गहें इक पाटी ॥ नयन पसार मरौं हिय फाटी ॥
चमक बीज घन गरज तरासा ॥ बिरह काल होय जीव गिरासा

आसमान १ बादल २ भूरी-काली सफ़ेद ३ सफ़ेद पताका ४ बगुला ५ तलवार ६ बिजुली ७ कामदेव ८ मेढक ९ खाविन्द १० ग़रूर ११ तुलाहुवा १२ होशियार १३ लोह १४ ज़मीन १५ दिल १६ राह १७ गहेरी १८ मल्लाह १९

बरसै मघा झकोर झकोरी। मोरदुइ नयन चुवैं जस ओरी॥
धनसूखे भर भादौं माहा। अबहूं न आय सीचेसि नाहा॥
फूलि लागभूमि जलपूरी। आंकजवास भई हौं भूरी॥

जल थल भरे अपूरसब धरती। गगन मिलत रहि रहि धनजोबन अगाह महंवय बूड़ोपियटेक॥

लागकुवार नीरजसघटा। अबहूं आवरे प्रीतम लुटा॥
तुम्हि देखेंपियपलुहे काया। उनरा चीतवहुरकर मया॥
उये अगस्त हस्तितन गाजा। तुरी पलानचढ़े रन राजा॥
चित्रा मीतमीनी घर आवा। कोकिलपीव पुकारतपावा॥
स्वातिबूंद चातृक मुखपरी। सीपसमुंद मोती बहु भरी॥
सरवर संवरहंस चल आये। सारसकुरलैं रवंजन देखवाये॥
भइ निरासकास बनफूलें। कंतनफिरे बिदेसहिं भूलें॥

बिरह हस्ति तनसोंलै घायकरै निनचूर॥
बेगे आय पियबाचहि गाजहि होयसेंदूरै॥

कातिकसरद चन्द उजियारा। जगसीतल मोबिरहिनजारा॥
चौदहकिरनचन्द परकासू। जनगुंजरै सबधरति अकासू॥
तनमनसेज करैदुकदोहू। सबकहचन्द भयोमोराहू॥
चहूंखंड लागे अंधियारा। जोघर नाहीं कंतपियारा॥
अबहूंनिदुर आयहिबारा। परबदेवारी होसंसारा॥
संगभुमकगावहिंअंगसोरी। हौं झुरवौं बिछुरी जेहिजोरी॥
जेहिंघरपियसोमंनारापूजा। मोकहंबिरहसोनदुखदूजा॥

नाम नछत्र १-४-११-१३-१४-१६ चौरतनयानागमनी २ खाविन्द ३ ज़मीन ४ आसमान ५ गिरिहा ७ पानी ८ लोटके ९ वदनह्राहीजाय १० मेहरवानी ११ घोड़ा १५ मछली १६ पपीहा १८ तालाब १९ ममोला २० हाथी २१ छेदना २२ ज़ख्म २३ शेर २४ रोशन २५ जलाना २६ कामना २७

सखी मानैं त्योहार सब गाय देवारी खेल ।।
हौं कारेवलों कंत बिन रही छार सिरमेल ।।

अगहन देवस घटा निशि बाढी | दोपहर रैन जाय किम गाढी
अवधन देवस बिरह भा राती | जरों बिरह जस दीपक बाती ।।
कांपा हिया जनावा सीव ।। | तौ पै जाय होय संग पीव ।।
घर घर चीर रचे सब काहू ।। | मोर रूप सब लैगा नाहू ।। ।।
पलट न बहुरा गा जो बिछोई | अबहूं फिरे फिरै रंग सोई ।।
बज्र अगिन बिरहिन हिय जारा | सुलग सुलग दगधै भइ छारा
यह दुख दग्ध न जानै कंतू | जोवन जन्म करै भसमंतू

पिय सों कहो संदेसरा ए भंवरा ए काग ।।।
सो धन बिरहिन जरगई तेह कधुवां हम लाग

पूष जाड़ थर थर तन कांपा । | सूर्य्य जुड़ाय लंक दिस तापा ।।
बिरह बाढ़ भा दारुन सीव ।। | कंप कंप मरों लेइ हर जीव ।।
कंत कहां हो लागो हियरे ।। | पंथ अपार सूझ नहिं नेरे ।।
सूर सपेती आवै जूड़ी ।। ।। | जानहु सेज हिमंचल बूड़ी ।।
चकई निश बिछुडै दिन मिला | हों दिन रात बिरह कोकिला
रैन अकेल साथ नहिं सखी ।। | कैसें जिये बिछोही पखी ।।
बिरह सुजान भयो तन जाड़ा | जियत खाय औ मुयहिं न छाड़ा

रक्त ढुरा मांसू गिरा हाड़ भये सब शंख ।।
धनै सारस होइ रुर मुई आय समेटहिं पंख

लाग्यो माघ परै अति पाला | बिरहा काल भयो जड़ काला
पहल पहल तन रुई जो झांपो | अहल अहल अधिकों हिय कांपो

ख़ाक १ ६ दिन २ रात ३-४ दिल ५ जाड़ा ६ खाविन्द ७ जलना ८ उत्तर तरफ़ १० टेढ़ा ११ छाती १२ राह १३ तोशक लहाफ़ १४ पाला की तरह १५ तथा नागमती १६ बहुत १७ दिल १८

आय सूर[1] होय तपरे नाहां[2] | तुह बिन जाड़ न छूटे माहां ॥ 377
यही मांह उपजी रस मूलू ॥ | तो सु भंवर मोर जोवन फूलू
नयन चुवहिं जस महावट नीरू[3] | तेहि बिन आग लाग सिर चीरू[4]
टपटप बूंद परहिं जनु ओला | बिरह पवन होय मारै झोला
केहिक सिंगार को पहिर पटोरा[5] | ग्रीवं[6] न हार रहै होय डोरा ॥

तुम बिन कंता धन हरवी[7] तृन तृन बरभा डोल
तेहि पर बिरह जराय के चहै उड़ावा झोल

फागुन पवन झकोरे महा ॥ | चौगुन सीव[8] जाय नहिं सहा
तन जस पियर पात भा मोरा | तेहि पर बिरह देइ झक झोरा
तरवर[9] झरहिं झरहिं बन डारवा | भइ उपंत[10] फूल फर सारवा ॥ 378
करहिं बनाफंत[11] कीन्ह हुलासू | मोकहं जग भा दून उदासू ॥
फाग करहिं सब चाचर जोरी | मो तन लाय दीन्ह जस होरी
जो पै पियहि जरत अस भावा | जरत मरत मुहिं रोसन आवा
रातदिवस[12] निरभै जिय मोरें ॥ | लग्यो[13] निहार कंत जो तोरें ।

यह तन जारों छार[14] कै कहों कि पवन उड़ाव
मग[15] तेहि मारग[16] होय परै कंत धरै जहं पाव

चैत बसंता होय धमारी ॥ | मो लेखे संसार उजारी ॥
पंचम बिरह पनज[17] सर मारी | रक्ति रोय सगरें बन ढारी ॥
बूड़ उठे सब तरवर[18] पाता ॥ | भीज मजीठ[19] टेसु बन राता[20] ॥
बौरे अम्ब फरे अब लागी ॥ | अबहूं संवरि घर आवस भागी 379
सहस[21] भाव फूली बनपती ॥ | मधुकर[22] फिरे संवरि मालती
मोंकहं फूल भये सब कांटे । | दृष्टि हरी जनु लागहिं चोंटे[23] ॥

सूर्य्य १ खाविन्द २ पानी ३ कपड़ा ४ जोड़ा ५ गरदन ६ हलकी तिनका से ७ जाड़ा ८ पेड़ ९-११-१८ पैदा १० दिन १२ तथा न्यो छावरहों १३ राख १४ शायद १५ राह १६ तीर खैंच के १७ लाख १९ लाल २० हज़ार २१ भंवर २२ चोटी २३

भर जोबन[1] भइ नारंग साखा | सो अब बिरह जात है चाखा ॥

घरन[2] परेवा आव जस आय परो पिय दूट ॥
नार पराये हाथ है तुम बिन पावन छूट ॥

भा बैसाख तपन अति लागी | चोला चीर चंदन भा आगी
सूरज जरत हिमंचल ताका । | बिरह बिजाग[3] सौंह[4] रथ हांका
जरत बचासि होय पिय छांहा | आय बुझाव अंगारहिं मांहा
तुहि दरसन होय सीतल[5] नारी | आय आग सों कर फुलवारी ॥
लागे जरै जरै जस भारू ॥ | फिर फिर भूंजेसि तज्यों न बारू[6]
सरवर[7] हिया[8] घटत नित जाई | तरक तरक होय होय भर आई
बेहिरत[9] हिया करहु पिय टेका[10] | दृष्टि[11] मया कर मिलवहु एका

कमल जो बिकसत[12] मानसर बिन जल गयो सुखाय
अबहुं बेलि फिर पल्हवे जो पिय सींचहिं आय

जेष्ठ जरों जग भुनहि लुवारा । | उठहिं बौंडरा परहिं अंगारा ॥
बिरह गाजे[13] हनुमत होय जागा | लंका दाह[14] करै तन लागा ॥
चारहुं पवन झकोरै आगी । | लंका दाह पलंका लागी ॥
दह भई श्याम नदी कालिन्दी[15] | बिरह की आग कठिन अस मुन्दी
उठै आग औ आवै आंधी ॥ | नयन न सूझ मरों दुख बांधी
अधजर भई मांस तन सूखा | लाग्यो बिरह काल होय भूखा
मांस खाय अब हाडहि लागा | अबहुं आव आवत सुन भागा

गिरि सनुंद शशि[16] मेघ रबि[17] सहि न सकै यह आग
मुहम्मद सती सराही जरै जो अस पिय लाग ॥

तपै लाग अब जेठ असाढ़ी | भइ मोकहं यहि छाजन[18] गाढ़ी

जवानी १ कबूतर २ भारी ३ सामने ४ ठंडा ५ दरवाज़ा ६ तालाब ७ दिल ८ छाती फटना ९ मदद १० निगाह ११ खिलना १२ बिजुली १३ जलाना १४ यमुना १५ चांद १६ सूर्य्य १७ छावना १८

तृन तृन[1] बर भा झूरों खरी | भा बरषा दुख आगर जरी ॥
बंध नाहिं औ खंड न कोई | नागे[2] न आव कहों केहि रोई ॥ 382
सांठ[3] नांठ लग बान को पूंछा | बिन जिय फिरै मूंज तन छूंछा
भई दुहेली[4] टेक[5] बहूनी ॥ | थांभ[6] नांह उठ सके न थूनी ॥
बरषहिं मेह चुवहिं नय नाहा | छपर छपर होई बिन नाहां ।
कोरो कहां ठाठ नव साजा ॥ | तुम बिन कंत न छाजन छाजा[7]

अबहूं दृष्टि[8] मया[9] कर नाथ निठुर घर आव
मंदिर उजाड़ होत है नव के आय बसाव

रोय गंवाई बारह मासा ॥ | सहस[10] सहस दुख इक इक स्वांस
तिल तिल बरष बरष पर जाई | पहर पहर युग युग नसराई[11] ॥
सौंह[12] आव पिय रूप मुरारी ॥ | जासों पाव सुहाग सुनारी ॥ 383
सांझ भई झुर झुर पंथ[13] हेरी | कौन सो घरी करी पिय फेरी ॥
दहि[14] कुइला भइ कंत सनेहा | तोला मांस रहा नहिं देहा ॥
रत्ता न रहा बिरह तन गिरा ॥ | रती रती होय नयन हिं ढुरा ॥
पाय लगी जोरै धन[15] हाथा ॥ | जोरा नेह जोराये नाथा ॥

बरस देवस[16] धन रोय केहार परी चित झंख ।
मानुष घर घर बूझ के पूंछी निसरी पंख[17]

भइ पुंछार[18] लीन्ह बन बासू ॥ | बैरिन सौत दीन्ह चिलवासू[19]
हौं खैरि[20] बान बिरह तन लागा | जो अबहूं आवै घर कागा ॥ 384
हारल[21] भई पंथ मैं सेवा ॥ | अब तुहि पठवों कौन परेवा[22]
धौरी[23] पांडक[24] कहि पिय टांऊ | जो चित रोखन[25] दूसर नाऊं

तिनकी बराबर १ पत्ती २ रूपिया पास नहीं ३ दुबली ४ बेसहारा ५ खाविन्द ६ छावनी ७ निगाह ८ मेहरबानी ९ हज़ार १० मालूम होना ११ सामने १२ राह १३ जलना १४ नागमती १५ दिन १६ जानवर परिंद १७-२२ मोर १८ चिल्लाना १९ तिनका २० नाम चिड़या २१ २३-२४-२५

जाय बिवाही पिय कंठ[1] लुवा | करै मिलाव सोई गौरवा[2] ॥
कोकिल[3] भई पुकारत रही ॥ | महर[4] पुकार लीन्ह लै दही ॥
पेड़ तिलोरी[5] औ जल[6] हंसा ॥ | हिरदय[7] बैठ बिरह लग नसा

जेहि पंखी के नेर होय कहै बिरह की बात
सोई पंख जर तरवर[8] जाय होहि नहिं पात ॥

कुहुक कुहुक जस कोइल रोई | रक्त आंस घुंगची बन बोई ॥
भइ कर मुखी नयन तन राती[9] | को सिराव बिरहा दुख ताती[10] ॥
जहं जहं ठाढ़ होय बनबासी | तहं तहं होहिं घुंगचिहि की रासी
बूंद बूंद महं जानौ जीव ॥ | गूंजा गूंज करहिं पिय पीव ॥
तेह दुख भई पलास निपाती | लोहू बूड़ उठी होय राती[11] ॥
राती बिंब[12] भये तेहि लोहूं ॥ | पखर पाक फटे हिय[13] गोहूं ॥
देखौं जहां सोइ होय राता ॥ | जहं सो रतन कहै को बाता ॥

नापा[14] वस वह देसरे नहिं हेंवत न बसंत ॥
ना कोकिल न पपीहरा जेहि सुन आवें कंत

फिर फिर रोय कोई नहिं डोला | आधी रात बिहंगम[15] बोला ।
तुइ फिर फिर दाहे[16] सब पांखी | केहि गुन रैन[17] न लावेसि आंखी
नागमती केहि कारन[18] रोई ॥ | कासों कहूं जो कंत बिछोई[19]
मन चित हिये न उतरे भोरे | नयन कजल चय[20] रहे न मोरे
कोइ न जाय तेहि सिंहल दीपा | जेहिं सेवात कहं नयना सीपा
योगी होय निसरा सो नाहूं[21] । | तब हुन कहा संदेस न काहूं
नित पूछौं सब योगी जंगम | कोइ निज बात न कहै बिहंगम

गले लगाया १ तथा मर्द २ नाम चिड़िया ३-४-५-६ दिल ७ पेड़ ८ लाल आंख ९ जली हुई १० लाल ११ कुंदरू १२ छाती १३ बरसात १४ नाम चिड़िया १५ जलाना १६ रात १७ वास्ते १८ अलग १९ आंख २० खाविन्द २१

चार्यो[1] वक्र उजार भये सकस संदेसा टेक
कहों बिरह दुख आपन बैठ सुनहु दंड एक

तासों दुख कहिये हो बीरा
जेहि सुन के लागै पर पीरा
को होय भिम[2] दिन को लै रहा
को सिंहल पंहुचावै चहा ॥
जहां सो कंत गये होय योगी
हों किंगरी भइ झूर बियोगी[3]
वह सुन के पूरी करु भेटा[4] ।
हौं भइ भस्म न आव समेटा
कथा जो कहै आय पिय केरी
पांवर[5] होउं जन्म भर चेरी ॥
वह के गुन संवरत भइ माला
अबहुं न बहुरा उड़गा छाला
बिरह गुरु इख प्पर के हिया[6]
पवन अधार रहै सो जिया ।

हाड़ भई झुर किंगरी नसैं भई सब तांति ।
रोंव रोंव तन धुन उठै कहो बिथा तेहि भांति

पद्मावत सों कह्यो बिहंगम
कंत लुभाय रहै जेहि संगन
तूं घर घरनि[7] भई पिउ हरता
मोतन जप दीन्ही औ बरता
रावन कनक[8] सो तो कहं भयो
रावट[10] लंक मोंहि कै कियो ॥
तो कहं बैन सुख मिले शरीरा
मो कहं हिये द्वंद दुख पीरा ॥
हमहूं व्याह तोर सग पीऊ ॥
आपहि[11] पाय जान पर जीऊ
अबहू कर माया जिव फेरो ।
मोहि जियावदे हु पिय मेरो
मोहिं भोग सों काज न प्यारी
सौंह[12] दृष्टि की चाहन हारी ॥

सौत न होस आह तू बैरिन मोर कंत जेहिं हाथ
आन मिलाव एक बेर कैसें तोर पाय मो माथ

रतन सेन की मां सरस्वती ॥
गोपि चन्द जस मैनावती ॥
अंधरी बूढ़ी सुठ दुख रोवा ॥
जोवन[13] रतन कहां हेय खोवा

चारों तरफ़ १ नाम पहेलवान २ दुखी ३ मुलाक़ात कर ४ जूती ५ दिल ६ नाम चिड़िया ७ घरवाली ८ सोना ९ राखा १० अपना पैर जान के मेरी ज़िन्दगी चाह ११ सूधी निगाह १२ जवानी १३

जोवन[1] अहा लीन्ह सो काढ़ी | भइ बिन[2] टेक करै को ठाढ़ी ॥
बिन जोवन भई आस पराई | कहां सो पूत खंभ होय आई
नयन दृष्टि[3] नहिं दिया बराहीं | घर अंधियार पूत जो नाहीं
कोरी चला श्रवन[4] की ठाउं ॥ | टेक देह वह टेक्यो पाउं ॥
तुम श्रवन होय कांवर सजी | डार लाय सो काहे बजी[5] ॥

श्रवन श्रवन के रुर मुई माता कांवर लाग ।
तुम बिन पानि न पावे दसरथ[6] लावै आग ॥

लै सो संदेश बिहंगम[7] चला । | उठी आग सगरी सिंहला ॥
बिरह बिजाग[8] बीज को ठेगा । | धूम[9] सो उठी श्याम[10] भये मेघा
भरगा गंगन[11] लूक तस छूटी ॥ | होय सब नखत गिरहिं मुइं टूटी
जहं जहं भूमि[12] जरी भारेहू ॥ | बिरह कि दग्ध[13] भई जनु खेहू[14]
राहु केत जस लंका जरी ॥ | औ उड़ चिनग चांद महं परी ॥
जाय बिहंगम[15] समुंद डफारा[16] ॥ | जरे मच्छ पानी भा खारा ॥
दाढ़ी[17] बन बीहड़ जल सीपा ॥ | जाय नेर भा सिंहल दीपा ॥

समुंद तीर तरवर[18] इक जाय बैठ तेहि रूख ॥
जब लग कहि न संदेसा तब लग प्यास न भूख

रतन सेन बन करत अहेरा[19] ॥ | कीन्ह वही तरवर तरि फेरा ॥
सीतल वृक्ष समुंद के तीरा । | अति उतंग[20] औ छांह गंभीरा ॥
तुरी[21] बांध के बैठ अकेला ॥ | साथी और करहिं सब केला
देखत फिरै सो तरवर साखा | लाग सुनै पंखिन की भाखा
पंखिन महं जो बिहंगम अहा | नागमती जासो दुख कहा ॥

जवानी १ बेसहारे २ निगाह ३ नाम ब्राह्मन जो अंधी अंधा मां बाप को कांवर में लिये रहता था ४ छोड़ देना ५ राजा दशरथ ६ नाम चिड़िया ७ १५ जहां बिरह की बिजुली वहां बिजुली क्या दुशमनी करे ८ धुवां ९ काला १० आसमान ११ ज़मीन १२ जलना १३ राख १४ चिल्लाना १६ जलाना १७ पेड़ १८ शिकार १९

ऊंचा २० घोड़ा २१

पूंछहि सबै बिहंगम[1] नामा । अहो मीत[2] काहे तुम श्यामा
कहेसि मीत मासिक[3] दुइ भये जंबूदीप तहां हम गये ॥

नगर एक हम देखा गढ़ चितौर वह नाउ ॥
सो दुख कहौ कहौ लग हम ठाढ़े[4] तेहि ठाउ[5] ॥

योगी होय निसरा सो राजा । सून नगर जानहु धुन्द[6] बाजा
नागमती है ताकर रानी ॥ जरै बिरह जस कोयल बानी
अब लग जर भइ होय हे छारा[7] कही न जाय बिरह की झारा[8]
हिया[9] फाट वह जब हौं कुहके परै आंस सब होय होय लूके ॥
चहूं खंड छिटकी वह आगी । धर्ती जरत गंगन[10] कहं लागी ॥
बिरह दवान[11] को जरत बुझावा चहौ लाग सो हेरें धावा ॥
हौं पुसि तहां सुदाढ़े लागा ॥ तन भा श्याम जीव लै भागा

का तुम हंसो गर्ब[12] के करहु समुंद महं केल
मति अन्ह बिरही बस परहि दही अगिन जल मेल

सुनि चितौर राजे मन गुना ॥ बिधि संदेश मैं कासों सुना ।
को नखैर[13] पर पंखी बेसा ॥ नागमती कर कहै संदेसा ॥
को तूं मीत मन चेत बसेरू ॥ देवकि दानो पवन परवेरू ॥
रुद्र[14] ब्रह्म शिव बाचा तोही ॥ सो निज बात अंत कहु मोही
कहां सो नागमती तुई देखी ॥ कहेसि बिरह जस मरों बिशेखी
हौं राजा सोई भा योगी ॥ जेहि कारन वह ऐस बियोगी[15] ॥
जस तूं पंखी[16] हौं दिन भरों ॥ चाहौं कबहि जाय उड़ परों ॥

पलक आंख तेहि मारग[17] लागी दुनहु रहाहि
कोउ न संदेशी आवहिं तेहि कसंदेस कहाहिं

नाम चिड़िया १ दोस्त २ दो महीने ३ जलना ४ जगह ५ अंधियारा ६ राख ७ लूक ८ छाती ९ आसमान १० आग ११ गरूर १२ पेड़ १३ महादेवजी १४ दुखी १५ जानवर परन्द १६ राह १७

पूंछहि कहा संदेस बियोगू ॥ योगी भया न जानेहि भोगू ॥
धनी संग न संगे पूरे ॥ पानी बूड़ रात दिन भूरे ॥
394 तेल बैल जस बायें फिरे ॥ पैरे भंवर मंह सींह न टरे ॥
तुरी नाउं दाहिन रथ हांका । बायें फिरे कुम्हार का चाका ।
तुहि अस नाहिं जो पंथ भुलाना । उड़े सो आव जगत महं जाना ।
एक दीप का आयो तोरें ॥ सब संसार पाय तर मोरें ॥
दहने फिरे सो अस उजियारा । जस जग चांद सूर्य औ तारा ।

मुहमद बायें दिसा तजीएक श्रवन इक आंख
जब तें दाहिन होय मिला बोल पपीहा पांख

हौं धुव अचल सो दाहिन लावा । फिर सुमेरु चितौर गढ़ आवा ।
395 देखेउं तोरे मंदिर घमोई ॥ मान तोर आंधर भइ रोई ॥
जस अदन बिन आंधी आंधा । तस रुर भुई तोहि चितबंधा ॥
कहेसि मरों को कांवर लेय । पूत नाहिं पानी को देय ॥
गई प्यास लाग तुहि साथा । पानी देहि दसरथ के हाथा ।
पानी न पिये आग पै चाहा ॥ तोहि अस पूत जन्म अस लाहा ।
भागीरथी होहु कर फेरा ॥ जाय संवार मरन की बेरा ॥

तू सपूत मन ताकर अस परदेस न लेहि ॥
अब ताईं मुइ होय ही मुयहि जाय गन देहि

नागमती दुख बिरह अपारा । धर्ती स्वर्ग जरै तेहि झारा ॥
नगर कोट घर बाहिर सूना ॥ न्यौंजहोय घर पुरुष बहूना
तंका वरु परा बस टोना ॥ भूला योग छरा तोहि दोना ॥
396 वहतेहि कारन मर भइ मारा । रही नाक होय पवन अधारा ॥
कहु बीसहिं लै मोकहं रवाऊ मांस न कोया जोरुच काहू ॥

दुख १ सामने २ घोड़ा ३ तरफ़ ४ कान ५ नाम सितारा ६ पहाड़ ७ नाम मा
तापिता भक्त ८ गंगाजी ९ परमेश्वर नकेर १० रवाली ११ बदन १२

बिरह मयूर[1] नाग वह नारी । तू मंजार[2] कर बेग[3] गुहारी[4] ॥
मांस गिरा मांजर होय परी योगी अबहूं पंहुच लैजरी[5] ॥

देख बिरह दुख ताकर मैं सो तजा[6] बनबास ।
आयों भाग समुंद मंह तोह न छाड़े पास ।

अस पुनि जरा बिरह कर गंठा मेघ श्याम भये धूम जो उठा ॥
दाढ़ा[8] राहु केत गा दाढ़ा ॥ सूरय जरा चांद जर आधा ॥
औ सब नखत तराई[9] जरी ॥ टूटहिं लूक धर्ति महं परी ॥
जरै सो धर्ती ठांवहि ठाउं ॥ दहक पलास[10] जरे तेहिं दाउं ॥
बिरह स्वांस तस निकसी झारा दहि दहि परबत होहिं अंगारा ।
भंवर पतंग जरे औ नागा ॥ कोकिल भुजेल औ सब कागा
बन पंखी सब जीव लै उड़े ॥ जल पंखी जल महं दुख बूड़े ॥

हमहूं जरत तहं निकसा समुंद बुझायो आय
समुंद जरा पानि भारवारा धूम रहा जग छाय

राजें कहा रे स्वर्ग संदेसी ॥ उतर आव मोंहि मिल परदेसी
पाय टेक तुहि लावों हियरें[11] परम संदेश कहो होय नेरें ॥
कहा बिहंगम[12] जो बनबासी किन ग्रहीं न होय उदासी ॥
जेहि तरवर[13] तर तुम आसन कोऊ कोकिल काग बराबर दोऊ ॥
धर्ती महं बिष चारा परा ॥ हारल[14] जान भूमि[15] परहरा ॥
फिरों बियोगी डारहिं डारा ॥ करों चले कहं पंख संवारा ॥
जेहिं घरी घटत नित जाहीं ॥ सांझ जीव है देवसहिं[16] नाहीं

जो लहि फेरे मुक्त[17] है परों न पिंजर मांह ॥
जाउं बेग[18] थल आपन है जेहि बीच निवाह ॥

मोर १ बिहार २ जल्द ३ १८ मदद ४ बूटी ५ छोड़ना ६ ढेर ७ जलना ८ छोटे नख ९ ढांरन १० दिल ११ नाम चिड़या १२ पेड़ १३ यहि चिड़या पेड़ नहीं छोड़ती पानी पीने में भी लकड़ी चांच में लिये रहिती १४ जमीन छोड़ी १५ दिन १६ न जात १७

कहि संदेस बिहंगम[1] चला ॥ आग लाय सगरे सिंहला ॥
घड़ी बीत राजा घर आवा ॥ भा अलोप[2] पुनि दृष्टि[3] न आवा
पंखी नाउं न देखा पांखू ॥ राजा रोय फिरा के साखू ॥
399 जस हेरत[4] वह पंख हेराना ॥ दिन कहमहिं अस करब पयाना[5]
जो लहि प्रान पिंड इक ठाऊं[6] एक बार चितोर गढ़ जाऊं ॥
आवा भंवर मंदिर जहं केवा[7] जीव साथ ले गयो परेवा[8] ॥
तन सिंहल मन चितोर बसा जिव बेस भर नागिन जिम दुसा

जेत नारि हंस पूछी अमी[10] बचन जिमि निंत
रस उतराविय चढ़ रहा ना वह चिंतन मंत

बरस एक तहं सिंहल रही ॥ भोग बिलास कीन्ह जस चही
भा उदास जो सुना संदेसू ॥ संवरि चला मन चितोर देसू ॥
400 कमल उदासी देखा भवरा । थिर[11] न रही मालति मन संवरा
योगी औ मन पवन परावा ॥ कित थिर रहे जो चित उचावा
जो जिव काहु दे आवन कोई योगी भंवर न आपन होई ॥
चला कमल मालति[12] हिय[13] घाली अब कित थिर आछी अलआली[14]
गधर्प सेन आय सुनि वारी[15] ॥ कस जिव भयो उदास तुम्हारा

मैं तुमही जिव लावा दीनय नहं महं बास ॥
जो तुम होहु उदासी यहि का कर कैलाश ॥

रतन सेन बिनवा कर जोरी ॥ अस्तुति योग जीभ ना मोरी
सहस[16] जीभ जो होहिं गुसाई । कीन जाय अस्तुति जहं ताई
401 कांच किरा तुम कंवन[17] कीन्हा तब भारत न जोत तुम दीन्हा
गंग जो निरमल[18] नीर[19] कुलीना नार मिलें जल होय मलीना ॥

नामचिड़िया १ गायब २ निगाह ३ देखना ४ कूच ५ बदन ६ जगह ७ कमल तथा पद्मावत ८ जानवर परिन्द ९ मीठी बात १० क़ायम ११ तथा पद्मावत १२ दिल १३ भंवर १४ दरवाज़ा १५ हज़ार १६ सोना १७ पाक साफ़ १८ पानी १९

तसहों अहा मलीनी[1] कला । मिला आय तुम्ह भा निरमला[2]
पान समुंद मिला होय सोती[3] पाप हरा निरमल[4] भइ जोती ॥
तुम मन आवा सिंहलपुरी ॥ तुम तें बड़ा राज औ कुरी[5]

सात समुंद तुम राजा सरन[6] पाव कोंदे खाट ॥
सबै आय सिर नावहिं जहां तुम्हारा पाट[7] ॥

ओ मो विनय अब करौं गुसाईं तब लग कर्या[8] जीव जब ताईं ॥
आवा आज हमार परेवा[10] ॥ पाती दीन्ह आन पति देवा ॥
राज काज औ भइं उपराहीं ॥ सत्र[11] भाइ अस कोऊ नाहीं ॥
आपन आपन करहिं सोलीका[12] एकहि मार एक चहि टीका ॥
भई अमावस नखतहि राजू । हम कहं चन्द चलावह आजू
राज हमार जहां चल आवा ॥ लिख पठई अब होय पुरावा
वहां नेर दहिली सुलतानू ॥ होय हे भोर उठै जो भानू[13] ॥

रहहु अमर[14] महि[15] गगन लग औ जौ लह हम आव
सीस[16] हमार तहां नित[17] जहां तुम्हारे पाव ॥

राज सभा पुनि उठी सवारी । अन बिनती राखी पत भारी
भाइन मांझ होय जन फूटी ॥ घर के भेद लंक अस टूटी ॥
बिरवा लाय न सूखै दीजे ॥ पावै पान दृष्टि[18] सो कीजे ॥
अन राखा तुम दीपक लेसी ॥ पै न रहे पाहुन परदेसा ॥
जाकर राज जहां चल आवा उही देस पै ताकहं भावा ॥
हम दोउ नयन घाल के राखहिं एसु भाख यहि जीभ न भाखहिं
देवस[19] देहु सें कुसल सिधावहिं दीर्घ आयु[20] होय पुनि आवहिं

बेरोशनी १ पाक साफ़ २ सोना ३ साफ़ ४ इज्जत ५ बराबर नहीं कोई ६ तख़्त ७ अर्ज़ करना ८ बदन ९ क़ासिद १० दुशमन ११ हद १२ सूर्य्य १३ हमेशा ज़िन्दा १४ ज़मीन-आसमान १५ सिर १६ हमेशा १७ निगाह १८ दिनक़रार दो १९ बड़ी उमर हो २०

सबहि बिचारपरा अस भागयने करसाज ॥
सिद्ध गणेश मनावहिं बिधि पुरवे मन काज

बिनय करै पद्मावत बारी ॥ हों पिय कमल सो गोंद नेवारी
मुंहि अस कहां सो मालति बेली कदम सेवती चंप चमेली ॥
औ शृंगार हार जस तागा ॥ पुहुप कली अस हिरदय लागा
404 हों सु बसंत करों नित पूजा ॥ कुसम गुलाल सुदरसन गूजा
बकचन बिनवों रोस बिमोही । सुनि बकाव तज जाही जूही ॥
नागेसर जो मन है तोरी ॥ । पूजन सके बोल सर मोरी ॥
हों सदबर्ग लीन्ह में शरना ॥ आगें कर जो कंत तुहि करना

केते नारि समझावै भंवर न कांटे बेध ॥
कहै मरौं पै चितौर जज्ञ करों अश्वमेध

गवन चार पद्मावत सुना ॥ उठा धसक जिव औ सिर धुना
गहबर आय नयन भर आसू छाड़ब यहि सिंहल कैलाशू
405 छाड़्यों नेहर चल्यों बिछोही यहरे देवस होंहू तह रोई ॥
छाड़्यों आपन सखी सहेली । दूर गवन तज चल्यों अकेली
जहां न रहन भयो निज चालू होतेहि कसन तहां भा कालू
नैहर आय काहि सुख देखा ॥ जनु होय गयो स्वपन कर लेखा
राखन पार सो पिता निछोहा । कित बिवाह के दीन्ह बिछोहा

हिये आय दुख बाजा जिव जानहु गा छेक ॥
मन तेवान के रोये हर मंडार कर टेक ॥ ॥

पुनि पद्मावत सखी बोलाई सुनि के गवन मिली सब आई
मिलहु सखी हम तहवां जाही जहां जाय पुनि आवन नाही ।

ईश्वर १ अर्ज़ करना २ फूल ३ छाती ४ तारीफ़ सुनि गुस्सा नहीं आता ५ तथा नागमती ६ तथा राजा ७ अलग ८ दिन ९ बेदर्द १० जुदाई ११ दिल १२ पंहुचा १३ ईश्वर का नाम लाठी करके १४

सात समुद्र पार वह देश ॥ | किंतरे मिलन किन चाव संदेश
अगम पंथ परदेश सिधारी ॥ | नजनों कुशल नकि बियाह मारी
पिउ तें निछोह कीन्ह हिय मांहा | तहां कोह मरम वेधे हिय बांहा ॥
हम तुम एक मिले संगरेवला | अब बिछोह आनै गयं मेला।
तुम अस हिरू संगान पियारा | जियत जीव नहिं करौं निरारा

कंत चलाई का करौं आय सुजाय न भेंट ॥
पुनि हम मिलहिं कि नामिलैं लेहु सहेली भेंट

धनरोवत रोवहिं सब सरवीं ॥ | हम तुम दरव आप कह मरवी
तुम रे सीज जहं रही न पाहीं ॥ | पुनि हम काहिजो आहि पगहीं
आदिं पिता जो रहा हमारा ॥ | वहुंन याहि दिन हिय बिचारा
छोह न कीन्ह निछोही आहू | का हम दोष लागहु का मोहू ॥
मंगन गोहं कर हियो चराना। | पै सो पिता ना हिये छोहाना ॥
औहम देखा सखी सरेखे । | यहि नैहर पाहुन का लेखे ॥
तब लेहि पिय नैहर ना चाहा | जेहि सासुर अधिक होय लाहा

बात न कहं हम अवतरी चलन न सिखा नहं जाय
अब सो चलन चलावं कौ राखैं गहि पाय।

तुम बारी पिय भोजक राजा। | गर्ब कोध वहीं पै छाजा ॥
सब फल फूल वही की सारवा। | चहे सो तोड़ चहे सो रारवा ॥
आय सुलहे रहो निन हाथा। | सेवा करहु लाय मुहं माथा
बर पीपर सिर कैं भजो कीन्हा ॥ | पाकर तिन्न सूखी फर दीन्हा ॥
बंवर बोड़ सीसे मुहं लावा ॥ | बड़ फल सुफर वहीं पै पावा ॥

मुश्किल राह १ दुख सुख का हाल २ दे मेहरी ३ दिल ४ जुदाई ५ गरदन में डाला ६ चलन ७ हुक्म ८ पद्मावत ९ आदम १० मेहरबानी ११ बेदर्दी १२ पाप १३ शायद १४ छाती फटी १५ मेहरबान १६ बहुत फ़ायदा १७ पेदा १८ पैरपकड़ दो १९ राजा भोज २० ग़ुस्सा २१ हुक्म २२ बलंद २३ कद्दू २४ सिर २५

औ जोगिन के जेवनारही ॥ नव अमृत भासबउपराही ॥
सोइ पियारी पियहि पिरीती । रहै जो आयसु सेवा जीती ॥

पोथी काढ़ गवन दिन देखै कौन दिन्ह है चाल
दिसाशूल औ चक्र योगिनी सोहै न चलिये काल

आदित शुक्र पश्चिम दिसि राहू बेफे दक्षिन लंक दिसि दाहू ॥
सोम सनीचर पूरब चालू । मंगर बुद्ध उत्तर दिशि कालू ॥
आवै चला चहै जो कोई । औ षद कहं रोग नहीं होई ॥
मंगल चलत मेल सुख धनिया चले सोम देखै दरपनिया ॥
शुक्र हि चलत मेल सुख सारू बेफे चलै दक्षिन गुड़ वारू ॥
आदित तुंबोलत मेल सुखंडी बाय बगल सनीचर खंडी ॥
दूध दधि किये चलहु भोजना औषद यहि न आन खोजना

अवसुनि चक्र योगिनी तेइ शुद्ध यिं न रहाइ
नीसो देवस चन्द्रमा आठो दिसा फिराइ ।

बारह उनेइस चारि सत्ताइस ॥ योगिन पछम दिसा गिनाइस
नौ सोरह चौबिस औ एका ॥ पूरब दक्षिन कोन तेहि टेका ।
तीनि ग्यारह छब्बिस अथरा ॥ योगिन दक्षिन दिशा बिचारा
दुइ पचीस सत्रह औ दसा ॥ दक्षिन पछम कोन बिच बसा
तेइ सनीस आठ पन्द्रहो ॥ योगिन होहि पूर्ब सामहों ॥
चौदह बाइस उनतिस आन ॥ योगिन उत्तर दिसा कहं जान
बीस अठाइस तेरह पोच ॥ उत्तर पछम कोन नहं बाच

कूकुर मुख औ छह योगिन उत्तर पुरब के कोन ॥
यह गुन चक्र योगिनी बाच जोच हे सिधि होन

पैवा नवे पूर्ब परभाये ॥ दुइ जद सम्मी उत्तर आदाये ॥

दुबला १ सामने २ उनवार ३ उत्तर नरफ ४ सोमवार ५ जरुरत ६ दही ७
कायम ८ दिन ९ पैवा और नवीं को जाना मना १० दुइ जद सम्मी उत्तर मना ११

तीज[1] एकादश अगनू मारी ॥ चौथ[2] दुवादस नैऋत बारी ॥
पंचमी[3] तेरस दक्षिन रमेसरी छठ[4] चौदस पछम परमेसरी ॥
सतमी[5] पून्या बायब आछें ॥ अठैं[6] अमावस ईसान लहें ॥ 411
तिथ नक्षत्र गुर[7] बार कहीजै सुदिन साध प्रस्थान धरीजै ॥
सगुन दुधड़िया गिन साधना भद्रा और दिशा सूर बाचना
वक्र योगिनी गिने जो जाने परवर जीत लच्छ घर आने

सुख समाध आनन्द घर कीन्ह पयाना पीव
थर थर तन कांपै जो धरक धरक जाय जीव

मेघ[8] सिंह धन पूरब बसी ॥ वृष[9] कन्या मकर यम दिसी
मिथुन[11] तुला कुंभ पछाहा कर्कमीन[12] बिरछीक उतराहा
गवन करे कहं उगरे[13] कोई ॥ संमुख सोम[14] लाभ[15] बहु होई 412
दहिने चन्द्रमा सुख सरबदा । बायें चन्द्रायत दुख आपदा
अदित[16] होय उतर कहं कालू ॥ सोम काल बायब नहिं चालू
भूम[17] काल पछम बुधि नेरता गुर[18] दक्षिन शुक्र अगने बसे
पूरब काल सनीचर बसे ॥ पीठ दे काल चले सब हंसे ॥

धन न छत्र औ चन्द्रमा औ तारा बल सोय
समय एक दिन गवने लक्ष्मी केतक होय

पहिले चांद पूर्ब दिस मारा । दूजे बसे ईसान बिचारा ॥
तीजे उतर सो चौथे बायब । पचें सो पच्छम दिसा गिनायब
छठयें नैरत दक्षिन सतें ॥ बसे जाय अगनेउ सो अठें ॥ 413

तिथ-३-११ अगनो मना १ तिथ ४-१२ नैऋत मना २ तिथ ५-१३ दक्षिण बुरा ३ तिथ-६-१४ पश्चम मना ४ तिथ-७-१५ बायब मना ५ तिथ-८-३०-ईसान मना ६ अच्छा दिन ७ कूच ८ मेघ सिंह धन पूरब अच्छा ९ वृष कन्या मकर उतर अच्छा १० मिथुन तुला कुंभ पछम अच्छा ११ कर्क मीन वृश्चिक उतर अच्छ १२ निकलना १३ चाद १४ फ़ायदा १५ इतवार १६

नवें चन्द्र जो पृथ्वी[1] वासा ॥ दसयें चंद्र जो रहै अकाशा ॥
ग्यारें चंद पूर्व फिर जाय ॥ बहु कलेस सों देवस[2] भंवाय ॥
अशुन[3] भरन[4] रथ[5] तो भली ॥ मिरगसर[6] मोल[7] पुनरवस[8] बली
पुष्य[9] जेष्ठा[10] हस्ति[11] अनुराधा[12] ॥ जो सुख चाहै पूजे साधा ॥

तिथ नक्षत्र औ बार इक अष्ट सात[13] खंड भाग
आदि[14] अंत बुध सो यह दुख सुख अंक मलाग

परेवा[15] छठ एकादश नन्दा ॥ दुईज[16] सत्तमी द्वादश मन्दा ॥
तीज[17] अष्टमी तेरस जया ॥ चौथ[18] चतुरदस नोमी रक्या
पूरन[19] पूनों दसमी पाचें ॥ सुक्रे[20] नन्द[21] बुधि भानाचें ॥
अतित[22] सो हस्ति नखत सिधि लहिये बीफे पुष्य श्रवन शशि कहिये
भरन[23] रेवती बुधि अनुराधा ॥ भई[24] अमावस रोहिनि साधा ।
राहु चन्द्र भूमि[25] संपति आये ॥ चन्द्र ग्रहन तब लाग सजायें ॥
सुनि रक्ता[26] गज अज्ञा लीजै ॥ सिधि योग गुर परना कीजै ॥

जेहि नक्षत्र होय रबि[27] वही अमावस होय ॥
बीच परेवा जब मिलै सूर्य्य ग्रहन तब होय

चलहु चलहु भाषिय[28] कर चालू घड़ी न देख लेत जिव काल[29] ॥
समुंद लोक धन[30] चढ़ी बेवाना जो दिन डरे सो आय तुलाना[31]
रोवहिं मता पिता औ भाई ॥ कोउ नटे[32] के जो कंत चलाई ॥
रोवहिं सब नैहर सिंहला ॥ लै बजाय के राजा चला ॥

नोमी को चांद का वास ज़मीन पर १ दिन बीते २ नाम नक्षत्र ३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२ सातों मुल्क १३ अव्वल से आख़िर तक ख़ुशी १४ परेवा छठ एकादशी सफ़र करना अच्छा १५ दुईज सतमी द्वादसी बुरा है १६ तीज अष्टमी तेरस जीत १७ चौथ चतुरदस मैदेरी १८ पूरंमाशी-दसमी-पंचमी अच्छा १९ खुशी २० इतिवार को हस्ति नक्षत्र अच्छा २१ नाम नक्षत्र २२-२३-२४ ज़मीन २५ स्वांस का बिचार २६ सूर्य्य २७ रतन सेन २८ मौत २९ पद्मावत ३० पहुंचा ३१ रोकना ३२

तजा[1] राज रावन का गयो ॥ छाड़ा लंक भिभीषन लियो
फिरी सखी भेंट तज फेरा ॥ अंत कंत सों भयो गुरेरा[2] ॥
कोइ काहू का नाहिं नियाना[3] मया मोह बांधा उर झाना ॥

कंचन[4] कया सो नीरि[5] की रही न तोला मोस ।
कंत कसोटी घाल के चूरा[6] गढ़ै कि हांस ॥

जो पहुंचाय फिरा सब कोऊ चला साथ गुन अवगुन दोऊ
औ संग चला गवन सब साजा वही दई[8] अस पारै राजा ॥
डोली सहस[9] चली संग चेरी ॥ सबै पद्मिनी सिंहल केरी ॥
भल पटोर[10] खरवार[11] संवारी ॥ लाख चार इक भरी पेटारी ॥
रतन पदारथ[12] माणिक मोती काढ़ भंडार दीन्ह रथ जोती ॥
परख सो रतन पारखहिं[13] कहा इक इक नग सृष्टे[14] बर लहा ॥
सहस[15] पांत तुरयन की चली ॥ औ सौ पांति हस्ति[16] सिंहली ॥

लिखनी लाग जो लेखा कंह न पारहिं जोर
अर्ब खर्ब औ नील संख साहस पदम करोर ॥

देख दर्ब राजा गर्वाना[17] ॥ दृष्टि[18] मांह कोई और न आना
जो मैं होब समुंद के पारा ॥ कोहै मोहि[19] जगत संसारा ॥
दर्ब गर्ब लोभ बिष मूरी ॥ दत्त[20] न रहे सत्य[21] हो दूरी ॥
दत्त सत्य पै दोनों भाई ॥ दत्त न रहे सत्य पुनि जाई ॥
जहां लोभ तहं पाप संघाती ॥ संचे[22] मरै आन की थाती[23] ॥
सिद्धै[23] दर्ब आग के थापा ॥ कोइ जरा जार कोइ तापा ॥
काहु चांद काहि भा राहू ॥ काहू अमृत बिष भा काहू ॥

छोड़ना १ मुलाकात २ अंत ३ सोने की तरह बदन ४ पद्मावत ५ नाम ज़ेवर ६ पाप और पुन्य ७ ईश्वर पार लगावे ८ हज़ार डोली लौंडी ९ कपड़ा १० छाती ११ हीरा जवाहिर १२ जौहरी १३ सारी दुनिया की क़ीमत १४ हज़ार क़तार घोड़ा १५ हाथी १६ गरूर किया १७ निगाह १८ बराबर १९ देना २० सचाई २१

तस भूला मन राजा लोभ पाप अन्ध[1] कूप ॥
आय समुंद ठाढ़ भा होय दानी के रूप ॥ ॥

बोहित[2] भरी चला लै रानी ॥ दा नमांग सत देखी दानी[3] ॥
लोभ न कीजे दीजे दानू ॥ दानहि पुन्य होय कल्यानू[4] ॥
दर्ब दान देई विधि[5] कहा ॥ दान मोक्ष[6] होय दुख न रहा ॥
दान आहि सब दर्ब कि जूरू[7] ॥ दान लाभ होय बांचे भूरू[8] ॥
दान करे रक्षा मंझ नीरा ॥ दान गहे लै लावे तीरा ॥ ॥
दान करन[10] दै दुइ जग तरा ॥ रावन संचा[11] अगिन महं जरा ॥
दान मेरु[12] बड़ लाग अकारा[13] ॥ सेंत[14] कुबेर बूड़ मंझ धारा ॥

चालिस अंश दर्ब जहं एक अंश तहं मोर ॥
नाहित जरै कि बूड़ै की निशि[15] मूसहिं चोर ।

सुनि सुदान राजें रिसमानी कै बौरायस बौरे दानी ॥ ॥
सोई पुरुष दर्ब जेहि सेंते ॥ ॥ दर्ब हुतें सुनि बातें ऐतें ॥ ॥
दर्ब तें गर्ब[16] करै जो चाहा ॥ दर्ब तें धर्ती स्वर्ग निबाहा ॥
दर्ब तें हाथ आव कैलाशू ॥ दर्ब ते अप्सर छांड़ न पासू
दर्ब ते निरगुन हो गुनवंता ॥ द्रव्य ते कुब्ज[17] रूप रूपवंता ॥
द्रव्य रहे भुई दिपै ललारा[18] ॥ अस मन द्रव्य दिये को पारा ।
द्रव्य तें धर्म कर्म औ राजा ॥ द्रव्य तें सुद्ध बुद्धि बल काजा ॥

कहा समुंद रे लोभी बड़ी दर्ब नहिं झांप ॥
भयो न काहू आपन मूंद पिटारी सांप ॥ ॥

आधे समुंद आय सो नाहीं ॥ उठी वाउ आंधी उपराहीं ॥
लहरें उठी समुंद उलथाना[19] । भूला पंथ[20] स्वर्ग नयराना ॥

अन्धा कुवा १ नाव २ दान देने वाला ३ भलाई ४ ईश्वर ५ न जान ६ न्यो-छावर ७ असिल जमा ८ पानी में बचावै ९ नाम राजा १० जोड़ना ११ नाम पहाड़ १२ आसमान १३ जमा करना १४ रात १५ गरूर १६ बदसूरत १७ माथा १८ उलटना १९ राह २०

अदिन[1] आय जो पंहुचै काहू | पहन[2] उड़ाय वहै सो वाऊ ।।
बोहित[3] भई लंक[4] दिश ताकी | मारग[5] छांड़ कुमारग हांकी
जो लै भार[6] निबाह न पारा ।। | सो का गर्ब[7] करे कन्धारा[8] ।।
द्रव्य भार संग काहि न उठा ।। | जैसैं ताही[9] सों रुठा ।। ।।
गहि परवान[10] लै परवन ऊड़ा | मोर मोर जें कीन्ह सो बूड़ा ।।

द्रव्य जो जानहि आपना भूलहिं गर्ब मनाहिं
जोरे उठाय न लै सकहिं बूड़ चलहिं जल माहिं

खेवट[11] एक बिभीषन केरा ।। | आव मच्छ कर करत अहेरा[12] ।।
लंका कर अति राक्षस कारा । | आवै चला होय अंधियारा ।
पांच मूंड दस बांही ताही ।। | धड़ भा श्याम[13] लंक जब दाही[14]
धुवां उठै मुख स्वांस[15] सें घाता | निकसै आग कहै जो बाता ।।
फेकरें मूड़ चंवर जनु लाये | निकस दांत मुंह बाहर आये
देह रीछ की रीछ डेराई ।। | देखत दृष्टि[16] धाय जनु खाई
राते नयन[17] निडर जो आवा ।। | देख भयावन सब डर खावा

धर्ती पाय स्वर्ग सिर जानु सहस्रा[18] बाहु ।।।
चांद सूर्य्य औ नखत महं अस देखै जस राहु

बोहित[19] बही न मानहि खेवा । | राक्षस देख हंसा जनु देवा ।।
बहुते दिनहि बार[20] भइ दूजी । | अजगर केर आय भुख[21] पूजी
यहि पद्मिनी बिभीषन पावा | जानहु आज अयोध्या छावा
जानहु रावन पाई सीता ।। | लंका बसी राम रन जीता ।।
मच्छ देख जैसें बक[22] आवा ।। | टोय टोय भुइं पाव उठावा ।

बुरे दिन १ पत्थर २-१० नाव ३-१९ लंका की तरफ ४ राह ५ जब तक हो सका ६ गरूर ७ मल्लाह ८-११ जोड़ना ९ शिकार १२ काला १३ जलना १४ सांस के साथ १५ निगाह १६ लाल आंख १७ नाम राजा जिसके हज़ार हाथ थे १८ खुश-हुवा २० पेट भरा २१ बगुला २२

आय नेर होय कीन्ह जोहारू । पूंछा से सुकुशल व्योहारू ॥
जो बिस्वास घातका देवा । बड़ बिस्वास करे की सेवा ॥

कहां मीत तुम भूलेहु औ जाय हुकाहू घाट
हौं तुम्हार अस सेवक लाय देउं तुहि बाट ।

गाढ़ परे जिव बावर होई ॥ जो भल बान कुहै भल सोई
राजैं राक्षस नेर बोलावा ॥ आगें कीन्ह पंथ जनु पावा ॥
423 बहु बंसावरक्ष स कहं बोला । पैगटेक भूमि सब डोला ॥
तूं खेवैक खेवक उपराही ॥ बोहित तीर लाव गहि बांही
तुहि तें तीर घाट जो पाऊं ॥ नवै यही नोड़र पहिराऊं ॥
कुण्डल श्रवन देउं नग लाई । महरा की सोंपों महराई ॥
तस राक्षस तोर पूरों आसा । रक्षस डर की रहै न बासा ॥

राजैं बीड़ा दीन्ह नहिं जानी बिस्वासै ॥
ढुक अपनी भुव कौन होय मच्छ कर दास

राक्षस कहा गुसाईं बिनानी ॥ भल सेवक राक्षस की जाती
छीना लंक देही श्री रामा ॥ सेवा न छांड़ देह भड़ स्यामा
424 अबहं सेव करें संग लागे ॥ मानुष भले होहिं नहिं आगे ॥
सेत बन्ध राघव जहं बांधा । तेहि तें चढ़ों भार लै कांधा ॥
पै अब तुरत दान कुछ पाऊं । तुरत गही वहं बांध चढ़ाऊं ॥
तुरत जो दान पान हंस दीजे । थोरा दान बहुत पुन कीजे ॥
सेवक राय जो दीजे दानू ॥ दान नाहिं सेवा कर मानू ॥

दै बाचा सेत नाम्ह जेहि निरमल जोहि रूप ॥
आंधी बहुत उड़ाय कै मार गयो अन्ध कूप

खेयिन १ खेवा २ य कीन ३ राह ४ दुख ५ खुशी ६ खड़ा कुवा ८ ज़मीन ९ मल्लाह १० नाव ११ नाम ज़ेवर १२ कान १३ एतवार १४ मूख बासे १५ जलाना १६ काला १७ बोझ ले जास ना १८ रिवदमन १९ रिवदमन काह-

ई. २० मिसरा २१

जहां समुद संभ धार[1] भंडारू । फिरै पानि पानार दुआरू ।।
फिरफिर पानि वहीठांव मरै । फेर ननिकसै जो नहं परै ।।
वहीठांव महिरावन पुरी ।। हलकान[2] यमकातर चुरी ।।
वहीठांव महिरावन मारा । परे हाड़ जनु पेड़ पहारा ।।
परी रीड़ जोहि नाकर पाढी । सेतबंध अस आवदीठी ।।
राक्षस आन नहां के जुड़े ।। बोहित[3] भंवर चक्र महं पड़े ।।
फिरे लाग बोहित जस आई । जस कुम्हार धर चाक फिराई ।।

राजै कहा रे राक्षस जान बूझ बोरास ।।
सेतबंधु यह देवै कस न नहां तैजास

सुनि बावर राक्षस तब हंसा । जानहु स्वर्ग दूत भुइं गसा ।।
को बावर तुम बौरह देखा ।। जो बावर भुरुव लाग सरेखा ।।
बावर तुम जो भुरेव कहं आनी । नोहित न समझी पंथ भुलानी
पंरव जो बावर रहि धर माटी । जीभ चढ़ाय मंषे सब चींटी
महिरावन की रीर जो परी ।। कहा सो सेतबंधु बुधि हरी ।।
यहि सो याहि महरावन पुरी । जहवां स्वर्ग नेर घर दूरी ।।
अब पछतावद दर्ब जस जोरा । करहु स्वर्ग पर हाथ मरोरा

जोहि जिय न महिरावन लेत जगत कर भार
जो मरहाड़ न लेगा अस होय परा पहाड़ ।।

बोहित[4] भवहिं भंव सबु पानी । नाचै राक्षस आस तुलानी ।।
बूड़हिं[5] हंसि घोर मानवा ।। चढ़ूं[6] वि श आय जुरे मसखवा
नानरेव[7] नराज पंरवइक आवा । सिरवरै[8] दूत तस डंड[9] न डुलावा
परा[10] दृष्टि वह राक्षस रोवा । नाकिस[11] जैसु हंसि बड़ मोटा

बीचोबीच १ यम फांस २ पुल ३ नाव ४-६ आसमान ५ भूख कीपा-सआये ६ एह ७ चींटी ८ ऊमेद पूरी कुई १० हाथी ११-१२ आदमी १३ सीमुर १४ पहाड़ १५ बाज़ १६ निगाह १७

425

426

427

आयबही राक्षस पर टूटा ।।
वोहिते टूक टूक सब भई ।।
भये राजा रानी दुइ पाटा ।।

गहि लेउड़ा भंवर जल छूटा ।
ऐसु न जाना वहं कुहंगई ।।
दोनो बहे चले दुइ बाटा ।।

काया जीव मिलाय के मार किये दुइ खंड ।
तन रोवन धर्ती चला जीव चला ब्रह्मंड ।

मुर्छ परी पद्मावत रानी ।।
जानु चित मूरति गहि लाई
जब न पवन सही सुक वारा
लक्ष्मी मां समुंद की बेटी ।।
खेलत रही सहेली सेनी ।।
कहेसि सखे ली देखो पाटा ।
जो दुख वहिं विया हे स्वांसा ।।

कहं जिव कहं पवन सो न जानी
पाटा परी वही तस जानी ।।
तेहि सो परा दुख समुंद अपारा
ताकहं लच्छ होय जौ भेटी ।।
पाटा जाय लाग तेहि रेती ।।
मूरत आय लाग वहि घाटा
फूल मुवा पै मुई न बासा ।।

रंग जो राती प्रेम की जानहु बीर बहूट ।।
आय बही दधि समुंद मैं पै रंग गयो न छूट

लक्ष्मी लक्षण बनी सो लखी
कागद पतिरी जैसो शरीरा ।।
लहर झकोर उड़हि जल भीजा
आप सीस लै बैठी कोरा ।।
फरकी समुझ परा तन जीऊ ।
पानि पियाय सखी मुख धोई
नव लक्ष्मी दुख पूछ सो लोही

कहेसि न मरी संभारहु सखी
पवन उड़ाय परी मंझ नीरा
मोह रूप रंग नहिं कीजो ।।
पवन डुलावे सीस चहुं आरा
मांगेसि पानि बोल कै पीऊ ।।
पद्मिन जान कमल संग केई
विया समुझ बात कहु मोही

देखि रूप तोर आगर लागरहा चित मोर ।।
केहि नगरी की नागर काहि नाउं धन तोर

१ कहु ना २ नाव ३ राह ४ बदन ५ आसमान ६ नसवीर ७ दोलत ८ मुर्झाना
९ लाल १० पानी में ११ नुकसान १२ सिर १३ गोद १४

अनुवादित

नयन पसार चेत धन[1] चेती | देखी काह समुंद की रेती ॥
आपन कोउ न देखेसि तहां | पूंछेसि को तुम को हम कहां
अहै जो सखी कमल संग कोई[2] | सो नाहीं मोहिं कहां बिछोई[3] ॥ 430
कहां जगत मन पिया पियारा | जस सुमेरु[4] बिधि[5] गरु संवारा
ताकर गरवी प्रीति अपारा ॥ | चढ़े हिये[6] जनु चढ़े पहारा ॥
रहै न गरवी प्रीति सो झांपी | कैसें जियों भार दुख चांपी ॥
कमल कली की जोड़ी नाहा[7] | दीन्ह बहाय उदधि[8] जल माहा

आवा पवन बिछोह[9] का पाति परा बिकरार।
तरवर[10] तजी जो चूरकै लागै कोहे की डार।

कहेनि न जानहिं हम तोर पीउ | हम तूं पाइ रहा नहिं जीउ ॥
पाटा परी आय तूं बही ॥ । | ऐसो न जानहिं धौं कहं अही
तब सुधि पद्मावत मन भई | संवरि बिछोह[11] मुरछ मरगई
नयनह रक्त सुराही ढारा ॥ | जनहु रक्त[12] सिर काट पयारा 431
खनहि[13] चेत खन होबि करारा | भा चन्दन बन्दन सब छारा[14]
बावर होय सो परी पुनि पाटा | देहु बहाय कंत जेहिं घाटा ॥
को मोहिं आग देय रच होरी | जियत न बिछुड़ै सारस जोरी

जेहिं सर मार बिछोगा देहु वही सिर आग।
लोग कहै यहि सर[15] चढ़ी हौं सो जरों पिय लाग

काया[16] उदधि[17] चितों पिय पाहां | देखों रतन सो हिरदय[18] मांहा
जनहु आहि दरप न मम हिया | तेहि महं बैठि देखावै पिया 432
नयन[19] नीर भीजत सुठ दूरी ॥ | अब तेहि लाग मरों सुठ झूरी
पिय हृदय महं भेट[20] न होइ | कोरे मिलाव कहों केहि रोई

पद्मावत १ कोकावेली २ अलग ३-९-११ पहाड़ ४ ईश्वर ५ दिल ६-१८
खाविन्द ७ समुंद्र ८ पेड़ १० जानवर ज़बह कर छोड़ दिया १२ कभी १३ राख १४
चिता १५ बदन १६ समुद्र १७ आंसू १९ मुलाक़ात २०

स्वांस पास नित आवे जाई । सो न संदेश कहै मोहिं आई
नयन कौड़िया भई मंड़राहीं । थिरक मार पै आवहिं नाहीं ॥
मन भंवरा वह कमल बसेरी । होय मरजियान आये हेरी ॥

साथी आथ नियाथ जो सके न साथ निवाह
जो जिय जारे पिय मिले भेटरे जिय जर जाहि

सती होय कहं सीसे उघारी घने महं बीज घाव जिमि मारी
सेंदुर जरै आग जनु लाई ॥ सिर की आग संभार न जाई
छूट मांग सब मोति परोई ॥ बारहिं बार गिरहिं जनु रोई ॥
दूटहिं मोति बिछोह के भरे श्रावन बूंद गिरहिं जनु झरे
फेर फेर कर जोवन करा ॥ जानहुं कनक अगिन महं जरा
अगिन मांग पै देइ न कोई ॥ पाहुन पवन पान सम होई ॥
खीन लंक टूटी दुख भरी ॥ बिन रावन केहि बरे होय खरी

रोवत पंख बिमोही जनु कोकिला अरंभ
जाकर कनक लुटा सो बिछुड़ी प्रीतम खंभ

लक्ष्मी लाग बुझावे जीव - नामर बहिन मिलहि तोर पीव
पियो पानि होय पवन अधारी जस हों तुहूं समुंद की बारी
मैं तोहि लाग लेत खटवाटू खोज बीपैं तें जहां लग घाटू
हौं जेहि मिलों ताहि बड़ भागू राज पाट औ देउं सुहागू ॥
कहि बुझाय के मंदिर सिधारी भई ज्योनार न जेवें नारी ॥
जेहि रे कंत कर होय बिछोवा कातेहि नींद भूख सुख सोवा
जीव हमार पीउ ले आहा ॥ दरशन देव लेव चित चाहा

जो माल के साथी थे १ सिर २ बादल ३ बिजुली ४ बिरह ५ जवानी ६ सोना ७ महिमाल ८ हवा-पानी दतेहैं ९ पतली कमर १० तथा राजा रतन सेन ११ ताक़त १२ मोह जाना १३ बेक़रार १४ सोना १५ लड़की १६ बाप १७ पद्मावत १८ जुदाई १९

लक्ष्मीं जाय समुंद पहं ये बातें सब बाल।
कहा समुद अहे घट मोरें आन मिलावों काल

राजा जाय तहां बहि लागा। जहां न कोइ संदेशी कागा
तहां एक परवन हा धूंगा ॥ जंहवा सब कपूर औ मूंगा ॥
तहं चढ़ हेरो कोइ न साथा। द्रव्य समेट कुछ लाग न हाथा
रहा जो रावन के रबसैरा ॥ गा हेराय कोइ मिले न हेरा ॥
डाढ़ मार के राजा रोवा ॥ कैं चितौर गढ़ राज बिछोवा
कहां मोर सब द्रव्य भंडारू। कहां मोर सब कटक कंधारू
कहां तुरंग मोर बांका बली कहां मोर हस्ति सिंहली ॥

कहं रानी पद्मावत जीव बसे जेहि माहिं
मोर मोर के खोयों भूल गर्ब औ गाहिं

चंपा भंवरा गुरु जो मिलावा। मांगे राजा बेग न पावा ॥
पद्मिन चाह जहां सुनि पाऊं परों आग औ पानि धसाऊं ॥
ढूंढौं पबति मेरु पहारा ॥ चढौं स्वर्ग औ परों पतारा ॥
केहां सो गुरु पाऊं उपदेशी अगम पंथ कर होय संदेशी
परयों आय यह समुंद अथाहा जहां न वार न पार न थाहा
सीता हरन राम संग्रामा ॥ हनुमत मिला जिता तब रामा
मोहिं न कोइ बिनवों केहि रोई को सहाय उपदेशिक होई ॥

भवेर जो पावै कमल कहं मन आरत बहु केल
आय परा कोइ हस्ति तहं चूर किये सो बेल

कासों पुकारों का पहं जाऊं ॥ गाढ़े मीत होय तेहि ठाऊं ॥
को यह समुंद मथे बल वाढ़ा। को मथ रतन पदारथ काढ़ा ॥

उंचा पहाड़ १ देखना २ मकान ३ अलग ४ फ़ौज भारी ५ घोड़ा ६ हाथी ७ गरूर गहिरा ८ जल्द ९ बीहड़ १० आसमान ११ राह बतानेवाला १२ मुशकिल राह १३ मिन्नत १४ दुख १५ पियारा दोस्त १७ जगह १८

कहां सो ब्रह्मा बिस्नु महेशू[1] | कहां सुमेरु[2] कहां वह शेशू[3] ॥
को अस साज देइ मोहिं आनी | बासुकि[4] दाम[5] सुमेरु मथानी ॥
कोदधि समुंद मथे जस मथा | करनी सार न कहिये कथा ॥
जौ लहि मथे न कोइ दै जीव । | सूधी अंगुरि न निकसै घीव
लै नग मोर समुंद भा बटा ॥ | गाढ़ परै तौ लै परगटा ॥ ॥

लील रहा अब ढील[6] होय पेट पदारथ[7] मेल ॥
कोउ जियार करै जग झांपा चन्द उघेल ॥

ए गुसांइं[8] तू सिरजनहारू[9] ॥ | तुई सिरजायहि समुंद अपारू
तुइ अस गगन[10] अन्तरिक्ष[11] राखा | जहां न टेक[12] न थूनि न खाभा
तुइ जल ऊपर धर्ती राखी ॥ | जगत भार लै भार न थाकी ॥
चांद सूर्य्य औ नखतहिं पाती | तोरे डर धावहिं दिन राती ॥
पानी पवन आग औ माटी ॥ | सब की पीठ तोर है सांटी[13] ॥
सोइ मूरख औ बावर अन्धा । | तोहिं छांड़ चित औरहि बन्धा
घट घट जगत तोर है दीठी[14] ॥ | हौं अन्धा जेहि सूझ न पीठी ॥

पवन[15] हिये भा पानी पानि हिये भइ आग
आग हिये भइ माटी गोरख धन्धे लाग ।

तुइं जिव तन मिल बसै आऊ | तुही बिछोवस[16] करेसि मिलाऊ
चौदह भुवन[17] सो तोरे हाथा । | जहं लग बिछुड़ी आवइ कसाथा
सब कर मर्म[18] भेद तोहि पाहां । | रोठं जमावसि दूटी जाहां ॥
जानेसि सबै अवस्था[20] मोरी । | जस बिछुड़ी सारस की जोरी
एक मुई रुर मुई सो दूजी ॥ | रहा न जाय आयु[21] अब पूजी ॥

महादेवजी १ पहाड़ २ नाम राजा सापों का ३-४ रस्सी ५ बेखौफ ६ लाल ज
वाहिर ७ ईश्वर ८ पैदा करनेवाला ९ आसमान १० बीचो बीच में लटका हुवा
११ सहारा १२ कोड़ा १३ निगाह १४ हवा १५ दिल १६ जुदाई १७ सात
परदा आसमान सात परदा ज़मीन १८ भेद १९ हाल २० उमर तमाम २१

भूरत तपत दगध का मरौं ।। कलेपों माथ बेगि निसतरौं ।।
मरौं सो लै पद्मावत नाऊं ।। तुइं कंत रि करेसि इक ठाऊं ।।

दुख तेहि पीरित सदा बियोग सुख न हिये सो वे कोय ।
यही बाउ तन डरपै मित्र न बिछो वा होय ।।

का हि केउ ठा समुद महं आवा काढ़ कटार गीव लै लावा ।।
कहा समुद पापी अब घटा ।। ब्राह्मन रूप आय परगटा ।।
तिलक दुआदस मस्तक कीन्हे हाथ कनक बैसाखी लीन्हे
मुद्रा श्रवन जनेऊ काधे ।। कनक पैत्र धोती नरि बांधे
पांवरि कनक जड़ाऊ पाऊं ।। दीन्ह असीस आय तेहि ठाऊं
कहुं कुंवर मोसे सत बाता ।। का हि लाग करेसि अपघाता
परहसि मरेसि कि कौनि लाजा आपन जिउ देइ सब काहू काजा

जनक टार कंठ लावेसि समुद देख मन आप
सकल जीव जो काढ़ेसि महादेव ओ पाप ।।

को तुम उत्तर देय हो पांडे ।। सो बोलेजा को जिउ भाडे ।।
जंबूदीप केर हौं राजा ।। सो मैं कीन्ह जो करतन छाजा
सिंहलदीप राज घर बारी ।। सो मैं जाय बिवाही नारी ।।
लख वो हिनें दीप जो तें भरी । लगा अमोल ओ सब निरमरी
रतन पदारथ मानिक मोती । हती न खागी संपति ओती ।।
बहल घोड़ हस्ती सिंहली ।। ओ संग कुंवर लाख दुइ बली
तेहि गोहन सिंहल पद्मिनी । इक सो एक चाह रूप मनी ।।

पद्मावत जग रूप मन कहें लग कहुं उहेल ।।
तेस समुद महिं खोया हौ काजियो अकेल ।।

जलाना १ सिर काटना २ जल्द ३ न जाना ४ ईश्वर ५ जगह ६ जुदाई ७ गरदन ८
ज़ाहिर ९ सोने की लाठी १० कान में बाली ११ सोने की पटरी १२ खड़ाऊं १३ खुरकुरी
१४ निन्हासे हंसी १५ पाप १६ जवाब १७ बदन में जान १८ सज़ावार १९ नाव २० साफ़ २१

हंसा समुद होय उठा अजूरा[1] । जग जो बूड़ सब कहि कहि मोरा ।
तोर होय तोहि परै न बेरा[2] ।। बूझ बिचार तुहीं कहु केरा ।
हाथ मरोर धुनै सिर मांखी । पै तोहि हिये न उघरै आंखी[3]
442 बहुत आय रोय सिर मारा । हाथ न रहा झूंठ संसारा ।।
जो पै जगत होत थिर माया[4] । सेंतत सिद्धि न पावत राया[5] ।।
सिद्धै द्रव्य न सेंता गाड़ा । देखा भार चूंब कै छाड़ा ।।
पानी की पानी महं गई ।। तुइं जो जिया कुशल सब भई[6]

जाकर दीन्ह जिव औ काया[7] लेहि चाह जब चाव ।
धन लक्ष्मी सब ताकर लिये ताका पछताव

अन पांड़े[11] पर कहि का हानी[12] । जो पाऊं पद्मावत रानी ।।
तपै के पावा[13] मिल के फूला । पुनि तेहि खोइ सोई पंथ[14] भूला
पुरुष न आपन नार सराहा[15] । मुये गये[16] संवरा पै चाहा ।।
443 कहं अस नार जगत उपराहीं । कहं अस जीव मिलन सुख छाहीं
कहं अस रहस भोग अब करना । ऐसे जिये चाहि भल मरना ।।
जहं अस परी समुंद मग दिया[17] । तेहि किम जिया चहै मरजिया
जस ये समुंद दीन्ह दुख मोका । दैहत्या झकरों शिव[18] लोका

कामैं यह का नसावा कामैं संवरा दाव ।।
जाय स्वर्ग[19] पर होय है यहि कर मोर नियाव

जो तु मुवा कित रोवस खरा । ना मुर[20] मरै न रोवै मरा ।।
444 जो मरभा औ छाड़ेसि काया[21] । बहुर[22] न करै मरन की दाया ।।
जो मर भयो न बूड़ै नीरा[23] ।। । बहत जाय लागे पै तीरा[24] ।।

रोशनी १ तेरे पास रहिनी २ दिल ३ दुनिया ४ क़ायम ५ दौलत ६ फ़क़ीर न जमा करना ७ राजा ८ खैरियत ९ बदन १०-२१ ऐ ब्राह्मण ११ नुक़सान १२ मेहनत करके १३ राह १४ तारीफ़ १५ बाद मरने के १६ जवाहिर चिराग़ की तरह रोशन १७ परमेश्वर के दरबार में १८ आसमान १९ हिलना २० फिर २२ पानी २३ किनारा २४

तुहों एक मैं बावर भेटा[1] ॥ । जैस राम दशरथ कर बेटा ॥
वहू नारि कर पड़ा बिछोवा[2] यही समुंद महं फिर फिर सेवा
पुनि जो राम खोई[3] भा मरा । तब एकांत भयो मिल तरा ॥
तस मर होहु मूंद अब आंखी लावों तीर[4] टेक[5] बैसाखी ॥

बावर अन्ध प्रेम का लुब्धा सुनत वही भा बाट
निमय[7] एक महं लेगा पद्मावत जेहिं घाट ॥

पद्मावत कहं दुख तस बीता । जस अशोक बिरवा तरि सीता
कनक लता दुइ नारंग भरी ॥ तेहि क भार उठ सकै नहिं खरी
तेहि पर अलक भुअंगिन डसा सिर पर चढ़ हिये[10] परगसा ॥
रहि मरनाल[11] टेक दुख दाढ़ी । आधी कमल भई शशि[12] आधी
नलिन[13] खंड दुइ तस कर हाऊं रोमावली[14] बिछूक कहाऊं ॥
रही टूट जिमि कंचन[15] तागू ॥ को पिय मिलवे देइ सुहागू ॥
पान न खावै करै उपासू ॥ । फूल सूख तन रही न बासू ॥

गंगन[16] धर्ति जल बूड़ गये बूड़त होय निसांस ।
पिय पिय चातृक[17] ज्यों रटी मरै सेवांत पियास

लक्ष्मी चंचल नारि परेवा । जेहि सत[18] होय छरै के सेवा ॥
रतन सेन आवे जेहि बाटा[19] ॥ अगमन[20] जाय बैठ तेहि घाटा
और भई पद्मावत रूपा ॥ । कीन्हेसि छांह जरै जेहिं धूपा
लख सो कमल भंवर होय धावा स्वांस लीन्ह वह बास न पावा ॥
निरखत[21] आय लक्ष्मी दीठी[22] ॥ रतन सेन तब दीन्ही पीठी ॥
जो भल होत लक्ष्मी नारी ॥ तजमिहेश[23] कित होत भिखारी

मुलाक़ात १ जुदाई २ बहुत कोशिश किया ३ किनारा ४ लाठी पकड़ ५ मस्त ६ पल ७ सोने की डाली तथा छाती ८ बाल नागिन की तरह ९ छाती १० कमर पकड़ के ११ चांद १२ कमल १३ छाती के बाल १४ सोना १५ आसमान ज़मीन १६ पपीहा १७ सच्चे को छलती १८ राह १९ पहिले २० देखना २१ देखा २२ म

पुनि धनि फिर चेतहोय रोई ॥	पुरुष पीठ कस दीन्ह निछोई ॥

होरानी पद्मावत रतनसेन तुइ पीउ ॥
आय सुदइ सहुं छांडि चवोय देत सैं जीव ॥

मैं हों सोई भंवर औ भोजू ॥	लेत फिरौं मालति कर खोजू ॥
मालति नारि भंवर अस पीऊ	कहंवह बास रहै थिर जीव ॥
का तुइं नारि करेसि अस सोई ॥	फूल सोई पै बास न होई ॥
भंवर जो सब फूलन कर फेरा	बास न ले मालति हि हेरा ॥
जहां पाव मालति कर बासू ।	वहीं जिव दै होवे दासू ॥
कित वह बास पवन पंडुचावे ।	नव तन होय पेट जिव आवे ॥
हौं वह बास जीव बलि देऊं ॥	और फूल की बास न लेऊं ॥

भंवर मालति हि पैचे हे कांदन आवे दीठ ॥
सो हैं भाल खाये हैं ये पे फेरे नहिं पीठ ॥

नवहंस कह राजा वह गऊं ॥	जहां सो मालति चल लै जाऊं
लेसो आय पद्मावत पासा ।	पानि पियाई मरत पियासा ॥
पानी पिवो कमल तप तपा ।	निकसा सूर्य्य स मुहं छपा
मैं पावा पिय समुद के घाटा ।	राज कुंवर मन दिपै लै लोटा ।
दसनौ दीप जस हीरा जोती ॥	नयन कचूर भरे जनु मोती ॥
भुजा लंक जर कोहर जिता ॥	मूरति कान्ह देख मो पिता ॥
जस नल तपत दोमन हि पूछा	तस बिन प्रान पिण्ड है छूछा

जस तुइं पद के पदारथ तैस रतन तुहि योग ॥
मिला भंवर मालति कहे करहु देउ दिश भोग

पद के पदारथ रतन जो होती	सुनत हिं रतन चढ़ी मुख जोती

पद्मावन रूप लक्ष्मी १ बेदर्द २ राजा भोज ३ पता ४ कायम ५ देखना ६ न्यो-छावर ७ नया बदन ८ निगाह ९ सामने कांटा १० छाती ११ सिर १२ दांत १३ कटोरी १४ बांह-कमर-छाती चीता की सी १५ रानी दमन १६ बदन १७ खाली १८

जानहु सूर्य्य कीन्ह परकाशू[1] | दिन बहुरा भा कमल बिकासू[2]
कमल जो बिहस सूर्य्य मुख दरसा | सूर्य्य कमल दृष्टि[3] सो परसा ॥
लोचन[4] कमल श्री मुख सूरू[5] | भयो अनंत[6] दुहूं रस रूरू ॥ 449
मालति[7] देख भंवर[8] गा भूली ॥ | भंवर देख मालति बन फूली ॥
देखा दरस भये इक पासा ॥ | वह वह की वह वह की आसा ॥
कंचन दाह[9] दीन्ह जनु जीव ॥ | उगवा सूर्य्य छूट गा सीऊ[10] ॥

पाय मरी धन पीय के नयन न मोरज मेट ॥
अचरज भयो सबन कहं भइ शशि[11] कमलहिं भेट

जन काहू कह होय बिछोऊ ॥ | जस वै मिले मिले सब कोऊ
पद्मावत जो पावा पीऊ ॥ ॥ | जन मरजियें परा तन जीऊ ॥ 450
के न्योछावर तन मन वारे । | पायन परी घाल कै नारे[13] ॥
नव[14] अवतार दीन्ह विधि[15] आजू | रही छार[16] भई मानुष साजू ॥
राजा रोय घाल गिर[17] पागा । | पद्मावत के पायन लागा ॥
तन जिय महं बिधि[18] दीन्ह बिछोऊ | अस नगरी तब चीन्ह न कोऊ
सोई मार छार[19] के मेटा ॥ | सोई जियाय करावे भेटा ॥

मुहम्मद मीत जो मन बसे तेही मिला विध आन
संपत बिपति पुरुष कहं काह लाभ[20] का हान[21]

लक्ष्मी सों पद्मावत कहा ॥ | तुम प्रशाद पायो जो चहा ॥
जो सब खोय जाहिं हम दोऊ | जो देखै भल कहै न कोऊ 451
जे सब कुंवर आय हम साथी | औ जिन हस्ति[22] घोर आवाथी
जो पावें सुख जीवन भोगा | नाहिन मरन भरन दुख रोगा

रोशनी १ खिलना २ निगाह ३ आंख ४ सूर्य्य ५ दोनो खुश हुवे ६ तथा पद्मावत ७ तथा राजा ८ सोना औटा हुवा ९ जाड़ा १० चांद ११ जुदाई १२ गरदन १३ नई पैदायश १४ ईश्वर १५-१८ राख १६ गले मैं पगड़ी १७ धूर १९ फायदा २० नुकसान २१ हाथी २२

तब लक्ष्मी गइ पिता[1] के ठाऊं | जो यहि कर सब बूड़ सो पाऊं
तब सो जरी[2] अमृत लै आवा | जो मरहत[3] सो छिड़क जियावा
एक एक कै दीन्ह सो आनी | भा सतोष[4] मन राजा रानी ॥

आय मिले सब सामा हिलमिल करहिं अनन्द
भई प्राप्त सुख संपति गयो छूट दुख धन्ध

और दीन्ह बहु रतन[5] परवीना | सो न रूप जो मनहि न आना ।
जे बहु मोल पदारथ[6] नाऊं | का तेहि बरन[7] कहूं तुम ठाऊं ।
तेहि कर रूप भाव को कहा | इक इक नग सृष्टे[8] बर लहा ॥
हीर फार बहु मोल जो अही | ते सब नग चुन चुन के गही[9] ॥
जो इक रतन भुनावै कोय । | करै सोई जो मन महं होय ॥
द्रव्य गर्ब[10] मन गयो भुलाई | हम[11] सम लच्छ मनहि नहिं आई
लघु दीरघ[12] जो द्रव्य बखाना | जो जेहि चही सोई तेहि माना

बड़ औ छोट दोउ सम स्वामकारजी सोय ।
जो चाही जेहि काज कहं वही काज सों हाय

खंड उनतीसवां समुद और लक्ष्मी खंड

दिन दस रही जाय पहुनाई | पुनि भइ बिदा समुद सो जाइ
लक्ष्मी पद्मावत सों भेटी ॥ | जो सो कहा अपनी सो बेटी ॥
समुंद दीन्ह पान कर बीरा ॥ | भरके रतन[13] पदारथ हीरा ॥
और पांच नग दीन्ह बिसेखी | श्रवन[14] सुनी नयन नहि देखी ।
एक सो अमृत दूसर हंसू । | औ तीसर पंखी कर बंसू ॥
चौथ दीन्ह सावक[15] सा दूरू | पांचो परस जो कंचन[16] मूरू ॥
तुरत तुरंग[17] दोउ चढ़ाई ॥ | जल मानुष अगवा संग लाई

वाप १ सजीवन मूर २ जो मर गये थे ३ सब्र ४ पत्थर ५ जवाहिर ६ रंग ७ दुनिया का मोल ८ लेना ९ ग़रूर १० हमारे बराबर कोइ नहीं ११ छोटे बड़े १२ जवाहिर १३ कान १४ शेर का बच्चा १५ सोना १६ घोड़ा १७

भेंट[1] समुंदिन[2] तब कियो फिरे नायके माथ ॥
जल मानुष तबहीं फिरे जब सो आय जगनाथ

जगन्नाथ दरसन कहं आये । भोजन रींधा भात पकाये ॥
राजें पद्मावत सों कहा ॥ सांठ[3] नांठ कुछ गांठ न रहा ॥
सांठ[4] हेग्य जासों सो बोला ॥ नष्ट[5] जो पुरुष[6] पात ज्यों डोला
सांठे[7] रंक चले मोराई[8] ॥ नष्ट[9] रावस बकहं बोराई
सांठें आव गर्ब[10] तन फूला ॥ नष्टहि[11] बोल बुद्धि बल भूला ॥
सांठें[12] जाग नींद निशि[13] जाई ॥ नष्टें[14] कहें हेग्य औं घाई ॥ ॥
सांठें[15] दृष्टि जोत हो नयन ॥ नष्टहिये[16] मुख आव न बैना[17] ॥

सांठें रहै सिधन[18] तन नष्टहि[19] आगर[20] भूख ॥
बिन[21] गंठ वृक्ष निपत्र[22] ज्यों ठाढ़ ठाढ़ पै सूख

पद्मावत बोली सुनि राजा ॥ जीव गये धन कौने काजा ॥
रहा द्रव्य तब कीन्ह न गांठी पुनि कित मिलै लच्छ[23] जो नाठी
मुक्तों सांठ[24] गाठ जो करे ॥ सांकर[25] परे साई उप[26] करे ॥
जोहि तन पंख जाय जहं ताका पैग[27] पहार होय जो थाका ॥
लक्ष्मी रहा दीन्ह मोहि बीरा भर के रतन पदारथ हीरा ॥
काढ़ एक नग बेग[28] भजाऊ बहुरे लच्छ[29] फेर दिन पाऊ ॥
द्रव्य भरोस करै जन कोई ॥ सांठ सोई जो गाठी होई ॥

जोर कटक[30] पुनि राजा घर कहं कीन्ह पयान[31] ॥
देवसहिं[32] भानु[33] अलोप भा बासुक[34] इन्द्र सकान

मुलाक़ात १ लक्ष्मी २ दौलत गई ३ दौलत ४ बेदौलत ५ मर्द ६ कमीना मालदार ७ अकड़के ८ राजा ९ गरूर १० बेदौलत ११ मालदार १२ रात १३ ग़रीब १४ निगाह १५ दिल १६ आवाज़ १७ दिलजमई १८ ग़रीब १९ बहुत २० बेरुपया २१ बेपता २२ दौलत जाती रही २३ दौलत होने के समय २४ तंगी २५ काम आवे २६ क़दम २७ जल्द २८ दौलत २९ फ़ौज ३० कूच ३१ दिन ३२ सूर्य्य ३३ नाम राजा सांप

चितौर आय नेर भा राजा ॥ फिरा जियत इन्द्रासन गाजा ॥
बाजन बाजे होय अडोरा[1] ॥ आवहिं बहल हस्ति[2] औ घोरा ॥
456 पद्मावत चंडोल जो बैठी ॥ पुनि गइ उलट स्वर्ग[3] सों दीठी[4] ॥
यहि मन ऐंठा रहे न सूधा ॥ बिपत न संवरै संपति लुब्धा[5] ॥
सहस[6] बरष दुख सहै जो कोई ॥ घड़ी एक सुख बिसरै सोई ॥
योगिन यही जान मन मारा ॥ तेहूं न यह मन मरै अपारा ॥
रहै न बांधा बांधा जेहीं ॥ तेलियां[7] मारडार पुनि तेही ॥

मुहम्मद यहि मन असर[8] है कहु किम मारा जाय
कहां सदा शिव आवें घटते घटत बिलाय ॥

कुंवर जो बहि बहि घाटन लागी ॥ बहु बेकरार सोय जनु जागी ॥
बिकल अचेत चेत तिन कहा ॥ संग साथ नहिं दूसर रहा ॥
457 कहां रहे आये हम कहां ॥ जानी नहीं कि जायहिं कहां ॥
जागहिं दया दृष्टि[9] के आपी ॥ खोल सो नयन दीन्ह बिध झांपी ॥
जेहि के संग पद्मिनी बांची ॥ बहुत अनन्द[10] बहुत नृत[11] नाची ॥
अब मंगे[12] मिले आय जगनाथा ॥ सबै आय के नावहिं माथा ॥
अति दुख मिले आय के राजा ॥ सोई ते गये उनके[13] काजा ॥

सो हीरामन रतन रबि[14] सो पद्मावत लाल ॥
सो पद्मावत सो कुंवर सो प्रीतम प्रतिपाल ॥

नागमती कहं अगम[15] जनावा ॥ गइ सो तपन बरषा जनु आवा ॥
458 रही जो मुइ नागिन जस तुचा[16] ॥ जिव पायें तन की भइ सुचा ॥
सब दुख जस के चल गा छूटी ॥ होय निसरी जस बीर बहूटी ॥
जस भुइं दहि असाढ़ पलहाई ॥ परहिं बूंद औ सौंध बसाई ॥

शोर १ हाथी २ आसमान ३ निगाह ४ दौलत में दीवाना ५ हज़ार ६ संखिया ज़हर ७ हमेशा ज़िन्दा ८ मेहरबानी की निगाह ९ खुश १० नाच ११ शायद १२ राजा के काम को १३ सूर्य्य १४ आगम १५ चमड़ा १६

वही भांति[1] पलही सुख बारी[2] । उठी करलि नई कोंप संवारी ॥
हुलस गंग जिमि बाढ़े लेई ॥ जोबन लाम हिलोरें देई ॥
काम धनुक[3] सरदै भइ ठाढ़ी । भाग्यो बिरह रहै जो बाढ़ी ॥

पूंछहि सखी सहेली हृदय[4] देख आनन्द ॥
आज बदन[5] तुम निरमल[6] कहां उवाहै चन्द ।

अब लग सखी पवन रहि तांता । आज लाग मोहिं सीतल[8] गाता
महि[9] हुलसी जस पावस[10] छांहां । तस हुलास[11] उपना[12] जिय माहां
दसौं दाव कै गा जो दसहरा । पलटा सोई नाव लै महरा ॥
अब जोबन गंगा होय बाढ़ा ॥ औटन कठिन मार सब काढ़ा
हरियर सब देखे संसारा ॥ । नई चार[13] जनु भा अब तारा ॥
भाग्यो बिरह करत जो दाहू[14] । भा मुख चन्द छूटगा राहू ॥
लहि कहिं नयन हार हियेखिला[15] । को धौं हितू आय के मिला ॥

कहतहिं बात सखिन सों तत खन[16] आवा भाट
राजा आय नेर भा मंदिर बिछावो पाट[17] ॥

सुनतहि खन राजा कर नाऊं । भा हुलास सब ठावहिं ठाऊं ॥
पलटा जनु बरषा ऋतु राजा ॥ जस असाढ़ आवै दर[18] साजा ॥
देख सो छत्र भई जग छांहा । हस्ति[19] मेघ उनये जग मांहा ॥
सैन[20] पूर आई घन घोरा ॥ । रहस चाव बरषे चहुं ओरा
धर्ति स्वर्ग[21] अब होय मिलावा । भरहिं पुखर औताल तलावा
उठी लहक महि[22] सुनि तेहि नामा । बांवहि ठांव दूब अस जामा ॥
दादुर[23] मोर कोकिला बोले ॥ हत जो अलोप[24] जीभ सब खोले

उसी तरह १ बाग़ीचा २ कमान-तीर ३ दिल ४ मुंह ५ पाक साफ़ ६ गर्म हवा ७ ठंडा बदन ८ ज़मीन ९ बरसात १० खुशी ११ पैदा होना १२ नई तरह १३ जलाना १४ दिल १५ तुरन्त १६ तख़्त १७ फ़ौज १८-२० हाथी १९ ज़मीन आसमान २१ ज़मीन २२ मेढ़क २३ ग़ायब २४

२-४

भयेअसवार प्रथमे मिले चले सब भाय ।।
नदीअठारह खंडा मिली समुंद कहं जाय

बाजत गाजत राजा आवा । नगर चहूं दिशा बाज बधावा
बिहँसत आय माता सो मिला । रामहि जनु भेटी कौसिला ।।
सोजे मंदिर बन्दन वारा ।। औ बहु होय सो मंगल चारा ।
461 पद्मावत कर आव बिनोनू । नगर मति दहक उठी तस भानू
जनहु छांह महं धूप देखाई । नैस भौंर लाग जो आई ।।
सही न जाय सोन की झारा । दुसरे मंदिर दीन्ह उतारा ।।
भई उहां चौरखंड बरवानी ।। रतनसेन पद्मावत आनी ।।

पुहुप सुगंध संसार महं रूप बरवान न जान ।
हेम सेन उग गाजना जगत पान पहिराय ।

बैठ सिंहासन लोग जोहारा । निधनी निरगुन द्रव्य बोहारा
अगनित दान न्छावर कीन्हा । मंगतन्ह दान बहुत कै दीन्हा
462 तुरी हस्ति लै सहावत मिले ।। नुलशी लेउ पुरोहित चले ।।
बेटा भाय कुंवर जेन आवहिं । राजा हंस हंस गले लगावहिं ।।
नेगी गेज मिले अरकाना ।। पंवरथ बाज धरम सयाना ।।
मिले कुंवर कापर पहिराये ।। दै कर द्रव्य जिन्ह घर ह पठाये ।।
सबकी दसा भई पुनि दुनी दान दांग सबै जग सुनी ।।।।

बाजे पांच शब्द नित सिद्ध बरवाने भाट ।।
छनिस गोरी षटदरशन आय जुरे वह पाट

सब दिन राजा दान देवावा । भइ निशा नागमती पहं आवा

पहिले १ चंडोल २ सूर्य्य ३ आग ४ चौरी तरफ़ मशहूर ५ फूल ६ मिस्ल बर्फ़ सफ़ेद बहार के मौसिम में हो हो पैन लहराते हैं ७ ग़रीब ८ बेदुनर ९ जमाकरना १० बेहिसाब ११ घोड़ा १२ हाथी १३ हक़दार १४ मस्त १५ शकल १६ खैरात और इनआम १७ नगारा-शहनाई-करना-तुरही-झांझ-१८ तारीफ़ १९ योगी-जंग

म-सेना-गाजावाजा-बाहिरा-दरवेश-२० नरवर २१

नागमती मुख फेर के बैठी ॥ सौतहिं करै[1] पुरुष सो ढीठी[2] ॥
गीय[3] मेज जरत छोड़ के जाय ॥ सो मुख कौन दरब वै आय ॥ 463
जोहजरै परबत बन लागी । उठी झार[4] पंखी उड़ भागी ॥
अबहीं वा देखी औ छाहां । कौने रहस पसारेसि वाहां ॥
कौन्यों धिरक बैठ नेहडारा । कौन्यों कली केल कुरवारा ॥
तूं योगी होय गा बैरागी ॥ । हौं जर छार[5] भयों तुहि लागी ॥

काहहुं सो नुमस मोसों कियो और सो नेह ॥
तुहि मुख चमकै दीजुली मुहि मुख बरखै मेह ।

नागमती तू पहिल बियाही ॥ कठिन प्रीति दहीजस दाही ॥
बहुते दिन न आव जो पीउ ॥ धन न मिलै धन पाहन जीउ[6]
पाहन लोहु पोढ़ जग दोऊ ॥ सोउ मिलै जो होय बिछोऊ[7] 464
भलहिं सेंत गंगाजल दीठा ॥ यमुन जो श्याम नीर[8] अति मीठा
काह भयो नव दिन दस दहा[9] । जो बरखा सिर ऊपर अहा ॥॥
कोइ के हि पास[10] आस के हेरा । धन वह दरस निरास न फेरा[11]
कंठ लाय कै तारि मनाई ॥ जूरी जो देल सींच पलहाई[12] ॥

सहस अठारह शारद फरदाड़ि मदोरब जैं भौंर[13] ॥
सबै पंख मिलि आय जो हरे लोट वही भइ भौंर

जो भामेरु भयो रंग राता ॥ नागमती हंस पूछी बाता ॥ 465
कहु जो कंत परदेश लुभाने । कस धन मिली भोग कस माने
जो पद्मावत सुठि है लोनी ॥ मोरे रूप कि[14] सब है होनी ॥
जहां राधिका उपर मोहा । चन्द्रावल[15] सर पूजन छाहां

मई १ शोख २ बड़ी गरमी ३ आग ४ किस कसी के लिये कुसेल मचाने थे प्रण खई सखन मुख चन्द सेजली जैसा जलना चाहिये ७ नागमती ८ पत्थर ९ जुदाई १० सफ़ेद मंगा जलना था पद्मावत ११ सियाह पानी १२ थोड़े दिन जली १३ उम्मेद १४ नाउमेद न करना चाहिये १५ हज़ार १६ आधार १७ अंगूर १८ हमा बिस्त मिस्मस

१९ खूबसूरत २० बराबर २१-२२

भंवर पुरुष[1] अस रही नराखा | तजै दाख[2] महुवा रस चाखा ॥
तज नागेसर फूल सुहावा | कमल बसेंधी सो मन लावा ॥
चो[3] अन्हवाय भरै अरगजा[4] । | तौहु बिसायंध वहि नहि तजा

काहु कहूं हूं तोसों कुछ नहिं तोरे भाव ॥
यहां बात मुख मोसों वहां जीव वह ठाँव ।

दुख कि कथा कहि रैन[5] बिहानी | भयो भोर जहँ पद्मिन रानी
भानु[6] देख शशि[7] बदन मलीना | कमल नयन राती[8] तन खीना[9]
रयन नखत गिन कीन्ह बिहान | बिमल[10] भई देखी जस भानू
सूर्य्य हँसा शशि[11] रोय डफारा । | टूट आंस जस नखत हिं मारा[12]
रही नराखी होय निसासी ॥ | तहवां जाउ जहां निशि[13] बासी
हौं कै नेह कुवां महं मेली ॥ | सींचहि लाग झुरानी बेली
भये दुइ नयन रहँट की घरी | भरैं लेढारैं छूंछी भरी ॥

सुभ सरोवर[14] हंस जल घटा तो होय बिछोय[15]
कमल प्रीति नहिं परहरे[16] सूख बेल पर होय

पद्मावत तुइं जीव पराना ॥ | जियतें जगत पियार न आना
तुइं जिम कमल बसी हिय[17] माहां | हौं होय अलि[18] बेधा तोहि पाहां
मालति कली भंवर जो पावा | सो तज आन फूल कित भावा
मैं हों सिंहल की पद्मिनी ॥ | सरन[19] पूज जंबू नागनी ॥
हौं सुगन्ध निरमल[20] उजियारी | वह बिष भरी डेरावन कारी
मोरी बास भंवर संग लागहिं | वह देखत मानुष डर भागहिं
हौं पुरुषन[21] की चितवन दीठी[22] | जेहि के जिय[23] अस आहों पैठी

मर्द १ अंगूर २ चोवा ३ खुशबू ४ रात बिताई ५ सूर्य्य ६ चांद ७ ११ ला-
ल ८ पतली कमर ९ रंज ज्यादा हुवा सूर्य्य को देखके १० माला १२ रात १३
तालाब १४ जुदाइ १५ छोड़ना १६ दिल १७ भंवर १८ बराबरी १९ पाक-
साफ २० मर्द २१ देखना २२ जिसकी हौं उसके दिल में बैठी हूं २३

ऊंची ठांव[1] जो बैठे करै न नीचै संग ॥ ॥
जहां सो नागिन धर गई काला करै सो अंग

पलही नागमती की बारी[2] ॥ सोने फूल फूल फुलवारी ॥
जानवंत पंख[3] रहि सब दहे[4] ॥ सबै पंख बोलत कह कहे ॥
सारो[5] सुवा महर कोकिला । रहसत आय पपीहा मिला ।
हारल[6] शब्द महोक[7] सुहावा । काग कुराहर[8] करहिं सो आवा
भोग बिलास कीन्ह अति फेरा वासहिं रहसहिं करहिं बसेरा ॥
नाचै पांडुक[9] मोर परेवा ॥ निफल न जाय काहि की सेवा
होय उजियार बैठ जस तपै ॥ खूसट मुख न देखावे छिपै ॥

संग सहेली नागमति अपनी बारी मांहि ॥
फूल चुनहिं फल तोड़हि रहस कूद सुख छांहि

जाही जूही तेहिं फुलवारी ॥ देख रहस रहिसकी न बारी ॥
इते न बात न हिये[10] समानी पद्मावत सों कही सो आनी
नागमती है अपनी बारी[11] ॥ भंवर मिला रस करै सँवारी ॥
सखी साथ सब रहसहिं कूदहिं और श्रृंगार हार सब गूंदहि ॥
तुम जो बकावल तुम्ह सो लड़ना बकैचन[12] कहो चहो जस करना
नागमती नागेसर रानी ॥ । कमल न आछी अपनी बानी
जस सेवती गुलाल चमेली तैसि एक जन बहू अकेली

अब सुदरसन[13] गूजा तब सत[14] बरगै योग ॥
मिला भंवर नागेसर सेते वही देहि सुख भोग

सुनि पद्मावत रिस न सँभारी सखिन साथ आई फुलवारी
दोउ सौत मिल पाट[15] जो बैठी हिय बिरोध[16] मुख बातें मीठी

जगह १ बागीचा २-११ चिड़िया ३ जलना ४ तोता-मैना ५ नाम चिड़िया ६-७-९ कौवा की बोली ८ दिल १० तुम को जो कहना या करना है सो करो १२ तथा नागमती वा राजा १३ तथा पद्मावत १४ तरवत १५ दुशमनी १६

बारी[1] दृष्टि सु रंग सो आई । पद्मावत हंस बात चलाई ॥
बारी सुफल अहै तुम रानी है लाई पै लाय न जानी ॥
नागेसर औ मालति जहां ॥ सुगन्धराव नहिं चाही तहां ॥
रहा जो मधुकर[2] कमल पिरीता लाग्यो जाय करील की रीती
जहं इमली बांकी हिय[3] माहां तहं न भाव नारंग की छाहां

फलहिं फूल के फर जहां देखहु मनहिं बिचार
आंब लाग जोहिं बारी चम्प लाग तेहि बार

अन तुम कही नीक यह सोभा पै फल साई भंवर जेहि लोभा
श्याम[4] जाम्ब कस्तूरी चोवा । अंब जो ऊंच हृदय तेहि रोवा ।
तेहि गुन अस भइ जाम्ब नेवारी लाई आन मांझ के बारी ॥
जल बाढ़ै बहिया जो आई ॥ है बांकी इमली सिर नाई ॥
तुकस पराई बारी दोखी ॥ तजै[6] पानि धावहु मुख सूखी
उठै आग दोउ डार अभेरा ॥ कौन साथ तुहिं बैरी केरा ॥
जो देखी नागेसर बारी ॥ लाग मरी अब सूगा[8] सारी ॥

जो सरवर[9] जल बाढ़ै रहै सो अपनी ठांउ ॥
तजै[10] नागेसर कोंदहि जाउं न तुहिं अंबराउ

तोहि अंबराउं[11] लीन्ह का जूरी[12] काहे भई नीब मुख मूरी[13] ॥
भई बेरकित कुटिल कटीली तेंदू[14] कीन्ह चाह बकसीली
नारंग दाखै[15] न तुम्हरी बारी ॥ देख मरहिं जेहि सूगा[16] सारी ॥
औ न सदा फर तुरंज जंभीरा । कटहर बड़हर लोका खीरा ॥

फुलवारी खुश रंग देख १ भंवर कमल का आशिक २ दिल ३-५ काली जामुन मुश्क ४ बीच ५ जो मैं जवाब दों तौ पानी छोड़ दो और मुंह सूख जाय ६ जो मेरे बाग़ को नागेसर देखै ७ तो तामैना ८ १६ तालाब ९ जो गेसर छोड़ तेरे बाग़ न जाउं १० बाग़ ११ मुक़ाबिल १२ नीब ऐसी कड़वी १३ बैगन जंगली सेबेर कांटा डार अच्छा होना १४ अंगूर १५

कमल के हिरदय[1] रोवां केसर | तोहू नसर[2] पूजी नागेसर ॥
जहं कटहर कोउ[3] नवर पूछी । | बड़ पीपर का बोलहिं छूंछी ॥
जे फल देखी सोई फीका ॥ | ताकर काह सराहे[4] नीका ॥

रहु तूं अपनी बारी मोसों जूझ न बाझ ॥
मालति उपम न पूजी[5] पुनि कर खोजा खाज

जो कटहर बड़हर बड़ बेरी ॥ | तोहि अस नाहिं जो को काबेरी
श्याम जान मोर तुरंज जंभीरा | कडुई नीब तू छांह गंभीरा ॥
नरयरि दाख[6] वही कहं राखों । | गलगल जाउं सौत[7] नहिं भाखों
तोरें कहै होय मोर काहा ॥ | फरें बृच्छ को उढेल न बाहा ॥
नवै सदा फर सो नित फरै ॥ | दाड़िम[8] देख फाट हिय[9] मरै
जे फर लेंगा सुपारी छुहारा । | मिर्च होय जो सहै न पारा ॥
हौं सुपान रंग पूज न कोई ॥ | बिरह जो जरे चून जर[10] होई ॥

लाजहिं बूड़ मरेसि नहिं ऊमउटावसि[11] बांह ॥
हौं रानी पियराजा तो कहं योगी नांह[12] ॥

हौं पद्मिनी मानसर[13] केवा[14] ॥ | भंवर मराल[15] करहिं मोर सेवा ।
पूजा जोग दई हौं गढ़ी ॥ | मन महेशी के माथे चढ़ी ॥
जानी जगत कमल की करी | तोहि अस नहिं नागिन बिष भरी ।
तुइं सब लिये जगत के नागा | कोयल भेश न छाड़ेसि कागा
तू भुजैल हौ हंस की जोरी ॥ | मोहि तोहि मोति पोत की चोरी
कंचन केली[16] रतन नग बिना ॥ | जहां पदारथ[17] सोह नहिं पन्ना[18] ॥
तुइं तो राहु हौं शशि[19] उजियारी | दिनहि न पूजी[20] निशि[21] अंधियारी

दिल १ बराबर २। ५।२० कटहर बलंद ३ तारीफ़ ४ अंगूर इसी वास्ते रखा है ६ सौत का मुंह से नाम न लों ७ अनार ८ छाती ९ खाविन्द के बिरह मैं जल के चूना हुई १० बलंद ११ खाविन्द १२ नाम तालाव १३ कमल १४ हंस १५ सोने की अंगूठी १६ लाल १७ पन्ना १८ चांद १९ रात २१

473

474

ठाढ़ होसि जेहि ठाई मसि[1] लागै तेहि ठाउं ॥
तेहिं डर रांध न बैठों जनु सांवर[2] होय जाउं ॥

कमल सो कौन सुपारी[3] रोटा ॥ जेहि के हिये सहंस दस कोटा
रही न झांपै आपन गटा ॥ सरवति[4] उघेल चहै पर गटा ॥
475 कमल पत्र दाड़िम[5] तोर चोली । देखेसि सूर[6] देश है खोली ॥
ऊपर राता[7] भीतर पियरा ॥ । जारों[8] वही हरद अस हेरा ॥ ।
यहां भंवर मुख बात हि लावसि वहां सूर्य्य कहं हंस हंस लावसि ।
सब निश तप तप मरेसि पियासी भोर भये पावेसि पिय बासी ॥
सेजवां रोय रोय निश भरसी ॥ तूं मोसों का सरवर[10] करसी ॥

सूर्य्य किरन तोहि रावी[11] सरवर[12] लहर न पूज ॥
भंवर यहां तोह पावै धूप[13] देह तोर भूज ॥ ॥

मैं हौं कमल सूर्य्य की जोरी ॥ जो पिय आपन तेहि का चोरी
हौं वह आपन दरपन लेखों । करों सिंगार भोर मुख देखों ॥
476 मोर विकास[14] वहक परकाशू तुइं जर मरेसि निहार अकाशू
हौं वह सों वह मोसों राता[15] ॥ तिमर[16] बिलाय होत पर भाता[17] ॥
कमल के हिरदय[18] महं जो गठा हरय[19] रिहार कीन्ह का घटा ॥
जाकर देवस[20] तेही पै आवा कार रयन[21] कित देखै पावा ॥
तुइं उडेम्ब[22] जेहि भीतर मांखी चाहहिं उदहि मरन की पांखी

धूप न देखी बिष भरी अमृत सो सर पाव
जेहि नागिन डस सो मरै लहर सूर्य्य की आव

सिथाही १ सुपारी सरवन के सामने कमल की क्या हकीकत २ कमल अपना गट्टा नहीं छिपा सक्ता ३ सरवती उधेर डालो तब जाहिर हो ४ अनार ५ सूर्य्य ६ लाल ७ हलदी की तरह जलाती हूं रात ९-२१ बराबर १०।११।१२ के सूर्य्य से जल १३ खिलना १४ खुश १५ अन्धियारी १६ भोर १७ दिन १८ हरे कमल गठा का हार पहिने सेवा नुकसान १९ दिन २० गोलर २२

फूलहिं कमल भानु के उयें[1] । पानी मैल होय जड़ छुये[2] ।।
फिरहिं भँवर जिमि नयना नाहीं । नील बिसायँध सब तोपाहीं
मच्छ कच्छ दादुर तोहि त्रासा । बक[3] औ पंख बसहिं तोहिं पासा 477
जेजे पंख बास नहिं लिये । पानी माँह सो बिसायँध भये
जोऊ जियार चाँद होय ऊई । बदन[4] के लंक डोंब लै छुई[5]
औ मोहिं नाहिं निंस दिन कर बीचू । राहु के हाथ चाँद की मींचू ।।
सहँस बार जो धोवै कोई । तौहु बिसायँध जाय न धोई

काहु कहेउ वह पियसो माहिं । सिर धरि सि अँगार
नेहि के खेल भरोसें तू जीती मैं हार ।।

तोर अकेल का जीत्यों हारू । मैं जीता जग केर अगारू ।।।
बदन जित्यों जोऊ शशि उजियारी । बैनी[6] जित्यों भुवँगिनि कारी[7] ।।
औ मैं जीते मृग के नयना । कंठ जित्यों कोकिल के बैना 478
भौंह जित्यों अर्जुन धनकारी । ग्रीव[8] जित्यों तम चोर[9] पुकारी
नासिक[10] जित्यों पुहुप[11] पतिलसुवा । सूकु[12] जित्यों बेसर होय ऊवा ।।
दामिन[13] जित्यो दसन चमकाहीं । अधर रँग[14] बिजीत्यों साही[15] ।।
केहरि[16] जित्यों लंक मैं लीन्ही[17] । जित्यों मरोर[18] चाल वै दीन्ही

पुहुप[19] बास मैं लयौं गोरा । नासन अँग बसाय[20] ।
नागिन[21] सम औ सालु बुध मरौं सिकरे को जाय

का तोहिं गँर्ब अगार पराये[22] ।। अबही लेहु लोट सब ठाये
होंसावर सतान मोर नयना । सेत[23] चीर सुख चाहँक बैना ।। 479
नासिक[24] खर्ग फूल ध्रुव तारा । भौंह धनुक गगन[25] को हारा

सूर्य्य १ हिलाने से पानी मैला होता २ भेंढक ३ बगुला ४ चाँद में सियाही ५ ज्ञान ६ मौत ७ हजार ८ बाँह ९ नागिन १० गर्दन ११ मुर्गा-मोर १२ नाक १३ फूल १४ ना मनक्षत्र १५ २० बिजुली १६ दाँत १७ हौंद १८ चीता १९ कमर २० हंस २१ फूल २२ चन्दन २३ आर्जू खोबिन्द के पास जाने की रखती २४ गरुर २५ सफेद २६

कमान २२

हीरादसन[1] स्वेत[2] और श्यामा । छिपै बीज[3] जो बेहसे रामा ॥
बिद्रुम[4] रंग अधर[5] रस राती[6] ॥ जो दामिन[7] अस रबि[8] महं ताती
चाल गयंद[9] गर्व[10] अति भरी ॥ बिसालंक[11] नागेसर करी ॥
सांवर जहां लवन सुठनीकी । कासर[12] बरन करिसि जो फीकी ॥

पुहुप बास[13] हों पवन अधारी कमल मोर निरहेल[14]
चहों केश[15] धर नाऊं तोर मरन मोर खेल

पद्मावत सुनि उतर[16] नहिं सही । नागमती नागिन जिम कही
वैं वह कहि वह वैं कहं कहा ॥ काह कहों तस जाय न कहा ॥
दोऊ नवल भर जोबन गाजें । अप्सर[17] जानु अखारें बाजे ॥
भा बाहुन बाहुन सो जोरा ॥ हिय सों हिय कोइ बागन मोरा
कुच[18] सों कुच भइ सौंहें[19] अनी । नवहिं न नायें टूटहि तनी[20] ॥
कुंभ[21] सें तल दोउ गज सें मंता । दोनो उभर परे चौदंता ॥
देव लोक देखत हुत ठाढ़े ॥ लागबान हिय[22] जाहिं न काढ़े ॥

जनहु दीन्ह ठग लाडू देख आय तस मीचे[23] ।
रहा न कोइ धर हरिया करै जो दोउ महं बीच

पवन श्रवन[25] राजा के लागा ॥ कहेसि लड़ैं पद्मिन औ नागा
दोनो सौत श्याम औ गोरी ॥ मरहिं तो कहं पावसि अस जोरी
चल राजा आवा तेहि वारी ॥ जरत बुझाई दोनो नारी ॥
एक बार जेहि पिय मन बूझा । सो दुसरे सों काहेक जूझा ॥
ऐसो ज्ञान मन जान न कोई । कबहूं रात कबहुं दिन होई ॥
धूप छांह दोऊ इक रंगा ॥ दोनों मिले रहैं इक संगा ॥

दांत १ सफ़ेद काला २ बिजुली ३ मूंगा ४ होंठ ५ लाल ६ अनार ७ सूर्य्य ८ हाथी ९ गुरूर १० भंवरा की कमर ११ बराबर १२ फूल हवा के सहारे १३ तरु ताज़ा १४ बाल १५ जवाब १६ परी इन्द्र लोक १७ छाती १८ नोक सामने १९ महरम के बन्द २० नाम हाथी मस्त २१ दिल २२ मौत २३ पकड़ने वाला २४ कान

झूमकेवछाडहुवूझौदोऊ ।। | सेवेकरहुसेवाफलहोऊ ।।

गंगयमुनतुमजारिदीउलिखवीमुहभरयोग
सेवकरहुमिलदोनोनोमानहुसुखभोग।

असकहिदोनोनारिमनाई | वेहंसिदोऊतबकंठलगाई।
लैदोऊसंग मंदिर महुं आई ।। | सोन पलंगनहंजायबिछाई
सीझीपांचअप्सरज्योनार। | औ भोजन बावन परकार। 482
कुलसीसरसधंचियाखायें | भोगकरत वेहसीरहसाये
सोनमंदिरनागमतिकहंदीन्ह। | रूपमंदिरपद्मावतलीन्हा ।।
मंदिररननरतनके खंभा ।। | बैठा राजजोहारे सभा ।।
सभासोसवेदुखमनकहा | सोई अस गुरु जो भलकहा

बहुसुगंधबहुभोगसुखकुरलहिकेलकरहिं
दुहुंसोकेलचित्तमानीरहसअनन्दितजाहिं

जाईनागमतीनागसेनी ।। । | ऊंचभागऊंचीदिननेनी।।
कंवलसेनपद्मावतजाई ।। | जानहुचन्दधर्मिमहंआई
पण्डितवहबुधवंतबोलाबे | राशबर्गऔगिरहगिनाये।। 483
कहिनबेढ़ीदोउराजाहोहीं। | ऐसेवृत्तदेखेसबकोही ।।
नवैखंडकेराजाजाहीं ।। | औकुछसोईहोयदलमाहीं
खुलभंडारकछुदानदेवावा | दुखीसुखीकरमानबढ़ावा
याचकलोगगुनीजनआये | अरु आनन्दकेबजेबधाये

अतिकुछपावाजोतिषिन बैठेचलेअसीस
पुत्रकेलत्रकुटुंबसबजीवहिंकोटिबरीस ।।

राघोचेतनचेतनमहा ।। | आयउठेकेराजापहरहा

लड़ना १ खिदमत २ गले लगाया ३ अंगूर ४ अच्छी बात कही ५ वह अच्छा जिसको गुरु पसंद करे ६ नागमती से नागसेन पैदा हुवा ७ पद्मावत से कमलसेन ८ बत्तीस दंत गुना ९ आपुस में फेरे १० बेटा पैदा हुवा

चितचिंता[1] जानै बहु भेउ[2] ॥ कवि ब्यास[3] पण्डित सहदेउ[4] ॥
बरनी आय राजकी कथा ॥ पिंगल[1] महं सब सिंहल मथा ॥
जो कबि सुनै सीस सो धुना[2] श्रवन नाद बेद कबि सुना ॥
दृष्टि[3] सो धर्म पंथ जेहि सूझा जौन[4] सो परम अर्थ मन बूझा
योग जो रहै समाध समाना भोग जो गुनी केर गुन जाना
बीर सुरि स मारै मन कहा सोइ शृंगार कंत जो चहा ॥

वेद भेद[1] जस वेरस चचितचिंता तस चेत ॥
राजा भोज[2] चतुरदस[3] भा चेतन सो हेत[4] ॥

घड़ी[1] अचेतन होय जो आई ॥ चेतन की सब चेत भुलाई ॥
भादौं रंग अमावस सोई ॥ राजै कहा दुइज कब होई ॥
राघौ के मुख निकसा आजू परिडतन कहा काल्ह बड़ राजू
राजै दुहूं दिसा फिर देखा ॥ पण्डितन[1] बोवर कौन सरेखा
भुजा टेकि के परिडत बोला छाड़हि देश बचैन जो डोला
राघौ करी जोधनी[2] पूजा ॥ चहै सुभाव देखावै दूजा ॥
तेहि ऊपर राघौ बैरखा चा हिइज आज तौ परिडत सांचा

राघौ पूज जाधनी दुइज देखाय स सांझ ॥
वेद पंथ जेनहिं चलहिं ते भूलहिं बन मांझ

परिडतन कहा परा नहिं धोखा कौन अगस्त समुद्र जेहि सोखा
सो दिन गयो सांझ भई दूजी देखी दुइज घड़ी वह पूजी ॥
पण्डितन राजा दीन्ह असीसा अब कस ये कंचन[1] औ सीसा
जोयहि दुइज काल्ह की होनी आजु नेज देखत[2] ससि जोनी

दिल का हाल १ भेद २ कबनार्द[1] में व्यास जी ३ परिडनार्द[2] सहदेव ४ बयान ५ छेद ६ शिर ७ कानने वेद नाद कीन रहै सुना २ निगाह ६ चकित्त सुचकित्त बानद्दया फ्रकरना १० बहादुर ११ नाम परिडत १२ चौदह बिद्या जानने वाला राजा भोज की नह[1] खूबी १४ कोन परिडत्ता दान १५ होशयार १६

एघो दृष्टि बन्द कल्हरेला ।	सभा[1] मांझ चेटक[2] असमेला
यह कर गुरु चमारिन लोना ।	सिरवा कांवरु पाठत टोना
दुइज अमावस महं जो देखावे	दिनहि कर मुहु चांद कहं लावे

असगुनि नहिं चहिं नृप सभा जेहि दूना कर खोज
यही छंद उगबिद्या छला सो राजा भोज ।।

एघु[3] बैन जो कंचन रेखा ।।	कसें बान पीतर असदेखा ।।
अंजा[4] भई सिंघ नर खाऊ ।।	मारों काहि निसारों देऊ ।।
झूठ बोल थिर रहै न राचा ।।	पण्डित साईं वेद मति सांचा
बेद बचन[5] सुरवा सांच जो कहा	सो जुग जुग[6] इस्थिर थिर रहा
खोट[7] रतन सोई फटकिरा ।।	केहि घर रतन जो दारिद[8] हरा
चहै[9] लच्छि बावर कवि सोई ।।	जहं सरस्वती[10] लच्छि किन होई
कविता संग दारिद मति भंगी	कांटे कुटिल पुहुप[11] के संगी ।।

कवि ना चेला बिधि गुरु सीप सेवाती बुंद ।।
तेहि मानुष की आंस[12] का जो मरजिया समुंद

यहि सो बान पद्मावत सुनी ।।	देश निसारा राघो गुनी ।।।।
ज्ञान[13] दृष्टि धन आस बिचारा	भल न कीन्ह असगुनी निसारा
जेजा[14] धैनी पूज[15] शशि काढ़ी ।।	सूर्य्य की दाव करै पुनि ठाढ़ी
कब की जी भरवैं[16] हरवानी	इक दिशं आग दुसर दिश पानी
जन अयुक्त सुरवा काढ़े भोरें	यश बहुतें अपयश होथोरें ।।
एनी[17] राघो बेग[18] हंकारा ।।।।	सूरज गढ़ तरि लेहु उतारा ।।
ब्राह्मन जहां दक्षिना पावा	स्वर्गी जाय जो होय बोलावा ।।

दरबार १ जाद २ राजदरबार में ऐसा जादू गर न चाहिये ३ बात ४ सोना ५ हुकम ६ राजा ७ इज्जत न नहीं रहती ८ वेद के मुवाफिक ९ कायम १० झूठा जबाहिर फटकरी की नरह ११ दारिद दूर नहीं करता १२ दौलत १३ रुकवाल १४ कवि दारद्री होत हैं १५ फूल १६ ईश्वर १७ उम्मेद १८ अकित १९ भारी पूजा २० बाद २१ बेजार २२ मोका २३ जल्दी २४

487

488

आवा राघौ चेतन धौरा[1]हर के पास ॥ ॥
एसि न जानी तेहि हृदय[2] बिजुली बसे अकाश

पद्मावत जो झरोखे आई ॥ नेहि कलंक[3] जस शाशे[4] देखराई
तत[5]खन राघौ दीन्ह असीसा ॥ भयो चकोर चंद मुख दीसा ॥
पहिरे शशि[6] नखतन की मारा[7] धर्ती[8] स्वर्ग भयो उजियारा ॥
औ पहिरे कर कंकन जोरी ॥ नग जो लाग तेहि तीस करोरी
कंकन एक काढ़ दै डारी ॥ काढ़त नार टूट गयें हारी ॥ ॥
जानहु चांद टूट लै तारा ॥ छूट्यो स्वर्ग काल कर धारा ॥
जनहु टूट बिजुली भुइं परी । उठा चौंध राघौ चित हरी ॥

परा आय भुइं कंकन जगत भयो उजियार ॥
राघौ बिजुली मारा बेसंभर कुछ न संभार ॥

पद्मावत हंस दीन्ह झरोखा । अब जो गुनी मरै मुहिं दोखा[9]
सबै सहेली देखीं धाई ॥ । चेतन चेत जगावें आई ॥
चेतन परा न आवै चेतू ॥ । सबहिं कहा यहि लाग परेतू ॥
कोइ कहि कांप[10] औ संपातू कोई कहि अहि मिरगी[11] बातू ॥
कोइ कहि नाग पवन[12] कर झोला कैसहिं समुझ न चेतन बोला
पुनि उठाय बैठारो छाहां । पूंछहि कौन पीर जिय माहां
धौं काहू के दरशन हरा ॥ कै ठग धूत[13] भूत जेहि हरा ॥

कें तोहि काहू दीन्ह[14] कुछ कै रे डसा तोह सांप
कहौ सो चित होय चेतन देह तोर कस कांप

भयो सुचित चेतन जब चेता । नयन झरोखें जीव सकेता[15]
पुनि जो बोला मति बुधि खोवा । नयन झरोखा लाये रोवा ॥

महल १ दिल २ बेएब ३ चांद ४-६ तुरंत ५ माला ७ ज़मीन। आसमान ८ पाप ९ जूड़ी १० मिरगी का रोग ११ फ़ालिज १२ किसी ठग या दगाबाज़ [illegible] १३ खिलादिया १४ कुंभलाया हुवा १५

बावर फेर सीस[1] पै धुना ।। आपन कहि न पराई सुना ।।
जानहु लाई काहुं ठगोरी[2] ।। खन[3] पुकार खन बांधै बौरी[4] ।। 491
हौं रे ठगा यहि चितोर माहां कासो कहौं जाउं केहिं पाहां
यहि राजा सठ बड़ हत्यारा ।। जें राखा यहि ठग बटपारा[5] ।।
ना कोइ बरजै[6] न लाग गुहारी ।। अस यहि नगर होय बटपारी

दृष्टि[7] रही ठग लाडू अलक[8] फांस परग्रीव[9] ।। ।
जहां भिखारि न बाचै तहां यचै को जीव ·

कित धौराहर[10] आय झरोकें लै गयो जिव दछना के धोकें
स्वर्ग सूर[11] शशि[12] करैं अजोरी[13] तेहि तें अधिक[14] देउं केहि जोरी
शशि[15] सूर[16] हि जो होत वह जोती दिन पहाड़ हत रैन न होती 492
तें हंकार[17] मोहिं कंकन दीन्हा दृष्टि[18] जो पड़ी जीव हर लीन्हा
नयन भिखार डीठ[19] सत[20] छुड़ी लागे तहां बान हिय[21] गड़ी ।।
नयन हि नयन जो बेध समाने सीस[21] धुनहि निसरे नहिं ताने
नवहिं न नाये निलज भिखारी तबहूं बुरी लाग मुख गारी ।।

किन कर मुखी नयन भै जीव हरा तेहि बाट
सरवर[22] नीर बिछोह ज्यों तरक तरक हिय फाट

सखिन कहा चेतन बेस भारा हियें चेत जिय जास न मारा
जो कोइ पावै आपन मांगा ।। ना कोइ मरै न काहूं खांगा[23] ।। 493
वह पद्मावत एसो सुरूपा ।। बरन न जाय काह के रूपा ।।
जें चीन्ही सो गुप्त[24] चल गयऊ । परगट[25] गुप्ति जीव बिन भयऊ ।
तुम अस बहुत बिमोहित[26] भये धुन धुन सीस जीव दै गयउ

सिर १-२१ जादू २ कभी ३ चुप ४ एह लूटनेवाले ५ मना करनेवाला ६ निगाह ७ बाल ८ गरदन ९ महल १० सूर्य्य ११-१६ चांद १२-१५ रोशनी १३ बहुत १४ बोलाना १७ शोख १८ ईमान छुड़ाने वाले १९ दिल २० ताला व कापानी घटे से २२ कमी २३ छिपा २४ जाहिरवा छिपा २५ आशिक २६

बहुतहिं दीन्ह नायके गीवा । उतरन देइ मारके जीवा ॥
तुइं पुनि मरत होय जर भई । अबहिं उघेल कानकी रुई ॥
कोई मांग मारे ना पावे कोइ बिन मांगा पाव ॥
तू चेतन औरहि समझावे बहुतुहि को समझाव ॥

494

भयो चेत चित चेतन चेता । बहुर न आय सहों दुख एता ।
रोवत आय परे हम जहां ॥ रोवत चले कौन सुख तहां ॥
जहवां बहु सों सूजिय केरा ॥ कौन रहन पर चलौं सबेरा ॥
अब यहि भीख तहां होय मांगों । एतन दिजग जन्म न खांगों ॥
औ अस कंकन जो पाउं दूजा ॥ दारिद हरै आस मन पूजा ॥
देहिली नगर आव तुरकानू । शाह अलाउद्दीं सुलतानू ॥
सोन जरी जेहि की टकसारा । बारह बानी परहिं दिनारा ॥
कमल बखाना जाय तहं जहं अलि अलाउद्दीन ।
सुनके चढै भान होय रतन होय जल मीन ॥

खंड बत्तीसवां देहिली गवन राघो चेतन ।

495

राघो चेतन कीन्ह पयाना ॥ देहिली नगर जाय नेराना ॥
आय शाह के द्वार जो पहुंचा । देखा राज जगत पर ऊंचा ॥
छत्तिस लाख तुरुक असवारा । तीस सहस हस्ती दरबारा ॥
जहं तक तपै जगत पर भानू । तहं लग राज करै सुलतानू ॥
चहूं खंड के राजा आवहिं ॥ ठाढ़ झुराहि जुहार न पावहिं ॥
मन तेवान कै राघौ झूरा ॥ नाहिं उबार जिया डर पूरा ॥
जहां झुरा न दिये सिर छाता ॥ तहं हमार को चालै बाता ॥
वार पार नहिं सूझै लाखन उमर अमीर ॥
अब खुर खेह जाव मिल आय परे यहि भीर ॥

पाटन १ जवाब २ अंदेशा ३ कमी ४ बारह तरह ५ पद्मावत की तारीफ़ ६ भंवर सूर्य ७ ८ १४ मछली ९ कूच १० दरवाजा ११ हजार १२ हाथी १३ बारें मुरकल बा

बादशाह सब जाना बूझा ॥ स्वर्ग[1] पता रहिये[2] में सूझा ॥
जो राजा अस सजग[3] न होई ॥ का कर राज कहां कर कोई ॥
जगत भार वह एक संभारा तौथिर[4] रहै सकल संसारा ॥ 496
औ अस वह क सिंहासन ऊंचा सब काहू पर दृष्टि[5] जो पंहुचा ॥
सब दिन राज काज सुख भोगी । रात फिरै घर घर होय योगी ॥
राव[6] रंक जहं तक सब ज़ाती ॥ सब की चाह[7] लेइ दिन राती ॥
पंथी[8] परदेसी जब आवहिं ॥ सब की चाह[9] दूत पहुचावहिं ।

यह बात तहं पंहुची सदा छत्र सुख छांथ
ब्राह्मन एक द्वार है ठाढ़ा कंकन जड़ा ऊ हाथ

मया[10] शाह मन सुनत भिखारी परदेशी कहं पूछ हंकारी[11] ॥
हम पुनि जाना है परदेशा ॥ कौन पंथ[12] गवनव केहि भेशा 497
देहिली राज चिन्त[13] मन काढ़ी यहि जग जैसि दूध की साढ़ी
सेंत[14] मिलाय छांछ के फेरा ॥ मथ घिव लीन्ह महिउ कहं केरा
यहि देहिली किन होय होय गये कैकै गर्ब[15] खेह[16] मिल गये ॥
यहि देहिली का रही ढिलाई[17] । साढ़ी काढ़ ढील जब ताई ॥
रावन लंक जार सब तापा ॥ रहा न जोबन औ तरु नापा[18] ॥

भीख भिखारी दीजये का ब्राह्मन का भाट
अज्ञा[19] भई बोलावहु धर्ती धरा ललाट[20] ॥

राघौ चेतन हत जो निरासा[21] । तत[22] खेन बेग[23] बोलावा पासा ॥
सीस[24] नाय के दीन्ह असीसा चमकत नग कंकन कर दीसा[25] 498
अज्ञा भई सो राघो पाहां ॥ तुइं मंगन[25] कंकन का बाहां ॥

ज़मीन-आसमान १ दिल २ होशियार ३ क़ायम ४ निगाह ५ अमीर ग़रीब ६ खबर ७ - ९ मुसाफ़िर ८ मेहरबानी १० बोलाना ११ राह १२ अंदेशा १३ नरमी १४ ग़रूर १५ धूर १६ नरमी १७ जवानी १८ हुक्म १९ माथा २० मा-रमेद २१ तुरन्त २२ जल्द २३ सिर २४ मांगनेवाला २५

राघौफेर सीस[1] भुइं धरा ॥ जुग जुग राज भानुकी करा ॥
पद्मिन सिंहलदीप की रानी रतन सेन चितौरगढ़ आनी ॥
कमल न सरपूजी नेहि बासा रूपन पूजी चन्द अकासा ॥
जहां कमल[4] ससि सूर न पूजा के हिं सरदेउं और को दूजा ॥

सोरानी संसार मन दछना कंकन दीन्ह ॥
अपसर रूप देखाय के जीव भरोकें लीन्ह ॥

सुनके उत्तर[9] शाह मन हंसा ॥ जानहु बीज चमक परगसा ॥
कांच जोग जो कंचन[10] पावा । मंगन ताहि सुमेर[11] चढ़ावा ॥
नागु भिरवार जीभ मुख वांची अब हिंसा भार बान कहु साची
कहं अस नारि जगत उपराहीं जेहि के सरे सूर्य्य ससि[13] नाहीं
जो पद्मिन नुइं मंदिर मोरे ॥ सातों दीप जहां कर[14] जोरे ॥
सत दीप महं चुन चुन आनी सो मोरे सोरह सै रानी ॥ ॥
जो उन्ह महं देखै सिउ कदासी देखत लोन होय लोन बिलासी

चहूं खंड[15] होंचक[16] वै जस रबि तपै अकाश
जो पद्मिन मोरे मंदिर अपसर तो के लाश

तुम बड़ राज छत्रपति भारी अन बाह्मन हो अहो भिरवारी
चारहु खंड भीरव का[17] वाजा उदय अस्त तुम्ह ऐसो न राजा
धर्म राज ओ सत कुल माहां झूठ जो कही जीभ गहि बाहां
कुछ जो चौर[18] सब कुछ उपराही सोय हि चहूं दीप महं नाही ॥
पद्मिन अमृत हंस[3] सदरू[19] ॥ सिंहल दीप भलहिं सो मूरू[20] ॥
सातों दीप देख हों आवा ॥ तब राघौ चेतन कहवा[22] ॥
अस[21] हो य न रावो घोरवा ॥ कहों सो सब नारिन गुन दोखा ॥

सिर १ सूर्य्य २ वरावरी ३-६-१२ चांद ४-१३ सूर्य्य ५ परी इन्द्र लोक ७ जवाब ८
बिजुली ९ सोना १० नाम पहाड़ ११ हाथ १५ चोरों नरफ़ १५ सारी दुनिया का रा
जा १६ सूर्य्य १७ पहुंचा १८ लालशेर १९ असिल २० हुक्म २१ ऐब हुनर २२

यहां हस्तनी सिंहनी औ चित्रनि बनबास
कहां पद्मिनी पद्म सिर भंवर फिरैं चहुपास

खंड तेतीसवां स्त्री बरनन

पहिले कहों हंस्तनी नारी ॥ हस्ती की पर की रात सारी ॥
सिर औ पाय सुभ्र गयें छोटी उर की खीन लंक की मोटी ॥
कुंभस्थल गज अमित अमाहीं गवन गय दढ़ाल जनु बाहीं ॥
दृष्टि न आवै आपन पीठ ॥ पुरुष पराये ऊपर जीठ ॥
भोजन बहुत बहुत रति चाऊ अछवाई सौ थोर सुभाऊ ॥
मधु जस मंद बसाय पसेऊ ॥ औ बिस्वास धरै जस देऊ ॥
डर औ लाज न एको हियें ॥ रहै जो राखें आंकुश दिये

गजगत चलै चहूं दिश लाय जगत कह चोख
कही हस्तनी नारी ये सब हस्तनि के दोख ॥

दूसर कहों सिंहनी नारी ॥ करै बहुत बल अल्प अहारी
उर अति सुभ्र खीन अति लंका गर्ब भरी मन धरै न संका ॥
बहुत रोष चाही पियहना ॥ आगें घाल न काहूं गिना ॥
अलंकार अपनी वह भाबा देख न सकै शृंगार परावा ॥
सिंह की चाल चलै डगढीली रोवां बहुत जांघ औ फीली ॥
मोट मांस रुच भोजन तासू औ मुख आव बिसायंध वासू
दृष्टि तराही हेरै आगें ॥ जन मथवाह रहै सिर लागें ॥

सेजवां मिलत सो स्वामी लावै उर नख बान
यहि गुन सबै सिंह के वह सिंहन सुलतान ॥

तीसर कहों चित्रनी नारी ॥ महा चतुर रस प्रेम पियारी ॥

कमल १ हाथी २ सुभाव ३ मोटा ४ गरदन ५ छाती ६ पतली ७ कमर ८-२४ नाम हाथी ९ चाल १० निगाह ११ बाह १२ सफाई १३ शहद १४ खयाल १५ हाथी १६ पियार १७ ऐब १८ थोड़ा १९ खुराक २० छाती २१ चौड़ी २२ बारीक २३ गुरूर २४ गुस्सा २६ सूरत २७ नजर २८

रूप सरूप शृंगार सवाई ॥ | अपसर जोमि रही अछ वाई
रोष न जानै हस्ता सुरवी ॥ | जंह अस नारि कंत सो सुखी
आपन पुरुष की जानै पूजा ॥ | एक पुरुष के जान न दूजा ॥
चन्द्र बदन रंग कुमुदन गोरी । | चाल सोहग्य हंस की जोरी ॥
खीर खांड कुछ अल्प अहारू | पान फूल सो बहुत पियारू ॥
पद्मिन चाह घार दुइ कोरा । | और सबे वह गुण निरमरा ॥

चंदिनि जैसु कुमुद रंग और बासना अंग ॥
पद्मिन बास चंदन जस भंवर फिरहिं तेहि संग

चौथे कहौं पद्मिनी नारी ॥ | पद्म गन्ध शशि दई संवारी
पद्मिन जात पद्म अंग जोई ॥ | पद्म बास मधुकर सग होई ॥
नासुढ लांबा नासुढ छोटी । | नासुढ पातर नासुढ मोटी ॥
सोरह कर न अंग हि बनी ॥ ॥ | सो सुलतान पद्मिनी गुनी ॥
दीर्घ चारु वार लघु सोई ॥ | सुमन चार चहु खांनी होई ॥
श्री शशि बदन देख सब मोहा | चाल मराल चलत गत सोहा
खीर अहार न कर सुक वारा । | पान फूल के रहै अधारा ॥

मो हकिर नम मवूरन और सोरहो शृंगार ।
अब यह भांति वरनके जेस बरने संसार ॥

श्याम केश दीरघ सिर सोहैं ॥ | और दीरघ अगुरी कर सोहैं ॥
दीरघ नयन तीख तह देखा | दीरघ ग्रीव कुरण्ड चियरेखा ॥
पुनि लघु दसन होहिं जनु हीरा | और लघु कुचउतंग जभीरा ॥
लघु ललाट दुईज परकास ॥ | और नाभी लघु चन्दन बास

इन्द्रलोक की परी १ सफाई २ गुस्सा ३ खरविन्द ४ मुंह ५ कोकावेली ६-१२ दूध १० घी डीखूरा ८ ज्यादा ९ दाबि मा १० पाक साफ़ ११ कमल १३ चांद १४ भंवर १५ केहे १६-२७-२५ छोटे १७ मोटा १८ पतला १९ चांद २० हंस २१ पहिले २२ बाल २३ हाथ २६ छोटे २७ दांत २८ छाती २९ साथा ३०

नासिक[1] खीन[2] खड्ग[3] कै धारा | खीन[4] लंक जनु केहरि[5] हारा ॥
खीन पेट जानौ नहिं आता | खीन अधर बिद्रुम[6] रंगराता
सुभ[7] कपोल देखि मुख सोभा | सुभ[8] नैन[9] देखि मन लोभा

सुभ कलाई[10] अति बनी सुभ जंघ गज चाल
सोरह[11] सिंगार बरन के करहिं देवता लाल

यहि पद्मिनि[12] वितीत जो आनी | कुन्दन काया[13] दाहस[14] बानी ॥
कुन्दन कनक[15] कनाहि नहिं बासा | बहु सुगंध जस कमल विकासा
कुन्दन कनक[16] कठोर सो अंगा | वह कोमल अंग पुहुप[17] सुरंगा ॥
वह छुइ पवन वृक्ष जोहि लागा | सोई मैली गिर भयो[18] सभागा
काह न मूठ भरी वह देही ॥ | अस मूरत केदई[19] उरेही ॥ ॥
सबै पीठ नैन[20] रंचि चकोहारी ॥ | वह रूप कोइ लख न पारी
कया कपूर हाड़ सब मोती ॥ | तेहि तें अधिक[21] कीन्ह बिधि जाती

सूर्य्य किरन जस निरमल तेहि[22] ते अधिक सरीर
सौंह दिष्टि नहिं जाय का नयन[23] नहिं आवै[24] नीर

ससि[25] मुख अंग मलय[26] कर कुबाना | उठत तंत सूझ जस रानी ॥
दसन[27] दमक जस कुंदकली फूटहिं | सब जग जानि फुल झरी छूटहिं
जानहु ससि[28] महँ बीजु[29] देखावा | चौंध परै कुछु कहै न आवा
कौंधत रहि जस भादौं रैनी ॥ | श्याम[30] नैन जनु चले उड़ैनी[31] ॥
जनु बसंत चरनु कोकिल बोली | सरस सुनाय मार[32] सर डोली
जनु अमृत होय बचन बिकासा | कमल जो बास बास धन बासा
यहि सरसी सिंघल जो नागवेहरा ॥ | जाय सरन बैनी होय परा ॥

नाक १ पतली २ तलवार ३ पतली कमर ४ चीता ५ हेरना ६ मृगा ७ लाल ८ मोती
गाल ९ चूतर १० लाल च ११ बदन १२ खासिस १३ सोना १४ ९ रिवलना १५ २३
फूल १७ बन्दन १८ बनाना १९ दूनी २० बकुल २१ पक्का साफ़ २२ निगाह
सामने २३ पात २४ चांद २५ २८ लाल २६ दांत २७ बिजुली २८ रात ३० मुगनू

506

507

सबै मनोहर[1] जाय मरजे देखै तस चोर[2] ॥
पहिले सो दुख बरन के बरनो वह कश्टगार[3]

कित हों रहा काल कर काढा । जाय धौरहर[3] तर भा ठाढ़ा ॥
कित वह आय झरोखें झांकी । नयन कुरंगिन[4] चितवन बांकी
बेहिसी शशि[5] तरई[6] जनु परीं । कै सो रैन छूटैं फुल झरीं ॥
चमक बीज[7] जस भादौं रैनी । जगत दृष्टि[8] भर रही उड़ेनी[9] ॥
काम कटाक्ष[10] दृष्टि[11] बिष बसा । नागिन अलक[12] पलक महंडसा
भौंह धनुक पलका[13] जल बूड़ी । वह भइ धानुक[14] हौं भइ उड़ी[15]
मार चली मारत हूं हंसा ॥ पाछे नाग रहा हौं डंसा ॥

काल घाल पाछे रखा गड़ुर न मंतर कोय ।
मोर पीठ वह बैठा कासों पुकारों रोय ॥

बेनी[16] छोर झार जो केसा ॥ रैन[17] होय जग दीपक[18] लेसा ॥
सिर हत बिसहर[19] परी भुइ बारा । सगरे देस भयो अन्धियारा ।
सक पकाहिं बिष भरे पसारे । लहरहिं भर लहकहिं अति कारे
जानहुं लोटहिं चढ़े भुअंगा[20] ॥ बेधी बास मलीगिर[21] अंगा ॥
लरहिं मुरहिं जनु मानहिं केली । नाग चढ़े मालति कै बेली ॥
लहरै देइ जानु कालिन्दी[22] ॥ फिर फिर भंवर भये चित बन्दी[23]
चंवर धरत आछी चहुं पासा । भंवर न उड़हिं जो लुब्धे[24] बासा

होय अंधेर घन[25] बिजु[26] चमक जबहि चीर गहि झांप
केस[27] नाग किन देख मैं संवर सेवर जिय कांप

मांग कनक[28] जो सेंदुर रेखा ॥ जनु बसंत राता[29] जग देखा ॥

उम्मेद १ चाल २ महल ३ हिरन ४ चीद ५ छोरे नखत ६ बिजुली ७-२६ निगाह ८ जुगनू ९ तिरछी चितवन १० निगाह ११ बाल १२-२७ पलक १३ तीर अंदाज १४ निशाना १५ चोटी १६ एत १७ चिराग रौशन १८ सोप १९-२७ चन्दन २१ यमुना २२ दिल फसाना २३ लपटना २४ बादल २५ सोना २८ लाल २९

गइ पत्रावल[1] पाटी घारी ।। औरचि चित्र[2] बिचित्र संवारी ।।
भई उरेह पुहुप[3] सब नामा ।। जनु बक[4] बिखर घन[5] श्यामा ।
यमुना मांझ सरस्वती मांगा दुहुं दिस दिये तरंगन[6] गांगा ।।
सेन्दुर रेख सो ऊपर राती[7] ।। बीर बहूटिन की जस पांती ।।
बलि[8] देवता भये देख सेंदूरू ।। पूजी मांग भोर उठ सूरू[9] ।।
भोर सांझ रबि[10] होय जो राता[11] वही देख राता[12] भा गोता[13] ।।

बेनी कारी पुहप[14] ते निकसी यमुना आय ।।
पूज इन्द्र आनन्द सों सेंदुर सीस[15] चढाय ।।

दुइज ललाट[16] अधिक[17] मन करा शंकर देख माथ भुइं धरा ।।
यहि नित दुइज जगत महंदीसा जगत जोहारे देइ असीसा ।।
शशि[18] जो होय नहिं सरवर[19] छाजै होय सो अमावस छिव मन लाजै
तिलक संवार जो चन्दन रचे दुइज मांझ जानहु कचे[20] बचे
शशि[21] पर करवट सारा राहू ।। नखतहिं भरा दीन्ह पर दाहू ।।
पारस जोति[22] ललाट[23] हि ओती । दृष्टि[24] जो करै होय तेहि जोती
औ[25] जो रतन मांग बैठारा ।। जानहु गगन[26] दूर निसतारा ।।

शशि[27] औ सूर[28] जो निरमल[29] तेहि ललाट की रूप ।
निशि[30] दिन चलहिं न सरवर[31] पावैं तप तप होहिं अलूप[32]

भौंहें धनुक श्याम जनु चढ़ा पनच[33] करे मानुष कहं गढ़ा ।।
चन्द कि मूठ धनुक वह ताना काजर बीज[34] बरनि[35] बिषवाना
जासों हेर जाय सो मारी ।। गिरवर टरहिं सो भौंहहिं टारी
सेन बन्ध जे धनुक बिडारा वह धनुक भौंहहि सोहारा

नाम दाया १ बहुत अच्छी २ फूल ३-१४ बगुला ४ बादल सियाह ५ लहर ६ लाल ७-११-१२ कुरबान ८ सूर्य्य ९-१०-२८ बदन १३ सिर १५ माथा १६ ज्यादा १७ चांद १८-२१-२७ बराबर १९-३१ नाम नखत २० रोशनी २२ माथा २३ निगाह २४ टीका २५ आसमान २६ साफ़ २९ रात ३० गायब ३२ निशाना ३३ बिजुली ३४ पलक केवा

हारा धनुक जोबेधा राहू ॥ और धनुक कोइ गनै न काहू
कित सो धनुक भौंह मदरवा लागै बान तिन्ह बरनै लेरवा
तिन बानहि झांझर भाहिया जो असमार सो कैसे जिया ॥

सोतै सोत तन बेधा रोंइ रोंइ सब देह ॥ ।
नस नस महं भइ साँलहि हाड़ हाड़ भये बेहे ॥

नयन चित्र वह रूप चितेरे ॥ कमल पत्र पर मधुकर फेरे ॥
समुंद तरंग उलट हिय जनवंती डोलहिं जो घूमहिं मदमाती
573 सरद चंद महं खंजन जोरी ॥ फिरफिर लरहिं अहेर बहोरी
चपल बिलोल डोल वह लागी थिर न रहहिं चंचल बैरागी ॥
निरख अघाहिं न हत्या हेते फिर फिर आवहिं लागे मेते ॥
अंग्वैते मुख प्रेम सो चाही निरख चलहिं बन सूध न हेही
सैन नाग गंध पै लाँलकाही ॥ उलटे चलहिं स्वर्ग कहं जाही

असवै नयन चक्र दुइ भंवर समुद उलथाहिं
जनु जिव घालि हिंडोले लैलै आवहिं लै जाहिं

नासिक खरग कही बन कीरू जोग अगार जिता जो बीरू
राशि मुख सोहि खरग गहि रामा एक बन्त सो चहि संगामा ॥
514 बुड़ समुंद महं जनु रुचि बीरू ॥ सेत बन्ध बांधा नल नीलू ॥
तिल के फूल असनासिक नासू जो सुगन्ध दीन्ही बिधि बासू
कुन्द फूल फरै उजियारा ॥ जनहु सरद शशि सोहिल तारा
सोहिल चौंह फूल वह ऊंचा धावहिं नख तन जाइ न पहुंचा
तजनो कै सो फूल वह गूंठा । बिरवै ते फूल सबै चाहहिं चूंठा

अर्थात् कीरमान १ दिल २ खरग ३ ४ भवरा ६ ऊंठ ७ लाल ८ फूलमाली
बाघ १० धामोला ११ चंचल १२ कायम १३ देखना १४ कान से सलाह १५ रुपै
१६ बेदना १७ बाज १८ आसमान १९ नाक २० तलवार २१ जोड़ा २२ साम
२३ रोग २४ फूल २५ नामवन्त २६ ईश्वर २७ स्याही २८ खिलना २९

असवह फूलवासका आगर भानाँसकासमुंद
जेनि फूलवह फूलहिंनेसब भयेसुगन्द ।।

अधर[2] सुरंग पान[3] असखीनी[4] । राती सुरंग अमीरस[5] भीनी[6] ।।
अछहिं वेहंस[7] तबोल[8] सोराती[9] जनुगुलालदेखेवेहसाती ।।
मोतिक[10] अधर[11] दसन[12] जनुहीरा बैनँ[13] रिसालरवांड[14] सुखबीरा ।।
काढ़ी[15] अधर[16] डाम[17] सोचीरी[18] । रुधिर[19] डुबै जोखावै वीरी[20] ।।
ढोरे[21] दसन[22] रसहिंस[23] कीली[24] । रतो भरी वह सुरंग रंगीली ।।
जन प्रभात[25] तेराति[26] बिरेखा । बिकसे[27] बदन[28] कमल जनुदेखा
अलक[29] भुवंगिन[30] अधरहिं[31] आखा गहे जोनागिन सोरस चाखा

अधर[32] अधररस पेमका अलक[33] भुवंगिनबीच
तब अमृतरस पावे जब नागिन कहं खींच

दसन[34] श्याम पानहि रंग पाके बिकसन[35] कमल फूल अनिताके
रेखि चमक मुख भीज रहोदू जनु देउँरि[36] चौ श्याम मकोदू[37]
चमके[38] दसन वेहस जोनारी बाज चमक जस निशे[39] अंधियारी
खेत[40] श्याम अस चमक न दीठी श्याम हीरदुहु पांयन बैठी ।।
कैं सो गढ़ी अस दसन अमोला मोरे बीज वेहस जो बोला ।
रतन भीज रंग मैंसि[41] भइ श्यामा चौदही छात पदारथ नामा
कित वे दसन देख रंग भीने लेगई जोति नयन भय खीने

दसन जोनि हो नयन मँग[42] हेदस मांक सोपैठ
परगट जगत अंधियार जनु गुप्त वही मैं दीठ

नाक १ होठ २ - ६ - १२ - १८ पतला ३ - ९ लाल ४ - ७ अमृत ५ हसना ६ मूंगा ८ दांत १० - १४ - १७ मीठी बोली ११ खून १३ भोर की समय लाल सूर्य्य १५ मुंह १६ गुलफोकी नागिनी होठों तक पड़ी रहिनी २० बात १९ खिलना २१ बना २३ बिजुली २४ - २५ सफ़ेद - सियाह २६ मिसी २७ लाल नाम ठंडी की सज़ावार २८ हसन २९ यह ३० दिल ३१ ज़ाहिर ३२ छिपा ३३

517

रसना[1] सुनहि जो कहि रस बाता | कोकिल बैन[2] सुनत मन राता[3]
अमृत कोंप जीभ जनु लाई ॥ | पान फूल अस बात सुहाई
चातृक[4] बैन सुनत हो शांती | सुने सो परै प्रेम मधु मांती
बिरवा सूख पाव जस नीरू[5] ॥ | सुनत बैन तस पलहि सरीरू
बोल सेवांत बूंद जनु परही ॥ | श्रवन[6] सीप सुख मोती भरही
धन वै बैन[7] जो प्राण अधारू | भूखें श्रवणहि[8] दीन्ह अहारू
उन्ह बैनहि[9] की काहि न आसा | मोहहिं मिरग बहस तेहि स्वांसा

कंट[10] सारदा मोही जीभ सरस्वती काहि ॥
इन्द्र चांद रवि[11] देवता सबै जगत सुख चाहि

518

श्रवण[12] सुनहि जो कुन्दन सीपी | पहिरे कुण्डल सिंहल दीपी ॥
चांद सूर्य्य दुहु दिस चमकाहीं | नखतहिं भरी निरख[13] नहिं जाहीं
क्षिण[14] क्षिण करहिं बीज[15] अस कांपी | अमर मेघ महं रहहिं न झांपी
सूकश नीचर दुहुं दिस मतें ॥ | होहिं निरार[16] न श्रवणहि हुतें
कांपत रहहिं बोल जो बैना ॥ | श्रवणहि जनु लागहिं फिर नयना
जो जो बात सरिवन सो सुना । | दुहुं दिस करहिं सीस[17] वै धुना ॥
खूंट[18] दोउ ध्रुव तरई[19] खूटी ॥ | जानहु परहिं गच पची[20] टूटी ॥

वेद पुराण ग्रंथ जिन सबै सुनै सिख लीन्ह ॥
नाद[20] बिनोद राग रस वंदक श्रवण वही विधि दीन्ह

519

कमल कपोल[21] वही अस छाजे | और न काहि दई अस साजे ।
पुहुप[22] पंग रस अमी संवारी ॥ | सुरंग गेंद नारंग रतनारी[23] ॥ ॥
पुनि कपोल[24] बायें तिल परा । | सो तिल बिरह चिनग के करा[25]

ज़बान १ आवाज़ २-७-९ लाल ३ पपीहा ४ पानी ५ कान ६-८-१२ गला १० सूर्य्य ११ देखना १३ हरसाइत १४ बिजुली १५ अलग १६ बाली १७ नखत १८ छोटे नखत जो चांद के आस पास होते हैं १९ गाते बजाते का शौक़ ईश्वर ने दिया २० गाल २१-२४ फूल २२ लाल २३ गानिन्द २५

जोतिल देख जाय जर सोई । बायें दृष्टि[1] काह जन होई ॥
जानहुं भंवर पद्म[2] पर टूटा ॥ जीव दीन्ह औ वहीं न छूटा ॥
देखत तिल नयन हि गा काढ़े औरन सूझै सो तिल छाड़े ॥
तेहि पर अलक[3] मंजरी डोला छुवै सो नागिन सुरंग[4] कपोला

रक्षा[5] करै मयूर[6] वह नागिन हिय[7] पर लोट ॥
केहिरे जग[8] कोउ छुइ सकै दुइ पर[9] वत की ओट

ग्रीव[10] मयूर केर जस ठाढ़ी ॥ कोड़ें[11] फेर कड़ेरें[12] काढ़ी ॥
धनि वह ग्रीव का बरनो करा बांक तुरंग[13] जान गहि धरा
घरन[14] परेवा ग्रीव उठावा ॥ चहै बोल तमचोर[15] सुनावा
ग्रीव सुराही के अस भये ॥ अमी पियाला कारन नये ॥
पुनि तेहि ठांव[16] परी त्रिय[17] रेखा तेहि सो ठाउं[18] होय जो देखा ॥
कनक[19] तार सोने की करा । साज कमल तेहि ऊपर धरा ।
सूर्य्य किरन हत ग्रीव[20] निरमली[21] देइ पैग[22] जात हियें[23] चली ॥ ॥

नागिन चढ़ी कमल पर चढ़ के बैठ कमंठ ॥
कर[24] पसार जो काल कहं सो लागै वह कंठ ॥

कनक[25] दंड दुइ बनी कलाईं डांड़ी फेर कमल जनो लाईं ॥
चंदन[26] गाभ की भुजा संवारी जनो सो बेल कमल पौनारी ॥
तेहि डांड़ी संग कमल हतोरी एक कमल की दोनो जोरी ॥
सहजहिं जानहुं मेहि दीस्त्री मुक्ताहल[27] लीन्हे जनु घुंगची ॥
कर पल्लव[28] जो हथोरिन साथा बैसव रक्त भरी तेहिं हाथा
देखत हिया[29] काढ़ जिव लेई ॥ हिया काढ़ के जान न देई ॥

निगाह १ कमल २ बाल ३ लाल गाल ४ निगहबानी ५ मोर ६ छाती ७ दुनिया ८ पहाड़ तथा छाती ९ गरदन १०-२० खराद ११ खरादी १२ घोड़ा १३ कबूतर १४ चिड़िया १५ जगह १६-१८ तीन लकीर १७ सोना १९ साफ़ २१ क़दम २२ जान सो गुज़र जाय २३ हाथ २४ सोने की दंडी २५ नाल २६ मोती २७ अंगुली

520

521

कनक[1] अंगूठी औ नग जड़ी ॥ वै हत्यारिन नखत[2] नहिं भरी ॥

जैसी भुजा कलाई तेहि बिधि जाय न भाख
कंकन हाथ होय जहि तेहिं दरपन का साख

हिया[3] थार कुच[4] कनक[5] कचूरा जानहुं दोऊ श्रीपल[6] जूरा ॥
एक पाट[7] वै दोनों राजा ॥ श्याम छत्र दोनहुं सिर छाजा
522 जानहुं दुइ लट्ट इक साथा जग[8] भा लट्ट चढ़ै ना हाथा ॥
पातर पेट आहिं जनु पूरी ॥ पान अधार फूल अस गोरी
रोमावलि तेहि ऊपर झूमा जानहु दोऊ शाम[9] औ रूमा
अलक[10] भुवंगिन[11] तेहि पर लोटा हिय[12] कर एक खेल दुइ गोटा
बान[13] पुकार उठे कुच[14] दोऊ ॥ नाग सरन वह पावन कोऊ

कैसहि नवहिं न नायें जोबन गर्ब[15] उठान ।
जो पहिले कर[16] लावै सो पावै रत[17] मान ॥॥

भृंग[18] लंक[19] जनु मांझ न लागा दुइ खंड नलिन[20] मांझ जनु नागा
523 जब फिर चलै देख वह पाछे । अप्सर[21] इन्द्र केर जनु काछे[22] ॥
जोह चलै मन भा पछताऊ अबहुं दृष्टि[23] लाग वह भाऊ
वही गवन छिप अप्सर गई । भई अलोप[24] ना परगट[25] भई ॥
हंस लजाय समुंद कहं खेली हस्ती[26] लाज धूर सिर मेली
जगत स्त्री देखी महूं ॥ ॥ उदय अस्त नारि न कहूं ॥
महि मंडल तौ ऐसो न कोई ब्रह्म[27] मंडल जो होय तो होई

बरनों नारि जहां लग दृष्टि[28] झरोखें आय ॥
और जो अहै अदृष्टि[29] धन सो मोहि बरन न जाय

सोना १ तथा नग २ सीना ३ छाती ४-१४ सोने की कटोरी ५ नारयल ६ नखत ७ दुनिया ८ नाम मुल्क ९ बाल १० नागिन ११ छाती १२ तीर १३ गरूर १५ हाथ १६ सुख १७ भंभीरी १८ कमर १९ कोका बेली २० परी २१ सारी पहिने २२ निगाह २३ गायब २४ ज़ाहिर २५ हाथी २६ स्वर्ग लोक २७ नज़र २८ नज़र में नहीं

काधन कहौं जैसो सुकमारा । फूल के छुवे होय विकरारा ॥
परवुरीं काढ़ै फूलन सेती ॥ सोई डासी सोर सपेती ॥ ।
फूल समूंचा रहै जो पावा ॥ ब्याकुल होय नींद नहिं आवा 524
सहै न क्षीर खांड औ घीउ ॥ पान अधार रहै तन जीव ॥
नस पानन की काढ़ै हेरी ॥ अधर नगड़ै फांस वह केरी
मकरिक तार ताहिं करु चीरू ॥ सो पहिरें जरजाइ शरीरू ॥
पालंग पावकि आछे पांटा । नेत बिछाय चलै जो बाटा ॥

कहां नयन जो राखौं पलक न लाऊं ओट
प्रेम का लुब्धा पावे काहि सो वड़का छोट

जो राघो धन वरन सुनाई । सुना शाह मुरछा गत आई
जनु मूरत वह परगट भई ॥ दरस देखाय ताहि छिप गई
जो जो मंदिर पद्मिनी लेखें ॥ सुना सो कमल कुमुद जो देखें 525
होय मालती धन चित पैठी । और पुहुप कोइ आवन दीठी
मन होय भंवर भयो बैरागा । कमल छाड़ चित और न लागा
चांद की रंग सूर्य्य जस राता । और नखत सों पूंछ न बाता
तब अलि अलाउदीं जग सूरू । लेउं नारि चितौर के चूरू ॥

जो वह मालति मानसर अलि न मलीन्ही जात
चितौर महं जो पद्मिनी फेर वही कहु बात

ए जग सूर कहूं तुम पाहां ॥ और पांच नग चितौर माहां
एक हंस है पंख अमोला । मोती चुनै पदारथ बोला ॥ 526
दूसर नग जो अमृत बसा ॥ सब विष हरै जहां लग डसा
तीसर पाहन परस बखाना । लोह छुवै हाय कंचन वाना

बिछाना १ बिछौना २ दूध ३ होंठ ४ कपड़ा ५ वदन ६ तख़त ७ ज़ेर अंदाज़ ८ आशिक ९ ज़ाहिर १० कोकाबिली ११ पद्मावत १२ फूल १३ लाल १४ भंवर १५ १७ सूर्य्य १६ १९ तअम्मुल १८ लाल २० पारसपत्थर २१

चौथ अहै सांदूर[1] अहेरी ॥ जेहि बन हस्त[2] धरै सब घेरी
पांचों है सो तहां लागना । राज पंख[3] पंखी गरजना ॥
हरनि रोझ[4] कोइ बांचन भागा । जस सुचान[5] तैस उड भागा ।

नग अमोल अस पांचों मान समुंद वह दीन्ह
इस कंदर नहिं पाई जोरे समुंद धुसलीन्ह ॥

पान दीन्ह राघो पहिरावा[6] ॥ दस गज मत्त घोर सो पावा ॥
और दूसर कंकन कर जोरी । रतन जो लाग वह तीस करोरी
527 लाख दिनार[7] देवाई जेवां[8] ॥ दारिद हरा समुंद की सेवां[10] ॥
हों जेहि देत्तस[11] पद्मिनी पाऊं ॥ तोहि राघो चित्तौर बैठाऊं[12] ॥
पहिले कर पांचों नग मूठी ॥ सो नग लेउं जो कनक[13] अंगूठी ।
सुरजा वीर पुरुष बरयारू[14] ॥ नाजन[15] नाग सिंह असवारू ॥
दीन्ह पत्रि लिख बेग[16] चलावा । चित्तौर गढ राजा पहं आवा ।

राजैं पत्रि बचावा किरपा[17] लिखी अनेग ॥
सिंहल की जो पद्मिनी पठै देव तेहि बेग ॥

खंड चौतीसवां लड़ाई राजा और बादशाह

सुन अस लिखा उठा जर राजा । जानो देव तड़प घन[18] गाजा ॥
का मुंहि सिंह देखावस आई । कहों तो शार[20] दूल धर खाई ॥
528 भलहिं जो शाह भूमपति[21] भारी । मांगन कोउ पुरुष की नारी ॥
जो सो चक्रवेता[22] कहं राजू ॥ मंदिर[23] एक अपन कंह साजू
अप्सर[24] जहां इन्द्र पै आवै ॥ और जो सुने न देखै पावै ॥
कंस का राज जिता जो गोपी ॥ कान्ह[25] न दीन्ह काहु कहं गोपी

शेर सुर्ख १० २० हाथी २ सीमुर्ग ३ नाम जानवर ४ शिकरा ५ खिलअत ६ हाथी मस्त ७ अशरफी ८ दक्षिना ९ खिदमत १० दिन ११ राज पर बैठाउं १२ सोना १३ ज़बरदस्त १४ कोड़ा १५ जल्द १६ मेहरबानी १७ बादल १८ बिजुली १९ ज़मीन का मालिक २१ तमाम दुनिया का राजा २२ किला २३ परी २४

कोमोहिं ते अस सूर[1] अगारा ॥ चढ़ै स्वर्ग[2] घुस परै पतारा ॥

कातोहि जीव मराउं सकत आनका दोस[3] ॥
जो तस[4] बुझै न समुंद जल सो बुझाय कित ओस

राजा अस न होहु रिस राता[5] ॥ सुन हो जूड़ न जर कहु बाता ॥
मैं हों यहां मरे कहं आवा ॥ बादशाह अस जान पठावा ॥
जो तोहि भार न औरहि लीन्हा पुनि सो काल[6] उतर[7] वहि दीन्हा
बादशाह कहं ऐस न बोलू ॥ चढ़ै तो परै जगत महं डोलू ॥
सूरहि[8] चढ़त लाग नहिं बारा । दहक आग तेहि स्वर्ग पतारा ॥
परबत उड़हि सूर[9] के फूकें ॥ यहि गढ़ छार[10] होय इक झोकें ॥
धसै सुमेर[11] समुंद गा पाटा ॥ भूमि[12] डोल शेष फण फाटा ॥

तासो कोन बड़ाई बैठ न चितौर खासि ॥
ऊपर लेहु चंदेरी का पद्मिन इक दास ॥

जो पै घर[13] नि जाय घर केरी ॥ का चितौर का राज चंदेरी ॥
जेई[14] लेई घर कारन कोई ॥ सो घर देइ जो योगी होई ॥
हों रन थंबूर[15] नाथ हमीरू[16] ॥ कल्प[17] माथ जे दीन्ह सरीरू[18] ॥
हों सो रतन सेन सक[19] बन्धी ॥ राहु[20] बेधि जीते सर बन्धी ॥
हनुमत सरस[21] भार[22] जें कांधा । राघो[23] सरस समुंद जें बाधा ॥
बिक्रम[24] सरस कीन्ह जें शाका सिंहल दीप लीन्ह जो ताका ।
जो अस लिखा भयो नहि ओछा जियत सिंह की गह को मोछा

दर्ब्य लै तौ मानौं सेव करौं गहि पाव ॥
चाहै नारि पद्मिनी तौ सिंहल दीपहि जाव

सूरमा १ आसमान २ पाप ३ प्यास बुझे ४ लाल ५ दुशमन ६ जवाब ७ सूर्य्य ८ नाम बाजा ९ धूर १० नास पहाड़ ११ ज़मीन १२ औरत १३ जो कोई किसी की औरत लैले १४ नाम क़िला १५ नाम राजा १६ सिर कटाना १७ बदन १८ मशहूर १९ निशाना जीत द्रुपदी व्याही २० बराबर २१ बोझ २२ श्री राम चन्द्रजी २३ राजा बिक्रम दित्य २४

बोलनराजा आपजनाई[1] ॥ लीन्ह उदयागेर[2] औरछिताई[3]
ससदीपराजा[4] सिरनावहिं ॥ औसैन[5] चलीपद्मिनी आवहिं
531 जाकरसेवकरै संसारा ॥ सिंहलदीपलेतकितबारा
जनजानेसियहगढ़तोपाहीं ताकरसबैतोरकुछनाहीं
जेहिदिन आयगाढ़[6]कैछेकी सरबस[7]लेइहाथकोटेकी[8] ॥
सीसनझारखेह[10]केलागें ॥ सोसिरझारहोयदुखआगे।
सेवाकरजोजियनतोहिभाई नाहितफेर[11]मांखहोयजाई।

जाकरजीवदीन्हपै अगमन[12] पावैसीस[13]जोहार
तेहिकरनी[14]सबजानैकाहपुरुषकानारि

तुर्कजाय[15]कहिमरैनधाई होयेइसकंदर[16]कीनाई ॥
532 सुनअमृतकंजली[17]बनधावा हाथनचढ़ारहापछतावा।
औतेहिदीपपतंग[18]होयपरा आगेनभाड़पांवदैजरा ॥
धर्तीलोहस्वर्ग[19]भातांबा ॥ जीवदीन्हपहुंचतकरलांबा[20]
यहचितौरगढ़सोइपहारू ॥ सूर[21]उठैदहकहोयअंगारू ॥
जेंबरइसकंदर[22]सरकीन्ही ॥ समुंदलियोधसजसवेलीन्ही
जोचढ़[23]आनीजायजिताई ॥ तबकाभैसोजीतजिताई ॥

महंसमुझयहि आगमन[24]सजराखागढ़साज
काल्हहोयजेहिआवनसोचलआवैआज

533 सुरजापलटशाहपहंआवा। देवनमानैबहुतमनावा ॥
आगजोजरैआगपैसूझा ॥ जरतरहैनबुझायेबूझा

अपनी तारीफ़ १ नाम मुल्क २-३ सातो मुल्क ४ फ़ौज ५ किलाकोघेरै ६ सब ७ रोकना ८ सिर ९-१३ धूर १० गुस्सा दिली ११ पहिले १२-२३ कियाहुवा १४ बादशाह १५ नामबादशाह १६ जहां अमृतहै १७ पांखी १८ आसमान १९ हाथ २० सूर्य्य २१ जैसे सिकंदरनेदुखपाया २२ जबबादशा आयेंगे २३ नाम पहलवान २५

ऐसे साथ नें नावै देवा ।। चढ़ै सुले[1] मां मानै सेवा ।।।
सुनके अस राना[2] सुलतानू । जैसे तपै जेठ कर भानू[3] ।।।
सहसा[4] करान रोष[5] तस भरा । जेहिं दिस देखै तेहिं दिस जरा
हिन्द देव काह वर[6] खांचा । सरक न आप आग सों बांचा
यहि जग[8] आग जो भरमहिं लीन्हा । सो संग आग दुहूं जग कीन्हा

रन[9] थंभीर जस जर बुझा चित्तौर परै सो आग
फेर बुझाये ना बुझै जरै देवस[10] के लाग ।।

लिखी पत्रि चारहुं दिस धाये । जहं तक उमरा बेग[11] बोलाये
दुन्द[12] घाव भाइन्द्र सकाना । डोला मेरु[13] शेष[14] अकुलाना
धर्ती डोल कूर्म[15] खर भरा ।। महना[16] मथ समुंद महं परा
शाह बजाय चढ़ा जग जाना । तीस कोस भा पहिल पयाना[17]
चित्तौर सौंह[18] बारगह तानी । जहं लग सुना कूच सुलतानी
उठ सरवान[19] गगन[20] लहि छाई । जानहु राते[21] मेघ देखाई ।।
जो जहं तहं सोता अस जागा । आय जोहार कटक[22] सब लागा

हस्ति[23] घोर औ दर[24] पुरुष जहं तक बेसरा[25] ऊंट
जह तहं लीन्ह पलाने कटक[26] सुरह[27] अस छूंट

चले सहस[28] बेसक सुलतानी । तीष[29] तुरंग बांक कनकानी ।।
परवरी[30] चली जो पांतहि पांती । बरन बरन औ भांतहिं भांती
काले[31] कुमैत[32] नील[33] सपेती[34] ।।। खिंग[35] कुरंग[36] बोज़[37] दोर[38] केतीती ।।
अबलक़[39] अबरस[40] लखी[41] शिराजी[42] । चौधर[43] चाल समुंद सब ताजी

नामवादशाह १ लाल २-२१ सूर्य्य ३ हज़ार ४ गुस्सा ५ घमंड ६ भागना ७ दुनियामें आगसे जलाया जायगा ८ नाम क़िला ९ दिन १० जल्द ११ नाम बाजा १२ नाम पहाड़ १३ नाम राजा सांप १४ कछुवा १५ उलट पलट १६ कूच १७ सामने १८ ख़ीमा १९ आसमान २० फ़ौज २२-२४-२६ हाथी २३ ख़च्चर २५ टीड़ी २७ हज़ार कुरसी २८ तेज़ घोड़ा २९ निशान ३० घोड़ों की क़िस्म ३१ से ४३

534

536

किरमज़[1] नुक़[2] राजरदा[3] भले । रूप[4] करान बोलसर[5] चले ।।
पच[6] कल्यान संजाब[7] बखानी महि[8] सायर सब चुन चुन आनी
मुश[9] की औ हिरमंजि[10] इराक़ी[11] । तुरकी[12] कही भुथार[13] बुलाक़ी[14]

सिर औ पूंछ उठायें चहुं दिस स्वांस उनाहिं ।।
रोष[15] भरे जस बावरे पवन की बास[16] उड़ाहिं

लोहे[17] सार हस्त[18] पहिराये ।। मेघ[19] श्याम जनु गरजत आये
मेघहि चाह[20] अधिक वै कारे ।। भयो असूझ देख अन्धि षारे
537 जस भादों निश[21] आवै दीठी ।।। स्वर्ग[22] जाय हर के तेहि पीठी ।।
सोरह लख हस्ती[23] जब चाला परबत सरस चलै जग हाला ।।
चले गैंड़ माते मद आवहिं ।। भागहिं हस्ति[24] गंध जो पावहिं
ऊपर जाय गगन[25] सिर घिसा ।। औ धर्नी नर कहं धसमसा ।।
भा भोंचाल चलत गज गानी जहं पग धरहिं उठै तहं पानी ।।

चलत हस्ति जग कांपा चांपा शेष पतार ।।
कूर्म[26] जे धर्ती लिये रहा बैठ गयो गज मार ।।

चले सो उमर अमीर बखाने ।। काबर नो जस उनके बाने ।।
खुरासान[27] औ चला हरेऊ[28] ।। गोर[29] बंगाला रहा न केऊ ।।
538 रहा न रूम[30] शाम[31] सुलतानू । काश्मीर[32] बट्टा[33] मुलतानू[34] ।।
जहंतक बड़ बड़ तुरक की जाती मांडो[35] वाली और गुजराती[36] ।।
पटना[37] उड़ेसा[38] के सब चले ।। लैगज हस्ति जहां लग भले ।।
कंवरू[39] कामत[40] औ पंड़वाई[41] ।। देवगढ़[42] लेत उदयगिर[43] आई ।।
चला सो परवत और कमाऊं[44] घिसया[45] नगर जहां लग नाऊं

घोड़ों की क़िस्म १ से ३ तक - सब दुनिया ८ घोड़े की ज़ात ९ से १४ तक - गुस्सा १५ डर १६ झूल लोहे की १७ हाथी १८-२३-२४ काले बादल १९ बहुत २० रात २१ आसमान २२-२५ कछुवा जिसके ऊपर ज़मीन है २६ नाम मुल्क २७ - से ४५ तक

उदय[1] अस्त लहि देश जो को जानै तेहि नाउं
सातों दीप[2] नवो खंड जुरे आय इक ठाउं[3]।

धन सुलतान जेहि क संसारा
वही कटक[4] अस जुरी अपारा
सबै तुर्क सिरताज बखाने[5]।
तबल बाज औ बांधे बाने ॥
लाखन मीर बहादुर जंगी
चित्रक[6] मानी तीर खंदंगी[7] ॥
जी भा[8] खोल राग सों मढ़े ॥
लेज़म घाल इराक़[9] हि चढ़े ॥
चमकै परवरी[10] सारि संवारी ॥
दरपन चाहि[11] अधिक उजियारी
बरन बरन औ पातहिं पांती
चली सो सैना[12] भांतहि भांती
बीहर[13] बीहर सबकी बोली ॥
बिधि यहि कहां कहां सो खोली

योजन सप्त[15] सप्त कर इक इक होय पयान[16]
अगिलहिं जहां पयान होय पछलहिं तहां मिलान

डोले गढ़ गढ़पात[17] सब कांपे ॥
जीवन पेट हाथ हिय[18] चांपे ॥
कांपा रनथंभोर[19] डर डोला ॥
तरवर[20] गयो झुराय तबोला ॥
चूना[21] गढ़ औ चंपा[22] तेरी ॥
कांपा सांड़ो[23] लेत चंदेरी[24] ॥
गढ़ ग्वालिर[25] महं परी मथानी
औ कन्धार[26] मथा होय पानी
कालिंजर[27] महं परा भगाना।
भाग उजे गढ़[28] रहा न थाना
कांपा बांदो[29] नर दुररानी[30] ॥
डर रुहतास[31] बिजय[32] गिरमानी
कांप उदय[33] गढ़ देव गढ़[34] डेरा ॥
तब सो छिपाय आप कहं धेरा

गढ़ गढ़पति जहं तक सबै कांप डोल जस पान
का कहं बोल सौंह[35] भा बादशाह कर छान

चित्तौर गढ़ औ कंभलनेरी ॥
साजे दोनों जैसि सुमेरी[36] ॥

पूरब से पश्चिम तक १ सातों मुल्क २ जगह ३ फ़ौज ४ बयान ५ तसवीर ६ नाम तीर ७ मूट जांत से मढ़ी ८ घोड़ा ९ निशान १० ज़्यादा ११ फ़ौज १२ अलग १३ ईश्वर १४ कोस २८ १५ कूच १६ क़िलादार १७ दिल १८ नाम क़िला १९ पेड़ २० नाम मुल्क २१ से ३४ तक सामने ३५ नाम पहाड़ ३६

दूतन कहा आय जहं राजा | चढ़ा तुर्क[1] आवै दर[2] साजा ॥
सुन राजा दौड़ाई पाती ॥ | हिन्दू नाउं जहां लग ज़ाती ॥
541 चित्तौर हिन्दुन कर अस्थाना[3] | श[4] चतुर्क हठ कीन्ह पयाना[5] ॥
आव समुंद रहे ना बांधा ॥ | मैंहों मेड़ भार[6] सिर कांधा
पुरवहु साथ तुम्हार बड़ाई । | नाहित सब कहं मार चढ़ाई ॥
जौ लहि मेड़ रहै सुख साखा | टूटें बार[7] जाय नहिं राखा ॥

सती जो जिय महं सत धरै जरै न छाड़ै साथ
जहं बीड़ा तहं चून है पान सुपारी काथ ॥

करत जो रहे शाह की सेवा । | तिन्ह कहं पुनि अस आव परेवा[8]
सब होय एक मतें[9] जो सिधारे | बादशाह कहं आन जोहारे ॥
542 है चित्तौर हिन्दुन की माता । | गाढ़[10] परें तजे[11] जाय न नाता ॥
रतनसेन है जून्हर[12] साजा ॥ | हिन्दुन मांझ आहि बड़ राजा
हिन्दुन केर पतंग कर लेखा | दौर परहिं आग जो देखा ॥
कृपा[13] करहु तौ करहु समीरा[14] | नाहित हमहिं देहु हंस बीरा ।
पुनि हम जाहिं मरहिं वह ठाऊं[15] | मेट न जाय लाज कर नांऊं ॥

दीन्ह शाह हंस बीरा और तीन दिन[16] बीच ॥
तेहिं सीतल[17] को राखे जिन्हे अगिन महं मीच[18]

रतनसेन चित्तौर महं साजा | आय बजाय बैठ सब राजा ॥
तौ मर[19] बैस[20] पनवार[21] सवाई[22] ॥ | औ गोहेला[23] तन आय सिर नाई
543 क्षत्री[24] औ बचवान[25] बघेली[26] | अगरवार[27] चौहान[28] चंदेली[29] ॥
गहरवार[30] परेहार[31] सूकरे[32] ॥ | कलहंस[33] औ ठकुराय[34] जुरे ॥

बादशाह १ फौज २ मकान ३ दुश्मन ४ कूच ५ बोझ ६ दरवाज़ा ७ दूत ८ एक सलाह ९ मुशकिल १० छोड़ना ११ मौत का सामान १२ मेहरबानी १३ माफ़ १४ जगह १५ तीन दिन की मोहलत १६ ठंढा १७ मौत १८ राजपूतों की ज़ात १९ से ३४ तक

आगें ठाढ़ बजावहिं ढाढ़ी[1] ।। पाछें धुजा मरन की गाढ़ी ।।
बाजहिं संग संख औ तूरा[2] ।। चन्दन घोरीं[3] भरे सेंदूरा ।।
सज संग्राम[4] बांध सब साका छाड़ा जियन मरन सब ताका

गगन[5] धर्ति जो टेकी[6] तेहिं का गरू पहार ।
जौ लहि जिव काया[7] महं परै सो अंगवे[8] भार

गढ़ तस सजा जो चाहै कोई बरष सात लग खांग[9] न होई
बांकी चांह[10] बांक गढ़ कीन्हा औ सब कोट[11] चित्र[12] सम लीन्हा
खंड खंड चौखंड सवारे ।। धरे बिषम गोलन के मारे ।।
ठांवहिं ठांव[13] लीन्ह सब बांटी रहा न बीच जो संचरै[14] चांटी
बैठे धानक[15] कंगुरन कंगुरा । भूमि[16] न आंटी अंगुरिन अंगुरा
औ बांधे गढ़ गढ़ मतवारे[17] ।। फाटै भूमि[18] होहिं जो ठाढ़े ।।
बिच बिच बुर्ज बने चहुं फेरीं बाजैं तबल[19] ढोल औ भेरीं[20]

भा गढ़ राज सुमेरु[21] जस खर्ग[22] छुवै पै चाह
समुंद न लेखें लावै गंग सहस[23] मुख काह

बादशाह हठ कीन्ह पयाना[24] इन्द्र भंडार डोल भय माना
नब्बे लख सवार जो चढ़ा ।। जो देखा सो लोहे मढ़ा ।।
बीस सहस[25] घुमरहहिं निशाना गुल[26] कंचन फेरें असमाना ।।
बैरख ढाल गगन[27] का छाई ।। चला कटक[28] धर्ती न समाई
सहस पांति गज[29] मत चलावा घुसत अकास धसत भुइं आवा
बृक्ष उचार पेड़ि[30] सों लीन्ही ।। मस्तक झार तार मुख दीन्ही
चढ़हि पहारहिं भय गढ़ लागू बन खंड खोह न देखहि आगू

नाम बाजा १२ १९-२० कटोरी ३ लड़ाई ४ आसमान ५ २७ उठाना ६-८ बदन ७ कमी ९ पेचदार खाई १० क़िला ११ तसवीर १२ जगह १३ चूंटी न जासके १४ चौकीदार १५ ज़मीन १६-१८ हाथी मस्त १७२ नाम पहाड़ २१ आसमान २२ २७ हज़ार २३-२५ कूच २४ चोंटी २६ फ़ौज २८ जड़ ३०

कोउ काहू न संभारे होत आवडर चांप।
धर्ति आप कहं कांपै स्वर्ग आप कहं कांप

चलीं कमानें जेहि मुख गोला | आवहिं चलीं धर्ति सब डोला
लाये चक्र बज्र के गढ़े ।। | चमकहिं रथ सोने के मढ़े ।।
546 तेहिं पर बिषम कमाने धरीं | सांचें अष्ट धात की भरीं ।।
सौ सौ मनैं पियहिं वै दारू ।। | लागहिं जहां सो टूट पहारू ।।
मांती रहहिं रथहिं पर परीं ।। | शत्रुन कहं सौंहें उठ खरीं ।
जो लागै संसार न डोलहिं । | होय भुइं कंप जीभ जो खोलहिं
सहस सहस हस्तिहिं की पांती | खांचहिं रथ डोलहिं नहिं मांती

नदी नार सब पानी जहां धरैं वै पांव ।।
ऊंच खाल बन बीहर होत बराबर आव

कहों शृंगार जैस वै नारी ।। | दारू पियहिं जैसि मतवारी
उठै आग जो छाड़हिं स्वांसा | धुवां सो लागै जाय अकासा
547 सेंदुर आम सीस उपराहीं ।। | पहिया तरवन चमकत जाहीं
कुंच गोला दुइ हिरदें लाई ।। | अंचल धुजा रहत छिटकाये
रसना लूक रहहिं मुख खोलें | लंका जरै सोउ न के बोलें ।।
अलक जंजीर बहुत गये बांधे | खींचहिं हस्ती टूटहिं कांधे ।
वीर शृंगार दोउ इक टाऊं | शत्रु शाल गढ़ भंजन नाऊं ।

तिलक पलीता माथें दसन बज्र के बान
जेहिं हेरहिं तेहिं मारहिं चुरकुस करें निदान

जेहिं जेहि पंथ चलीवे आवहिं | आवहिं जरत आग तस लावहिं

आसमान १ तोपें २ पहिया ३ भारी ४ तथा बारूद ५ दुशमन ६ सामने ७ हज़ार ८ हथी ९ १६ सिर १० छाती ११ सीना १२ ज़बान १३ बाल १४ गरदन १५ जगह १७ दुशमन को मारने वाली १८ क़िला तोड़ने वाली १९ दांत २० तीर २१ देखना २२ बहुत २३

जरहिं जो परबत लाग अकासा | बनखंड धकहिं पलास[1] को पासा
गैंड़ा गयंद[2] जरे भये कारे ।। | आवैं मिगी[3] रोज[4] झनकारे ।
कोयल नाग काग औ भंवरा | और जो जरे तिनहि को संवरा
जरा समुंद पानि भारवारा । | यमुना श्याम भई तेहिं झारा
धूम[5] श्याम अंत्रक्ष[6] भये मेघा[7] | गगन[8] श्याम भा धुवां जो भेधा
सूर्य जरा चांद औ राहू ।। | धर्ती जरी लंक भा दाहू[9] ।।

धर्ती स्वर्ग[10] असूझ भा तबहूं न आग बुझाय
उठहिं बज्र नर डंगवे[11] धूम[12] रही जग छाय ।।

आवै डोलत स्वर्ग[13] पतारू ।। | कांपे धर्ति न अंगवे[14] भारू ।।
टूटहिं परबत मेरु[15] पहारा ।। | होय होय चूर उड़हि होय छारा[16]
सतखंड धर्ती भइ खट खंडा | ऊपर अष्ट भये ब्रह्मंडा[17] ।।
इन्द्र आय तेहि खंड होय छावा | चढ़ सब कटक[18] घोर दौड़ावा
जेहि पंथ[19] चल ऐरावत[20] हाथी | अबहिं सो डगर गगन[21] महं आती
औ जह जाम रही वह धूरी ।। | अबहूं बसे सो हरिचन्द पूरी ।।
गगन छिपा खेह[22] तस छाई | सूरज छिपा रैन[23] होय आई ।।

गयो सिकन्दर कजलिबन भयो सो तस अन्धियार
हाथ पसारन सूझे बरै लाग मसयार ।।

दिनहिं रात अस परी अचाका | भारवि[24] अस्त चन्द्र रथ हाका
मद्रिन[25] जगत[26] दीप परगसी[27] ।। | पंथक[28] चलत बसेरे बसी ।।
दिन के पंख जरत उड़ भागे । | निशि[29] के निसर चरे सब लागे
कमल सुकेता कुमदन[30] फूले | चकई बिछुरा चक मन भूले

ढांख १ हाथी २ नाम जानवर ३-४ धुवां ५-१२ बीच ६ बादल ७ आसमान ८-१० १३-१७ २१ जलना ९ ढेर ११ बोझ न उठाना १२ नाम पहाड़ १५ धूर १६ फौज १८ राह १९ नाम हाथी २७ खाक २२ रात २३-२९ सूर्य्य २४ मकान २५ दुनिया २६ रोशन २७ मुसाफिर २८ कोका बेली ३०

चला कटक[1] अस चढ़ा अपूरी ॥ अगलहिं पानी पिछलहिं धूरी
महि[2] उजड़ी सायर[3] सब सूखा । बन[4] खंड रहे न एको रूखा ॥
गड़[5] गिर फूट[6] भये सब माटी ॥ हस्ति[7] हेरान तहां को चांटी[8] ॥

खेह[9] उड़ानी जाहि घर हेरत फिरत सो खेह ॥
पिय आवहिं अब दृष्टि[10] तोहि अंजन नयन उरेह

यहि बिधि होत पयान[11] सो आवा आय शाह चितौर नेरावा ॥
राजा राउ देख सब चढ़ा ॥ आव कटक[12] सब लोहे मढ़ा ॥
551 चहुं दिश दृष्टि[13] परी गज[14] जूहा ॥ श्याम[15] घटा मेघ जस रूहा ॥
आरो[16] उरु कुछ सूझ न आना खर्ग[17] लोह घुम रहहिं निशाना
चढ़ धौरा[18] हर देखहिं रानी[19] ॥ धन तुइ अस जाकर सुलतानी
कै धन रतन सेन तुइ राजा ॥ जा कहं तुर्क कटक[20] यहि साजा
बैरख ढाल केर परछाईं ॥ रयन[21] होत आवै दिन मांहीं ॥

अन्ध कूप भा आवै उड़त आव तस छार[22] ॥
ताल तलावा पोखर धूर भरी ज्योनार ॥

राजै कहा कीन्ह जस करना ॥ भयो असूझ सूझ अब मरना
जहं लग राज साज सब होऊ ॥ तत[23] खेन भयो सजोउ[24] संजोऊ
552 बाजे तबल अकोट जुझाऊ । चढ़ा कोंप सब राजा राऊ ॥
करहिं तुखार[25] पवन सों रीसा[26] कन्ध ऊंच असवार न दीसा ॥
काबस्तों अस ऊंच तुखारा ॥ वुइ बैरें पहुंचे असवारा ॥
बांधे मोर छांह[27] सिर सारहिं ॥ भांजहिं पूछ चंवर जनु ढारहिं
राग संभाहा[28] पहुंचो तोपा ॥ लोहें सार पहिर सब कोपा ॥

फ़ौज १-१२-२० ज़मीन २ तालाब ३ जंगल ४ क़िला ५ पहाड़ ६ हाथी ७ चूंटी ८ धूर ९ निगाह १० १३ कूच ११ हाथियों का हलक़ा १४ काली घटा छाई १५ वारपार १६ आसमान १७ महल १८ पद्मावत १९ रात २१ खाक २२ तुरन्त २३ सामान २४ घोड़ा २५ गुस्सा ३६ मोरछल २७ तेज़-चालाक २८

तैसे चंवर बनाये औ घाले गल[1] झंप ।।।।
बांध सेत[2] गज[3] गाह तहं जो देखै सो कंप ।।

राज तुरंगम[4] बरनों काहा ।। आनी छोर इन्द्ररथ बाहा ।।
ऐसो तुरंगम परी न दीठी[5] ।। धन असवार रहहिं तेहि पीठी
ज़ात वाल का समुंद थहाये । स्वेत[6] पूंछ जनु चंवर बनाये ।। 553
बरन बरन परवरी अति लोनी[7] जानहुं चित्र[8] संवारे सोनी ।।
माणिक[9] जड़े सीस[10] औ कांधे चंवर लाग चौरासी बांधे ।।
लागे रतन[11] पदारथ हीरा ।।। बरहिं दिनहिं दीपक चहुं फेरा ।
चढ़हि कुंवर मन करहिं उछाहू[12] आगें घाल गिनै नहिं काहू ।।

सेंदुर सीस चढ़ायें चन्दन खौर देह ।। ।।
सो तन काह लगई अन्त होय जो खेह[13] ।।

गज मैमंत[14] पुरवरी नृप बारा[15] ।। देखै जानहु मेघ अगारा ।।
स्वेत[16] गयंद पीत औ राते[17] ।। हरे श्याम घूमहिं मद माते
चमकहिं दरपन[18] लोहे सारी जनु परबत पर परीं अंवारी ।। 554
श्रीमेल[19] पहिरायें सूडें ।।।। कनक[20] न भायं पाय तर रौंदें ।।
सोने मेल सो दांत संवारे ।। गिरिवर[21] टरहिं सो उनके टारे ।।
परबत उलट भूमि[22] सों मारहिं परै जो भीर तीर अस झारहिं
ऐस गयंद[23] साजे सिंहली ।। कोटि कूर्म[24] पीठ कलमली ।।

ऊपर कनक[25] मंजूसा लाग चंवर औ ढार ।।
भलपति बैठ भाल[26] लै औ बैठे धन्कार[27] ।।

अश्व[28] दल गज दल दोनों साजे औ घन तवल जु झारू बाजे ।।

गलखोद १ सफ़ेद २-६ नाम ज़ेवर ३ घोड़ा ४ नज़र ५ रंग बरंग निशान ७ बहुत ८ खूबसूरत ९ तसवीर १० जवाहिरात ११-१३ सिर १२ ख़ुशी १४ धूर १५ हाथी १६-२५ राजा के दरवाज़ा १७ सफ़ेद हाथी १८ लाल १९ चार आईना २० ठीका २१ सोना २२ पहाड़ २३ ज़मीन २४ कछुवा २६ सोने की अंमारी २७ नेज़ा २८ तीर अंदा

[illegible]

माथेमुकुट छत्रसिर साजा ।। चढ़ा बजायइन्द्र अस राजा ।।
आगेरथ सेनासब ठाढ़ी ।। पाछेधुजा सरनकीकाढ़ी ।।
555 चढ़ि बजाय चढ़ा जसइन्दू ।। देवलोक गोहनु भाहिन्दू ।।
जानहुं चांद नखत लेचढ़ा। सूर्य्य कटकरैनि मस मढ़ा ।।
जौलहि सूर जाहिदेखरावा ।। निकसचांदघरबाहर आवा ।
गगन नखत जसगिननजाहीं निकस आयतस भुईंनसमाहीं

देव अनीराजाकीजगहोयगयो अस झ ।।
वहिंकसहोय चहतहै चांदसूर्य्यसोजूझ ।

यहांगज अस साजबनाई ।। वहांशाहकी भई अवाई ।।
अगलैंदौड़ आगे आईं ।। पिछलेपाछकोसदसताईं ।।
556 शाह आयचित्तौरगढ़ बाजा। हस्तीसहसबीससंगगाजा ।।
उनईं आय दोउदलगाजे ।। हिन्दूतुरुकदेउ समबाजे ।।
दोऊसमुंददधिउदधि अपारा दोनोमेरुवरवड पहारा ।।
कोपजो भार दुहुंदिशसेली औहस्ती हस्तिहिंसोपेली ।।
आंकुस चमक बीज असबाजहिं गरजहिंहस्तिमेघजनुगाजहिं

धर्ती स्वर्ग दोऊदल जूझहिंऊपर जूझ ।।
कोऊ टरैं नटरैं दोनों बज्र समूझ ।।

खंड पैंतीसवां सुलह राजा शाहबादशाह

हस्तिहिंसों हस्ती हठ गाजहिं जनुपरबत परबतसों बाजहिं
कोउ गयंद नटारें टरही ।। दूटहिंदांत सूंड गिरपरही ।।
557 परवत आयजोपरहिं तगही दलमंह चांप रेंहि मिलजाही
कोइहस्ती असवारहिंलेहीं सूंडसमेट पायनर देहीं ।।

फ़ौज १-२-११ साथ २ तथा सुलतानी फ़ौज ३ रानकी सियाही में ४ सूर्य्य ५ तथा राजा ६ आसमान ७ पहुंचा ८ हाथी १०-१४-१५-१६ बराबर ११ समुंदहीका १२ पहाड़ १३ धूर १८

कोइ असवार सिंह[1] होय मारहिं | हुन मस्तक सों सूंड़ उतारहिं
गबि[2] गयंद[3] तन गगन[4] पसीजा | रुधिर चले धरती सब भीजा ॥
कोइ मैमंत[5] सँभारहिं नाही | तबजाने जब गुंड सिर खाहीं

गगन रुधिर जस बरसे धरती भीज मिलाय
सिर धर दूट बिलाहिं तस पानी बेग[6] बिलाय

ऊदो बज्र जूझ जस सुना ॥ | नेहि ते अधिक भयो चौगुना
बाजहिं खड्ग[7] ऊडी डर आगी | भुई[8] जर चही स्वर्ग कहं लागी
चमकहिं बीज होय उजियारा | जेहि सिर परै होय दुइ फारा।
सैन[9] मेघ अस दुहुँ दिशि गाजा | खड्ग जो बीच बीज अस बाजा ॥
बरसहिं सेल बान होय कादों | जस बरसै सावन औ भादों ।
लपटहिं कोप परहिं नर वारी ॥ | चौ गोला औ लागत भारी ॥
जूझे बीर लिखों कहं ताईं ॥ | लै अपसर[10] कैलाश सिधाईं ॥

स्वामि काज जो जूझै सोइ गये मुख रात ॥
जो भागै सत छाड़ि[11] के ससि मुख चढ़ै बरात[12] ।

भा संग्राम न माच अस काऊ[13] ॥ | लोहे दुहुँ दिशि भयो अगाऊ
कंदहिं कादहिं[14] पुर भुइं परे ॥ | रुधिर सलिल[15] होय सोय[16] मरे
आनन्द व्याह करैं मस रवोवा | अब भख जन्म जन्म कहं पावा
चौसठ योगिन खप्पर पूरा ॥ | बृक[17] जंबुक[18] घर बाजहिं तूरा ॥
गद्ध चील्ह सब मंडप छावहिं | काग कलोल करहिं चौगावहिं
आज शाह हठ अनी[19] बिवाही | पाई[20] भुगुति जैसि मन चाही ॥
जेहिं जस मास भखा परावा। | नस ते हि कर लै औरहिं खावा

शेर १ ग़रूर २ हाथी ३ आसमान ४-११ ख़ून ५ मेजा सिर का ६ जल्द ७ भारी लड़ाई ८ बहुत ९ तलवार १० बादल सी फ़ौज ११ बिजुली १२ इन्द्र लोक की परी १४ मालिक १५ लाल १६ सिंहाड़ी १७ ईश्वर के सामने १८ लड़ाई १९ तलवार की बिजुली से बहुत लोग ज़मीन में गिरे २० पानी २१ तालाब २२ भेड़िया २३ गीदड़ २४ कौआ २५ कुराक २६ भोग

558

559

काहू साथ न तन[1] का सकत मुवे सब पोष ॥
ओछे[2] पूर जू जानत जो नाहें आवत जोष

वांद न टरै सूर[3] सों कोपा ॥ दूसर छत्र सौंहि[4] के रोपा ॥
सुना शाह अस मयो समूहा[5] पेले सब हस्तिन[6] के जूहा ॥
560 आज चन्द्र तोर करों निपातू[7] ॥ रहै न जग महं दूसर छातू ॥
सहस[8] किर न होय किरन पसारा छेका चांद[9] जहां लग तारा ॥
दर[10] लोहे दरपन भा आवा । घट घट जानो भानु[11] देखावा
वहु क्रोधित सेना[12] हल धाई ॥ अगिन पहार जरत जनु आई
खेर्ग[13] बीज सब तुर्क उठाई ॥ ओड़न[14] चन्द कमल कर[15] पाई

जगमग अनी[16] देख के धाय दृष्टि[17] तेहि लाग
छुवे होय जो लोहे मांझ[18] आवतेहि आग ।

सूरज[19] देख चांद मन लाजा ॥ बिकसत[20] कमल कुमुद[21] भा राजा
पहिलहिं चन्द आव निशि पाई दिन दिनेर[22] सों कौन बड़ाई ॥
561 अहै जो न खत चांद संग तपी । सूर[24] की दृष्टि[25] गगन[26] महं छिपी
की चिंता राजा मन बूझा ॥ जेहिं सों स्वर्गन[27] धर्ती जूझा
गढ़ पाते उत्तर लड़े नहिं धाई । हाथ परे गढ़ हाथ पराई ॥
गढ़ पति इन्द्र गगन गढ़ काजा देवसन[28] निसर रैन[29] कर राजा ।
चंद रैन रहि न खतहि भांझा सूर्य्य न सौंहि[30] होय चहि सांझा

देखा चंद्र भोर भा सूरज के बड़ भाग ॥
चांद फिरा भा गढ़ पति सूर्य्य गगन गढ़ लाग

कटक[31] असूझ अलावल शाही आवत कोइ न संभारै ताही

तन साथ नहीं जाता चाहे मोटा हो १ ओछा पेट भरता-जो दाना है अंदाज़ रखता २ सूर्य्य ३-११-२३-२४ सामने ४ गुस्सा ५ हाथी ६ नास ७ हज़ार ८ तथा राजा ९ फ़ौज १०-१२-१६-३१ तलवार १३ डाल १४ हाथ १५ निगाह १७ बीच १८ तथा बाशाह १९ खिलना २० कोका बेली २१ रात २२-२९ नज़र २५ आसमान २६-२७ दिन २८

उदह[1]समुंद जस लहरे देखी ।। नयन देख मुख जाय न लेखी ।
केते बजावत उतरे घांटी ।। केते बजावत मिल गये माटी
केतहिं नित[2]हिं देइ नव साजा कबहुं न साज घटै तस राजा
लाख जाहि आवहिं नव लाखा फरै झरै उपनी[3] नइ शाखा ।।
जो आवै गढ़[4] लागै सोई ।। थिर होय रहै न पावै कोई ।।
उमर अमीर रहे जहं ताई ।। सबही बाट अलंगै[5] पाई ।।

लाग कटक[6] चारहुं दिश गढ़ सो पराइक दाह[7]
सूर्य्य गहन भा चांदहि[8] चांद भयो जस राह

अथवा देव[9] ससूर[10] भा बासा ।। परी रैन[11] शशि[12] उवा अकासा
चांद[13] क्षत्र दय बैठो आय ।। चहुं दिश नखत दीन्ह छिटकाय
नखत अकासहिं चढ़े दिपाई ।। तत तत लूका परहिं बुझाई ।।
परहिं सेल[14] जस परहिं बिजागी[15] पहनहि[16] पहन बाज उठ आगी
गोला पर गोला ढरकावहिं ।। चून करत चारहुं दिश आवहिं
उनई घटा बर्ष झरलाई ।। ओला टपकैं परे बुझाई ।।
तुकं न मुख फेरैं गढ़ लागी ।। एक मरै दूसर होय आगी ।।

नृपति[17] बान सन मुख परहिं सकै न कोई गाढ़[18]
उनई शाह सैन[19] सब रही भोर लग ठाढ़

भयो बिहान भानु[20] पुनि चढ़ा सहस[21] किरन जैसो बिधि[22] गढ़ा
भा धावा गढ़ लीन्ह गरेरी ।। कोपा कटक[23] लाग चहुं फेरी ।।
बान करोर एक मुख छूटहिं बाजहिं[24] जहां फोंकलहिं फूटहिं
नखत गगन[25] जस देखे घने ।। तस गढ़ फाटहिं बनहि हने

दरया आगका १ हमेशा २ पैदा होना ३ क़िला तथा दुनिया ४ हद ५ फ़ौज ६-१९-२३ आग ७ तथा राजा ८ दिन ९ सूर्य्य १० रात ११ चांद १२ तथा रतनसेन १३ गोला १४ आग १५ पत्थर १६ राजा के तीर १७ सामना १८ सूर्य्य २० हज़ार २१ ईश्वर २२ पहुंचना २४ आसमान २५

बानवेध साही किये राखा | गढ़ भा गड़ुर फुलावै पांखा ॥
उड़गा कीर[1] कटिन[2] हिय बाता। | तोपै लहें होय मुख[3] राता ॥
पीठ दीन्ह तेहिं बानहिं लागे | चांपत जाहिं पगहिं पग आगे ॥

चार पहर दिन जूझ भा गढ़ न टूट तस बांक
गरु होत पै आवै दिन दिन नाकहिं नाक ॥

छेंका[4] कोट ज़ोर अस कीन्हा | घुसा नगर सुरंग तहं दीन्हा ॥
गरगज[5] बांध कमानैं[6] धरीं ॥ | बज्र अगिन मुख दारू भरीं
हबशी रूमी और फिरंगी ॥ | बड़ बड़ गुनी और तेहि संगी
जेहि की जोत जाहिं उपराहीं | जहं तार्कहिं चूकहिं तहं नाहीं
अष्ट धात के गोला छूटहिं। | गिर पहाड़ चून होय फूटहिं
इकबारहि सब छूटहिं गोला | गरजै गगन[7] धर्ति सब डोला
फूटे कोट[8] फूट जनो सीसा ॥ | उड़हिं बुर्ज जाय सब पीसा ॥

लंका रावट[9] जस भई दाह परा गढ़ सोय ॥
रावन भाल[10] जो जर लिखो कहु किम अजर सो होय

राजा केर लाग गढ़ धुई ॥ | फूटे जहां संवारहिं सोई ।
बांकी बरसहिं बानक[11] करेइ | रातहिं कोट चित्र[12] के लेइ ॥
गाजे गगन[13] चढ़ा जस मेघा | बरसहिं बज्र[14] सललि कोठे घा
सौसौ मन के बरसहिं गोला । | बरसहिं टपक तीर जस ओला
जानहुं परी स्वर्ग[15] हत गाजा । | फाटी धर्ति आय जो नाजा[16] ॥
गरगज[17] चूर चूर होय परहीं ॥ | हस्ति[18] घोर मानुष संहरहीं[19] ॥
सबहिं कहा अब पैर[20] लै आया | धर्ती स्वर्ग जूझ तस लावा

राजा के हवास का तोता उड़ गया १ मुशकिल २ मुंह लाल ३ घेरा किला ४ मरहला ५-१० तोपैं ६ आसमान ७ क़िला ८ राख ९ माथा १० बांके बनानेवाले ११ तसवीर १२ आसमान १३ सख़्त पत्थर के गोले १४ आसमान से बिजुली गिरी १५ पहुंचना १६ हाथी १९ मरना १९ क़यामत २०

उठो बज्र[1] सन मुख जरे होय इक डंकोइ[2] लाग
जगत जरै चारहुं दिशा कोरे बुझावै आग

तबहूं राजा हिये[3] नहारा । राज[4] पंवर पर रचा अखारा ॥
सौंहैं[5] शाह कर बैठक जहां सामहिं नाच करावै तहां ॥
जंत्र[6] पखावज आदि जो बाजा सुर[7] मंदिर खाब[8] भल साजा
बीन[9] निपातक कमाय[10] जगहे बाज उमरती[11] अति कहकहे
चंग[12] उपंग[13] नाद[14] सुर[15] तूरा ॥ मुहर[16] बंस[17] बाजे भल तूरा[18] ॥
हुड़क[19] बाज डफ[20] बाज गंभीरा औ बाजहिं भल छांछ मंजीरा
तंत[21] बितंत सुभ्रे[22] घन तारा । बाजहिं शब्द होय झन्कारा

जग सिंगार मन मोहन पातुर नाचहिं पांच
बादशाह गढ़ छेंका राजा भूला नाच ॥

बीजा नगर केर सब गुनी ॥ करहिं अलाप बुद्ध चौगुनी
प्रेम[23] मे राग[24] भैरों तेहि कीन्हा दुसरे मालकोस[25] पुनि लीन्हा
राग हिंडोल[26] सो तिसरे गाई । चौथे मेघ मलार[27] सोहाई ॥
पचयें श्री[28] राग भल किया । छटयें दीपक[29] उठा बर दिया
छओ राग गाये भल गुनी ॥ औ गाईं छत्तिस रागिनी ॥
ऊपर भईं सो पुतली नाचहिं तर भये तुर्क कमानी[30] खांचहिं
काढा माथा धुमरा[31] छुमरा ॥ तर भये देख मीर औ उमरा

सुन सुन सीस[32] धुनहिं सब कर[33] मलि मलि पछताहिं
कबह महाथ चढ़हिं यहि कै तब यह दुख जाहिं

पत्थर १ इक तरफ़ २ दिल ३ खास महल ४ सामने ५ नाम बाजा ६-७ ८-९-१०-११-१२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-२१ मोटे बहुत तार २२ पहिले २३ नाम राग २४-२५-२६-२७-२८-२९ मुसलमान लोग तोपें मारते थे ३० जिसने राजा की फ़ौज से सिर निकाला वह वहीं रहा ३१ सिर ३२ हाथ ३३

छओं राग गावें पातुरनी[1] ।। पुनि तेहि कीन्ह लिये रागनी
भा कल्यान[2] कान्हरा[3] कीन्ही राग बिहाग[4] किदारा[5] लीन्ही
ललित[6] बंगाला[7] गातहिं सोई आसावरी[8] भयो सब कोई
धनाश्री[9] सोहो[10] सो कीन्ही । भयो बिलावल[11] मारू[12] लीन्ही
रामकली[13] गुनकली सुहाई ।। सारंग[14] औ बिभास[15] मुहं आई
नित मलार[16] जो मिलार सुनाई श्याम[17] गूजरी पुनि भल गाई
पुरबी[18] औ देसाख[19] कुरारी[20] ।। टोडी[21] गोड़[22] सो भई निरारी ।।

गौरी[23] गौरा[24] तर[25] बैन सिद्ध अलापहिं ऊंच ।।
तहां तीर कहं पहुंचहि दृष्टि[26] जहां नहं पहूंच

पतुरिन नाच दीन्ह जो पीठी पड़ गई सौंह[27] शाह की दीठी[28] ।।
देखत शाह सिंहासन गूंजा कब लग मिर्ग चन्द्र[29] तेहि भूंजा
छाड़हि बान जाहिं उपराहीं गर्ब[30] केर सिर सदा तराहीं ।।
बोलत बान लाख भाऊंचा कोइ कोट[31] कोइ पंवर[32] सो पहुंचा
जहां गीर कन्नौज का राजा वहक बान पातुरि के लागा
बाजौ[33] बान जांघ जस नांचा जिवगा स्वर्ग[34] परा भुइं सांचा
उड़सा[35] नांच न बिनया मारा रहसे[36] तुर्क बाज कै तारा

जो गढ़ साजहिं लाख दस कोटि संवारहिं कोटि
बादशाह जब चाहैं ब बैन एको ओट ।।।

राजें पंवर[37] अकास चलाई ।। परा[38] बांध चहुं फेर ललाई ।।
सेत[39] बन्ध जस राघौ[40] बांधा । परा फेर भुइं भारन कांधा ।।
हनुमंत होय सब लाग मुहारा आवहिं चहुं दिश चले पहारा

तवायफ़ १ नाम राग रागनी २ से २५ तक - निगाह २६-२८ सामने २७ हिरन का बच्चा २९ गुरूर ३० क़िला ३१ दरवाज़ा ३२ पहुंचा ३३ + । + समान ३४ मौक़ूफ़ ३५ ख़ुश ३६ फ़ौज से वा शाह के तोपें चली ३७ राजा के क़िला में भौंचाल पड़ा ३८ पुल ३९ श्रीरामचन्द्रजी ४०

स्वेत[1] फटक जस लागे गढ़ा । बाँध उठाय चहूं गढ़ मढ़ा ॥
खंड खंड ऊपर होय पटाऊ ॥ चित्र[2] अनेक अनेक कटाऊ ।
सीढ़ीं होत जाहिं बहु भांती जहां चढ़ै हस्तिन[3] की पांती ।
भागरगज[4] अस कहत न आवा जनहुं उठाय गगन[5] लै लावा

राहु लाग जस चांदहि गढ़ लागा तस बांध ॥
सब धड़ लील ठाढ़ भा रहा जाय गढ़ कांध

राजसभा सब मंत्री बैठी ॥ देखन जाय मुंद मई दीठी[6] ।
उठा बांध तस सब गढ़ बांधा कीजे बेग[7] भार जस कांधा । 572
उपजी आग आग जस बोई ॥ अब मत[8] क्षीन आन नहिं होई
भा त्योहार जो चाचर जोरी खेल फाग अब लाई होरी ॥
समंद[9] फाग मेल सिर धूरी ॥ कीन्ह जो साका[10] चाही पूरी ॥
चन्दन अगर मलय गिर काढ़ा घर घर कीन्ह सरार[11] चढ़ाढ़ा
जून्हर[12] कहं साजा रनवासू । जेहिं सत हियें[13] कहां तेहि आसू

पुरुष न खर्ग[14] सभारी चन्दन खौरी देह ॥
मेहिरनि[15] सेंदुर मेला चहहिं भई जर खेह[16]

आठ बरष गढ़ छेंका रहा । धन सुलतान कि राजा महा
आय शाह अंबराउं[17] जो लाई फरे झरे पै गढ़ नहिं पाई ॥ 573
हठ[18] जोरी तब जून्हर होई ॥ पद्मिन[19] पावन भिन्नत[19] सोइ ।
यहि बिधि ढील दीन्ह तब नांई देहिली की अरदासें[20] आई ॥
पछम हरेव[21] दीन्ह जो पीठी । सो अब चढ़ा सौंह[22] के दीठी ॥
जेहि भुइं माथ गगन[23] सिर लागा थाने उठे आव सब भागा

सफ़ेद पत्थर १ तसवीर २ हाथी ३ मरहला ४ आसमान ५-२३ निगाह ६ जल्द ७ डरपोक ८ फाग खेलों ९ बहादुरी १० चिता ११ मौत १२ दिल १३ मरदोंने तलवार ली १४ औरत १५ ख़ाक १६ बाग़ १७ शाह समझा कि बेमरे १८ मुशकिल १९ अरज़ी २० नाम मुल्क २१ सामने २२

वहां शाह[1] चित्तौर गढ़ छावा। यहां देश अब भयो परावा।

परत दृष्टि[2] जेहि पंथ[3] में बाढ़ा बेर बबूर।।
निशि[4] अन्धियारी जाय तब बेग[5] उठै जो सूर[6]

सुना शाद अरदा जो पढ़ी। चिन्ता आन आन चित चढ़ी
तब आगो मन चीते कोई जो आपन चेता कछु होई
मन झूठा जिव हाथ परा आई चिन्ता एक भई दुइ ठाईं।।
गढ़ सों उर झ जाय तब छूटा होय मिलाव कि सो गढ़ टूटा।
पाहन[8] कर रबि[9] पाहन हीरा। बेधों रतन[10] पान दै बीरा।।
सुरजा[11] सेतें कहा यहि भेऊ[12]।। पलट जाहु अब मानहु सेऊ
कहु तोसों पद्मिनना लेऊ जो राकेहि[13] छाड़ गढ़ देऊं।।

आपन देश खाहु नेहि[14] चल और[15] चंदेरी लेहु
समुंद समंद[16] न कीन्ह तोहि ते पांचो नग देहु

सुरजा पलट सिंह[17] चढ़ गाजा अज्ञा[18] जाय कहा जहं राजा
अबहूं हिये[19] समझरे राजा बादशाह सों जूझ न छाजा।
जाकर दीहरी पृथ्वी सेई।। चहे तो मारे औ जिव लेई।
पिंजर महं तूं लीन्ह परेवा[20]। गढ़पति[21] सो बांचै कैसेवा[22]।।
जब लग जीभ अहे मुख तोरे संवर उघेल बिनय[23] कर जोरे
पुनि जो जीभ पकड़ जिव लेई को खोलै को बोलै देई।।
आगे जस हमोर[24] भंत मंतो[25]। जो तस करेसि तोर भावंता।

देख काल्ह गढ़ टूटै राज वही कर होय।।
कर सेवा सिर नाय के घर न घाल बुधि खोय

अलाउद्दीं १ निगाह २ राह ३ रात ४ जल्द ५ सूर्य्य ६-९ अरज़दाश्त ७ पत्थर ८ मारडालना १० नाम पहलवान ११ भेद १२ मुलाक़ात १३ नाम मुल्क १४-१५ तुहफ़ा १६ शेर १७ हुक्म १८ दिल १९ जानदर परन्द २० क़िलादार २१ ख़िदमत २२ ताबेदारी २३ नाम राजा २४ अहंकारी २५

सुरजा[1] जस हमीर[2] मनताका | औरनिबाही आपन शाका[3]
वह अस हौं सकबन्दी[4] नाहीं | हौं सो भोज[5] बिक्रम[6] उपराहीं
बरस सात महं अन्न न खांगा[7] | पानि पहार चुवै बिन मांगा
तेहि ऊपर जो पै गढ़ टूटा ।। | सत सकबन्दी[8] केर न छूटा ।
सोरह लाख कुंवर हैं मोरें । | पतंग परहिं जस दीप अजोरें[9]
जेहिं दिन चाचर चाहों जोरी | समंदों[10] फाग मेल के होरी ।।
दैके घरनि जो राखत जीउ | सो कस[11] आवहिं भोसक पीउ

अबहूं जून्हर[12] साज के कीन्ह चहुंउ जियार ।
होरी खेलों रन कठिन कोउ न समटहि छार[13]

अन राजा सो जरै नियाना[14] | बादशाह की सेवै न माना ।।
बहुतहिं अस गढ़ कीन्ह सजोना | अन भई लंका जस रवना ।।
जेहि दिन वह छेंके गढ़ धाटी | होय अन्न ओही दिन माटी
तूं जानेसि जल चुवै पहारू | वह रोवै मन संवर सिंहारू[15] ।
सोतहिं सोत[16] ऐस गढ़ रोवा ।। | कस होइ है जो होइ है धुवा
सवंर पहाड़ सो ढारै आंसू ।। | पै तोहि सूझ न आपन नासू
आज काल्ह चाहै गढ़ टूटा । | अबहूं मान जो चाहस छूटा

है जो पांच नग नासों लै पांचो कर भेट ।।
मग[17] सो एक गुन मानै सब औगुन कर मेट

अन सुरजा को नेटै[18] पारा ।। | बादशाह बड़ अहै हमारा
औगुन मेट सकै पुनि सोई | औ जो कीन्ह वहै सो होइ
नग पांचों का देऊं भंडारा[20] | इस[21] कंदर सों बाचै दारा[22]

नाम पहलवान १ नाम राजा २-५-६ बहादुरी ३ बहादुरा ४-८ कमी ७ रोशनी ९ फाग खेलों १० क्या किसी को मुहं देखावेगें ११ मौत १२ शरव १३ आखिर १४ खिदमत १५ नास १६ सूराख १७ शायद १८ सचहै १९ खजाना २० नाम बादशाह २१-२२

जोयहबचनतुहिमाथेंमोरे | सेवाकरोंठाढ़करजोरे ।।
पैबिनसप्तनअसमनमाना | सप्तबोलबाचापरमाना।
कीन्हजोगुरुलीन्हजगभारू | तेहिकबोलनहिंटरैपहारू
नायतमांझभंवरहनग्रीवा | सुरजैंकहामुंदभइजीवा।।

सुरजैंसप्तकीन्हछलवैनहिमीठीमीठ
राजाकरमनमानामानीतुरतबसीठ

हंसकनकपींजरहतआना | औअमृतनगपरसपखाना
औरसुनासोनेकीडांडी।। | सारदूलरूपेकीकांड़ी।।।
दीन्हबसीठसुरजालैआई | बादशाहपहआनमिलाई
ऐजगसूरभूमिउजियारी | बिन्तीकरहिंकागमसिकारी
वड़परतापतोरजगतपा। | नवोखंडतोहिकोनछिपा-
कोहछोहदोनोंतोहिपाहां | मारेसिधूपजियावसछाहां
जनमनसूरचांदसोंरूसा। | गहनगिरीसोपड़ामंजूसा।।

भोरहोयजोलागैउठैरोरकिये काग।।
मसिछूटैसबरैनकीकागाजायंअभाग

करबिन्तीअज्ञाअसपाई।। | कागहिंसैंआपहिंमसिलाई
पहिलेधनुखनवैजबलागी | कागनलेहदेखसुरभागी।
अबहूंतेहिसुरसोंहनहोही | देखहिंधनुकचलहिंफिरओहीं
तेहिकागहिंकीकौनबसीठी | जोमुखफेरचलहिंदैपीठी

खिदमत १हाथ २कसम ३मज़बूत ४भारी ५नामपहलवान ६बात ७क़ासिद ८सोना ९पारसपत्थर १०हाविन्ददस्ता ११लालशेर १२पिंजरा १३सूर्य्य १४ज़मीन १५कालाकुवा तथाराजा १६गुस्सा-मेहरबानी १७सूर्य्यतथाबादशाह १८तथाराजा १९गुस्सा २०पकड़ाहुवा २१पिंजरा २२हाज़िर २३सियाही २४-२८रात २५कव्वाकीसियाहीदूरहोयजायगी २६हुक्म २७निशानेपर २९देवता ३०मुक़ाबिल ३१वकालत ३२

जोसरसौंह होहिं संग्रामा । किनबकहोनस्वेतवैश्यामा
करहिंन आपनऊजरकेशा फिरफिरकहहिंपरारसंदेशा
कागनागपैदोनोबांकी ।। अपनीचलतश्याममयआंकी

मेटजायनहिंमसिकबहुभयेश्यामवेअंक
सहसबारजोधोवहु तौहुनामेटेकलंक।

अबसेवाजोआयजोहारी । अबहूदेखस्वेतकहिकारी।
कहोजायजोसांचनडरना जहंवासरनेनाहिंतहमरन।
काल्हआवगढऊपरभानू जोदेधनुकसौंहहियबानू ।।
पानबसीठमयाकरपाई ।। लीन्हपानराजापहआई।
जसहमभेटकीन्हगाकोहू सेवामाझंप्रीतिअरुछोहू ।।
काल्हशाहगढ़देखैआवा सेवाकरहुजैसोमनभावा।
गुनसोचलैसोवोहितवोझा जहवांधनुकवाननहंसूझा

भाआयसुअसराजघरबेगहिकरोरसोय।
तससंभारस्समिलवहुजेहिसुप्रीतरसहोय

खंड पैंतीसवां ज्याफ़तबादशाह ।।

छागरमेढ़ाबड़औछोटी ।। धरधरआनीजहंलगमोटी
हिरनरोछलगनाबनबसी चत्रकोनछारवऔससी ।।
तीतरबटईलवानबांची ।। सारसगुंजपुछारजोनाची
धरीपरेवापांडुकहेरी ।। । केहाकेदरोउत्तरबगेरी ।।
हारलचरजआयबन्दपरे । बनककरीजलककरीधरे
चकईचकवाकेपबिदारे । नकटालेदीसोनसलारे ।।

सामने १लड़ाई २बगुला ३सफ़ेद ४-११बाल ५आपही कालेहोते ६सियाही ७ हज़ार ८ऐब ९ख़िदमत १०पनाह १२सूर्य्य १३कमानतीरधरदे १४कासिद १५ गुस्सा १६मेहरबानी १७ख़िदमत १८रस्सी १९नात २०हुक्म २१जल्द २२ बकरा २३पाढ़ा २४नामजानवर २५से ४३तक

मोटबड़ेसबटोइटोइधरे॥ ऊबरदूबरखर्गन[1] बढ़े॥

कंटपरीजबझूरीरक्तढुराहोय आंस॥
किन आपनतनपोषो[2] भाखपरावामांस

धरे मच्छपढ़ना औरोहू॥ धीमरधरतकरैनहिंछोहू[3]।
संध[4]सुगंध[5]धरैजलबाढ़े[6]। टेगन[7]मुवेटोयसबकाढ़े।
583 सींग[8]मंगोर[9]बीनसबधरे। तरिया[11]बहुतबांब[12]बनगरे[13]॥
मारेचरक[14]चाल्ह[15]परहासी[16]। जलतजकहांजायजलबासी
मनहोयमीन[17]चरासुखचारा पराजालदुखकोनिखारा।
मारीखायमच्छनहिंबांची बाचहिंकाह भोगसुखनाची
मारेकहंसबअसकेपाले कोउबारतेहिसरवर[18]घाले

यहिदुखकंतहिं[19]सारकीअगमनरक्तनदेह
पंथ[20]भुलायआयजलपाछेछूटेजगतसनेह

देखतगोहूंकरहियफाटा। आनीतहांहोयजेहिंआटा
तबपीसैजबपहिलेधोय कापरछानमांड़[21]भलहोय।
584 करल[22]चढ़ैतेहिपाकहिंपूरी मूठीमांझरहैंसौजोरी॥
जानहुतप्त[23] खेत[24]अरुउजरी नयनूचाहिअधिकवहकुदरी[25]
मुखमेलतखनजाहिबिलाई सहस[26]स्वादसोंपावजोखाई
लुचईपोइपोइघीवभेई॥ पाछेचहनखांडसोंजेई।
पूरीसोहारीकरेघीवचुवा। छुवतबिलाहिडरहिंकोछुवा

कहीनजायमिठाईकहतमीठसतवात
खातअघातनकोईहेवर[27]जायसिरात

तलवार १ पालना २ दया ३ किसमजानवरदरयाई ४ से १६ मछली १७ तालाब १८ खाविन्द नें मुखडालके पहिले खून बदन में नरखा १९ राहभूल के पानी में फंसे छूटी दुनियाके मुहब्बत में २० रोटी २१ कराही २२ गर्म २३ सफ़ेद २४ मुलायम २५ हज़ार २६ बर्फ़ २७

रींधे चावल बरन न जाहीं ॥ बरन[1] बरन सब सुगंध बसाहीं ।
राय[2] भोग औ काजर[3] रानी ॥ झिनवा[4] रुदवा[5] दाउदखानी[6]
कपूर काट कजरी[7] रतनारी[8] । मधुकर[10] ठेला[11] जीरा[12] सारी ॥ 585
घी खांडो[13] औ कुंवर[14] बिरासू । रामदास[15] आवै अति बासू ॥
कही सोंसोंधी[16] लाची[17] बाकी सुगटी[18] बगरी[19] बरहन[20] पाकी ॥
कड़न[21] चड़हन[22] बदमन[23] मिला । औ संसार[24] तिलक खंड[25] चेला
राजहंस[26] औ रहसी[27] भोरी ॥ । रूप[28] मंजरी औ गुन[29] गोरी ॥

सोरह सहस[30] बरन अस सुगंध बासना छूट ।
मधुकर[31] पुहुप[32] सो जान के आय परे सब टूट

निरमल[33] मांस अनूप[34] बघारा । तेहि के अब बरनों परकोरा[35] ।
कटवां बटवां मिला सो बासू । सीझा आनों भांत गिरासू ।
बहुती सोंधी घृत बघारा ॥ औ तहं कंक[36] कहि पीस उतारा । 586
सेंधा लोन परा सब हांड़ी । काटी कंद मूल[37] की आड़ी ॥
सोवा सौंफ उतारहि धनिया तेहि ते अधिक[38] आव वासनिया
पानि उतारहिं ताकहिं ताका घृत परेह रहा तस पाका ॥
औ लीन्ह मांसू के खांड़ा ॥ लागे चढ़े सो बड़ बड़ हाड़ ॥

छागर बहुत समूची धरी सरागहिं[39] भूंज ॥
जो अस जेवन जेवै उठै सिंह[40] अस गूंज ॥

भूंज समोसा घी महं काढ़े ॥ लौंग मिर्च तेहि मीतर ठाढ़े ।
औ जो मांस अनूप[41] सो बाटा । भये फर फूल[42] आंब औ भाटा 587
नारंग दाड़िम[43] तुरज जंभीरा । औ हिन्दवाना बालम खीरा ।

तरह बतरह १ नाम चावल २ से २९ तक हजार ३० भंवरा ३१ फूल ३२ साफ़ ३३ बेमानिंद ३४-४१ क़िसम ३५ केसर ३६ अदरक-वा-पियाज़ वगैरा ३७ बहुत ३८ लोहे की सीख ३९ शेर ४० फल फूल आंब और बैंगन मोस के बनाये गये - ४२ अनार ४३

कटहर बड़हर ठेउ सँवारे ।। नरियल दाख[1] खजूर छुहारे ।।
औ जानवंत खचीचा[2] होहीं । जो जेहि बरन स्वाद सो ओहीं ।
सिरका भेय काढ़ जनु आने । कमल जो मये रहहिं बिकसाने[3]
कीन्ह मसूरा[4] धन[5] सो रसोई जो कुछु सब भासू सो होई ।।

बारी आय पुकारी लिये सबै फर छूछ ।।
सब रस लीन्ह रसोई अब मोकहँ को पूंछ ।

काटी मच्छ मेल दधि[6] धोई ।। औ पघार चहुं बार निचोई ।।
कड़वे तेल कीन्ह बसवारू[7] ।। मेथी घृत सों दीन्ह बघारू ।।
588 युक्त युक्त सब मच्छ उतारे । आंब चीर तेहि मांझ[8] उतारे ।।
औ परेहँ[9] तेहि चटपट राखा । सो रस सुरस पाव जो चाखा
भांत भांत तहं खाड़ा तरै ।। अंडा तल तल बीहड़[11] धरै ।।
कंह कहि[12] पराकपूर बसाई लौंग मिर्च तेहि ऊपर लाई ।
घीव टांक महिं सौंध सिरावा पंख[13] बघार कीन्ह अरदावा[14] ।।

घृत परेहर[15] हात सहाथ पहुंच लग्हि बोड़ ।।
बूढ़ खाय नौ जोबन सौ मेहरी की ओड़

भांत भांत सीझी तरकारी कयो भांत कुमढ़े के फारी ।।
भइ भूंजी लौका परबती ।। ऐंता कीन्ह काट कै रती[16] ।।
589 चूक लाय के रींधे भाटा ।। अरवी कहं भल अरहन[17] बांटा
तुरई चचेड़े ढेढस तरे ।। जीर धुंगार मेल सब धरे ।।
परवर कुंदरू भूंजे ठाढ़े ।। बहुते घीव चुरचुर[18] के काढ़े ।
कड़ुई काढ़ करेला काटे । अदरक मेल तरे कै[19] खाटे ।।
रींधे ठाढ़ सेब के फारे ।।। छौंक साग पुनि सौंध उतारे

अंगूर १ नाम मेवा फ़सली २ खिलना ३ मसूर की खिचड़ी ४ पद्मावत ५-६ दूधि ७ भून्ना ८ बीच ९ इस सबब से १० अलग ११ केसर १२ चिड़या १३ गलाना १४ बहुत घी डाला १५ कदूकश १६ तलना १७-१८ खटाई डा-

सीझी[1] सब तरकारी भाजे वन सब ऊंच।
धौं कारुचै शाह कहं केहि पर दृष्टि[2] पहूंच

घृत कराही भीतर परा।। भांत भांत[3] सब पाकहिं बरा।।
एकहिं आदि[4] मिर्च सों पीठी औ जो दूध खांड़ सों मीठी।।
भई मगोछे[5] मिरचहिं परीं। कीन्ह मंगोरा[6] औ कर परीं।।
भई मिथोरी[7] सिरका परा।। सोंठ लाय के खरसा[8] धरा।।
मीठ महीव[10] औ जीरा लावा भीज बरा नैनू जनु खावा।
खंडहि कीन्ह आंव चरपरा लौंग इलाची सों खंड बरा।।
कढ़ी संवारी और फुलौरी।। औ खंडवानी[11] लाय बरोरी[12]।।

पान कतर छौंके रकू छहींग मिर्च औ आदि[13]
एक खंड जो खावहि पावे सहस[14] सवाद।।

तहरी पाक बोन[15] औ गरी।। परी चिरोंजी औ खरहरी[16]।।
घृत भूंज के पाका पेठा।। औ भा अमृत[17] करंब कर मीठा
चंबक[18] लोहड़ा औटा खोवा भा हलवा घिव करे निचोवा
सिखरन सौंध छनाई काढ़ी जामा दही दूधि सों साढ़ी।।
और दही के मुरंडा[19] बांधे।। औ संधान[20] बहु भांती सांधे
भई जो मिठाई कही न जाई मुख मेलत खन जाय बिलाई
मतलड[21] छाल[22] और मरकोरी[23] मांट पेराकें और बुंदोरी।।

फेनी पापर भूंजे भय अनेक परकार[24]।।
भइ जाकर[25] भिज यावर सीझी सब ज्योनार

जेत प्रकार रसोई बखानी। तब भइ सब पानी सो सानी।

तइयार १ निगाह २ तरह बतरह ३-२४ अदरक ४ १३ क़िस्म रवाने की ५-६-७-८-११
१२ पियाला ९ दही १० हजार १४ नाममेवा १५-१६ शक्कर का क़वाम बना के प-
काया १७ लोहे की कराही १८ लाडू १९ अचार २० क़िसम मिठाई २१
२२-२३-खीर २५-

पानी मूल[1] परेखो[2] कोई ।।	पानी बिना स्वाद नहिं होई ।।
अमृत पान यहि अमृत आना	पानी सों घट[3] रहै पराना ।।
पानी दूध सों पानी घीव ।।	पानि घटे घट[4] रहै न जीव ।।
पानी मांझ[5] समानी जोती ।	पानी उपजै[6] माणिक[7] मोती ।।
पानी महं सब निरमल[8] कला	पानि जो छुवै होय निरमला[9] ।
सो पानी मन गर्बन[10] करेइ ।।	सीस[11] नाय घालें पै धरेइ ।।।

मुहम्मद नीर[12] गंभीर जो सो तेहि मिलै समुंद
भरै ते मारी हो रहे छूंछहिं बाजहि द्वंद[13] ।

सीझ रसोई भयो बिहानू ।	गढ़ देखे गवने सुलतानू ।।
कमल सुहाय सूर[14] संग लीन्हा	राघो चेतन[15] आगे कीन्हा ।।
तन[16] खन आय वेवान[17] जो पहुंचा	मन सों अधिक[18] गगन[19] सों ऊंचा
उघरी पंवर[20] चला सुलतानू ।	जानौ चला गगन[21] कहं भानू[22]
पवरीं[23] सात सात खंड बांके ।।	सातों खंड गाढ़े दुइ नाके ।।
आज पंवर मुख भानि रमरा	जो सुलतान आय पग[23] धरा
जानु उरेह काट सब काढ़े ।।	चित्र[24] मूरतें बिनवहिं ठाढ़े ।।

लख लख बैठ पंवरया[25] जेहि तेन वैं करोर ।।
तेहिं सब पंवर उघारे ठाढ़ भये कर[26] जोर ।।

खंड अरतीसवां किला वरनन बादशाह ।

सातौ पवरी कनक[27] केवारा	सातहु पर बाजहि घरयारा
सातहिं रंग सो सातौ पंवरीं ।	तब तहं चढ़ै फिरै नव भंवरीं
खंड खंड साज पलंग औ पीढ़ी	आनहु इन्द्र लोक की गीढ़ी
चन्दन वृक्ष[28] सुहाई छांहा	अमृत कुण्ड भरे तेहिं मांहा

जड़ १ देखना २ [illegible] ३-४ बीच ५ पैदा होना ६ जवाहिरात ७ पाक साफ़ ८-९ गरूर १० सिर ११ [illegible] १२ ढोल १३ बहादुर १४ नामभार १५ तुरंत १६ हवादार १७ बहुत १८ आसमान १९-२१ दरवाज़ा २२ कदम २३ तसवीर २४ [illegible] २५ [illegible] २६ सोना २७ पेड़ २८

फेरे खजीजा[1] दाड़िम[2] दाखा[3] | जो वह पंथ[4] जाय सो चाखा ।
कनक[5] छत्र सिंहासन साजा | पैठत पंवर[6] मिला लै राजा ॥
चढ़ा शाह चढ़ चित्तौर देखा | सब संसार पाय तर लेखा ॥

देखा शाह गगन[7] गढ़ इन्द्र लोक के साज ।
कही राज फिरता कर स्वर्ग[8] करै जो राज ॥

चढ़ गढ़ ऊपर संगत देखी ॥ | इन्द्र पुरी सो जान बिशेखी
तालत लावा सरवर[9] भरे । | औ अंबराऊँ[10] चहुँ दिश फरे ।
कुवांवावरी भांती भांती | मढ़ मंडफ तहँ तहँ चहुँ पाँती ।
राय[11] राग घर घर सुख चाऊ | कनक[12] मंदिर नग कीन्ह जड़ाऊ
निशि[13] दिन बाजहिं मंदिर तूरा[14] | रहस कूद सब लोग सँदूरा ॥
रतन[15] पदारथ नग जो बखाने | घूरन महँ देखे झहिराने ॥
मंदिर मंदिर फुलवारी वारी । | बार[16] बार तहँ चित्र[17] सँवारी ॥

पासा सार[18] कुँवर सब खेलहिं श्रवन[19] हि गीत उनाहि
चैन चाउ तस देखा जनु गढ़ छेका नाहि ॥

देखत शाह कीन्ह तहँ फेरा | जहँ मंदिर पद्मावत केरा ॥
आस पास सरवर[20] चहुँ पासा | मंदिर माझ[21] जनु लाग अकासा
कनक[22] सँवार नगहिं सब जरा | गगन[23] चन्द जनु नखतहिं भरा
सरवर[24] चहुँ दिश पुरइन फूली | देखा वारि[25] रहा मन भूली ॥
कुंवरि लाख दुइ बार अँगोरे[26] । | दुहुँ दिश पँवर[27] ठाढ़ कर[28] जोरे ।
शार दूल[29] दुहूँ दिश गढ़ काढ़े | कलकंज[30] हिं जानहु रिस ठाढ़े ।
जानवंत लिये चित्र[31] कटाऊ | वहँ तक पँवर[32] सो लाग जड़ाऊ

नाममेवा १ अनार २ अँगूर ३ एह ४ सोना ५-१२-२२-३२ आसमान ७-८-२३ तालाब ९-२४ बागीचा १० अमीर उमरा ११ रात १२ नामबाजा १४ जवाहिरात १५ दरवाज़ा १६-२५-२७-३२ तसवीर १७-३१ चौसर १८ कान १९ बीच २१ पेशवाई २६ हाथ २८ लालशेर २९ डकारना ३०

शाह मंदिर अस देखा जनु कैलाश अनूप ।
जाकर अस धौराहर सो रानी केहि रूप ।

नाँघत पवरे गये खंड साता । सतयें भूमि बिछावन राता
आगन शाह ठाढ़ भा आय मंदिर छाँह अति सीतल पाय
चहूँ पास फुलवारी वारी ।। माँझ सिंहासन धरा सँवारी
597 जनु बसंत फूला सब सोने हसहिं फूल बिकसहिं फर लोने
जहाँ जो ठाँव दृष्टि महँ आवा दरपन भाव दरश देखरावा ।।
तहाँ पाट राखा सुलतानी ।। बैठ शाह मन जहाँ सो रानी ।
कमल सुभाय सूर सौं हँसा । सूर का मन चाँद पहँ बसा ।

सो पै जानै नयन रस हिरदे प्रेम अँगूर ।।
चँद जो बसै चकोर चित नयन हि आवन सूर

रानी धौराहर उपराहीं ।। ।। करहिं दृष्टि नहिं करहिं तराहीं
सखी सरेखी साथहिं बैठी ।। तपै सूर शशि आवन दीठी ।।
598 राजा सेव करै कर जोरे ।। आज शाह घर आवा मोरे
नट नाटक पतुरनि औ बाजा आय अखाड़ सबै महँ साजा
प्रेमक लुब्ध बहिर औ अन्धा नाच कूद जानहु सब धन्धा
जानहु काठ न चावै कोई ।। जो जें नाँच न परगट होई ।।
परगट कहि राजा सों बाता गुप्त प्रेम पद्मावत राता ।

गीत नाद जस धन्धा दहक बिरह की आँच ।
मन की डोर लाग तहँ ठाईं जहाँ सो गहि गुन खाँच

गोरा बादल राजा पाहाँ रावत दोऊ दोऊ जनु नाहाँ ।।

बेमिसाल १ महल २-१५ दरवाज़ा ३ ज़मीन ४ लाल ५-२५ डंडा ६ बीचोबीच ७ खिलना ८ खूबसूरत ९ तख़त १० सूर्य्य ११-१४-१८ तथा पद्मावत १२ दिल १३ निगाह १६-२० होशयार १७ चाँद १९ हाथ २१ भराहुवा २२ ज़ाहिर २३ छिपा २४ जलना २६ पकड़ना २७ रस्सी २८ नाममंत्री २९ सरदार

आय श्रवन[1] राजा के लागे | मूसि[2] न जाहिं पुरुष जो जागे
बाचा[3] पुरुष तुर्क हम बूझा | परगट[4] मेर[5] गुप्त[6] छल[7] सूझा
तुम नहिं करो तुर्क सों मेरू[8]। | छल पै करहिं अंत के फेरू
बेरी[9] कठिन कुटिल जस काँटा | सोम कोय रहि जो रहि आँटा
सत्र[10] कोट[11] जो पाय अगोटी[12] | मीठी खाड़ जेवाये रोटी ।।
हम सो ओछ[13] कै पावा छातू | मूल[14] गये संग रहे न पातू ।

यहि सो कृष्ण बल राज जस कीन्ह चहै छर बाध
हम बिचार अस आवहि मेरहि[15] दीजे न काँध ।

सुन राजा यहि बात न भाई। | जहाँ मेर तहँ नहिं अस भाई
मुंदहि भल जो करे भल सोई | अंतहि भला भली कर होई
सत्र[16] जो बिष दय चाहै मारा। | दीजे नोन जान बिष सारा।
बिष दीन्हे बिष धर होय खाय | लोन देख हों लोन बिलाय
मारे खर्ग[17] खर्ग कर लिये ।। | मारै लोन नाय सिर दिये ।।
कवरों[18] बिष जो पंडवन[19] दीन्हा | अंतहि दाव पंडवन लीन्हा
जो छल करै वही छल बाजा[20] | जैसे सिंह[21] मंजूसा साजा ।।

राजै लोन सुनावा लाग दोहूँ जस लोन।
आय कुहाय मंदिर कहँ सिंह जान औ गोन

कान १ चोरी हो जाना २ कौल बादशाह ३ ज़ाहिर ४ मेल ५-८-१५ छिपा ६ दग़ा ७ सख़्त ९ दुशमन १०-१६ क़िला ११ घेरना १२ तथा बादशाह को बेमुरव्वत पाया १३ जड़ १४ तलवार १७ दुरयोधन १८ राजा युधिष्ठिर आदिक १९ पहुँचना २० एक ब्राह्मन ने शेर को जो पिंजरे में बन्द था निकाल लिया शेर उसको खाने चाहा उसने कहा कि भलाई के बदले बदी न करना चाहिये जब तकरार होने लगी तब एक गीदर ने आके पंचाइत की और कहा कि हम सूरत असली देखें तब फैसला करै जब शेर पिंजरे में चला गया ब्राह्मन ने खिड़की बन्द कर ली गीदर ने कहा कि अब

राजा की सोरह सै दासी | तिन्ह महँ चुन काढ़ी चौरासी
बरन[1] बरन सारी पहिराईं | निकस मँदिर ते सेवा आईं
601 जनु निसरी सब बीर बहूटी | राय[2] मुनी पिंजर हुत छूटी ।।
सबै पथमाँ[3] जोबन सोहैं ।। | नयन बान[4] औ सारंग[5] भौंहैं ।
मारहिं धनुष[6] फेर सिर ओहीं | बन घट घाट धनुष जित ओहीं
काम कटाक्ष हनहिं चित हरनी | एक एक ते आगर बरनी ।।
जानहु इन्द्र लोक ते काढ़ी । | पातहि पात भई सब ठाढ़ी ।।

शाह पूछरा घो पहँ सब ते कही वैनाहि ।।
तुई जो पद्मिनी वरनी[10] कहु सो कौन इन माँहि

दीरघ आयु[11] भूमिपति[12] भारी ।। | इन्ह में नाहिं पद्मिनी नारी ।।
यहि फुलवार सो बहु की दासी | कहँ केत की भँवर सँग बासी
602 वह सो पदारथ[13] ये सब मोती । | कहँ वह दीप पतंग जहँ जोती
ये सब तरईं[14] सेव कराहीं ।। | कहँ वह शशि[15] देखत छिप जाहीं
जब लग सूर[16] की दृष्टि[17] अकासू | तब लग शशि[18] नहिं करै प्रकासू[19]
सुन के शाह दृष्टि[20] तर नावा । | हम पाहुन यहि मँदिर परावा
पाहुन ऊपर हेरै[21] नांही ।। | हना राहु अर्जुन परछाहीं

तपै बीज जस धर्ती सूख बिरह के घाम ।
कब सो दृष्टि[22] कर बरसहि तन नखरे[23] होय जाम

सेव करें दासी चहुँ पासा | अप्सर[24] जानु इन्द्र कैलाशा ।।
603 कोउ परात कोउ लोटा लाईं | शाह सभा सब हाथ धोवाईं
कोइ आगें पनवार बिछावहिं | कोइ जेवन लैलै आवहिं ।।

रंग बरंग १ नाम जानवर २ नवजवान ३ तीर ४ कमान ५-६ तिरछी निगाह ७ ज़्यादा ८ बयान करना ९-१० बड़ी उमर ११ ज़मीन का मालिक १२ जवाहिरात १३ छोटे नखत १४ चांद १५-१८ सूर्य्य १६ निगाह १७ रोशनी १९ नज़र २०-२२ देखना २१ पेड़ २३ इन्द्रलोक की परी २४

कोई माँड़ जाहिं धरि जूरी | कोई भात परोसहिं पूरी।
कोई लैलै आवहिं थारा | कोइ परसहिं बावन परकारा
पहिर जो चीर परोसहिं आवहिं | दुसरी ओर बरन देखरावहिं
बरन बरन पहिरहिं हर फेरा | आव झुंड जस अप्सर केरा

पुनि सँधान बहु आनहि परसहिं बूकहिं बूक
करै सँवार गुसाईं जहाँ परी कछु चूक ।।

जानहु नरवत करहिं सब सेवा | बिन शशि सूरहि भाव न जेवा
बहु परकार फिरहिं हर फेरें। | हेरा बहुत न पावा हेरें ।।
परी असूझ सबै तरकारी। | लोनी बिना लोन सब खारी
मच्छ छुवहिं आवहिं गड़कारी | जहाँ कमल तहँ हाथ न आँटी
मन लाग्यो तेहि कमल की दंडी | भावै नहिं एको कनहँडी ।।
सो जेवन नहिं जाकर भूखा | तेहि बिन लाग जानु सब रूखा
अन भावत चाखी बैरागा | पंचामृत जानहुं बिष लागा

बैठ सिंहासन गूंजै सिंह चरै नहिं घास।
जब लग मिरग न पावै भोजन करै उपास

पान लिये दासी चहुँ ओरा। | अमृत दानी भरे कचूरा ।।
पानी देहिं कपूर का बासा। | सो नहिं पिये दरस कर प्यासा
दरशन पान देय तौ जीऊँ ।। | बिन रसना नयनहिं सों पीऊँ।
पपिहा बूँद सेवा तिहि अघा | कौन काज जो बरसै मघा
पुनि लोटा कोपर लै आई ।। | कै निरास अब हाथ धुवाई
हाथ जो धोवै बिरह को रोरा | सँवरि सँवरि मन हाथ मरोरा
बिधि मिलाव जासों मन लागा | जोरहिं तोर प्रेम कर तागा ।।

रोरी १ कपड़ा २ रंग ३ परी ४ अचार ५ राजा ६ चाँद ७ सूर्य्य ८ बहुत तरह ९ देखना १० तथा पद्मावत ११ पहुँचना १२ तरकारी १३ बेचाहना १४ शेर १५ हिरन १६ शरबत १७ कटोरा १८ ज़बान १९ सिलफ़ची आफ़ताबा २० सताया

हाथ धोय जब बैठो लीन्ह ऊबके स्वांस ।
संवरा सोई गुसाईं[1] देय निरासहिं[2] आंस

भइ ज्योनार फिरा खंडवानी[3] । फिरा अरगजा[4] कंकहि बानी ।
नग अमोल सो थारहिं भरे ॥ राजें सेवे[5] आनके धरे ॥
बिनती[6] कीन्ह घाल गयें[7] पागा । राजग सूर[8] सैव[9] मुहिं लागा ॥
606 औगुन भरा कांप यहि जीऊ ॥ जहां भानु[10] तहं रहा न सीऊ[11] ॥
चारहुं खंड भान[12] अस तपा ॥ जेहि की दृष्टि[13] रैन[14] मसि[15] छिपा
औ भानहि[16] अस निरमल[17] कला । दरराजो पावै सो निरमला -
कमल भान देखै पै हंसा ॥ औ भा तेहं चाहै परकसा ॥

रतन[18] श्याम तहं रैन[19] मसि[20] ए रबि[21] तिमर[22] संहार
कर सो दृष्टि[23] औ कृपा देवस[24] देहु उजियार

सुन बिन्ती[25] वेहसा[26] सुलतानू । सहसहि[27] किरन दिपै जस भानू[28]
ऐ राजा तुई सांच जुड़ावा । भइ सो दृष्टि अब सेव[29] छुड़ावा
607 भान[30] की सेवा जो कर जीव ॥ तेहि मसि कहां कहां तेहि सीउ[31]
खाउ देश आपन कर सेवा । और देउं माड़ो तोहि देवा ॥
लीक परवान[32] पुरुष[33] कर बोला । ध्रुव[34] सुमेरु[35] ऊपर नहिं डोला ।
फेर बसाव[36] दीन्ह नग सूरू ॥ लाभ देखाय लीन्ह चहि मूरू[37]
हंस हंस बोले टेके कांधा ॥ प्रीति भुलाय चहै छल बांधा

माया बोल बहुत कर शाह पान हंस दीन्ह ॥
पहिले रतन[38] हाथ कै चहो पदारथ[39] लीन्ह ॥

माया मोह बिबस भा राजा ॥ शाह खेल शतरंज कर साजा

ईश्वर १ नाउमेद २ शरबत ३ अतर ४ नज़र ५ अर्ज़ ६ · २५ गरदन ७ सूर्य्य ८ · १० · १२ · १६ २ · २१ · २८ जाड़ा ९ · ११ · २९ · ३१ निगाह १३ रात १४ सियाही १५ · २० · पाक साफ़ १७ राजा १८ रात १९ अन्धियारा नासकार २२ अच्छी नज़र २३ दिन २४ हंसा २६ हज़ार २७ पत्थर ३२ मर्द ३३ नाम नखत ३४ पहाड़ ३५ लालच ३६ जड़ ३७ तथा राजा ३८ तथा पद्मा

राजा है जब लग सिर घामू ।। हम तुम घड़िक[1] करहिं बिश्रामू[2]
दरपन शाह भीत[3] तहँ लावा देखें जोह झरोखें आवा ।।
खेलहिं दोऊ शाह औ राजा शाह का रुख दरपन रहि साजा
प्रेमक लुब्ध[4] पिया दे पाऊं ।। चलै सौंहिं[5] ताके कहं ठाऊं ।।
घोड़ा दय फ़रजीं बन्द लावा जेहं मुहरा रुख चहै सो पावा
राजा पील देइ शह मांगा । शह दै चाहि मरै रथ खांगा ।

पीलहि पील देखावा भयो दोहूं चौदांत ।
राजा चहै बुर्द भा शाह चहै शह मात ।

सूर[6] देख वै तरई[10] दासी ।। जहँ शशि[11] तहां जाय परकासी[12]
सुना जो हम देहली सुलतानू देखा आज तपै जस भानू[13] ।।
ऊंच छत्र ताकर जग माहां । जग जो छाहं सब वह की छाहां
बैठ सिंहासन गर[14] भहि गूंजा । एक छत्र चारहु खंड भूंजा ।
निरखन[15] जाय सौंहिं[16] वह पाहीं । सबै नवै कै दृष्टि[17] तराहीं ।।
मन माथे वह रूप न दूजा ।। सब रूपवंत करहिं वह पूजा
हम अस कसा कसौटी आरस[18] तोहूं देख कस कंचन[19] पारस

बाद शाह देहली कर कित चितौर महँ आव
देख लेहु पद्मावत जें न रहै पछताव ।।

बिकस[20] जो कुमुद[21] कही शशि[22] ठाऊं बिकसा कमल सुनत रबि[23] नाऊं
भइ निशि[24] शशि धौरा[25] हर चढ़ी सो रह किरन जैसि बिधि[26] गढ़ी
बेहंस झरोखें आय सरेखी[27] निरखि[28] शाह दरपन महं देखी
होतहि दरस परस[29] भा लोना धर्ती स्वर्ग भयो सब सूना ।।

एक घड़ी १ आराम २ दीवार ३ भरा हुवा ४ सामने ५-१६ जगह ६ शहि दैके वाज़ीजीत ना चाहा ७ मुक़ाबिल ८ सूर्य्य ९-१३-२३ नखत १० चांद तथा पद्मावत ११-२२ रोशनी १२ ग़रूर १४ देखना १५-२८ सामने १६ निगाह १७ आईना १८ सोना १९ खिलना २० कोंका बेली २१ रात २४ महल २५ ईश्वर २६ होशियार २७ पारसपत्थर २९

रुख मांगत रुख[1] तासों भयो | भा शह मात खेल मिट गयो
राजा भेद न जानै झांपा[2] ॥ | भा बिष नारि पवन बिन कांपा
राघौ[3] कहा कि लाग सपारी[4] | लै पौढ़ावहिं सेज संवारी ॥

रैन[5] बीत गइ भोर भा उठा सूर[6] तब जाग ॥
जो देखै शशि[7] नाहीं रही करौ[8] चित लाग ॥

भोजन प्रेम सो जानि जो जेवा | भंवरहि रुचै बास रस केवा[9]
दर्स देखाय जाय शशि[10] छिपी | उठा भान[11] जस योगी तपी ।
राघौ चेत शाह पहं गयो ॥ | सूर्य्य देख कमल बिष भयो
छत्रपती मन कहा सो पहुंचा | छत्र तुम्हार जगत पर ऊंचा
पाट[12] तुम्हार देवतन पीठी ॥ | स्वर्ग[13] पतार रैन दिन दीठी[14] ॥
छोहि[15] ते पलहहिं[16] उघटे रूखा | कोहि[17] ते महि सायर[18] सब सूखा
सकल[19] जगत तुम नावै माथा | सब कर जियन तुम्हारे हाथा

दिनन नयन लावहु तुम रैन भावनहिं जाग ।
अब निचिंत अस सोये कह बिलंब अस लाग

देख एक कौतुक[20] हों रहा । | रह अंतर[21] पट पै नहिं अहा ॥
सरवर[22] एक देख मन सोई ॥ | रहा पानि अब पानि न होई ॥
स्वर्ग[23] आय धर्ती महं छावा । | रहा धर्ति पै धरत न आवा ॥
तिन्ह महं पुनि इक मंदिर ऊंचा | करन[24] अहा पै कर नहिं पहुंचा
तेहि मंडप मूरत मन देखी । | बिन तन बिन जिव जाय बिशेषी
पूरन[25] चन्द होय जनु तपी ॥ | पारस रूप दरस दै छिपी ॥
अब ऊहं चतुर[26] दसी जिव तहा | भान अमावस पावै कहां ।

मुंह १ छिपा २ नाम भाट ३ बुरीहवा ४ रात ५ सूर्य्य तथा वादशाह ६-११ चांद तथा पद्मावत ७-१० ध्यान ८ कमल ९ तखत १२ आसमान १३-२३ निगाह १४ मेहरबानी १५ हरहोना १६ गुस्सा १७ तालाब १८ २२ सब १९ तमाशा २० परदा २१ हाथ २४ चौदहीं रात का चांद २५-२६

बिकसा कमल स्वर्गी लौं शिजन हुलौं कगावीज
यह राहु भा भानहि राघौ मनहिं पतीज

अति बिचित्र देखो सो ठाढ़ी
चित की चित्र लीन्ह जिव काढ़ी
सिंहलंक कंभसतल जोरू
आकुस नाग महावत मोरू
तेहि ऊपर भा कमल बिकासू
फिर अलि लीन्ह पुहुप रस बासू
दोहु खंजन बिच बैठो सुवा
दुइज का चन्द धनुष लै उवा
मिर्ग देखाय गवन फिर गया
शशि भा नाग सुर्य्य भा दिया
सुठि ऊंचे देखन वह उचका
दृष्टि पहुंच कर पहुंच न सका
पहुंचा भयो दृष्टि गत भई
गहि न सका देखत वह गई

राघौ हेरत जो गयो अछत हिये समाधि
वह तन राघ बाघ भा सके न कै अपराध

राघौ सुनत सीस भुई धरा
जुग जुग राज भानु की किरा
वही किरान वह रूप बिशेखी
निश्चे तुम पद्मावत देखी ।
केहर लंक कंभसतल हिया
ग्रीव मयूर अलक रबि दिया
कमल बदन औ बास समीरू
खंजन नयन नाशिका कीरू
भौंह धनुष शशि दुइज ललाटू
सब रानिन ऊपर वह पाटू ।।
सोई मिरग देखाय जो गयो
वेनी नाग दिया चित भयो ।
दरपन महं देखी पर छाहीं
सो मूरति भीतर जिव नाहीं

सबै शृंगार बनी धनि अब सो लीमति कीज
अलक जो लटकी अधर पर सो गहि के रस लीज

खिलना १ ८ आसमान २ रात ३ सूर्य्य ५-२१-२६ मुरझाना ५ चीता की कमर ६ २२ हाथी ७-२३ भंवरा ९ फूल १० ममोला ११-२८ हिरन १२ चांद १३-३० निगाह १४ हाथ १५ देखत ही चाहा कि आपको पहुंचाऊं १६ पकड़ना १७-३९ देखना १८ तदबीर कामन आई शेर की तरह गुस्सा किया १९ सिर २० गरदन २४ बाल २५ हवा २७ नाक तोता की २९ माथा ३१ नखन ३२ हिरन ३३ चोटी ३४ पद्मावत ३५ अकिल ३६ जुल्फ

खंड उंतालीस वाँ कैद होना राजा रतनसेन का

मीत[1] भा मांगा बेग वेवानू[2] ॥ चला सूर[3] सवरा[4] अस्थानू ॥
चलत पंथ[5] राखा जो पाऊ । कहाँ रहै थिर[6] चलत बटाऊ[7] ।
पंथिक[8] कहं कहवां ससताई पंथ[9] चलै तब पंथ सेराई ॥
छल कीजे बल जहां न आंटा[10] लीजे फूल टारकै कांटा ॥
बहुत मया सुनि राजा फूला चला साथ पहुचावे भूला ॥
शाह हेत राजा सों बांधा ॥ बातहिं लाय लीन्ह गहि[11] कांधा
धिव मधु[12] सान दीन्ह रस सोई जो मुहं मीठ पेट बिष होई ॥

अमी बचन[13] औ माया कोन मुयो रस भीज ।
शत्रु[14] मरै अमृत जो तेहि बिष काहे दीज ॥

चांद घराहि जो सूरय आवा । होय सो अलोप[15] अमावस पावा
पूंछहिं नरवत[16] मलीन सो मोती[17] सोरह कला न एको जोती ॥
चांद गहन आगाह[18] जनावा राज भूल गहि शाह चलावा
पहिले पंवर[19] नांघ सो आई । ठाढ़े भये राज पहिराई ॥
सौ तुषार[20] तीस गजे[21] पावा दुंदुभि[22] औ चौ घोड़ी[23] देवावा ॥
दूजे पवर दिया असवारा ॥ तीजे पवर नग दीन्ह अपारा
चौथे पंवर दै दर्ब करोरी ॥ पचयें दुय हीरा की जोरी ॥

छठयें पवर माडो दियो सतयें दीन्ह चंदेरि
सात पंवर नांघत नृपति[24] लेगयो बांध गरेर ।

यहि जग बहुत नदी जल जोड़ा कौन पार भा कौन न बूड़ा ॥
कौन अन्ध भा आग न देखा कौन भयो डीठार सरेखा[25] ॥
व्याध भई राजा कहं माया । तज कैलाश परी भुइं पाया ।

दोस्त १ सवारी २ बादशाह ३ मकान ४ राह ५-९ कायम ६ मुसाफिर ७-८ पहुंचना १० पकड़ना ११ शहद १२ मीठी बात १३ दुशमन १४ छिपजाना १५ तथा सखी १६ पद्मावत १७ खबर १८ दरवाज़ा १९ घोड़ा २० हाथी २१ डंका २२ नरधी २३ राजा २४ होशियार २५

जेहि[1] कारन गड़ कीन्ह अगूठी[2] | कित छोड़े जो आवै मूंठी ॥
शत्रुहि[3] कोउ पाव जो बांधे। | छोड़ आप कहं करै बियाधे[4]
चारा मेल धरा जस माछू। | जल से निकस मरै जस काछू[5]
शत्रुहि[6] नाग पेटारीं मूंदा | बांधा मिंग[7] पैग नहिं खूंदा

राजा धरा आन के तन पहिरावा लोह।
ऐसो लोह सो पहिरे चेत[8] श्याम की ओह।

पायन गाढ़ीं बेड़ी परीं ॥ | सांकर[9] ग्रीव हाथ हथकड़ीं
औ धर बांध मंजूसा[10] मेला | ऐसो शत्रु जन होय दुहेला[11]
सुनि चितौर महं परा बखाना[12] | देश देश चारहुं दिश जाना
आज नरायण फिर जग खूंदा[13] | आज सो सिंह[14] मंजूसा[15] मूंदा ॥
आज खसे[16] रावन दस माथा | आज कान्ह[17] काली फन नाथा
आजहि प्रान कंस कर डीला। | आज मीन[18] शंखासुर[19] लीला।
आज परे पांडव[20] बंद माहां। | आज दुशाशन[21] उतरी बांहां

आज धरा बल राजा मेला बांध पतार ॥
आज सूर[22] दिन अथवा भा चितौर अन्धियार

देव सुलेमां[23] के बंद परा। | जहं लग देव सबहिं सत हरा
शाह लीन्ह गहि कीन्ह पयाना[24] | जो जहं शत्रु[25] सो तहां बिलाना
खुरासान[26] औ डराहरेव[27] ॥ | कांपा बिदर[28] धरा अस देव।
बंध उदय[29] गिर धौला[30] गिरी। | कांपी सृष्टि[31] दुहाई फिरी।
उवा सूर भइ सामहि करा। | पाला फूट पानि होय ढरा।
डंडवी डांड दीन्ह जहं ताई। | आय दंडवत कीन्ह सबाई ॥

जिसलिये १ घेरना २ दुश्मन ३-६-२५ दुख ४ कछुवा ५ पैर बंधा हिरन नहीं भागता ७ ग़फ़लत का फल उठाये ८ गरदन ९ पिंजरा १०-१५ दुखी ११ बयान १२ सखनी १३ शेर १४ गिरना १६ श्री कृष्णजी १७ मछली १८ नाम दैत्य १९ राजा युधिष्ठिर २० नाम बहादुर २१ सूर्य्य २२ नाम बादशाह २३ कुच २४ नाम मुल्क २६ से ३० दुनिया ३१

द्वंद डांड[1] सब स्वर्गहिं[2] गई ।।	भूमि[3] जो डोली इस्थिर[4] भई ।।

बादशाह देहिली महं आय बैठ सुख पाट[5]
जेहिं जेहिं सीस[6] उठावा धर्ती धरी ललाट[7] ।

हबशी[8] बदवाना जिय[9] बधा ।	तेहिं सौंपा राजा अगदहा[10] ।।
पानि पवन कहं आस करेई	सो जिय[11] बधिक सांस बहु देई
मांगत पानि आग लै धावा	मुंगरी एक आन सिर लावा ।
पानी पवन तुइ पिया सो पिया	अब को आन देय पानिया ।
तब चितौर जिय रहा न तोरे	बादशाह है सिर पर मोरे ।।
जोहि हं[12] कोरे ही उठ चलना	सो कित करो होय कर[13] मलना
करै सो मीत गाढ़ बंद जहां ।	पान फूल पहुंचावै तहां ।।

जल[14] अंजल महं सोवा समुंदन सवरा जाग ।
अब धर काढ़ा मच्छ ज्यों पानी मांगत आग

पुनि चलि दुइ जन[15] पूछन धाये	वैसठ दग्ध[16] आय देखराये ।
तुइं मरि पुरी[17] न कबहूं देखी	हाड़ जो बिथरे देखन लेखी
जानी नहिं कि होब अस मुहूं	खोजें खोज न पावब कहूं ।।
अब हम उतर[18] देहु रे देवा ।।	कौने गर्ब[19] न मानी सेवा ।।
तुइं अस बहुत माड़ खनि मूंदी	बहुर[20] न निकस बार होय खूंदी
जो जस हंसै सो तैसे रोवा ।।	खेलै हंसै अभै भुइ सोवा ।
जस अपने मुहं काढ़े धुवां ।	चाहेसि परा नर्क के कुवां ।

जरेसि मरेसि अब बांधा तैसो लाग तोहि दोष[21]
अबहूं मांग पद्मिनी जो चाहेसि भा मोष[22]

आवाज़ मनादी १ आसमान २ ज़मीन ३ क़ायम ४ तख़्त ५ सिर ६ माथा ७ हबशी दारोग़ा क़ैदख़ाना ८ जल्लाद ९ जलाहुवा १० जान मारने वाले ११ बोलाना १२ हाथ १३ पानी महं पियासा १४ आदमी १५ आम १६ यमपुरी १७ जवाब १८ ग़रूर १९ फेर २० पाप २१ नजात तथा क़ैद से २२

पूछहिं बहुत न बोला राजा | लीन्हेसि जियें मींच[1] मन साजा
खन[2] गड़वा चरनहिं लै राखा | नित उठ दग्ध[3] होय नौ लाखा
ठांव[4] सो सांकर औ अन्धियारा | दूसर कर वट लेइ न पारा ।।
पीछे सांप आय तहं मेली ।। | बांका आन छुवावहिं हेली[5]
धरहिं संदासी[6] छूटै नारी । | रात देवस[7] दुख पहुंचै भारी
जो दुख कठिन[8] न सहै पहारू | सो अंगवा[9] मानुष सिर भारू
जो सिर परै आय सो सहै ।।। | कछु न बिसाय काहसों कहै

दुख जारै दुख भूंजै दुख खोवै सब लाज ।।
काजहिं[10] चाह अधिक दुख दुखी जान जेहि बाज

पद्मावत बिन कंत दुहेली[11] । | बिन जल कमल सूख जनु बेली
गाढ़ी प्रीति सो मोसों लाई ।। | देहिली जाय निचिंत होय छाई
कोउ न बहुरा पुनि हर देशू ।। | केहि पूछूं को कहै संदेशू ।।
जो कोइ जाय तहां कर होई । | जो आवै कछु जान न सोई ।
अगम[12] पंथ पिय तहां सिधावा | जोरे गयो सो बहुर[13] न आवा ।
कुवां डार जल जैसो बिछोवा | डोल भरा नयनहिं धन[14] रोवा
लीजर[15] भई नौ[16] हूं बिन तोही | कुवां परीं धर काढ़ेसि मोही

नयन डोल भर ढारै हियेन[17] आग बुझाय
घड़ी घड़ी जिय आवै घड़ी घड़ी जिव जाय

नीर[18] गंभीर कहां हो पिया ।। | तुम बिन फाटै सरवर[19] हिया[20]
गयों हेराय बिरह के हाथा ।। | चलत सरोवर[21] लीन्ह न साथा
चरत जो पंख[22] केल कर नीरा । | नीर कठिन कोउ आवन तीरा

मौन १ तंग पिंजरा में कैद किया २ जलाना ३ जगह ४ डोम ५ संसी ६ दिन ७ भारी ८ उठाना ९ दुख को वह जानै जिसपर पड़े १० दुखी ११ मुशकिलगह १२ लौट १३ पद्मावत १४ रस्सी १५ खाविन्द १६ छाती १७-२० पानी गहिरा १८ तालाब १९-२१ जानवर परिन्द २२

कमल सूख पंखुरी बेहिरानी[1] | गल गल के मिल छार हेरानी[2][3]
बिरह रेत कंचन[4] तन लावा | चून चून कै खेह[5] मिलावा
कनक[6] जो कनक न ह्वै बेहिराई | पिय पै छार समेटो आई।
बिरह पवन यहि छार सरीरू | छारहि आन मिलावहु नीरू[10]

अबहुं जियावहु कै मया बिथुरी छार समेट
नइ काया[11] अवतार[12] नव दर्श तुम्हारे भेट।

नयन सीप मोती तस आंसू | तत तत[13] परहिं करै तन नासू
पदक पदारथ[14] पद्मिन नारी | पिय बिन भइ कौड़ी बरवारी[15]
संग लै गयो रतन सब जोती | कंचन[16] कया कांच भइ पोती
बूड़त हों दुख दग्ध[17] गंभीरा | तुम बिन कंत लाव को तीरा[18]
हिये[19] बिरह होय चढ़ा पहारू | जल जो बन सहस कै न भारू
जल महं अगिन सो जान बिछूना | पाहन[20] जरहिं होहिं सब चूना
कौने जतन कंत तुम पाऊं। | आज आग हों जरत बुझाऊं

कौन खेड़ हौं हेरों[21] कहां बन्धु[22] हौं नाहं[23] ॥
हेरें कतहु न पाऊं बसे तु डिरदे माहं

नागमती पिय पिय रट लागी | निशि दिन तपै मच्छ नाआगी
भंवर भुजंग कहां हो पिया | हम ठेगा[25] तुम कानन किया
भूल न जाहि कमल के पाहां | बांधत बिलंब न लागै नाहां[26]
कहां सो सूर[27] पास हों जाऊं। | बांधा भंवर छोर कै लाऊं
कहां जाउं को कहै संदेशा | जाउं सो तहं योगिन के भेशा
फार पटोर[28] सो पहिरों कंथा[29]। | जो मुंह कोऊ देखावे पंथा[30]

अलग १-८ धूर २५-९ मिलना ३ सोना ४-६-१६ रेज़ा रेज़ा ७ पानी १० बदन ११ पैदा होना १२ गर्म १३ लाल जवाहिर १४ मोल १५ आग भारी १७ किनारा १८ छाती १९ पत्थर २० देखना २१ क़ैद २२ ख़ाविन्द २३-२६ रात २४ दुशमना २५ सर्य्य २७ सारी २८ गुदड़ी २९ राह ३०

वह पंथ[1] पलक न जाउं बोहारी | सीस[2] चरण के चलों सिधारी

को गुरु अगवा होय सखि मुहिं लावै पंथ मांह
तन मन धन बल बल करों जोरे मिलावै नांह[3]।

कैकै कारन रोवै बाला ॥ | जनु टूटहिं मोतिन के माला
रोवत भई न स्वांस सँभारा | नयन चुवहिं जनु उरती धारा
जाकर रतन परे परहाथा ॥ | सो अनाथ किमि जीवै नाथा
पाँच[4] रतन वह रतन नहिं लागी | बेग[5] आव पिय रतन सभागी
रही न जोत नयन भये खीनी[6] | श्रवन[7] न सुनों बैन[8] तुम लीन्ही
रसना[9] रस नहिं एको भावा। | नासिक[10] और बास नहिं आवा
तच तच तुम बिन अंग[11] मोहिं लागी | पाचों[12] दग्धे[13] बिरह अब जागी।

बिरह सो जार भस्म कै चहै उड़ावा खेह[14] ॥
आय सो धन पिय मिलवे करलेवे नइ नेह

पिय बिन ब्याकुल ब्यापी नागा[15] | बिरह तपन श्याम भये कागा
पवन पानि कहं सीतल पीउ | जेहि देखे पलहै[16] तन जीव ॥
कहं सो बास मलियागिर[17] नाहां[18] | जेहि कल परत देत गल बाहां
पद्मिन ठगनी भई कित साथा | जेहि ते रतन परा परहाथा।
होय बसंत आवहु पिय केसर | देखै फिर फूलै नागेसर[19] ॥
तुम बिन नांह[20] रहे हिय[21] तचा | अब नहिं बिरह गडुरपै बचा
अब अन्धियार परा मसि[22] लागी | तुम बिन कौन बुझावै आगी

नयन श्रवन[23] रस रसना[24] सबै रवीन[25] भये नांहे[26]।
कौन सो दिन जेहि भेट के आय करे सुख छांह

राह १ सिर २ खाविन्द ३ १८-२-२६ ताक़त देखने-सुन्ने-सूंघने-बोलने छूने-की ४-१२ जल्द ५ रोशनी कम ६ कान ७-२३ आवाज़ ८ ज़बान ९-२४ नाक १० बदन ११ आग १३ धूर १४ रानी नागमती १५-१९ हरा होना १६ चन्दन १७ दिल २१ सियाही २२ कमज़ोर २५

कंभलनीर[1] राय देव पालू ॥ राजा केर शत्रु[2] हिय[3] सालू ।
उनपै सुना कि राजा बांधा पाछल बैर संवर छल सांधा
शत्रु[4] साल तब न्योरे सोय ॥ जो घर आव शत्रु[5] की जोय ।
629 दूती एक बृद्धि तेहि ठाऊं[6] ॥ ब्राह्मन ज़ात कुमोदन नाऊं
वह हंकार[7] के वीरा दीन्हा । तोरे बल मैं बल जिव कीन्हा
तुइं कुमदनी कमल के नेरे स्वर्ग[8] जो चांद बसै तोहि हेरे ।
चितौर महं जो पद्मिन रानी कर बल छल सो दै मुंहि आनी

रूप जगत मन मोहन जेहि पद्मावत नाउं ।
कोटि द्रव्य तुहि देहों आन करेसि इक ठाउं

कुमदनि कहा देख हों सोहों मानुष कहा देवता मोहों ।
जस कांवरू चमारिन लोना कौनहि छल पाढ़त कै टोना
बिसहर[10] नांचहि पाढ़त[11] मारीं औधर मूंदें घाल पेटारी ॥
630 बृक्ष[12] चलै पाढ़त[13] के बोला ॥ नदी उलट बहि पर बत डोला
पाढ़न हरि पण्डित मति घेरी और को अंध गूंग औ बहिरी
पाढ़त ऐसे दिवतहिं लागा मानुष का पाढ़त सों भागा
पाढ़त कै हठ काढ़त पानी । कहां जाय पद्मावत रानी ॥

दूती बहुत पैंच[14] कै बोली पाढ़त बोल ॥
जाकर सत्त[15] सुमेर है लागे जगत न डोल ॥

दूती बहुत पकावन सांधी मोतिन लड़ू[16] खरोरा बांधी ।
मांठ पेरा कैं फेटे पापर ॥ पहिर बूझ दूती के कापर ॥
631 लै पूरी भर डाल अछूती ॥ चितौर चली पैंच[17] कै दूती ।
बृद्धि बैश जो बांधे पाऊं ॥ कहां सो जोबन कित बोसाऊं[18]

नाम मुल्क १ दुशमन २-५ दिल दुख देने वाला ३ दुशमन दुख देने वाला ने चाहा कि जैसे बन पड़ै ४ जगह ६ बोलाया ७ आसमान ८ नज़र ९ सांप १० मंत्र ११-१३ पेड़ १२ कौल मज़बूत १४-१७ ईमान १५ मोतीचूर के लड़वा १६ ख़री-

तन बूढ़ा मन बूढ़ न होई ॥ बल नरहा लालच जेंहोई
कहां सो रूप जगत[1] सब रोता[2] कहां सो गर्ब[3] हस्ति[4] जस माता
कहां सो तीर्थ[5] नयन तन ठाढ़ा सबै मार जोबन पुनि काढ़ा

मुहम्मद बृद्धि जो नइ चलै काह चलै भुइं टोइ
जोबन रतन हेरान है मग[6] धर्ती[7] महं होइ ।

आय कुमोदनि चित्तौर चढ़ी जोहन मोहन पाढ़त पढ़ी ।
पूंछ लीन्ह रन बास बरोठा पैठ पंवर[8] भीतर बहु कोठा ।
जहं पद्मावत शशि[9] उजियारी लै दूती पकवान उतारी ॥
हाथ पसार धाय कै भेटी ॥ चीन्ही नहिं राजा की बेटी ।
हों ब्राह्मन जेहि कुमदन नाउं हम तुम उपनी[10] एकहि ठाउं[11] ।
नाउं पिता[12] कर दूबे बेनी ॥ सदा परोहित गन्धर्ब[13] सेनी ।
तुम बारी तब सिंहल दीपा लीन्हे दूधि पियायों सीपा ।

ठाउं[14] कीन्ह मैं दूसर कंभल नीरहि आय ।
सुन तुम कहं चित्तौर महं कहूं कि भेटों जाय

सुन निश्चै[15] नैहर की गोई[16] ॥ गरे लाग पद्मावत रोई ॥
नयन गगन[17] रबि[18] बिन अंधियारे शशि[19] मुख आंसु टूट जनु तारे
जग अंधियार गहन दिन परा कबलग शशि[20] नखत हित सभरा
माय बाप कित जन्मी बारी ग्रीव[21] तोड़ कित जन्म न मारी
कित बिवाह दुख दीन्ह दुहेला[22] चित्तौर पंथ[23] कंत[24] बंद[25] मेला ।
अब यहि जियन चाह भल मरना भयो पहार जन्म दुख भरना ।
निकस न जाय निलज यह जीउ देखों मंदिर सून बन्द पीउ ॥

दुनिया १ लाल २ ग़रूर ३ हाथी ४ कटीली ५ शायद ६ बहुत तरह के मंत्र ७ दरवाज़ा ८ चांद ९-१९-२० पैदा होना ११ जगह ११ बाप १२ पद्मावत का बाप १३ दूसरा ख़ाविन्द १४ यक़ीन १५ गुइयां १६ आसमान १७ सूर्य्य १८ गरदन २१ भारी २२ राह २३ ख़ाविन्द २४ क़ैद २५

कुहुक जोरोवे शशि नरवत नयन हिरात चकोर
अबहूं बोले तहं कुहुक चाँद कचकोकिल भोर

कुमुदिन कंठ लाग सुठरोई ॥ पुनि लैरोग डार मुख धोई ॥
तुइ शशि रूप जगत उजियारी मुखन भाग निशि होय अंधियारी
सुनि चकोर कोकिल दुख दुखी घुंगची भई नयन कर मुखी ॥
634 केतो धाय मरै कोई बाटा ॥ सोइ पावै जो लिखवा लल्लाटा ।
जो बिधि लिखवा आनन हिं होई कित धावे कित रोवे कोई ॥
कित कोइ इच्छा कर औ पूजा जो बिधि लिखवा होय नहिं दूजा
जेहि कुमोदिनि वर्ण न करई ॥ तस पद्मावत उत्तर न देई ॥

सेंदुर चीर मैल तस मुख रही तस भूल ॥
जेहि शृंगार पिय तजे गया जन्म न पाहिरे फूल

तब पकवान उघारी दूती ॥ पद्मावत नहिं छुई अछूती
मोहिं अपने पिय केरव भोरू पान फूल कस होय अहारू ॥
मोकहं फूल भये जस कांटी बांट देहु जो चाहसि बांटी ।
635 रतन छुवे जेहि हाथहिं सेती औ न छुवों सो हाथ सकेती
दमकरंग भय हाथ मँजीठी मुक्ता लेउ पै घुंगची दीठी ॥
नयन कर मुख रोती काया मोती होहिं घुंगची जेहि छाया
अस के आछ नयन हत्यारे देखत गा पिउ गहे न पारे ॥

कातेर छुवों पकावन गुड़ कडुवा घिव रूख
जेहि मिल होत सवाद रस लै पिय गयो सो मूख

कुमुदनि रही कमल के पासा बैरी सूर्य्य चाद की आसा ।

चंद्रमा तथा पद्मावत १ तथा सखी २ लाल ३ पपीहा ४ नामदूती ५-१२-२१ आफताबा ६ चांद ७ रान ८ माथा ९ ईश्वर १० चाहना ११ बात १३ जवाब १४ छोड़ना १५ दुख १६ लाख १७ मोती १८ लालबदन १९ पकड़ नसके २० तथा राजा २१

वहकुंभलानरहीभै चूरू | विकसरैन[2] बातहिंकर भोरू[3]
कसतुइं बारि[4] रहेसिकुंभलानी | सूखबेलजरा पावन पानी
अबहीं कमल कलीतुमवारी | कोमल[5] बैशउठत पौनारी[6] । 636
वेनी तोर मैलसिर रूखी । | सरवर[7] मांहरहेसि कसमूखी
पानबेलबिधि[8] कयाँजमाई[9] | सीचतरही तोहपलहाई[10] ।
कर शृंगारमुखफूलतबोला | बैठ सिंहासन झूलहिंडोला

हारचीरनितपहिरो सिरकी करहुसंभार
भोगमानदिनदस लित्ये यो बनगयेन बार[12]

बेहसजो कुमदनयोबनकहा | कमलन विकसा[13] संपुट रहा
ऐ कुमदनयो बनतेहिमांहां | जो आछेपियकी सुखछांहा
जाकर क्षत्र सोबाहेरछावा | सोउजार घर कौन बसावा । 637
अहाजो राजारतन अजूरा[14] | केहक सिंहासन केहकपटोरा[15]
कोप लंगपौढ़ै को माढ़े[16] ॥ | सोवनहार परा बन्द गाढ़े ॥
चहुंदिशयह घर भाअंधियारा | सबसिंगार लैसाथ सिधारा ।
कांयाबेलजानतबजामी[17] । | सीचनहार आव घरस्वामी[18]

तौलहिरहों झुरानी जौलहि आवसोकंत[19]
यही फूलयहसेंदुरहोय सोउठैबसंत ॥

जनतुइं बारि[20] करेसिअसजीउ | जोलहियो धन[21] तोलहिपीउ
पुरुषसंग[22] आपनकहुकेरा । | एक कुहाय दूसरसों हेरा[23] ॥ 638
योबनजलदिनदिनजसघटा | भंवरछिपानहंसपरगटा[24] ॥
सुभ्रसरोवर[25] जोलहिनीरा[26] | बहुआदरपरवी बहुतीरा[27]

मुरझाईहुई १ खिलना २-१३ रात ३ लड़की ४-२० मुलायम उमर ५ छसीउठतीहुई ६ चोटी ७ तालाव ८ ईश्वर ९ बदन १०-१७ हरी ११ वक्त १२ रोशनी १४ कपड़ा १५ मोढ़ा १६ खाविंद १८ १९ जवानी २१ मर्द २२ देखना २३ ज़ाहिर २४ भराहुवा तालाब २५ पानी २६ किनारा २७

नीर घटै पुनि पूछ न कोई ॥ परस जो लीज हाथ रहि सोई ।
जबलग कासिंदहेय बिसासी । पुनि सुरसरि होय समुद परासी ।
योबन भवर फूल तन तोरा । बर्ध पुंछ जस हाथ मरोरा ।

योबन छाषा तन कर नया । गोत न नहि साथ
छलकै जाय हि बानपै धनुष छाड़ दुइ हाथ

जोपिय रतन सेन मोर राजा । बिन जिव या बन कौने काजा
जो नहिं जिव तो यहि जोबन भला । बिन जिव योबन काह सो अहे
जो जिव तो यहि जोबन भला । जाषा हे जेस करै निरमला ।
कुल कर पुरुष सिंह जेहि केरा । नहि थैल कैस सियार बसेरा ।
हिय फाड़ कूकुर तेहि केरा । सिंह तजि सियार मुख हेरा ।
योबन नीर घटे का घटा । सते के बेर न जाय हिय फटा ।
सघन मेघ हे श्याम बरीसहि । योबन नये तरेवर दीसहि ।

रावन पाप जो जिय धरा । दोऊ जगत मुहकारे
राम सत्य जो मन धरा । ताहि छलै को पारे ।

कित पावसि पुनि जोबन रेना । मैमंत चढ़ा श्याम सिर छाता
योबन बिना वृद्धि हो नाऊ ॥ बिन योबन था कैस बढ़ाऊ ।
योबन हेरत मिलै न हेरा ॥ तेहि पुनि जाहि कहिं नहिं फेरा
अहहिं जो केश नग भवर जो बसा । पुनि बंक हो हिं जगत सब हंसा
सेंबर सेवन चेत कर सुवा ॥ पुनि पछतास चेत हो भुवा ।
रूप तोर जग ऊपर लोना ॥ यह जोबन पाहुन जल सोना
भोग बिलास केर यह बेरा । मान लेहु पुनि को केहि केरा

पानी १ सुरव २ यमुना तथा जवानी ३ गंगा तथा बुढ़ापा ४ जवानी ई
नाम राजा रानी ५ मुहब्बत ६ तीर ७ कमान ८ साफ़ ९ खाविन्द ब्याहु
वा १० शेर ११ जगह १२ छाती १३ २४ देखना १६ पानी १७ ईमान १८ खा
दल १९ खाविन्द २१ पेड़ २२ लाल २३ मस्त २४ मुकाम २५ साप २६ बगुला

639

640

२१ खंड पद्मावत २८

उठत कोंप जस मंदर तस यौबन तोहि गत।
तौलहि रंग लेहु रचि पुनि सो पिय होइ पात॥

कुमुदनि बैन सुनत होजरी। पश्चिम दिये आग जनु परी।
रंग ताकर हौं जारौं रचा॥ आपन तंज जो पराय हिलचा
दूसर कौर जाव दुइ बाटा॥ राजा दुइ न होहिं इक पाटा
जेहि जिय प्रेम प्रीति दृढ़ होई। सुख सुहाग सो बैठा सोई॥
यौबन जाउ जाउ सो भंवरा। पिय की प्रीति न जाय जो मंवरा
यहि जग जो पिय कहि न फेरा। वह जग मिलहि जो दिन दिन मेरा
यौबन मोर लेत जनु पीउ। बैल सो पिय पर यौ बन जीउ

भंवरहि निंबहि पिंगला आइ करत जिव दीन्ह
हौं पापिन जो जयन हौं यही दोष हम कीन्ह

पद्मावत सो कौन रसाई॥ जहं पर कोर न दूसर होई॥
रस दूसर जेहि जी महि बेरा सो जानै रस स्वाद गंभीरा।
भंवर बास बहु फूलहि लेई॥ फूल बास बहु भंवर न देई॥
नुइ रस पुरुष न दूसर पावा। नहि जाना जेहि लीन्ह पसावा
इक चुल्लुस भरि हिय जो लहि नहि फिर दूसर पिया
तोर जोदन जस समुद हिलोरा देखत देख जिव बूड़ मोरा॥
रंग और नहि पाई बैसे॥ जन्म और नुई पावत कैसे।

देख धनुख तोर नयना मोहि लाग विष बान
बहे सेंव कमल जो गाने भंवरे मिलाऊं आन

कुमुदनि नुइ बैरिन नहि धाई मोहे मांसि बोल छुलावेसि आई

पेड़ १ लाल २ नाम दूती ३-२३ बात ४ दिल ५-१६ छोड़ना ६ दूसरा ७ तथा नकी ८ तख्त ९ मज़बूत १० मुलाकात ११ कुरबान १२ नामराजा १३ जुदाई १४ नाम रानी १५ पाप १६ दुइ नरह १७ मज़ा १८ मर्द १९ तन था बुढ़ापा २० हंसना २१ तथा दूसरा खाविन्द २२ कारव २४ दग़ा २५

निरमल[1] जगत नीर[2] कर नाम। जो मसि[3] परै होय सो श्यामा[4]।
जहवां धर्म पाप नहिं दीसा। कनक[5] सुहाग मांझ जस सीसा।
643 जो मसि परै होय शशि[6] कारी। सो हंस लाय देहेसि मोहिं गारी।
कापर महं न छूट मसि अंकू[7]॥ सो मसि लाय मोंहि देस कलंकू[8]।
श्याम भंवर मोर सूरज करा। और जो भंवर श्याम मसि भरा।
कमल भंवर रबि[9] देखै आंखी। चन्दन पास न बैठै मांखी॥

श्याम समुंद मोर निरमल[10] रतन सेन जग[11] सेन
दूसर सर[12] जो कहावै सो बिलाय जस फेन।

पद्मिन पुनि मसि बोलन बैना[13]। सो मसि देख दुहूं तोर नयना।
मसि शृंगार काजर सब बोला। मसक बूंद तिल सोहि कपोला[14]।
लोना[15] सोई जहां मसि रेखा। मसि पुतरिन तेहि सें जग देखा।
644 जो मसि घाल नयन दुहुं लीन्ही। सो मसि फेर जाय नहिं कीन्ही।
मसि मुंद्रा[16] दुइ कुच[17] उपराहीं। मसि भंवर जस कमल भवाहीं।
मसि केश[18] हि मसि भौंह उरेहीं। मसि दिन दशन[19] सो मन हिं देहीं।
सो कस सेत[20] जहां मसि नांही। सो कस पिंडन[21] जहं परछाहीं।

अस देवपाल राउ तस छत्र धरा सिर फेर।
चितौर राज बिसर गा गयो जो कंभल[22] नेर

सुन देवपाल जो कंभल नेरी। पंकज[23] नयन भौंह धन[23] फेरी।
शत्रु[24] मोर पिय कर देवपालू। सो कित पूच सिंह[26] सर[27] भालू॥
645 दुखन भरा तन जेतन केशा। तेहक संदेश सुनावेसि बैश्या।
सोन नदी अस मोर पिय गरवा। पाहन[28] होय परै जो हरवा[29]॥

पाकसाफ़ १-१० पानी २ सियाही ३ काला ४ सोना ५ चांद ६ दाग़ ७ ऐब ८ सूर्य्य ९ दुनिया का देखनेवाला ११ बराबरी १२ बात १३ गाल १४ खूबसूरत १५ छाप १६ छाती १७ बाल १८ दांत १९ सफ़ेद २० बदन २१ नाम मुल्क २२ कमल २३ पद्मावत २४ दुशमन २५ शेर की बराबरी २६ रीछ

जेहि ऊपर अस गरुवा पीउ | सुकस डोलाये डोलै जीउ
फेरत नयन चीर[1] सो छूटी ॥ | भइ कूटन कुटनी तस कूटी
नाक कान काटी मसि[2] लाई | मूड़ मूड़ के गदहे चढ़ाई ॥

मुहम्मद गरु जो बिधि[3] लिखी का कोई तेहि फूंक
जेहिक भार जग थिर[4] रहा उड़े न पवन के झूंक

रानी धर्म[5] सार पुनि साजा ॥ | बन्द[6] मोष जेहिं पावहि राजा
जहंतक परदेशी चलि आवा | अन्न दान औ पानि पियावा
योगी यती आव जिन कंथी[7] । | पूंछी पिया जान कोउ पंथी[8] ।
दान जो देत बांह भइ ऊंची । | जाय शाह पहं बात जो पंहुची
पातुरिइक हुत जोग सुआंगी[9] । | शाह[10] उघारे हत वह मांगी ॥
योगिन भेष बियोगिन कीन्ही | सुनके शब्द मोल तत कीन्ही
पद्मिन पहं पठई कर योगिन | बेग[11] आन कर बिरह बियोगिन

चित्र[12] कला मन मोहन परकाया परवेश ।
आय चढ़ी चिनौर गढ़ होय योगिन कर भेश

खंड चालीसवां बैश्या गवन ॥

मांगत राज बार[13] चलि आई | फेर चीर[14] यह बात जनाई ॥
योगिन एक बार[15] है कोई ॥ | मांगे जैसि बियोगिन[16] होई
अबहीं नवयो[17] बन तप लीन्ही | फार पटोरा[18] कंथा[19] कीन्ही ॥
बिरह बिभूत जटा बैरागी । | छाला कांध जाप[20] कंठ लागी
मुंद्रा[21] श्रवन[22] नहीं थिर[23] जीउ | तन त्रिशूल अघारी पीउ ॥
छाता छाहं धूप जनु मरै । | पायन पवरी[24] भूभुल जरै ॥

लंहगा १ सियाही २ ईश्वर ३ क़ायम ४-२३ ख़ैरात ख़ाना ५ भेष वाले ६ मुसाफ़िर ७ मक्कार ८ शाह ने बोलाया ९ पद्मावत को लाव इन आम पावेगी १० जल्द ११ तसवीर १२ दरवाज़ा १३-१५ फेरफार १४ दुखी १६ नवज-वान १७ सारी १८ गुदड़ी १९ माला २० बाला २१ कान २२ खड़ाऊं २४

शृंगी[1] शब्द धन्धारी करा। जरै सो ठाउं[2] जहां पग[3] धरा॥

किंगरी गहे बियोग बजावै बारहि[4] बार सुनाउ।
नयन चक्र चहुं दिश[5] निरखि[6] धौं दरशन कब पाउ

सुनि पद्मावत मंदिर बोलाई। पूंछी कौन देश तें आई॥
तरुन[7] बैश तोहि छाजन योगू। केहि कारन अस कीन्ह बियोगू[8]
कहेसि बिरह दुख जान न कोई। बिरहिन जान बिरह जेहि होई
कंत हमार गयो परदेशा। तेहि कारन[9] हम योगिन भेशा
काकर जिय यो बन ओर देहा। जो पिय गयो भयो सब खेहा[10]
फार पटोरे[11] कीन्ह मन कंथा[12]। जहं पिउ मिलै लहुं सो पंथा[13]।
फिरों करों चहुं चक्र पुकारा। जटा परी कोसीस[14] संभारा।

हिरदय[15] भीतर पिय बसै मिलै न पूंछे काहि
सून जगत सब लागै वह बिन कछू न आहि

श्रवन[16] छेद में मुंद्रा[17] मेली। शब्द[18] उनाउ कहां पिय गेली[19]
तेहिं बियोग[20] सिही नित पूरी। बार बार किंगरी[22] भइ झूरी
को मोहिं लै पिय कंठ[23] लगावै। परम अधारी बात जनावै
पावर[24] दूट चलत पा छाला। मन न मरै तन यो बन बाला
गयो प्राग मिला नहिं पीउ। कर वैर[25] लीन्ह दीन्ह बल जीउ
जाय बनारस जार्यो कंथा[26]। पार्यो पिंड न हायो गया।
जगन्नाथ चक्रहिं के आय। पुनि सो द्वारका जाय न हाय

जाय केदारा दाग तन तहन मिला तन[27] आंक
ढूंढि अयोध्या आय फिर स्वर्गद्वारी झांक

शृंगी बाजा की तरह आवाज़ मस्ताना १ जगह २ पैर ३ दरवाज़ा ४ तरफ़ ५ देखना ६ नवजवान ७ दुख ८ वास्ते ९ धूर १० सारी ११ गुदड़ी १२ राह १३ सिर १४ दिल १५ कान १६ बाली १७ आवाज़ १८ जाना १९ सोक २० शेर २१ नामबाजा २२ गले २३ खड़ाउं २४ सिरकटाना २५ तपकिया २६ पता २७

गउमुख[1] हरिद्वार फिर कीन्हो । नगर कोटि[2] कित रसना[3] दीन्हो ।
ढूंढ बाल[4] नाथ कर टीला ॥ मथुरा[5] मथ्यों न सो पिय मेला ।
सूर्य्य कुण्ड महं जास्यों देहा । बद्री मिला न जासों नेहा ॥ 650
राम[8] कुण्ड गोमति[9] गुरद्वारू[10] ॥ दाहिने[11] वर्त कीन्ह कै भारू ।
सेत[12] बन्द कैलाश[13] सुमेरू[14] ॥ गयों अलख[15] पुर जहां गंभीरू ।
ब्रह्म[16] वर्त ब्रह्मावर्त[17] परसी ॥ बेनी संगम[18] सीझो करसी ॥
नील[19] कण्ठ मिश्रिष[20] कुरजेटा[21] । गोरख[22] नाथ अस्थान[23] समेटा ।

पटना पूर्व सो घर घर हाड़ फिर्यो संसार ॥
हेरत[24] कहं न पिय मिलाना कोइ मिलवनहार

बन बन सब हेर्यो नव खंडा । जल जल नदी अठारह गंडा ।
चौंसठ तीर्थ कीन्ह सब ठाऊं । लेत फिर्यो वह पिय कर नाऊं । 657
देहिली सब देखों तुरकानू । औ सुलतान केर बंदवानू[25] ।
रतन सेन देखों बंद माहां । जरै धूप खन[26] पावन छाहां ।
सब राजा बांधे औ दागी ॥ योगिन जान राज पग[27] लागी ।
कासों[28] भोग जहं अंत न गयऊ । यह दुख लै सो गयो सुख देऊ ।
देहिली नाउं न जानो ढीली । सठ[29] बंद गाढ़ निकस नहिं गेली ।

देख दग्ध[30] दुख ताकर अभों कैया[31] नहिं जीव
सोधन[32] कैसे वह जिये जाकर अस बंद पीव

पद्मावत जो सुना बंद पीउ ॥ परा अगिन महं जानहुं घीउ । 652
दौर पाय योगिन कै परी ॥ उठी आग योगिन पुनि जरी ।
पाय देहु दुइ नयनन लाऊं । लै चलि तहां कंत जेहि ठाऊं ।

नामतीर्थ १ से २१ नाम योगी २२ मकान २३ ढूढ़ना २४ क़ैदख़ाना २५ कभूं छाया नहीं पाता २६ पालागन राजा ने किया २७ लेकिन क्या इख़तियार जहां दख़ल ग़ैर का न हो २८ सख़्त क़ैदख़ाना जहां से निकलना मुश्किल है २९ जलना ३० बदन ३१ औरत तथा पद्मावत ३२

जेहि नयनन तुइं देखा पीउ । मोंहि देखाय देव बल जीउ ।।
सत औ धर्म देउं सब तोही ।। पिय की बात कहै जो मोही ।
तुइं मोर गुरू तोर हौं चेली ।। भूली फिरत पंथ[1] जे मेली ।।
डंड[2] एक माया[3] कर मोरें ।। योगिन होउं चलों संग तोरें ।

सखिन कहा पद्मावतहि प्रगट[4] करो ना भेश[5]
योगी जुगवे गुप्त[6] मन लै गुरु कर उपदेश ।

भीख लेहु योगिन फिर मांगू । कंत न पाई खीन[7] सुवांगू ।।
यह बड़ योग बियोग जो सहा । जैसें पिय राखै तुम रहा ।।
घरही महं रहु भई उदासा । अंचल खप्पर शृंगी[8] स्वासा ।।
रहै प्रेम मन उरझा लटा । बिरह ढंढार[9] परहिं सिर जटा
नयन चक्र लावै लै पंथा[10] ।। काया[11] कापर सोई कंथा[12] ।।
छाला भूमि[13] गगन[14] सिर छाता । रंग रक्त[15] रहि हिरदें राता[16] ।।
मन माला पहिरे तंत ओही । पांचौ भूत[17] भस्म तन होहीं ।

श्रवन[18] कुण्डल सुन पिय बचन[20] पांवरे[21] पाय परेह
डंडे[22] के गोरा[23] बादलहि जाय अधारी[24] लेह ।

सखिन बुझाई दग्ध[25] अपारा । गइ गोरा बादल[26] के बारा[27] ।।
चरण कमल भुइं जन्म न धरी । जात तहां लग छाला परी ।।
निकस आय सुन क्षत्री दोऊ । तस कांपे जस कांप न कोऊ ।
केश छोर चरणन रज झारी । कहां पांव पद्मावत धारी ।।
राखा आन पाट[28] सुन बानी । बिरह बियोग न बैठी रानी ।
चंवर ढार ह्वै चंवर डुलावहिं । माथे छात रजायस[29] पावहिं

राह १ एक घड़ी २-२२ मेहरबानी ३ ज़ाहिर ४ भेद ५ छिपा ६ ओछों के फ़रेब से ७ नाम बाजा ८ भारी ९ राह १० बदन ११ गुदड़ी १२ जमीन १३ आसमान १४ ख़ून १५ दिल १६ लाल १७ आंख-कान-नाक-जबान-छूना १८ कान १९ बात २० खड़ाउं २१ नाम मंत्री २३-२६ सहारा २४ आग २५ दरवाज़ा २७ सोने का

तख़्त २८ हुक्म २९

उलट बहा गंगा कर पानी। | सेवक बारन आवहिं रानी।

का अस कष्ट कीन्हा जेय जो तुम करत न छाज
अज्ञो होय बेगि सो जीउ तुम्हारे काज ॥

खंड इकतालीसवां पद्मावत वा गोरा बादल संवाद।

कही रोय पद्मावत बाता। | नयनहि रक्त देख जग राता।
उलट समुंद जस माणिक भरे | रोवसि रुधिर आंस तस डरे।
रतन के रंग नयन पै वारों। | रती रती कै लोहू ढारों ॥ 655
कमलहि ऊपर भंवर उड़ाऊं | लै चलि तहां सूर्य्य जहं पाऊं
हिय कर हरद बदन कै लोहू। | जिय बल देउं सो संवरि बिछोहू
परहिं आंसु सावन जस नीरू | हरियरि भूमि कुशुंभी चीरू।
चढ़ी भुवंगिन लट लट केशा | भइ रोवत योगिन कै भेशा

बीर बहूटी भै चलें तोहू रहहिं न आंस ॥
नयनहि पंथ न सूझै लाग्यो भादों मास।

तुम गोरा बादल खंभ दोऊ | जस रन भारथ और न कोऊ
दुख बर्षा अब रही न राखा | मूल पतार स्वर्ग भइ शाखा
छाया रही सकल महि पूरी | बिरह बेल भइ बाढ़ खजूरी 656
तेहिं दुख लेत वृक्ष बन बाढ़ी | सीस उघारे रोवहिं ठाढ़ी ॥
भूमि पूर सायर दुख पाटा। | कौड़ी भई फेर हिय फाटा।
बेहरि हिये खजूर कर बिया। | बेहरि नाहिं मोर पाहन हिया
पिय जेहि बंद योगिन ह्वै धाऊं | हो बंधू लों पिय मकराऊं ॥

सूरज ग्रहन गरासा कमल न बैठी पाट ॥
मुहूं पंथ तह गवन बकंत गये जेहि बाट ॥

दरवाज़ा १ हुक्म २ जल्द ३ लाल ४ जवाहिर ५ खून ६ छाती ७-२२ जुदाई ८ पानी ९ ज़मीन १०-१७-२० नागिन ११ राह १२ नाम मंत्री १३ जड़ १४ आसमान १५ सब १६ पेड़ १८ सिर १९ तालाब २१ फटना २३ दिल २४ पत्थर २५

छोड़ना २६ तख़्त २७

गोरा[1] बादल दोऊ पसीजे ।। रोवत रुधिर[2] सीस[3] लहि भीजे
हम राजा सों यही कोहाने[4] । तुम नहिं मिलो धरै तुरकाने
जो मति[5] सुन हम आय कोहाये सो नियान[6] हम माथे आये ।
जब लग जियें न भागहि दोऊ स्वामिन जिय कित योगिन होऊ
उवै अगस्त्य[7] हस्ति[8] अब गाजा नीर[9] घटें घर आवें राजा ।।
वर्षा गयो अगस्त्य की दीठी[10] परै पलान[11] तुरंगन[12] पीठी ।।
बेधों राहु छुड़ाऊं सूरू[13] ।। रहै न दुख कर मूल[14] अंगूरू ।

वह सूरज तुम शशि[15] बदन आन मिलाऊं सोय
तस दुख महं सुख उपने[16] रैन[17] मां झ दिन होय

लीन्ह पान बादल औ गोरा गहि लै देउं उपम तुम जोरा ।।
तुम सावंत[18] नसरबर[20] कोऊ । तुम हनुमत अंगद[21] सम[22] दोऊ
तुम अर्जुन[23] औ भीम[24] भुवारा तुम बल बीर सो मंदन हारा ।
तुम टारन भारन जग जानी तुम सो पुरुष औ करन[25] बखानी
तुम अस मोरे बादल गोरा काकर मुख हेरों[26] बंद छोरा ।
जस हनुमंत राघो बंद छोरी तस तुम छोर मिलावहु जोरी

जैसें जरत लच्छ घर साहस[27] कीन्हा भीउं[28]
जरत खंभ तस काढो कै पुर पारथ जीउं

राम लखन सम[29] दैत्य संहारा तुम हो घर बल[30] भद्र भुवारा ।
तुम द्रोना[31] औ पता गेगेऊ[32] तुम लेखो ईश्वर सहि देऊ
तुम हु युधिष्ठर[33] औ दुरयोधन[34] तुम हु भोज[35] नल[36] दोउ सम्बोधन

नाम मंत्री १ खून २ सिर ३ खफा होना ४ सलाह ५ आखिर ६ नाम नखत ७-८ पानी ९ निगाह १० चारजामा ११ घोड़ा १२ सूर्य्य १३ जड़ १४ चांद १५ पैदा १६ रात १७ जोड़ी मिलादो १८ बहादुर १९ बराबर २०-२२-२९ नाम सूर बीर २१-२३-२४-२५-२८-३१-३२-३३-३४-३५-३६ देखना २६ बहादुरी २७ बलभद्र का घर खराब किया ३०

तुम राघौ[1] प्रसराम[2] औ जोधा । तुम परतज्ञा[3] औ हत बोधा ।
तुमहु शत्रुहन[4] भरथ[5] कुमारा । तुम कंसहिं[6] चांडूर[7] संहारा[8] ।
तुम परदुम्न[9] औ अनरुद्ध[10] दोऊ । तुम अभमन्य[11] बोल सब कोऊ ।
तुम सरपूज[12] न बिक्रम[13] शाके । तुम हरिचंद[14] हमीर[15] सत[16] माके ।

जस अति संकट पांडवन[17] भयो भीम[18] बंद छोर
तस[19] परबंस पर काहहु राख लेहु ब्रह्म मोर ।

गोरा[20] बादल बीरा लीन्हा । जस हनुमत अंगद बल कीन्हा
साज सिंहासन ताना छातू । तुम माथे युग युग अहिवातू ।
कमल चरन भुइंधर दुख पावहु । चढ़ सिंहासन मंदिर सिधावहु
सुन सूरय कमलहि जिय जागा । केसर बरन[21] पवन हिय लागा
जनु निशि[22] मुंह अब दीन्ह देखाई । भाउ दोत[23] मसि[24] गई बिलाई ।।
चढ़ी सिंहासन झमकत चली । जानहु चांद दुइज निरमली[25] ।
औ संग सखी कुमोद[26] तराई[27] । ढारत चमर मंदिर लै आई ।।

देख दुइज सिंहासन शंकर धरा ललाट[28] ।।
कमल चरण पद्मावत लै बैठारी पाट[29] ।।

खंड बयालीस वां गोरा बादल गवन

बादल केर जसोदी माया । आय गही बादल के पाया ।
बादल राय मोर तुई बारा । का जानेसि कस होय जुझारा[30]
बादशाह भूमिपति राजा ।। सनमुख ह्वै नहमीरहि[31] छाजा
छतिस लाख तुरी[32] जेहिं साजहिं । बीस सहस हस्ती[34] दल गाजहिं

श्रीरामचंद्र १ नाम महासूर वीर २-६-७-१८ कौल ३ भाई श्रीरामचंद्र ४-५ मारना ८ बेटा श्रीकृष्ण ९ पोता श्रीकृष्ण १० बेटा अर्जुन ११ बराबरी १२ बिकमादित्य १३ नाम राजा १४-१५ सच बोलने वाले १६ राजा जुधिष्ठिर १७ उसी तरह इस वक्त में मदद करो १९ नाम मंत्री २० रंग २१ रात २२ रोशन २३ सियाही २४ साफ २५ कोका बेली २६ नखत २७ माथा २८ नखत २९ लड़ाई ३० घोड़ा ३१ हाथी ३२

जबहीं आय चढै दल ठटा | देखत जैस गगन[1] घन घटा
चमकहिं खर्ग[2] जो बीज स[3] माना | घुमरहिं गल[4] गाज हहिं निसाना
बरसहिं सेल[5] बान[6] घन घोरा | धीरज धीर न बांधे तोरा ॥

जहां दल[7] पती दल मलहिं तहां तोर का काज
आज गवन तोर आवै बैठ मान सुख राज ॥

मातन जानेसि बालक[8] आदी | हौं बादला सिंह[9] रन बादी ।
सुन गज[10] जूह अधिक जिउ तपा | सिंह[11] जात कहुं रहै नहिं छिपा
602 तब गल[12] गाजन गाज संघेला | सौंह[13] शाह सों जरों अकेला ।
को मोहि सोंह होय मैं मंता[14] । | फारों सूंड़ उखारों दंता ॥
जरों[15] स्वाम संकरे जस टारा । | औ बल[16] जस दुरयोधन[17] मारा
अंगद कोप पांव जस राखा | टेकों कटक[18] छती सो लाखा
हनुमंत सरस जंघ पर जोरों । | दहों समुंद स्वाम[19] बंद छोरों ।

जो तुम मात जसोदी मोहिं न जानों बार ॥
जहं राजा बल बांधा छोरों पैठ पतार ॥

बादल गवन जूझ कहं साजा | तैसहिं गवन आय घर बाजा[20]
लियें साथ गवने कर चारू । | चंद्र बदन रच कीन्ह सिंगारू
603 मांग मोति भर सेंदुर पूरा ॥ | बैठ मयूर[21] बांक तस जूरा ॥
भौंहैं धनुष[22] टकोर परीखी । | काजर नयन मार सर[23] तीखी[24]
घाल कंच[25] बची टीका सजा । | तिलक जो देख ठाउं जिउ तजा
मणकुंडल डोलै दुइ श्रवना[26] | शीश[27] धुनहिं सुन सुन पिय गवना
नागिन अलक[28] झलक उरहारू[29] | भयो सृंगार कंत बिन भारू ।

आसमान १ तलवार २ बिजुली ३ फरहरा ४-१२ गोला ५ तीर ६ २३ बड़े राजा ७ छोटा लड़का ८ शेर ९-११ हाथियों का हलका १० सामने १३ मस्त १४ मालिक का करों १५ नाम महा सूरवीर १६-१७ फौज १८ राजा १९ पहुंचा २० मोर २१ कमान २२ कटीली २३ नाम नखत २५ कान २६ सिर २७ बाल २८ छाती २९

गवन जो आयो पंवर[1] महं पिय गवने[2] परदेश
सखी बुझावहिं किम[3] अनल[4] बुझै सो कहि उपदेश

मानगवन जस घूंघट काढ़ी
तीषी[6] हेर चीर[7] गहि ओढ़ा ।।
तब धन[8] कीन्ह वेहं[10] सवंष[11] दीठी
मुख फिराय मन अपने रीसा
भामिन[14] भेष नारि के लेखें
मग[15] पिय दृष्टि[16] समानो चालू
कुच[18] तोंबी अब पीठ गडोऊं ।

बिनवै आय बार[5] भई ठाढ़ी ।
कंत न हेर[8] कीन्ह जिय पोढ़ा
बादल[12] तबहिं दीन्ह फिर पीठी ।
चलत न त्रिया कर मुख दीसो[13]
कस पिउ पीठ दीन्ह मुहं देखे ।
दुलसे पीठ गढ़ाउं सालू ।।
गहेसि जो हूक काढ़ रिस धोऊं

रहों लजाय तो पिय चले कहों तो कहि मुहि डीठ
ठाढ़ तेवानी का करों भारी दोऊ[21] बसीठ ।।

लाज किये जो पिय नहिं पाऊं
कर हठ कंत जाय जेहि लाजा
तब धन बेहस कहा गहि फेटा
आज गवन हूं आई नाहीं[25] ।।
गवन आव धन[27] मिलन की ताई
धनन नयन भर देखा पीऊ ।
तेहिं सब आस भरा है केवा[28] ।।

तजो लाज कर[22] जोर मनाऊं ।
घूंघट लाज आव केहि काजा
नारि जो बिनवे[24] कंत न मेटा ।
तुम न कंत[26] गवनो रन माहां
कौन गवन जो गवने साईं ।।
पिया न मिला धन सों भर जीऊ
भंवर न तजै[29] बास रस लेवा ।।

पायन धरा ललाट[30] धन बिनय सुनहु हो राय
अलक[32] परी फंदवार है कैसहिं तजै न पाय

दरवाजा १ जाना। सिधारना २ किसतरह ३ आग ४ ड्योढ़ी ५ कटीली निगाह से देखा ६ खींचना ७ देखना ८ १३ औरत बादल की हंसना १७-२३ आंख ११ नाममंत्री १२ औरत का शगून बद समा गया १४ शायद १५ निगाह १६ पीठ देखन सकीन की १७ छाती १८ खीचा कि दिल का दुख निकला व १९ शोख २० दोनो छाती २१ हाथ २२ अर्ज २४ खाविंद २५-२६ कमल २८ छोड़ना २९

माथा ३० बाल ३१

छाड़ फेट[1] धन[2] बादल कहा। पुरुष गवन धन झेट न गहा[3]
जो तुइं गवन आय गज[4] गामी। गवन मोर जहंवां मोर स्वामी
जब लग राजा छूट न आवा भावै बीर[5] शृंगार न मावा ॥
त्रिया भूमि[6] खर्ग[7] की चेरी ॥ जीत जो खर्ग होय तेहि केरी।
जेहिं घर खर्ग मूंठ तहं गाढ़ी तहां न अंडन मूंछ न दाढ़ी ॥
तब मुहं मूंछ जीउ पर खेलों। स्वामि काज इन्द्रासन पेलों ॥
पुरुष[8] क बोल टरै नहिं पाछू दसन[9] गयंद ग्रीव[10] नहिं काछू ॥

तुइं अबलों[11] धन कुबुधे[12] बुध जाने कहा जुझार[13]
जेहिं पुरुख[14] हिं हिय[15] बीर रस भावै तेहि न शृंगार

जो तुम चहो जूझ पिय बाजा कीन्ह शृंगार जूझ में साजा
यो बन आय सौंह[16] ह्वै रोपा। पिघला बिरह काम दल कोपा
भयो बीर रस सेंदुर मांगा ॥ राता[17] रुधिर खर्ग जस नांगा।
भौंह धनुष नयन सर[18] सांधे बरन[19] बीज काजर बिष बांधे।
दय कटाक्ष[20] सों सान संवारी। औ मुख सेल भाल अनयारी[21]
अलक[22] फांस ग्रीव[23] मेल असूझा अधर[24] अधर सों चाहहिं जूझा
कुंभ[25] सथल कुच[26] दोउ में मंता पेलों सौंह[27] संभारहु कंता ॥

कोंप शृंगार बिरह दल टूट हेग्य दुइ आध
पहिले मोहिं संग्राम[28] कै करहु जूझ की साध[29]

कैसहुं कंत फिरै ना फेरी ॥ आग परी चितौर धन केरी ॥
उठी सो धूम[30] नयन गरवानी लागे परे आंसु महरानी ॥

कमर १ औरत २ पकड़ना ३ हाथी की चाल ४ लड़ना ५ ज़मीन ६ तलवार ७ मर्द ८ दांत हाथी के ९ गरदन कछुवा की १० नादान ११ कम अक़िल १२ लड़ाई १३ मर्द १४ दिल १५ तामने १६ लालखून १७ तीर १८ पलक बिजुली की तरह १९ तिरछी निगाह २० नोकीले २१ बाल २२ गरदन २३ होंठ २४ हाथी मस्त २५ छाती २६ मुक़ाबिल २७ लड़ाई २८ इरादा २९ धुवां ३०

भीजे हार चीर[1] हिय[2] चोली | रही अछूत कंत नहिं खोली ।
भीजे लाग चुवे कट[3] मुंदन | भीजैं भंवर कमल सिर फुंदन
चुय चुय काजर अंचरा भीजा | तबहुं न पिय के रोवं पसीजा
छाड़ चला हिरदय[4] दय दाहू[5] ॥ | निठुर नाहं[6] आपन नहिं काहू
सबै शृंगार भीज भुइं चुवा | छार[7] मिलाय कंत[8] नहिं छुवा

रोयें कंत न बहुरे तेहि रोये का काज ॥
कंत धरा मन जू झरन धन[9] साजी सब साज

खंड तेतालीस वां गोरा बादल बरनन

मने बैठ बादल[11] औ गोरा ॥ | सो मत कीज परे नहिं भोरा[12] ॥
पुरुष[13] न करैं नारि मत कांची | जस नव[14] शाबा कीन्ह न बाची
चढ़ा हाथ इस[15] कंदर बैरी ॥ | सकत[16] छाड़ के भई बंदेरी ॥
सजग[17] जो नाहं मार बल कांधा | बुध[18] कहिये हस्ती[19] का बांधा
देवतन चले आय अस आंटी | सुरजन[20] कंचन[21] दुरजन[22] मांटी
कंचन जुरै भये दस खांड़ा । | फूट न मिलै छार[23] कर भांड़ा ।
जस तुरकहिं राजा छल साजा | तस हम साज छुड़ावहिं राजा

पुरुष तहांही छल करै जहं बल कैसो न[24] आंट ।
जहां फूल तहं फूल है जहां कांट तहं कांट ॥

सो रहसै चंडोल संवारी ॥ | कुंवर सजोयल[25] तहं बैठारी
पद्मावत कर साज बेवानू ॥ | बैठ लुहार न जानै भानू[26] ॥
रचबेवान सौ साज संवारा | चहुं दिश[27] चंवर करहिं सब दारा[28]
साज सबै चंडोल चलाई ॥ | सुरंग उहार मोति बहु लाई ॥

सारी १ छासी २ ४ कुरती ३ जलन ५ खाविंद ६-८ धूर ७ औरत ९ सलाह १० नाम मंत्री ११ हंसी १२ मर्द १३ नाम शहजादी १४ नाम बादशाह १५ उसको छोड़ दिया १६ होशयार १७ अक़िलमद १८ हाथी १९ दोस्त २० सोना २१ दुशमन २२ माटी २३ पहुचना २४ बहादुर २५ सूर्य्य २६ चारों तरफ़ २७

भये संग गोरा[1] बादल बली। कहत चले पद्मावत चली।
हीरा रतन[2] पदारथ झूलहि देख बेवान[3] देवता भूलहिं।
सोरह सै संग चली सहेली। कमल न रहा औ को बेली।

राज कुडावन रानि चलि आप होय तहं औल
तीस सहस[4] तुरि[5] खींच संग सोरह सै चंडोल

राजा बंद जेहि के सौंपना। गागोरा[6] तापहं अगमना[7]॥
टकालाख दस दीन्ह अकोरा[8] बिनती[9] कीन्ह पाय गहि गोरा
611 बिनवो बादशाह सो जाई॥ अबरानी पद्मावत आई॥
बिनती[11] करै आय हूं देहिली॥ चित्तौर की मोसो है कीली[12]
बिनती[13] करै जहां है पूंजी॥ सब भंडार[14] की मोसों कूंजी
एक घड़ी जो अज्ञा[15] पाऊं॥ राजा सौंप मंदिर महं आऊं
तब रखवार[16] गये सुलतानी देख अकोर[17] भये जस पानी।

लीन्ह अकोर[18] हाथ जो जीउ दीन्ह तेहि हाथ
जो वह कहे करे सो कहीं छाड़ नहिं माथ

लोभ पाप की नदी अकोरा। सत[20] न रहै हाथ जो बोरा॥
612 जहं अकोर तहं नेकन[21] राजू॥ ठाकुर केर बिनाशहि[22] काजू॥
भाजि उधि बरखवारी केरा दव्य लोभ चौडोल न हेरा[23]॥
जाय शाह आगे सिर नावा॥ ऐज गसूर[24] चांद चलि आवा॥
औ जानवन्त सब नखत[25] नराई सोरह सै चंडोल जो आई॥
चित्तौर जेत राज की पुंजी॥ लैसो आय पद्मावत कुंजी।
बिनती[26] करै जोरे कर[27] खड़ी॥ लैसौंपो राजा इक घड़ी॥

राजमंत्री १.६ जहिरात २ चंडोल ३ तीस हजार ४ घोड़ा ५ पहिले ७ रिशवत नज़राना ८ १७.१८.१९ अज़ं ९.१०.११.१२.१३ कुंजी १२ ख़ज़ाना १४ हुक्म १५ दारोग़ा १६ ईमान २० एज अच्छा नहीं २१ ख़राब २२ तलाशी लेना २३ सूर्य्य २४ सखी सहेली २५ हाथ २७

यहां वहां के स्वामी[1] दोहूं जगत मोहिं आश[2]
पहिले दरस देखाव नृप[3] तब आउं कैलाश।

अन्ना[4] भई जाय इक घरी। छूछ जो घरी फेर बिधि[5] भरी।
चलि बेवान[6] राजा पहं आवा। संग चौडोल जगत सब छावा
पद्मावत के भेष[7] लोहारू॥ निकस काट बंद[8] कीन्ह जोहारू
उठा कोप जस छूटा राजा॥ चढ़ा तुरंग[10] सिंह[11] अस गाजा॥
गोरा[12] बादल[13] खांडे काढ़े॥ निकस कुंवर चढ़ चढ़ भये ठाढ़े।
तीख[14] तुरंग गगन[15] सिर लागा। कौन जुगत कर टेकै वागा
जो जिय ऊपर खर्ग संभारा॥ मरन हार सो सहस[16] हिं मारा

भइ पुकार शाह सों शशि[17] औ नखत सो नाहिं
छल कै ग्रहन गिरासा ग्रहन गिरासी छांह

लै राजा चितौर कहं चले॥ छूटो मिरग[18] सिंह[19] कर बले।
चढ़ा शाह चढ़ लाग गुहारी कटक[20] असूझ परी जग कारी
फिर गोरा बादल सों कहा। ग्रहन[21] छूट पुनि[22] चाहै गहा।
चहुं दिश[23] आवा लोपत[24] भानू अब यह गोय यही मैदानू।
तुइं अब राजा लै चल गोरा॥ हों अब उलट जरों[25] भा जोरा।
वहं चौगान तुर्क कस खेला होय खिलार रन जरों अकेला
तब पाउं बादल अस नाउं। जब मैदान गोय लै जाउं॥

आज खर्ग चौगान गहि[26] करों सीस[27] रन गोय।
खेलों सौंह[28] शाह सों हाल जगत महं होय।

तब अगम[29] न ह्वै गोरा[30] मिला॥ तुइं राजा लै चल बादला[31]॥

मालिक १ उमेद २ राजा ३ हुक्म ४ ईश्वर ५ चंडोल ६ सूरत ७ बेड़ी ८ सनाम ९ घोड़ा १० १४ शेर ११ १९ नाम मंत्री १२ ३० ३१ तलवार १३ आसमान १५ हजार १६ चांद तथ तपद्मावत १७ हिरन १८ फौज २० राजा २१ फेर २२ चारों तरफ २३ सूर्य्य २४ मुकाबिल २५ पकड़ना २६ सिर २७ सामने २८ आगे २९

पिता[1] मेरे जो सारी साथें। मीचन[2] देय पूत के माथें॥
मैं अब आयु[3] भरी औ भूंजी कापछताव आय जो पूंजी॥
615 बहुतहिं मारमरों जो जूझी॥ ताकहं जन रोवहु मन बूझी॥
कुंवर सहस[4] संग गोरा[5] लीन्ही औरबीर बादल[6] संग कीन्ही॥
गोरहि[7] समुद मेघ अस गाजा। चला लीन्ह आगें कर राजा॥
गोरा[8] उलट खेत भा ठाढ़ा॥ पुरुष[9] देख चाउ[10] मन बाढ़ा॥

आव कटक[11] सुलतानी गगन[12] छिपा मसि[13] मांझ।
परत आव जग कारी होत आव दिन सांझ।

होय मैदान परी अब गोय॥ खेलहार वह काकर होय॥
योबन तुरी[14] चढ़ी जो रानी॥ चली जीत अति खेल सयानी
616 कटे[15] चौगान गोय कुच[16] साजी। हिय[17] मैदान चली लै बाजी॥
हाल[18] सो करै गोय लै बाढ़ा॥ गोली दुहूं पैच कै काढ़ा॥
भइ पहार वै दोनों गोरी[19]॥ दृष्टि[20] नेर पहुंचत सुठ दूरी॥
ठाढ़े बान चलहिं अस दोऊ। सालहिं[21] हियें[22] न काढ़े कोऊ॥
सालहिं तेहि जानसि है ठाढ़ी सालहिं तासु चहै उठ काढ़ी।

मुहम्मद खेल प्रेम का गहिर कठिन चौगान।
सीस[23] न दीजे गोय जिमि[24] हल न होय मैदान

फिर आगें गोरैं तब हांका[25]॥ खेलों आज करों रन शांका[26]।
हों खेलों धौलागिर[27] गोरा॥ टरों न टारे अंग न मोरा॥
617 सोहल[28] जैस गगन उपराहीं मेघ घटा मोंहि देख बिलाहीं
सहस[29] सीस शंकर सम[30] लेखों सहसहिं नयन अंधि भा देखों

बाप की जगह राजा साथ है १ मरना बेटे का न देखेगा २ उमर ३ हजार ४ २६ नाम मंत्री ५ ६ ७-८ मर्द ९ चाह १० फौज ११ आसमान १२ २९ सियाही १३ घोड़ा १४ कमर १५ छाती १६ सीन। १७ हलचल १८ तथा छाती १९ निगाह २० सूराख २१ दिल २२ सिर २३ बराबर २४ ललकारना २५ बहादुरी २६ नाम पहाड़ २७ नाम

तरवत २८ बराबर ३०

चारहु भुजा चतुर[1] भुज साजू | कंस[2] नरहा और को साजू
होंहै भीम[3] आजु रनगाजा | पाछे घालडं कौंड़[4] राजा ।।
हाय हनुमत यमकातर धाऊ | आजु स्वामि संकरै निबाऊ

है[5] नल नील आजु हो देऊं समुद महिं मेंड़
कटक[6] शाह कटकों है[7] सुमेरे[8] रणबेंड़ ।।

उनई[9] घटा चहूं दिशि आई | छूटहिं बूंद मेघ झरलाई
डोलै नागहिं देव जस[10] आदी ।। | पहुंची[11] नुर्क बांदे कहं बादी
हाथन गहैं[12] खड्ग हरवानी ।। | चमकहिं सेल बीजु[13] कै बानी
साजबान जनु आवै गाजा[14] ।। | बासुक डरै शीश[15] जनु बाजा ।।
नेजा उठे डरै मन इन्दू[16] ।। | आवहिं पाछ[17] जान कबहिन्दू
गौरे साथ लीन्ह सबसाथी ।। | जस मेमत सूंड़ बिनहाथी ।।
सबमिल पहिल उठौनी लीन्ही | आवत आय हाक सब कीन्ही

रुंड मुंड अनिट[18] टहिं सहि बरबनर औ कूंड़।
नुरी[19] होहिं बिन कांधे हस्ति[20] होहिं बिन सूंड़।।

उनवत आय सैन[21] सुलतानी | जानहु परलै आवनु लीनी ।।
लोहे सैन[22] सूझ सब कारे ।। | तिलइक कहं नसूझ घारे ।।
खड्ग फुलाद नुर्क सब काढ़े ।। | हरी बीजु[23] अस चमकहिं ठाढ़े ।।
पीलवान गर्जे[24] पेल सोबांके ।। | जानहु कालकरहिं जिय[25] मांके
जनु यमकात करहिं सब भवां[26] | जिय पैचीन्ह[27] खेंगी अपसवां।
सेल सांप जनु चाहैं डसा ।। | लीन्ह काढ़ जिय मुख बिष बसा

चारहाथ १ नाम राजा दैत्य २ नाम महासूरवीर ३ मदद ४ महाबीर जी ५ नाम कोल्हू ६ मल्लिक को बचाऊं ७ नाम बंदर जिन्होंने पुल समुंद्र में बांधा था ८ फौज १० २८ २६ नाम पहाड़ ११ चारों तरफ़ १२ तीर १३ पैदादूसरी १४ बराबर १५ नलवार १६ बिजुली १७ १८ १९ नाम राजा सांप १९ मिर २० इन्द्र २१ घोड़ा २२ हाथी २३ पहुंची २५ हाथीमस्त २८ लेने वाले २९ यमदूत

618

619

२० चालमानपर ले जाना ७०

तिन्ह सामहिं गौरा[1] रन कोपा | अंगद[2] सरस पाउं भुइं रोपा ॥

सपुरुषे[3] भागन जाने भुईं जो फिर फिर लेइ ॥
सूर[4] कहै दो कर[5] स्वाम काज जिउ देइ ॥ ॥

भइ बग मेल सेल घन घोरा | औ गज पेल अकेल सो गोरा ।
सहस[7] कुंवर सहंसहुं सत बांधा | मार पहार जूझ कहं कांधा ॥
620 लाग भरे गोरा के आगें ॥ | बागन मोर घाव मुख लागे ।
जैस पतंग आग धंस लीन्ही | एक मुवै दूसर जिय दीन्ही ॥
टूटहिं सीस[8] उधर धर[9] मारी | टूटहिं कंधहि कंध निरारी[10]
कोई परहिं रुधिर[11] ह्वै राती[12] ॥ | कोइ घायल घूमहिं मदमाती
कोइ घर खेह[13] कीन्ह ह्वै भोगी | भस्म चढाय बैठ जस योगी ।

घरी एक भा भारथ[14] भइ असवारहिं मेल
जूझ कुंवर सब बैठे गोरा रहा अकेल ॥

गोरे देख साथ सब जूझा । | आपन कौल[15] नेर भा बूझा
कोप सिंह[16] सामहिं रन मेला | लाखन सों नामरै अकेला
621 लियो हांक हस्तिन[17] की ठटा | जैसे सिंह[18] बिदारे[19] घटा ॥
जेहि सिर देइ कोप नरवारू । | सैं घोड़े टूटहिं असवारू ॥
टूट कंध सिर परैं निरारी[20] ॥ | मांठ मैं[21] जीठ जानु रण ढारी ॥
खेल फाग सेंदुर छिरकावे | चाचर खेल आग रण लावे
हस्ती[22] घोड़ धाय जो धूका | औ नेहि दीन्ह सो रुधिर[23] भभूका

भइ अज्ञा[24] सुल तानी बेग[25] करहु यह हाथ ।
रतन जात है आगें लिये पदारथ[26] साथ ॥

नाम मंत्री १ नाम बंदर २ बहादुर ३-४ हाथ ५ हाथी ६ हज़ार ७ सिर ८ धड़ फेकना ९ अलग १०-२० खून ११ लाल १२ राख १३ लड़ाई १४ मौत १५ शेर १६ १८ हाथी १७-२२ फाड़ना १९ लाख २१ लोहू २३ हुक्म २४ जल्द २५ तथा पद्मावत २६

सबै कटक[1] मिल गोरा[2] छेंका । गूंजत सिंह[3] जाय नहिं टेका ।
जेहिं दिश[4] उठै सोइ जनु खावा । पलट सिंह[5] तेहिं ठाउं न आवा ।
तुर्क बोला वहिं बोलै नाहां । गोरें मीचें[6] धरी जिय माहां ।
मुवे पुनि[7] जूझ जाज जग देऊ । जियत न रहा जगत महं केऊ । 622
जन जानहु गोरा सो अकेला । सिंह[8] की मूछ हाथ को मेला ।
सिंह जियत नहिं आप धरावा । मुवे पीछ कोऊ घिस यावा ।
करै सिंह मुहं सौंह[9] जोडीठी । जब लग जिये देय नहिं पीठी

रतनसेन जो बांधा मसि[10] गोरा के गात[11] ।।
जब लग रुधिर[12] न धोऊं तब लग हेय न रात[13]

सुरजा[14] बीर सिंह चढ़ गाजा । आय सौंह[15] गोरा सों बाजा ।।
पहलवान सो बखाने बली । मदद मीरह[16] मज़ा औ अली ।।
मदद अयूब[17] सीस[18] चढ़ कोपी । महा भारथी[19] नाउं अलोपी - 623
औ नायौ[20] सालार सो आये ।। जेहिं कवरों पांडों बंद पाये ।।
लंधौर[21] देव धरा जेहि आवे ।। औ कोमाल[22] बाद कहं पावे ।।
पहुंचा आय सिंह असवारू । जहां सिंह गोरा बरयारू[23] ।।
मारेसि सांग पेट महं धसी ।। काढ़ेसि हुमक आंत भुइं खसी

भाट कहा धन गोरा तुइं महिरावन राउ ।
आंत समेट कर कांधे तुरी[24] देत है पाउ ।।

कहेसि अंत[25] अब भा भुइं परना । अंत को नित[26] खेह[27] सिर भरना
कहि के गरज सिंह अस धावा । सुरजा शार[28] दूल पहं आवा । 624

फ़ौज १ नाम मंत्री २ शेर ३-५-८ तरफ़ ४ मौत ६ ऐ बादशाद बेमरे हाथ न-आऊंगा ७ सामन निगाह ९ सियाही १० बदन ११ खून १२ लाल १३ नाम पहेलवान १४-१६-१७ सामने १५ सिर १८ बड़े बहादुरों का नाम मिटाने वाले १९ नाम सिपहसालार २० नाम देव २१ नाम राजा २२ ज़बरदस्त २३ घोड़ा २४ आख़िर २५ हमेशा २६ राख २७ शेर मुर्ख़ २८

सुरजेंकीन्ह सांग पर घाऊ ॥ परा खड्ग जनु परा निहाऊ ।
बज्रकी सांग बज्र का डांडा ॥ उठी आगत सब बाजा खांडा ।
जानहु बज्र बज्र सों बाजा ॥ सबही कहा पूरी अब गाजा ।
दूसर खड्ग कन्ध पर दीन्हा ॥ सुरजे वह ओड़न पर लीन्हा ।
तीसर खड्ग कूड़ पर लावा ॥ कांध गरज हत धावन आवा ॥

नस मारा हत गोरें उठी बज्र की आग ॥ ॥
कोउ नेरें नहिं आवे सिंह सेंदूरा लाग ॥

तब सुरजा कोपा बरबंडा ॥ जान सेंदूरा कर भुजडंडा ॥
कोप गरज मारेसि नस बाजा जानहु परी तुरत सिर गाजा ।
625 सरसर टूट टूट सिर नासू ॥ मेरु सुमेरु जनु टूट अकासू ॥
धमक उठा सब स्वर्ग पतारू फिरगद दीठ फिरा संसारू ॥
भा परलै अस सबहीं जाना काढ़ा खड्ग स्वर्ग नेराना ॥
नस मारेसि से घोड़े काटा ॥ धर्ती फाट सेस फन नाथा
आनि जो सिंह बरी है प्यादे ॥ गरुड़ सो कौन बड़ाई ॥

गोरा परा खेत महं सुरे पहुचावा पानि ॥
बादल लै गा राजा ले चितउर नेरान ॥

626 पद्मावत मन रही जो झूरी ॥ सुनत सरोवर हिये गा पूरी ॥
अद्रा महं कुलास जस होई ॥ सुख सुहाग आदर भा सोई
नयन जो कुमेदनि लीन्ह अंगूरू उदा कमल अस उगवा सूरू ।
पुरइन पूर संवारी पोटा ॥ ओसि सान धरा सिर छाता
लाग्यो उदय होय जस भोरा । रैन गई दिन कीन्ह उजोरा ॥

नाम पहलवान १ तलवार २-५-६ निहार ३ बिजुली ४-११ ढाल ६ उछलन ७ तलवार परी ८ शेर ९-१८ शेरमुर्दे १० जवाहिर ११ खुपड़ी १२ पहाड़ १३ आसमान १४-१७ निगाह १५ देवता १६ नाम मंत्री २१ तालाब २२ छाती २३ नाम नखत २४ खुशी २५ कोकावेली २६ सूर्य २७ नखत २८ रात २९ रोशनी ३०

अस्त[1] अस्त कै पाई कला[2] | आगें बली कटक[3] सब चला।
देख चांद अस पद्मिन रानी | सखी कुमोद[4] सबै बेकसानी[5]

ग्रहन छूट दिनेर[6] कर शशि[7] सो भयो मिलाव
मंदिर सिंहासन साजा बाजा नगर बधाव

बेहंस चांद दय मांग सेंदूरू। | आरत करन चली जहं सूरू[8]
औ गोहन[9] शशि[10] नखत तराई | चितौर की रानी जहं ताई॥
जनु बसंत रितु फली जो छूटी | की सांवन महं बीर बहूटी॥
भा आनन्द बाजा पचतूरा॥ | जगत राति[11] ह्वै चला सेंदूरा।
अति मृदंग मंदिर बहु बाजे। | इन्द्र शब्द[12] सुन शब्द जो लाजे
देख कंत जस रबि[13] परकासा[14] | पद्मावत मन कमल बिकासा[15]
कमल पायं सूरय के परा॥ | सूरय कमल आन सिर धरा

सेंदुर फूल तंबोल सों सखी सहेली साथ॥
धन[16] पूजी पिय पाय दुय पिय पूजी धन माथ

पूजा गवन देउं तुम राजा॥ | सबै तुम्हार आव मोहि लाजा
तन मन यौबन आरति करेऊं | जीव काढ़ न्यो छावर देऊं।
पंथ[17] पूर कर दृष्टि[18] बिछाऊं॥ | तुम पग[19] धरो सीस[20] मैं लाऊं॥
राखत पाय पलक नहिं मारों | बरनहि[21] सों रज[22] चरनहि झारों
हिय[23] सो मंदिर तम्हारो नाहां[24] | नयन पंथ[25] आवहु तेहि माहां
बैठो पाट[26] छत्र नव फेरी॥ | तुम्हरे गर्ब[27] ग्रवी हों चेरी॥
तुम जिय मैं तन जो लहि मया[28] | कहै जो जीउ करै सो कया[29]

जो सूर्य्य सिर ऊपर तब सो कमल सिर छात
नाहित भरी सरोवर[30] सूखी पुरइन पात॥

एमएम कर १ कल २ फ़ौज ३ कोका बेली ४ खिलना ५-१५ सूर्य्य ६-८-१३ चांद ७
१० साथ ९ लाल ११ आवाज़ १२ रोशनी १४ पद्मावत १६ राह १७-२५ निगाह १८ पाउं
१९ सिर २० पलक २१ धूर २२ दिल २३ खाविंद २४ तखत २६ गरूर २७ मुहब्बत २८
बदन २९ तालाब ३०

परस पाय राजा के रानी। पुनि आरत बादल[1] कहं आनी
पूजे बादल के भुज डंडा[2]॥ तुरी[3] के पाउंदाब कर[4] खंडा।
629 यह गज गवन[5] गर्ब[6] सो मोरा तुम राखा बादल[7] औ गोरा।
सेंदुर तिलक जो आंकुस रहा तुम राखा माथे तौ रहा॥
काज श्याम[8] तुम जिय पर खेला तुम जिय आन मंजूसा[9] मेला
राखा छात चंवर औ दारा। राखा छुद्र[10] घंट झनकारा।
होय धुजा हनुमंत तुम पैठी॥ तब चितोर लै आये बैठी॥

पुनि गज मत्त[11] चढ़ावा नेत[12] बिछाई पाट[13]।
बाजत गाजत राजा आय बैठ सुख पाट।

तस राजें रानी कंठ[14] लाई॥ पिय मरजिया नारि जनु पाई
संगै[15] राजा दुख उगसारा[16]॥ जियत जीव ना करो निरारा[17]॥
630 कठिन[18] बंद तुरकहिं लै गहा। जो संवरों जिय पेट न रहा॥
घन गढ़[19] ऊपर मुहिं लै मेला। साकर औ अन्धियार दुहेला[20]
छिन[21] छिन जीउ सडा साह[22] आंका औ नित डोम छुवावाहं बांका
पीछे सांप रहैं चहु पासा। भोजन सोई रहे परस्वासा।
पास न तंहवा दूसर कोई॥ न जनो पवन पानि कस होई

आस तुम्हारी मिलन की तब सो रहा जिय पेट
नाहित होत निरास जिय कित जीवन कित भेट

तुम पिय आय परे अस बेरा। अब दुख सुनो कमल[23] धन केरा
631 छोड़ गयो सरवर[24] मंह मोही सरवर सूख गयो बिन तोही।
केल[25] जो करत हंस उड़ गयेउ भान[26] निपट सो बैरी भयेऊ।

नाम मंत्री १-७ बाजू २ घोड़ा ३ हाथ ४ हाथी की चाल ५ गरूर ६ खाविंद ८ संदूक ९ नाम ज़ेवर १० हाथी ११ ज़ेर अंदाज़ १२ तख़त १३ गले लगाई १४ अकेले में १५ खोलना १६ अलग १७ भारी कैद १८ पेचदार किला १९ बहुत २० घड़ी घड़ी २१ शीशा गर्म २२ पद्मावत २३ तालाब २४ ख़ुशी २५ सूर्य्य २६

गई तजि[1] लहरे पुरयन पाना | मुयो धूप सिर अहो न छाना
भयो मीन[2] तन तड़पै लागा | बिरह आय बैठो होय कागा
काग चोंच तस सालहि[3] नांहा[4] | जस बंद तोर सालहिय[5] मांहा
कहों काग अब तहं लै जाही | जहवां पिउ देखै मोहिं खाही

कागगिद्ध[6] नहिं ऐसो गढ़ का मारे बहु मंद ।
यह पछतायें सठ मरों गयों न पिय संग बंद ॥

खंड चवालीसवां बृतांत देवपाल ॥

तेहि ऊपर का कहों जो भारी | बिषम पहाड़ पड़ा दुख मारी
दूती इक देवपाल पठाई ॥ | ब्राह्मन भेष छरै मोहिं आई
कहे तोर हों आहि सहेली | चलि लै जाउं भंवर जहं बेली
तब मैं ज्ञान[8] कीन्ह सत बांधा | वह कर बोल लागि बिष सांधा
कहूं कमल नहिं करत अहेरा[9] | जौं[10] है भंवर करे सें फेरा ॥
पांच[11] भूति आत्मा ने वार्यों[12] | वारहि[13] वारि फिरत मन मार्यों
रोय बुझायों आपन हियरा[14] | कंत न दूर अहै सठ निअरा

फूल वास घिव छीर[15] ज्यों नीर[16] मिलाय मिठाइ
तस नुक्ता[17] घट सब जेंवरी हिय दुख नाहिं कहाइ

सुनि देवपाल राय कर चालू | राजा कठिन पराहिय सालू[18]
दादुर[19] पुनि सो कमल कर भेखा | गीदर मुख न सूर कर देखा
अपने रंग जस नाचि मयूरू[20] । | तेहि सर साध[21] करै तमचूरू[22]
जब लगि आय तुरुक[23] गढ़ बाजा | तब लगि धरि आनों तौ राजा

छोड़ना १ मछली २ सूराख ३-१८ खाविंद ४ छाती ५ कवे और गिद्धिका दखल न था ऐसा क़िला रच्छा का था ६ टेढ़ा ७ बिचारा ८ शिकार ९ देखना १० देखना-सुनना-बोलना-सूंघना-छूना ११ रोकना १२ दरवाज़ा १३ दिल की आग १४ दूध १५ पानी १६ नुक्ता यह कि बदन ने खाया और दिल दुखी परंतु ज़ाहिर न किया १७ मेढ़क १९ मोर २० नाज़ २१ चिरौटा २२ बाद

नींद न लीन्ह रैन[1] सब जागा | होत बेहान आय गढ़ लागा
कम्मल[2] नेर अगम[3] गढ़ बांका | बियम[4] पंथ चढ़ जाय न झांका
राजा तहां गयो लै कालू ॥ | होय सामहिं रोपा[5] देवपालू

दोऊ लड़े होय संमुख लोहे भयो असूझ ।
शत्रु[6] जूझ[7] तब त्योरे[8] एक दोउ मनुं जूझ ।

खंड पैंतालीसवां देवपाल लड़ाई

जो देव[9] पाल राउ रन गाजा ॥ | मोहिं तुहि जूझ एकाछा राजा
मलेसि आय सांग बिष भरी | मेट न जाय काल की घरी ।
आय नाभ पर सांग जो बैठी | नाभ बेध निकसी नृप[11] पीठी
चला मार तब राजा मारा । | टूट कंध धड़ भयो निरारा[12] ।
सीस[13] काट के पैरी[14] बांधा । | पावा दांव बैर जस[15] सांधा ।
जियत फिरा आयो बल भरा | मांझ[16] बाट होय लोहे[17] धरा ।
कारी घाउ जाय नहिं डोला | रही जीभ यम[18] गहे को बोला

सुध बुध सब बिसरी बार परी मंझ[19] पाट ॥
हस्ति[20] घोर को काकर घर आनी गइ खाट

खंड छयालीसवां बैकुण्ठ बासी राजा

तौलहि स्वांस पेट मंह अही । | जो लहदशा जीउ की रही ।
काल आय देखलाई सांटी[21] | उठ जिय चला छाड़ के माटी
काकर लोग कुटंब घर बारू | काकर अर्थ दर्ब्य[22] संसारू ॥
वही घड़ी सब भयो परावा । | आपन सोइ जो परसा खावा
रहि जोहिं तू[23] साथ के नेगी ॥ | सबै लाग काढ़ं न तेहि बेगी[24] ॥

रात १ नाम मुल्क २ जहां जाना मुशकिल है ३ टेढ़ी राह ४ आया ५ दुशमन ६ लड़ाई ७ आखिर ८ नाम राजा ९ अकेले १० राजा ११ अलग १२ सिर १३ शिकार बंद १४ जैसा बैर किया १५ राह में १६ हथ्यार बंद १७ मौत नेपकड़ी १८ मुरदा की तरह तख़त पर १९ हाथी २० छड़ी २१ दौलत २२ दोस्त २३

जल्द निकाला २४

हाथ झार जस चलै जुवारी | तजा[1] राज होय चला भिखारी
जबलग जीउ रतन सब कहा | भा बिन जीउ न कौड़ी लहा

गढ़ सौं पातेहिं बादल[2] गये टेकत[3] बस देउ ॥
छोड़ी राम अयोध्या जो भावै सो लेउ ॥

पद्मावत पुनि पहिर पटोरा[4] ॥ | चली साथ पिय के होय जोरी
सूर्य्य छिपा रैन[5] ह्वै गई ॥ | पूनू[6] शशि सो अमावस भई ॥
छोरे केश[7] मोतिलर छूटी ॥ | जानो रैन नखत सन टूटी ॥
सेंदुर परा जो सीस[8] उघारी ॥ | आग लाग चहि जग[9] अंधियारी
यही देवश[10] हों चाहत नाहीं[11] | चलों साथ पिय दै गल बाहीं
सारस पंख नहिं जिये निरारे[12] | हौ तुम बिन काजियों पियरे
न्यों छावर कैतन छहराऊं[13] | छार[14] हों संग बहुरैन[15] आऊं ॥

दीपक प्रीति पतंग ज्यों जन्म निबाह करेउं
न्यो छावर चहुं पास ह्वै कंठ लाग जिय देउं

खंड सैतालीसवां सती होना पद्मावत-नागमती

नागमती पद्मावत रानी ॥ | दोऊ महा सत सतो बखानी
दोऊ[16] सौत चढ़ खाट जो बैठी | औ शिव लोक परा तहं दीठी[17]
बैठो कोई राज औ पाटां[18] ॥ | अंत[19] सबै बैठे पुनि खाटां ॥
चन्दन अगर काढ़ सर[20] साजा | औ गत[21] देय चले लै राजा ॥
बाजन बाजहिं होय अगोता[22] | दोऊ कंत लै चाहैं सोता ॥
एक जो बाजा भयो बिवाहू । | अब दुसरे ह्वै और निबाहू ॥
जियत जलै जो कंत[23] की आसा | मुवे रहस बैठे इक पासा ॥

छोड़ना १ नाममंत्री २ बैकुण्ठ गये ३ सारी रेशमी ४ रात ५ पूरनमाशी का चांद ६ बाल ७ सिरदुनिया ९ दिन १० खाविन्द ११ अलग १२ बिथराना १३ राख १४ लौट १५ पद्मावत-नागमती १६ नज़र १७ तख़त १८ आख़िर १९ चिता २० दाह २१ कड़का २२ ख़ाविंद २३

आज सूर[1] दिन अथयो आज रैन[2] ससि[3] बूड़।
आज नांच जियदीजिये आज आगह्म जुड़

सरवचिदान पुन्य बहु कीन्हा[4]
एकजो भांवर भयो बियाही
जियन कंत तुम्ह मगल लाई[5]
लै सरऊपर खार बिछाई[6]।
औरजो गांठ कन तुम जोरी
यहजग काहु जो अथहिं[7] नयाथी
लागी कंद आग दे होरी ।।

सात बार फिर भांवर लीन्हा[8]
अबदू सरहै गोहन जाही[9] ।।
मुये कंठ नहिं छाड़ड़ साई
पौढ़ी दोउ कंत गल लाई ।।
आदि अंत लहि जाय न छोरी
हम तुम नाहं[10] दोहू जग साथी।
छार भई जर अंगन मोरी[11] ।।

राती[12] पिय के नेह की खरी[13] भयो रतनार[14]।
जोरेउ वासो अथवा रहा न कोइ संसार।

वै सहगवन भई जित जाई[15]।।
तबलग सो औसर है बीता।
आय शाह जो सुना अखेरा[16]
छांरउठाय लीन्ह इक मूठी[17]।।
सगरं कटक उठाई मारी[18] ।।
जो लहि ऊपर छांह न[19] हिं परे
भादहवा भाजू झ अमूझा[20]

बादशाह गढ़ छेंका आई[21]।।
भये अलाप[22] राम औ सीता।
है गइ रात दिवस[23] जिया।
दीन्ह उड़ाय पृथ्वी भूठी[24] ।।
पुल बांधा जहं जहं गढ़ घाटी
नो लहि यह[25] नेम नहिं मेरे ।।
बादल आय पवंर[26] परजूझा

जूझ[27] भइ सब स्त्री पुरुष भये संग्राम ।।
बादशाह गढ़ चूरा[28] चितौर भइ सलाम ।।

सूर्य १ रात २ चांद ३ चिता ४-७ साथ ५ पद्मावति ६ १० अब लगे आदिवस्त क८ छाया
या ९ सरव ११ बदन १२ लाल १३-१५ आसमान १४ जबरवाविंद के
साथ जल गई १६ गायब १७ हाल १८ दिन १९ पाक २० दुनिया
२१ फ़ौज २२ मारी २३ हवस २४ कोई बाकी नरहा उस भारीत
डाड़ मे २५ नाम मंत्र २६ दरवाज़ा २७ मना २८ तथा राजा २९ तोड़ा

मैं यह अर्थ पण्डितन बूझा | कहा किहम कुछ औरन सूझा
चौदह भुवन जो हत उपराही | सो सब मानुष के घट माहीं ।
तन चिनौर मन राजा कीन्हा | हिय सिंहल बुधि पद्मिन चीन्हा
गुरु सुवा जेहिं पंथ देखावा । | बिन गुरु जगत सो निरगुन पावा
नागमती यह दुनिया धंधा | बाचा सोई न यह चित बंधा
राघौ दूत सोई शैतानू ।। | माया अलाउदीं सुलतानू ।
प्रेम कथा यह भांत बिचारू | बूझ लेहु जो बूझहि पारू

तुरकी अरबी हिन्दवी भाखा जेती आहि
जामें मारग प्रेम का सबै सराहैं ताहि ।।

मुहम्मद कब यह जोर सुनावा | सुना सो प्रेम पीर का पावा ।
जोरे लाय रक्त ले गये ।। | प्रेम प्रीति नयनहि जल भये
औ मैं जान गीत अस कीन्हा | की यह रीति जगत महं चीन्हा
कहां सो रतन सेन अब राजा | कहां सुवा अस बुध उपराजा
कहां अलाउदीन सुलतानू | कहं राघो जेहि कीन्ह बखानू
कहां सुरूप पद्मावत रानी | कुछ न रही जग रही कहानी
धन सोई जस कीरत तासू । | फूल मरै पै मरै न बासू ।।

कैं न जगत यश बेचा कै न लीन्ह यश मोल
जो यह पढ़ै कहानी हम संवरै दोइ बोल ।

मुहम्मद वृद्धि बेश जो भई | यौबन हत सो अवस्था गई
बल जो गयो कै क्षीन सरीरू । | दृष्टि गये नयनहि दै नीरू ।।
दसन गये कै बचा कपोला | बैन गये अनरुच दै बोला ।

सात परदा आसमान सात परदा ज़मीन १ मीतर २ छाती ३ राह ४ दुनिया ५ बूझ सको ६ बोलो ७ ख़ून जिगर पीके ८ दुनिया में निशानी ९ अक़िलबताई १० तारीफ़ ११ नेकनामी १२-१४-१५ करनी १३ दुआय ख़ैर १६ बूढ़ी उमर १७ जवानी १८ उमर १९ दुबला बदन २० निगाह २१ पानी २२ दांत २३ गाल २४ आवाज़ २५

बुधि[1] जो गइ दैहिय[2] बोराई ॥	गर्ब[3] गयो तरिहन सिर नाई ।
श्रवन[4] गये ऊंच जो सुना ॥	सियाही गये सीस[5] भाधुना ।
भंवर गये केश[6] हिदै भुवा ॥	योबन[7] गयो जीत लै जुवा ।
जौलहि जीवन योबन साथा	पुनि सो मीच[8] पराये हाथा ।

बृद्ध[9] जो सीस[10] डुलावै सीस धुनहि नेहि रीस[11]
बूढ़ी आयू[12] होहु तुम कै यह दीन्ह असीस ।

अक़िल १ दिल २ ग़रूर ३ कान ४ सिर ५-१० बाल ६ जवानी ७ मौत ८ बूढ़ा ९ गुस्सा ११ उमर १२

इति श्री पद्मावत भाषा मलिक मुहम्मद जायसी कृत समाप्तः

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
पांचवीं रस सारिणी	राम व्याहोत्सव	दोहावली रत्नावली
छठीं तिथिबोध	बिहारी सत सई सटीक	स्त्री दर्प्पण
सातवीं पुस्तक मातृदत्त कृत	विश्राम सागर	समर बिहार बिन्द्राबन
सत्यनारायण की कथा स॰	रामलगन	रमल सार
शनिश्चर की कथा	मनुस्मृति उर्दू टीका सहित	कथा चित्र गुप्त
राम कलेवा	वैष्णवी संध्या	कायस्थ दर्प्पण
तुलसी शब्दार्त्थ प्रकाश	याज्ञबल्क्य भाषा टी॰स॰	कृष्ण बाल लीला
कवि कुल कल्पतरु भाषा	प्रबोध चन्द्रोदय नाटक	गीत गोविन्द सटीक
प्रेम रत्न	आनन्दाऽमृत वर्षिणी	रामाभिषेक नाटक
बन यात्रा	निर्णय सिन्धु	इन्द्रसभा नागरी
भजनावली	ज्ञानमाला	सिंहासन बत्तीसी
बारहमासा फ़क़ीर अला-	अवतार कथामृत	शुक बहत्तरी
बख़्श	दैवज्ञा भरण	अपूर्व्व कथा अर्त्थात्-
बारहमासा बलदेव प्रसाद	ज्ञान चालीसी	गुलबकावली
कृत	शंकर दिग्विजय भाषा	गुलसनोबर नागरी
कृष्ण सागर	योग वाशिष्ठ देवनागरी	चित्र चन्द्रिका
मनोरञ्जन	मार्क्कण्डेय पुराण	छन्दोर्णव पिङ्गल
हारीत स्मृति नागरी	बैताल पच्चीसी	हिदायत नामा मालगुज़ारी
भगवद्गीता सटीक नागरी	दानलीला नागलीला	हिदायत नामा बंदोबस्त
रामायण राम बिलास	सभा बिलास	विद्यार्त्थी की प्रथम पुस्तक
यमुना लहरी	विक्रम बिलास	बाला बोध
षट् पञ्चाशिका	इन्द्रजाल नागरी	गरुड़ पुराण प्रेतकल्प
कल्पसूत्र भाषा	कायस्थ कुल भास्कर	सांख्यतत्व कौमुदी
विनय पत्रिका सटीक	क़िस्सह गोपी चंद भरतरी	मनोहर कहानी
किताब पटवारी ४ भाग	बहार बिन्द्रावन	
रसराज	पद्मावती खंड आलखंड	क़ानून
कृष्णप्रिया	लावनी व शेर बनारसी	
भगवद्गीता विष्णु सहस्र-	युगल बिलास	ताज़ीरात हिन्द अर्त्थात्-
नाम सहित	भाषा महाभारत विजय-	ऐक्ट ४५ सन् १८५९ ई॰
ज्ञान स्वरोदय	मुक्तावली	ऐक्ट २५ सन् १८६६ ई॰
भरतरी गीत	जनक पच्चीसी	ज़ाबिते फ़ौज़दारी
देवी भागवत नागरी	शृंगार प्रकाश	मजमूआ ऐक्टलगान-
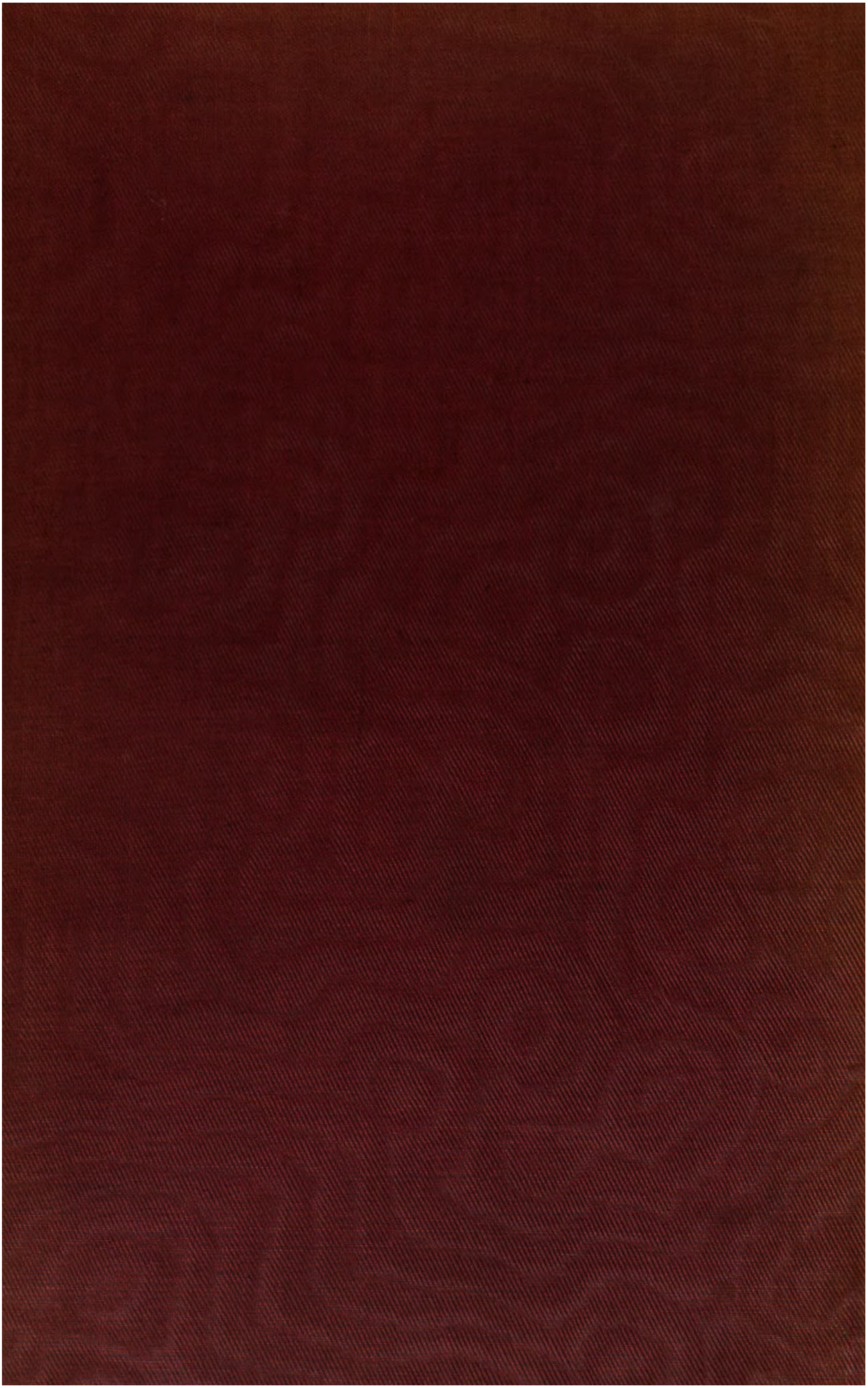
नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
अवध जिसके साथ नीचे	अक्षरदीपिका	किष्किन्धा काण्ड
लिखे हुये ऐक संयुक्त हैं	विद्यांकर	सुन्दर काण्ड
ऐक १० सन् १८७७ ई०	बालबोध	लंका काण्ड
जदीद	भाषाचन्द्रोदय	उत्तर काण्ड
ऐक १९ सन् १८६३ ई०	इंग्लिस्तान का इतिहास	अक्षरारम्भ
ऐक १४ सन् १८६५ ई०	गणितलता १ भाग	भाषातत्त्व दीपिका
ऐक १६ सन् १८६१ ई०	तथा २	बालाभूषण
ऐक नं० २६ सन् १८६६ ई०	तथा ३	हिदायत नामा मुदर्रिसा-
ऐक २० सन् १८६६ ई०	गणित प्रकाश १ भाग	न् हल्कह बंदी
ऐक २४ सन् १८७० ई०	तथा २	शिक्षावली
ऐक १० सन् १८५९ ई०	तथा ३	भोज प्रबन्धसार
ऐक ५ सन् १८६१ ई०	तथा ४	राजनीति
ऐक १० सन् १८६२ ई०	शिशुबोध	स्त्रियों की हितोपत्रिका
ऐक १८ सन् १८६९ ई०	पशुचिकित्सा	अवध भूगोल
ऐक २६ सन् १८६७ ई०	क्षेत्रचन्द्रिका १ भाग.	कवित्त रत्नाकर
ऐक नं० १९ सन् १८६० ई०	तथा २	भूगोल दर्पण
क़वायद रेलवे और उसके	रेखा गणित १ भाग	बीज गणित १ भाग
साथ क़ानून भी हैं॥	तथा २	तथा २
ऐक १९ सन् १८७३ ई०	सूरजपुर की कहानी	कैथी वर्णमाला
अर्थात् क़ानून लगान	विद्याचक्र	
मुमालिक मग़रबी व	भूगोलतत्त्व	महाभारत भाषा छन्द प्र-
शिमाली	पदार्थविद्यासार	बन्ध में जो श्रीमन्महाराजाधिराज उदित नारायण
ऐक १२ सन् १८७४ ई०	वर्णप्रकाशिका	सिंहजी काशी नरेश ने गो-
ऐक १० सन् १८७२ ई०	मङ्गलकोष	कुलनाथादिक वीश्वरों
	पत्रदीपिका	से रचना कराय कलकत्ते में
सरिश्ते तालीम की	भारत खण्डिका	छपवाया था वही श्रीयुत
पुस्तकें	क्षेत्रप्रकाश	माधव सिंह गढ़ अमेठी न-
	पत्रहितैषिणी	रेश की सहायता से इस यं-
भाषा लघुव्याकरण १ भा०	रामायण सातों काण्ड	त्रालय में टेप के अक्षरों में
तथा २	बालकाण्ड	१९ पर्व्व शुद्धता से छपा है॥
धात्त्वर्णव	अयोध्याकाण्ड	
अक्षरावली	आरण्य